आमका का रावल परिवार

आमका रावल परिवार के पूर्वज- 1917

महेंद्र सिंह
पूर्व प्रबंध निदेशक
नेफेड

2021

आमका का रावल परिवार

(तीसरा संस्करण)

महेंद्र सिंह

पूर्व प्रबंध निदेशक

नेफेड

2021

जयजयजयहनुमानगोसाई |

कृपा करहु गुरुदेव के नाइ ||

मैं इस पुस्तक को अपने माता-पिता, पूर्वजों और आमका (गौतमबुद्धनगर) रावल परिवार के सभी सदस्यों को पूर्ण विनम्रता एवं सम्मान सहित समर्पित करता हूं।

रावल परिवार आमका

गौतम बुद्ध नागर, उत्तर प्रदेश

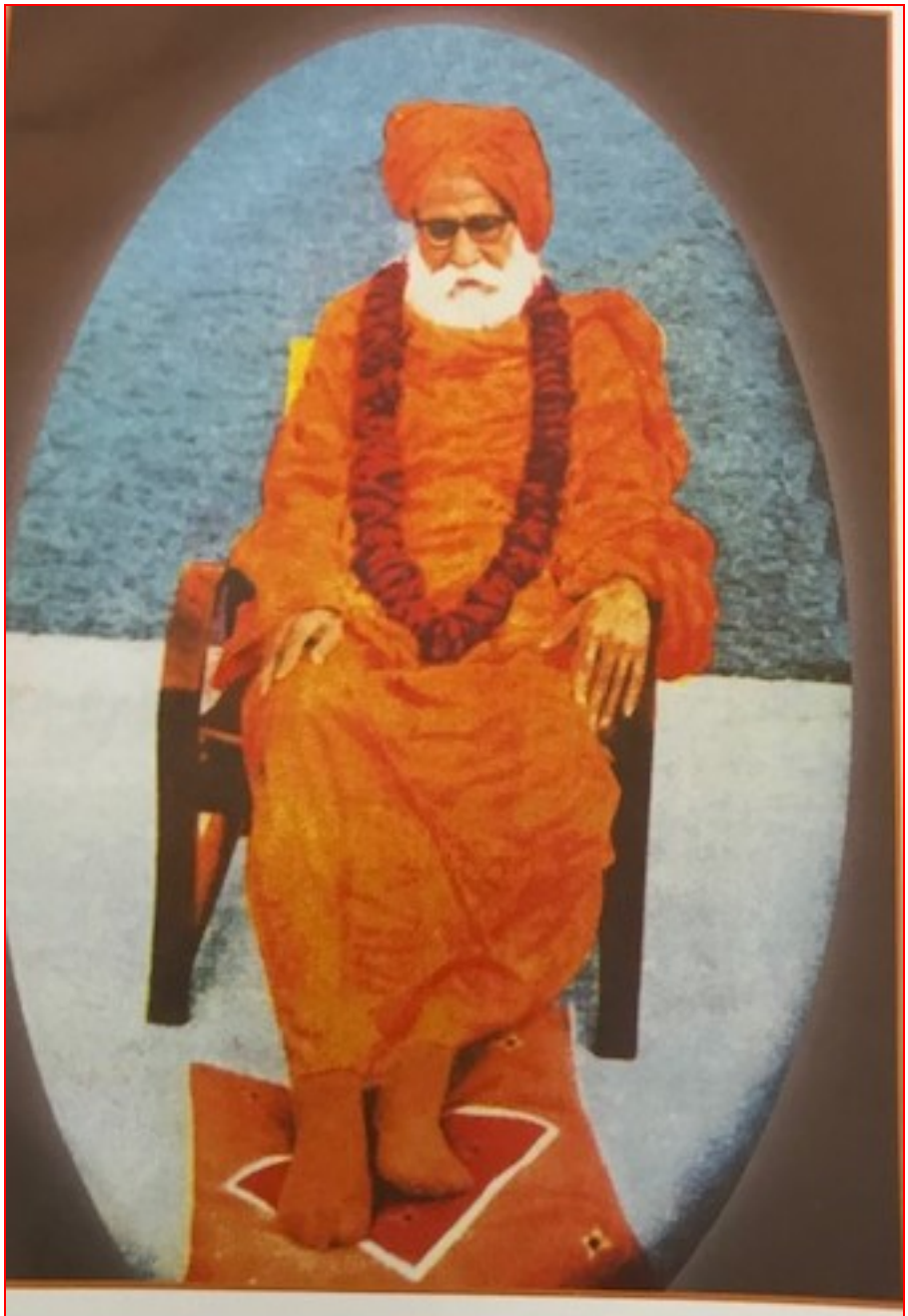

श्री हरि बाबा जी महाराज

Dr. SANJAY SINH
Ex-Member of Parliament
(Rajya Sabha)

सत्यमेव जयते

12th May, 2020

FOREWORD TO SECOND EDITION

FOREWORD

The author of the Book Shri Mahendra Singh was a senior bureaucrat having worked as Managing Director of National Agricultural Cooperative Marketing Federation of India (Nafed). This book is mainly written for the benefit of coming generations. The joint family system is fast disintegrating. The new generation is not aware of the glorious past of their ancestors. The book has not only systematically portrayed the genealogy of the Rawal Family of Amka but also present a detailed background of each family its members.

Rawal is a sub cast of Bhati Rajputs. Jaisalmer was the main State of Bhatis. However it was not the only state which was ruled by them. Many other states such as Patiala, Nahan, Nabha, Kapurthala, Sirmor, Jabal were also ruled by Bhatis at one time or the other. Bhati Rajputs are scattered all over north India. Many clans of Gujar, Muslims, Sikhs and Panjabi Khatris are also offshoots of Bhatis. The focus of this book is however, on Bhati Rawlot, more commonly known as Rawals.

Mainly there are seven villages of Rawal Rajputs in western Uttar Pradesh. They are Amka, Dhoom Manikpur, Dadri, Ghori Bachhera, Hajipur, Samauddinpur and Jaitpur. With the growing urbanization, many Rawal families have now shifted to other towns. Members of this family are small in number but they have contributed immensely to the society and country in a big way. Majority of them are agriculturist. But many are in defence forces, fought many wars/battles and won accolades. They have been in high government positions, in medical and education profession. Several of them have been in high positions in Public Sector Undertakings and Private Sector.

Shri Mahendra Singh has very assiduously and painstakingly collected information in respect of every member of Rawal Family of Amka that is covered in this book. He also gathered similar information in respect of other family members not belonging to Amka, who have brought pride and glory to the family. I am sure that this book will be a source of inspiration for the younger generation. They will be proud of their rich ancestry and glorious past. I wish more such books should be written to preserve the magnificent and splendid past of renowned and celebrated families.

DR. SANJAY SINH

• 82, Lodhi Estate, New Delhi-110003, Phone : 011-24652176, 24652133
• 'Amethi House', 13 Sardar Patel Marg, Cantt. Lucknow-226002, Phone : 0522-2480097, 2480098
• 'Bhupati Bhawan Palace', Ramnagar, Amethi-227405, Phone : 05368-222664, 222533
Website : drsanjaysinhamethi.in Email : amethipalaceoffice@gmail.com

तीसरे संस्करण की प्रस्तावना

इस पुस्तक का पहला संस्करण मई 2018 में और दूसरा मई 2020 में प्रकाशित किया गया था। तीसरा संस्करण लिखने की आवश्यकता मुख्य रूप से इसलिए पड़ी क्योंकि बहुत सारी सामग्री बाद में प्राप्त हुई। ठाकुर रणधीर सिंह, डॉ. संजीव सिंह के बारे में जानकारी मिलने पर उन पर लेख लिखा गया। परिवार के सदस्यों द्वारा और कई तस्वीरें प्राप्त हुई । इसके अलावा परिवार के ज्वेल्स के नामों की समीक्षा की गई और सूची में कुछ और नाम जोड़े गए। वंश परिचाय, परिवार के राइजिंग स्टार्स और रावल परिवार की आमके में हवेलियां से संबंधित तीन नये अध्याय भी जोड़े गए। ठाकुर मोती राम सिंह और ठाकुर मुखराम सिंह के वंशजों के बारे में अधिक जानकारी परिशिष्ठ । और ।। में दी गई है।

उपरोक्त के अलावा इस पुस्तक का नाम इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में एक ही परिवार की सात पीढ़ियों की सबसे अधिक संख्या में फोटोज संग्रह करने के लिए दर्ज हुआ है । पुस्तक मूल रूप से भविष्य में आने वाली पीडियों के लाभ के लिए लिखी गई है। परिवार की भावी पीढ़ियों को उनके पूर्वजों की उपलब्धियों पर गर्व महसूस होगा। यह उनके लिए प्रेरणा का स्रोत भी होगा। यह पुस्तक कई अन्य लोगों को अपने परिवारों के बारे में इसी तरह की किताब लिखने का प्रयास करने के लिए प्रेरित कर सकती है।

मैं इस परियोजना को पूरा करने में परिवार के सभी सदस्यों के पूर्ण सहयोग के लिए का आभारी हूं। बहुत उपयोगी जानकारी और तस्वीरें प्रदान करने के लिए विशेष रूप से मैं श्री मनोज कुमार सिंह (सयाना), श्री संजय सिंह (काशीपुर), आमका के श्री शशांक सिंह, श्री राहुल रावल और श्री भरत सिंह का आभारी हूं।

महेंद्र सिंह
पूर्व प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय कृषि सहकारी
मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया
792, सागर प्रेसीडेंसी,
एफ -8, सेक्टर -50, नोएडा-201303

दिनांक: 10.4..2021

दुसरे संस्करण की प्रस्तावना

ठाकुर रणजीत सिंह के सबसे बड़े पुत्र ठाकुर मोहर सिंह ने धूम मानिकपुर से आकर 1818 में आमका गाँव की स्थापना की। इस पुस्तक का पहला संस्करण 2018 में आमका के अस्तित्व में आने के 200 साल पूरे होने के अवसर पर प्रकाशित किया गया था। कुछ कारणों से दूसरा संस्करण जारी करने की आवश्यकता महसूस की गई जैसे: -

1) इस पुस्तक में ठाकुर मोहर सिंह के सबसे बड़े पुत्र ठाकुर रामजस सिंह के परिवार के वंशजों के ही नाम थे। आमके के अतिरिक्त, रावल परिवार के कई अन्य सदस्य भी हैं जिन्होंने जीवन में बहुत अच्छा किया, कई बुलंदियों को छूआ है और परिवार के लिए नाम, प्रसिद्धि और गौरव प्राप्त किया। उनके नाम किताब में शामिल नहीं थे क्योंकि वे ठाकुर रामजस सिंह के वंशज नहीं थे । मेरे विचार से उन्हें भी आनुवंशिकता, गाँव या नगर इत्यादि का ध्यान किए बिना पुस्तक में शामिल करना चाहिए।

2) परिवार के वंश वृक्ष की सटीकता को सत्यापित करने के लिए अभी और अधिक शोध की आवश्यकता है । यह वंश वृक्ष राय जी से एकत्रित जानकारी पर आधारित है जो कुछ हद तक संदिग्ध कहा जा सकता है।

3) पहले संस्करण के प्रकाशन के बाद आमका के रावल परिवार के कुछ सदस्यों के विवरण में हुए बदलावों को शामिल करना।

ऊपर वर्णित 1) के अनुसार मैंने ऐसे परिवार के सदस्यों के बारे में पुस्तक में एक नया खंड जोड़ा है, "ज्वेल्स ऑफ रॉव फैमिली"। मैं ऐसे 16 ज्वेल्स की ही खोज कर पाया हूँ, उनके नाम शामिल करने से पुस्तक में लालित्य जुड़ गया है और इसका महत्त्व भी बढ़ गया है।

जहाँ तक वंश वृक्ष की बात है, मैंने रावल (भाटी) जाति का इतिहास नामक पुस्तक जो रावल इतिहास प्रकाशन समिति, भीलवाड़ा, राजस्थान द्वारा प्रकाशित है, का अध्यन किया एवं १९८५ में धूम मानिकपुर के कर्नल धुरेंद्र सिंह रावल द्वारा लिखी गयी पुस्तिका रावल भाटियों का संक्षिप्त इतिहास को भी ध्यान से देखा इसके अलावा धूम मणिकपुर के ही श्री शिव प्रताप सिंह रावल जी द्वारा ठाकुर रणजीत सिंह जी और उनके पहले के पूर्वजों की सूची भी ध्यान में रखी। इन सभी दस्तावेजों और सूचनाओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के बाद, मैंने बेरीसल जी से ठाकुर रणजीत सिंह जी तक की वंशावली बनाई। श्री रंज्जित सिंह जी के बाद की आधिकारिक वंशावली की जानकारी सबको है। नई जानकारी और अनुसंधान के आधार पर, आमका के परिवार का एक संशोधित वंश वृक्ष बनाया है जिसे नीचे दर्शाया गया है: -

"वंश वृक्ष"

जैसलमेर के महाराज जैत सिंह 1496-1528

जैत सिंह के छोटे भाई करम सिंह, अपने दो भाइयों बेरीसलजी और रावल राम के साथ जैसलमेर से 15 जनवरी 1528 को गंगा में स्नान के लिए प्रस्थान किया । करम सिंह और रावल राम स्थानीय राजा लूथ वर्मा के साथ युद्ध में मारे गए थे। बेरीसल जी ने पराजित राजा लूथ वर्मा के 360 गांवों पर कब्जा कर क्षेत्र में अपना शासन स्थापित किया। उनके वंशज निम्नानुसार हैं:

बेरिसाल जी के पुत्र

राव कासलजी

ने कासल गढ़ की स्थापना की, जो अब गौतम बुद्ध नगर में है। "

!

राव जालोजी

!

राव दल्लोजी

!

राव तेसोजी

!

राव शोडोजी

!

राव संपत जी

!

विचित्र सिंहजी

!

अनंगपालजी

!

धरजीत जी

!

मेला वीरमजी

!

राव गारव रावल

!

टोडरमल सिंह

!

मौबत सिंह

!

लच्छी राम सिंह

!

उदय राज सिंह

!

विजय राज सिंह

!

राव रणजीत सिंह जी

!

मोहर सिंह जी ने 1818 में आमका की स्थापना की

सभी उपलब्ध सूचनाओं पर विचार करने के बाद नया वंश वृक्ष तैयार किया गया है। हालाँकि, उपरोक्त वृक्ष की पूर्ण सटीकता का सत्यापन अभी भी बाकि है।

ठाकुर मोहर सिंह के तीन बेटे थे ठाकुर रामजस सिंह, ठाकुर मोती राम सिंह और ठाकुर मुखराम सिंह। मूल योजना के अनुसार, उनके वंशजों पर तीन भागों में चर्चा की जानी थी। चूंकि ठाकुर मोहर सिंह का सबसे बड़े बेटे ठाकुर रामजस सिंह थे इसलिए उनके वंशजों को भाग एक में शामिल किया जाना था। ठाकुर मोती राम सिंह और ठाकुर मुखराम सिंह के वंशजो के बारे में क्रमश भाग दो और तीन में लिखना था चूँकि ठाकुर मोती राम सिंह और ठाकुर मुखराम सिंह के वंशजों के संबंध में पर्याप्त सामग्री उपलब्ध नहीं हो पायी इसलिए, उन्हें भाग ॥ और ॥। में शामिल नहीं किया जा सका। इस कमी को किसी सीमा तक पूरा करने हेतु मैंने पुस्तक के अंत में एनेक्सचर । और ॥ शामिल किये है जिसमे इन दोनों पूर्वजो के वंशजो के नामों का उल्लेख किया गया है और उपलब्ध चित्रों को भी लगा दिया है। इस प्रकार, परिवार के इन शाखाओं के वंश वृक्षों को भी आने वाली पीढ़ियों के लिए संरक्षित हो जायेगा । संभव है भविष्य में कभी, परिवार का कोई अन्य सदस्य इस श्रृंखला आगे ले जाये। यह पुस्तक उसको आगे बढ़ने में सहायक सिद्ध होगी।

मैं धूम मानिकपुरके श्री शिव प्रताप सिंह रावल और कैप्टेन सुजीत सिंह रावल, दादरी के श्री बीरबल सिंह जी और आमका के श्री प्रदीप सिंह रावल का इस पुस्तक के दूसरे संस्करण को संकलित करने में अपना सहयोग देने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। मैं अपनी पोती अनुष्का की भी धन्यवाद करता हूँ जिन्होंने कवर पेज को डिजाइन करने में मेरी मदद की।

महेंद्र सिंह
पूर्व प्रबंध निदेशक, राष्ट्रीय कृषि सहकारी
मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया
792, सागर प्रेसीडेंसी,
एफ -8, सेक्टर -50, नोएडा-201303

दिनांक: २७ मई २०२०

विषय सूची

क्र सं	शीर्षक	पृष्ठ संख्या
I)	**ग्राम आमका - एक अवलोकन**	**1**
II)	**आमों का सेहरा ... सागर खय्यामी**	**2**
III)	**अंग्रेजी में आम का अर्थ "मैंगो" होता है**	**3**
IV)	**आमका के बारे में कुछ रोचक तथ्य**	**4**
V)	**वंश परिचय**	**5-13**
VI)	**रावल फैमिली के ज्वेल्स**	
ग्राम आमका		**14-21**
i)	ठाकुर रघुराज सिंह	14
ii)	ठाकुर रायदल सिंह	15
iii)	ठाकुर महावीर सिंह ठाकुर	15
iv)	ठाकुर रणधीर सिंह	16
v)	फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह	17
vi)	डॉ. संजीव सिंह	18
vii)	ठाकुर संजय सिंह	19
viii)	सुश्री रितू रावल	19
ix)	डॉ. अतर सिंह	21
ग्राम धूम मानिकपुर		**22-32**
i)	ठाकुर टीकम सिंह,	22
ii)	श्रीमती सत्यवती	23
iii)	ठाकुर रवींद्र सिंह रावल	23
iv)	डॉ (प्रो) सुधीर रावल	24
v)	ब्रिगेडियर राजदीप सिंह रावल	26
vi)	कर्नल धुरेंद्र सिंह रावल	28
vii)	ठाकुर विनोद सिंह रावल	30
viii)	कैप्टन विशाल सिंह रावल	32
दादरी		**33-38**
i)	ठाकुर नेपाल सिंह	33
ii)	ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह,	34
iii)	डॉ। (प्रो) राम प्रताप सिंह रावल	35

ग्राम घोड़ी बछेड़ा **38-40**

i) कमोडोर राजिंदर सिंह रावल 38
ii) ठाकुर दिगेंद्र सिंह 40

VII) परिवार की सात पीडियों का विवरण **41-59**

VIII) परिवार के उभरते सितारे **59-63**

1) श्री अमित रावल 59
2) श्री राहुल राहुल 60
3) श्री अमर रावल 60
4) कमांडर अंकित रावत 60
5) श्री शुभेन्द्र रावल 60
6) लेफ्टिनेंट विश्रुत रावल 61
7) लेफ्टिनेंट हितिशा रावल 61
8) सुश्री आरती 61
9) श्री सूर्य प्रताप सिंह 61
10 डॉ साक्षी रावल 62
11) श्री अनुभव रावल 62
12) श्री वंश रावल 62
13) श्री प्रदीप रावल, 62
14) श्री दुष्यंत रावल 63
15) श्री भारत रावल 63
16) सुश्री अपर्णा रावल 63

रावल फैमिली ऑफ आमका

IX) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि 64-66

X) रावल परिवार की आमके में हवेलियां 67-72

XI) 1917 में परिवार की ली गयी फोटो 73

XII) ठाकुर मोहर सिंह / ठाकुर रामजस सिंह का परिवार **74-165**

1. ठाकुर मोहर सिंह 74
2. ठाकुर रामजस सिंह 75
3. ठाकुर श्रीराम सिंह 75
4. ठाकुर चंद्र भान सिंह 76
5. ठाकुर बनी सिंह 77
6. ठाकुर बृज बीर सिंह 78

7. डॉ। लोकेंद्र सिंह रावल 78
8. श्री अशोक रावल 80
9. श्री हरीश रावल 84
10. श्री विनोद रावल 85
11. ठाकुर बिशन सिंह 88
12. ठाकुर राज वीर सिंह 89
13. श्री शैलेन्द्र सिंह 90
14. श्री सत्येन्द्र सिंह 91
15. श्री हरेंद्र सिंह 92
16. ठाकुर सूरज पाल सिंह 93
17. श्री अजय रावल 94
18. ठाकुर महावीर सिंह 98
19. श्री जितेंद्र सिंह 114
20. श्री महेंद्र सिंह 138
21. श्री राहुल रावल 138
22. श्री ज्ञानेन्द्र सिंह 140
23. सुश्री आरती रावल 143
24. श्री अमित रावल 144
25. ठाकुर नरपत सिंह 148
26. ठाकुर उदय वीर सिंह 148
27. श्री चन्द्र पाल सिंह 149
28. श्री रजत रावल 150
29. श्री सुरेन्द्र पाल सिंह 150
30. श्री धीरेन्द्र पाल सिंह 152
31. श्री गौरव रावल 153
32. श्री सौरव रावल 154
33. श्री किशन पाल सिंह 154
34. ठाकुर श्योराज सिंह 149
35. श्री दिग्विजय सिंह 155
36. श्री राजीव रावल 157
37. ठाकुर अमर सिंह 158
38. श्री वीरेंद्र पाल सिंह 160
39. श्री विवेक रावल 161
40. श्री योगेन्द्र पाल सिंह 163
41. श्री भूपेंद्र सिंह 163
42. श्री विक्रम सिंह c 163
43. श्री कमलेन्द्र सिंह 164

XIII) संलग्नक I - ठाकुर मोती राम सिंह के वंशज 166-174
XIV) संलग्नक II - ठाकुर मुख राम सिंह के वंशज 175-181

ग्राम आमका - एक अवलोकन

ग्राम आमका जिला गौतमबुद्धनगर (उत्तर प्रदेश) के तहसील दादरी में है। शुरुआत में दादरी जिला बुलंदशहर की सिकंद्राबाद तहसील का हिस्सा था। जिला गौतमबुद्धनगर का गठन 1997 में गाजियाबाद और बुलंदशहर के कुछ हिस्सों को मिलाकर किया गया था। गौतम बुध नगर जिला बनाने के लिए दनकौर और जेवर ब्लॉक को बुलंदशहर जिले से और दादरी एवम बिसरख ब्लॉक को ग़ज़िआबाद से लिया गया।

ठाकुर मोहर सिंह ने जो ठाकुर रणजीत सिंह के पुत्र थे, 1818 में आमका की स्थापना की थी। ठाकुर रंजीत सिंह मूल रूप से धूम मानिकपुर के निवासी थे। व्यावहारिक कारणों से, ठाकुर मोहर सिंह आमका में स्थानांतरित हो गए। अब 2018 में इस गांव ने अपने अस्तित्व के दो सौ साल पूरे कर लिए हैं।

आमका एक मध्यम आकार का गाँव है जिसमें कुल 195 परिवार रहते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार, इसकी जनसंख्या 1176 है, जिसमें 607 पुरुष हैं जबकि 569 महिलाएं हैं। 0-6 आयु वर्ग के बच्चों की जनसंख्या 183 है जो अपनी कुल जनसंख्या का 15.56% बनाते हैं। औसत लिंग अनुपात 937 है जो उत्तर प्रदेश राज्य की औसत 912 से अधिक है। 2011 की जनगणना के अनुसार बाल लिंग अनुपात 887 है, उत्तर प्रदेश के 902 के औसत से कम है। उत्तर प्रदेश की तुलना में अमका उच्च साक्षरता दर है। 2011 में, उत्तर प्रदेश के 67.68% की तुलना में इसकी साक्षरता दर 81.67% थी। जहां पुरुष साक्षरता 90.78% है, वहीं महिला साक्षरता दर 72.05% थी।

आमका गाँव में सभी समुदायों और जातियों के शांतिपूर्ण अस्तित्व का इतिहास रहा है। केवल 1946 में कुछ भूमि विवाद पैदा हुआ जो इसके पीछें कुछ कड़वी यादें छोड़ गया। इस एकमात्र घटना को छोड़कर, आमका के इतिहास में कभी भी किसी भी हिंसा या असहिष्णुता नहीं हुई है। सामान्य तौर पर कोई अपराध या क्रूरता की सूचना नहीं है।

आमका का कुल क्षेत्रफल लगभग 2100 बीघा है। यह सभी उपजाऊ और सिंचित भूमि है। एक वर्ष में तीन फसलें उगाई जा सकती हैं। मुख्य उपज गेहूं, धान, मक्का, जौ, दालें, चना, मटर, सरसों, सब्जियाँ आदि हैं। गाँव में आम, अमरूद और बेर के बाग हैं।

आमका की सीमा धूम मानिकपुर, दादरी, रूपवास, कैलाश पुर, खेरी और डेयरी स्कीनर गांवों द्वारा साझा की जाती है। ग्राम आमका पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से लगभग 35 किलोमीटर दूर है और ग्रेटर नोएडा में जिला मुख्यालय से लगभग 15 किलोमीटर उत्तर में है

इसका पिन कोड 203207 और एसटीडी कोड 0120 है।

आमों का सेहरा ... सागर खय्यामी

जो आम मैं है वो लब ए शीरीं मैं नहीं रस
रेशों मैं हैं जो शेख की दाढ़ी से मुक़द्दस
आते हैं नज़र आम, तो जाते हैं बदन कस
लंगड़े भी चले जाते हैं, खाने को बनारस
आमद से दसहरी की है, मंडी में दस्हेरा
हर आम नज़र आता है, माशूक़ का चेहरा
एक रंग में हल्का है, तो एक रंग में गहरा
कह डाला क़सीदे के एवज़, आम का सेहरा
खालिक को है मक़सूद, के मख्लूक़ मज़ा ले
वो चीज़ बना दी है के बुड्ढा भी चबा ले
फल कोई ज़माने में नहीं, आम से बेहतर
करता है सना आम की, ग़ालिब सा सुखनवर
इकबाल का एक शेर, कसीदे के बराबर
छिलकों पा भिनक लेते हैं, साग़र से फटीचर
वो लोग जो आमों का मज़ा, पाए हुए हैं
बौर आने से पहले ही, वो बौराए हुए हैं
नफरत है जिसे आम से वो शख्स है बीमार
लेते है शकर आम से अक्सर लब ओ रुखसार
आमों की बनावट में है, मुज़मर तेरा दीदार
बाजू वो दसहरी से, वो केरी से लब ए यार
हैं जाम ओ सुबू खुम कहाँ आँखों से मुशाबे
आँखें तो हैं बस आम की फांकों से मुशाबे
क्या बात है आमों की हों देसी या विदेसी
सुर्खे हों सरौली हों की तुख्मी हों की कलमी
चौसे हों सफैदे हों की खजरी हों की फजरी
एक तरफ़ा क़यामत है मगर आम दसहरी
फिरदौस में गंदुम के एवज़ आम जो खाते
आदम कभी जन्नत से निकाले नहीं जाते

आमका को इंग्लिश में कहते है मैंगो का

हमारे गाँव का नाम आमका फल आम (आम) से जुड़ा हुआ है जिसे फलों का राजा माना जाता है। यह भारत में फलों के बीच प्रमुख स्थान रखता है। केले के अलावा कोई अन्य फल बागवानी के इतिहास में इतनी निकटता से जुड़ा नहीं है। रिकॉर्ड बताते हैं कि आम की खेती 4000 साल से भी अधिक समय से की जाती रही है। यह अपने स्वादिष्ट स्वाद, सुंगध और पोषक मूल्य की वजह से एक जैसे राजाओं और प्रजा का पसंदीदा फल है।

आम दक्षिण एशिया का मूल फल हैं। यहाँ से आम या "भारतीय आम" मंगिफेरा इंडिका ऊषणकटबंधिय क्षेत्रों में सबसे व्यापक रूप से खेती की जाने वाली फलों में से एक बन कर दुनिया भर में फैल गया है।

मेघालय में दामलगिरि के पास पाए जाने वाले आम की पत्तीयों के जीवाश्मों की आनुवंशिक विश्लेषण और आधुनिक आमों की तुलना से पता चलता है कि लगभग छह करोड़ वर्ष पहले भारतीय और एशियाई महाद्वीपीय प्लेटों के जुड़ने से पहले आम की उत्पत्ति का केंद्र प्रायद्वीपीय भारत में था। भारत में संभवतः 2000 ईसा पूर्व में आम की खेती की जाती थी। आम को पूर्वी एशिया में लगभग ४००-५०० ईसा पूर्व में लाया गया था और १५ वीं शताब्दी में फिलीपींस में लाया गया था। पुर्तगाली खोजकर्ता इसे 16 वीं शताब्दी में ब्राज़ील ले गए.

आम के पेड़ 35-40 मीटर तक बढ़ सकते हैं 10 मीटर (33 फीट) के मुकुट के साथ। पेड़ लंबे समय तक जीवित रहते हैं, क्योंकि कुछ नमूने 300 साल बाद भी फलते हुए देखे गए हैं। आमों के आकार, मिठास, त्वचा के रंग भिन्न होते है, जो पीला, सोने जैसा या नारंगी हो सकता है। पत्ते सदाबहार होते हैं। जब पत्ते छोटे होते हैं तो वे नारंगी-गुलाबी होते हैं, तेजी से एक गहरे और चमकदार लाल रंग में बदलते हैं। और अंत में वे परिपक्व होते ही गहरे हरे रंग के हो जाते हैं। अन्य उष्णकटिबंधीय दक्षिणपूर्व एशियाई प्रकार के आमों की तरह भारतीय आम पके होने पर चमकदार पीले होते हैं,

आम को कई सदियों से भारत में लोग जानते है। भारतीय तमिल साहित्यिक कृतियों में आम के फल के संदर्भ में कई सत्यापित खाते और उपन्यास हैं। आम के फल का सबसे प्रमुख ज्ञात संदर्भ 5 वीं सदी के संत कराईकल अम्मैयार का है। इसमें यह उल्लेख है कि उसे अपनी भक्ति के कारण, भगवान शिव से वरदान के रूप में एक आम का फल मिला। अंग्रेजी शब्द "मैंगो" की उत्पत्ति कन्नड़ शब्द मावु या मलयालम शब्द मन्ना या मग्गा से 15 वीं 16 वीं शताब्दी में मसाला व्यापार काल के दौरान हुई थी।

जब 17 वीं शताब्दी में आम को पहली बार अमेरिकी उपनिवेशों में आयात किया गया था तो उन्हें प्रशीतन की कमी के कारण इनका अचार बनाते थे। आम भारत का राष्ट्रीय फल और बांग्लादेश का राष्ट्रीय पेड़ है। यह फिलीपींस का अनौपचारिक राष्ट्रीय फल भी है।

आमका के बारे में कुछ रोचक तथ्य

आमका गाँव को एक आम के पेड़ के कारण इसका नाम मिला। मैंगो का हिंदी में अर्थ होता है आम नामक फल। आमका एकमात्र गाँव नहीं है जिसका नाम एक पेड़ से जुड़ा है। अन्य गाँव भी हैं, जिनके नाम विभिन्न पेड़ों पर आधारित हैं। निम्नलिखित कुछ उदाहरण हैं: -

1. नीमका (पिन कोड: 203155) गौतमबुद्धनगर के जेवर ब्लॉक में एक गाँव है, इसे इसका नाम नीम (आज़ादिरछा इंडिका) पेड़ से मिला है।

2. हरियाणा के फरीदाबाद में एक और नीमका है। इसका पिन कोड 121004 है

3. पीपलका (पिन कोड: 201310) गौतमबुद्धनगर के दनकौर ब्लॉक का एक गाँव है। यह इसे पीपल (फिकस धर्मियोसा) पेड़ से मिला है।

4. बडका 301021 राजस्थान के अलवर जिले की कथुमार तहसील का एक गाँव है। इसका नाम ट्री बैड (बरगद) से मिलता है

5. मथुरा जिले के बलदेव ब्लॉक में एक नंगला शीशम (पिन कोड: 204213) गांव है। इसका नाम शीशम (डालबर्गिया सिसो) पेड़ से मिला।

6. मध्य प्रदेश के बैतूल जिले में एक आंवला तहसील (पिन कोड 460551) है। इसका नाम आंवला (Phyllanthus Emblica) ट्री से लिया गया है।

7. आगरा जिले के बाह ब्लॉक में इमली का पुर (पिन कोड 283113) नामक एक गाँव है।

8. गुजरात के बनासकांठा जिले में ग्राम देवदार पिन 385330

भारत में आमका नाम के कई और गांव भी है

उत्तर प्रदेश के गौतमबुद्ध नगर जिले में आमका (पिन कोड 203207) नाम से एकमात्र गांव नहीं है। भारत में इस नाम से कुछ अन्य गाँव भी हैं। वो हैं:

1. आमका (पिन कोड 497449) छत्तीसगढ़ के कोरिया जिले की खडगवां तहसील में है।

2. आमका (पिन कोड 301027) राजस्थान के जिला अलवर की थानागाजी तहसील में है।

3. आमका (पिन कोड 224229) फैजाबाद की मिल्कीपुर तहसील में है।

4. आमका (पिन कोड 121104) हरियाणा में मेवात जिले की पुहाना तहसील में स्थित है।

इसके अतिरिक्त, हरियाणा में दिल्ली के उत्तर में आमका क्षेत्र 236 KM है। आमका क्षेत्र सूरजपुर, पिंजौर, चंडिकोटला, टांडा बुर्ज, टांडा जैसे शहरों को कवर करता है।

वंश परिचय

श्री कृष्ण

भाटी राजपूत अपने आप को भगवान कृष्ण का वंशज मानते है। वह भगवान विष्णु के अवतार थे । क्यूंकि श्री कृष्णा चंद्रवंशी थे इसलिए भाटी राजपूत भी खुद को चंद्रवंशी कहते है। ऐसा माना जाता है कि भगवान कृष्ण का जन्म 5252 साल पहले मथुरा जेल में रोहिणी नक्षत्र में श्रावण मास की अष्टमी (बुधवार) को 00.00 बजे हुआ था। उनकी जन्म तिथि 18 जुलाई 3228 ईसा पूर्व के रूप में आंकी गई है।

श्री कृष्ण देवकी और वासुदेव के पुत्र थे। चूँकि उनके माता-पिता जेल में थे, इसलिए उन्हें मथुरा के नंदग्राम / गोकुल में यशोदा और नंदा ने पाला था। उनके बड़े भाई बलराम रोहिणी और वासुदेव के पुत्र थे। उनकी एक बहन भी थी जिसका नाम सुभद्रा था। उनकी पत्नी रुक्मिणी, सत्यभामा, जाम्बवती, कालिंदी, मित्रविंदा, नागनजिती, भद्रा और लक्ष्मण थीं

उनका जीवन सरल नहीं था ।वह सांवले रंग के थे और जीवन भर उनका कभी नाम नहीं रक्खा गया। नाम नहीं होने के बावजूद भी उन्हें एक हजार नामों से जाना जाता है। इसी कारण से उन्हें सहस्रनामन भी कहा जाता है। गोकुल के पूरे गाँव ने उनकी सांवली त्वचा के कारण उन्हें कान्हा कहना शुरू कर दिया। काला, छोटा और दत्तक होने के कारण, उनका उपहास भी किया जाता था। उनका बचपन खतरनाक परिस्थितियों से भरा था। श्री कृष्ण गोकुल से सोलह वर्ष की आयु में वृंदावन चले गए।

श्री कृष्ण ने उज्जैन में सांदीपनी ऋषि के आश्रम में अपनी शिक्षा पूरी की। आश्रम में रहते हुए उन्हें अपने गुरु जी के बेटे पुन्नदत्त को छुड़ाने के लिए अफ्रिका से समुद्री लुटेरों से लड़ना पड़ा जिन्हें गुजरात की बंदरगाह प्रभास के पास से अपहरण कर लिया गया था। उनकी शिक्षा के बाद, उन्हें वर्णावत में अपने चचेरे भाई के साथ हुई दुर्घटना के बारे में पता चला। वह उनके बचाव में आये और बाद में अपने चचेरे भाइयों की शादी द्रौपदी से सम्पन कराई । तत्पश्चात,

उन्होंने अपने चचेरे भाइयों को इंद्रप्रस्थ में अपना राज्य स्थापित करने में सहायता की और उनके निर्वासन और महाभारत युद्ध के दौरान अपने चचेरे भाइयों के साथ द्रढ़ता से खड़े रहे।

महाभारत युद्ध कुरुक्षेत्र में लड़ा गया था। उस समय श्री कृष्ण 89 वर्ष के थे। यह युद्ध मृगशिरा शुक्ल एकादशी पर ईसा पूर्व 3139 तदनुसार 8 दिसंबर 3139 ईसा पूर्व को शुरू हुआ था और 25 दिसंबर 3139 को समाप्त हुआ। युद्ध के दौरान, 21 दिसंबर 3139 ईसा पूर्व 3.00 से 5.00 बजे के बीच सूर्य ग्रहण था। इस ग्रहण के दौरान ही जयद्रथ मारा गया। भीष्म पितामह का निधन 2 फरवरी 3138 ईसा पूर्व में हुआ था। यह उत्तरायण की पहली एकादशी थी।

श्री कृष्ण ने अपने जीवन में केवल चार व्यक्तियों को मारा था उनके नाम थे १ चारूना पहलवान, २ उनके मामा कंस ३ शिशुपाल और ४ दंतवक्र। एक भी क्षण ऐसा नहीं था जब वह जीवन में शांति से रहे हो। अपने अस्तित्व के हर मोड़ पर उनके पास चुनौतियाँ ही चुनौतियाँ थीं। उन्होंने अपने सामने अपनी नगरी द्वारका को पानी में डूबते देखा देखा। परन्तु श्री कृष्णा ने सभी चुनौतियों का सामना पूरी जिम्मेदारी की भावना के साथ किया और फिर भी अनासक्त रहे। वह एकमात्र व्यक्ति थे जो अतीत और भविष्य को जानता थे फिर भी हमेशा वर्तमान में रहते थे।

श्री कृष्ण को पास के जंगल में जारा नामक एक शिकारी ने १२ फरवरी ३१०२ ईसा पूर्व को महाभारत के ३६ साल बाद, १२५ वर्ष , ८ महीने और ७ दिन की आयु में मार डाला।

*****

चंद्र:- सर्वप्रथम इस बिंदु पर विचार किया जाना आवश्यक हे की भाटीयों की उत्पत्ति केसे हुयी? और प्राचीन श्रोतों पर द्रष्टि डालने से ज्ञात होता हे की भाटी चंद्रवंशी है | यह तथ्य प्रमाणों से भी परिपुष्ट होता हे इसमें कोई विवाद भी नहीं हे और न किसी कल्पना का हि सहारा लिया गया है | कहने का तात्पर्य यह हे की दुसरे कुछ राजवंशो की उत्पत्ति अग्नि से मानकर उन्हें अग्निवंशी होना स्वीकार किया हे | सूर्यवंशी राठोड़ों के लिए यह लिखा मिलता हे की राठ फाड़ कर बालक को निकालने के कारन राठोड़ कहलाये | ऐसी किवदंतियों से भाटी राजवंश सर्वथा दूर है |

श्रीमदभगवत पुराण में लिखा हे चंद्रमा का जन्म अत्री ऋषि की द्रष्टि के प्रभाव से हुआ था | ब्रह्माजी ने उसे ओषधियों और नक्षत्रों का अधिपति बनाया | प्रतापी चन्द्रमा ने राजसूय यज्ञ किया और तीनो लोको पर विजयी प्राप्त की उसने बलपूर्वक ब्रहस्पति की पत्नी तारा का हरण किया जिसकी कोख से बुद्धिमान 'बुध ' का जन्म हुआ | इसी के वंश में यदु हुआ जिसके वंशज यादव कहलाये | आगे चलकर इसी वंश में राजा भाटी का जन्म हुआ | इस प्रकार चद्रमा के वंशज होने के कारन भाटी चंद्रवंशी कहलाये |

कुल परम्परा

यदु :- भाटी यदुवंशी है | पुराणों के अनुसार यदु का वंश परम पवित्र और मनुष्यों के समस्त पापों को नष्ट करने वाला है | इसलिए इस वंश में भगवान् श्रीकृष्णा ने जन्म लिया तथा और भी अनेक प्रख्यात नृप इस वंश में हुए |

1.कुलदेवता

लक्ष्मीनाथजी :- राजपूतों के अलग -अलग कुलदेवता रहे है | भाटियों ने लक्ष्मीनाथ को अपना कुलदेवता माना है |

2. कुलदेवी

गीयांजी :- भाटियों की कुलदेवी स्वांगयांजी (आवड़जी) है | उन्ही के आशीर्वाद और क्रपा से भाटियों को निरंतर सफलता मिली और घोर संघर्ष व् विपदाओं के बावजूद भी उन्हें कभी साहस नहीं खोया | उनका आत्मविश्वास बनाये रखने में देवी -शक्ति ने सहयोग दिया |

3. इष्टदेव

श्रीकृष्णा :- भाटियों के इष्टदेव भगवान् श्रीकृष्णा है | वे उनकी आराधना और पूजा करते रहे है | श्रीकृष्णा ने गीता के माध्यम से उपदेश देकर जनता का कल्याण किया था | महाभारत के युद्ध में उन्होंने पांडवों का पक्ष लेकर कोरवों को परास्त किया | इतना हि नहीं ,उन्होंने बाणासुर के पक्षधर शिवजी को परास्त कर अपनी लीला व् शक्ति का परिचय दीया | ऐसी मान्यता है की श्रीकृष्णा ने इष्ट रखने वाले भाटी को सदा सफलता मिलती है और उसका आत्मविश्वास कभी नहीं टूटता है |

4. वेद

यजुर्वेद :- वेद संख्या में चार है – ऋग्वेद ,यजुर्वेद ,सामवेद ,और अर्थवेद | इनमे प्रत्येक में चार भाग है – संहिता ,ब्राहण, आरण्यक और उपनिषद | संहिता में देवताओं की स्तुति के मन्त्र दिए गए हे तथा ;ब्राहण ' में ग्रंथो में मंत्रो की व्याख्या की गयी है | और उपनिषदों में दार्शनिक सिद्धांतों का विवेचन मिलता है | इनके रचयिता गृत्समद ,विश्वामित्र ,अत्री और वामदेव ऋषि थे | यह सम्पूर्ण साहित्य हजारों वर्षों तक गुरु-शिष्यपरम्परा द्वारा मौखिक रूप से ऐक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को प्राप्त होता रहा | बुद्ध काल में इसके लेखन के संकेत मिलते है परन्तु वेदों से हमें इतिहास की पूर्ण जानकारी नहीं मिलती है | इसके बाद लिखे गए पुराण हमें प्राचीन इतिहास का बोध कराते है | भाटियों ने यजुर्वेद को मान्यता दी है | स्वामी दयानंद सरस्वती यजुर्वेद का भाष्य करते हुए लिखते है " मनुष्यों ,सब जगत की उत्पत्ति करने वाला ,सम्पूर्ण ऐश्वर्ययुक्त सब सुखों के देने और सब विद्या को प्रसिद्ध करने वाला परमात्मा है | लोगो को चाहिए की अच्छे अच्छे कर्मों से प्रजा की रक्षा तथा उतम गुणों से पुत्रादि की सिक्षा सदेव करें की जिससे प्रबल रोग ,विध्न और चोरों का आभाव होकर प्रजा व् पुत्रादि सब सुखों को प्राप्त हो | यही श्रेष्ठ काम सब सुखों की खान है | इश्वर आज्ञा देता है की सब मनुष्यों को अपना दुष्ट स्वभाव छोड़कर विध्या और धर्म के उपदेश से ओरों को भी दुष्टता आदी अधर्म के व्यवहारों से अलग करना चाहिए | इस प्रकार यजुर्वेद ज्ञान का भंडार है | इसके चालीस अध्याय में १९७५ मंत्र है

5.गोत्र

अत्री :- कुछ लोग गोत्र का तात्पर्य मूल पुरुष से मानने की भूल करते है | वस्तुत गोत्र का तात्पर्य मूल पुरुष से नहीं हे बल्कि ब्राहण से है जो वेदादि शास्त्रों का अध्ययन कराता था | विवाह ,हवन इत्यादि सुभ कार्य के समय अग्नि की स्तुति करने वाला ब्राहण अपने पूर्व पुरुष को याद करता है इसलिए वह हवन में आसीन व्यक्ति को | वेड के सूक्तों से जिन्होंने आपकी स्तुति की उनका में वंशज हूँ | यदुवंशियों के लिए अत्री ऋषि ने वेदों की रचना की थी | इसलिए इनका गोत्र " अत्री " कहलाया |

6.छत्र

मेघाडम्बर:- श्री कृष्णा का विवाह कुनणपुर के राजा भीष्मक की पुत्री रुकमणी के साथ हुआ | श्रीकृष्ण जब कुनणपुर गए तब उनका सत्कार नहीं होने से वे कृतकैथ के घर रुके | उस समय इंद्र ने लवाजमा भेजा | जरासंध के अलावा सभी राजाओं ने नजराना किया | श्रीकृषण ने लवाजमा की सभी वस्तुएं पुनः लौटा दी परन्तु मेघाडम्बर छत्र रख लिया | श्रीकृष्ण ने कहा की जब तक मेघाडम्बर रहेगा यदुवंशी राजा बने रहेंगे | अब यह मेघाडम्बर छत्र जैसलमेर के राजघराने की सोभा बढ़ा रहा है |

7.ध्वज

भगवा पीला रंग :- पीला रंग समृदधि का सूचक रहा है और भगवा रंग पवित्र माना गया है | इसके अतिरिक्त पीले रंग का सूत्र कृष्ण भगवान के पीताम्बर से और भगवा रंग नाथों के प्रती आस्था से जुड़ा हुआ है | इसलिए भाटी वंश के ध्वज में पीले और भगवा रंग को स्थान दिया गया है |

8.ढोल

भंवर :- सर्वप्रथम महादेवजी ने नृत्य के समय 14 बार ढोल बजा कर 14 महेश्वर सूत्रों का निर्माण किया था | ढोल को सब वाध्यों का शिरोमणि मानते हुए use पूजते आये है | महाभारत के समय भी ढोल का विशेष महत्व रहा है | ढोल का प्रयोग ऐक और जहाँ युद्ध के समय योद्धाओं को एकत्र करने के लिए किया जाता था वही दुसरी और विवाह इत्यादि मांगलिक अवसरों पर भी इसे बजाया जाता है | भाटियों ने अपने ढोल का नाम भंवर रखा |

9. नक्कारा

अग्नजोत (अगजीत)- नक्कारा अथवा नगारा (नगाड़ा) ढोल का हि ऐक रूप है | युद्ध के समय ढोल घोड़े पर नहीं रखा जा सकता था इसलिए इसे दो हिस्सो में विभक्त कर नगारे का स्वरूप दिया गया था | नगारा बजाकर युद्ध का श्रीगणेश किया जाता था | विशेष पराक्रम दिखाने पर राज्य की और से ठिकानेदारों को नगारा ,ढोल ,तलवार और घोडा आदी दिए जाते थे | ऐसे ठिकाने ' नगारबंद' ठिकाने कहलाते थे | घोड़े पर कसे जाने वाले नगारे को 'अस्पी' , ऊंट पर रखे जाने वाले नगारे को सुतरी' और हाथी पर रखे जाने नगारे को ' रणजीत ' कहा गया है |"

भाटियों ने अपने नगारे का नाम अग्नजोत रखा है | अर्थात ऐसा चमत्कारी नक्कारा जिसके बजने से अग्नि प्रज्वलित हो जाय | अग्नि से जहाँ ऐक और प्रकाश फैलता है और ऊर्जा मिलती है वही अग्नि दूसरी और शत्रुओं का विनाश भी करती है | कुछ रावों की बहियों में इसका नाम " अगजीत " मिलता है , जिसका अर्थ है पापों पर विजय पाने वाला ,नगारा |

10.गुरु

रतननाथ :- नाथ सम्प्रदाय का सूत्र भाटी राजवंश के साथ जुड़ा हुआ है | ऐक और नाथ योगियों के आशीर्वाद से भाटियों का कल्याण हुआ तो दूसरी और भाटी राजवंश का पश्रय मिलने पर नाथ संप्रदाय की विकासयात्रा को विशेष बल मिला | 9वीं शताब्दी के मध्य योगी रतननाथ को देरावर के शासक देवराज भाटी को यह आशीर्वाद दिया था की भाटी शासकों का इस क्षेत्र में चिरस्थायी राज्य रहेगा | इसके बारे में यह कथा प्रचलित हे की रतननाथ ने ऐक चमत्कारी

रस्कुप्पी वरीहायियों के यहाँ रखी | वरीहायियो के जमाई देवराज भाटी ने उस कुप्पी को अपने कब्जे में कर उसके चमत्कार से गढ़ का निर्माण कराया | रतननाथ को जब इस बात का पता चला तो वह देवराज के पास गए और उन्होंने उस कुप्पी के बारे में पूछताछ की | तब देवराज ने सारी बतला दी | इस पर रतननाथ बहुत खुश हुए और कहा की " टू हमारा नाम और सिक्का आपने मस्तक पर धारण कर | तेरा बल कीर्ति दोनों बढेगी और तेरे वंशजों का यहाँ चिरस्थायी राज्य रहेगा | राजगद्दी पर आसीन होते समय तू रावल की पदवी और जोगी का भगवा ' भेष ' अवश्य धारण करना |"

भाटी शासकों ने तब से रावल की उपाधि धारण की और रतननाथ को अपना गुरु मानते हुए उनके नियमों का पालन किया |

11.पुरोहित

पुष्करणा ब्राहण :- भाटियों के पुरोहित पुष्पकरणा ब्राहण माने गए है | पुष्कर के पीछे ये ब्राहण पुष्पकरणा कहलाये | इनका बाहुल्य ,जोधपुर और बीकानेर में रहा है | धार्मिक अनुष्ठानो को किर्यान्वित कराने में इनका महतवपूर्ण योगदान रहता आया है |

12 पोळपात

रतनू चारण – भाटी विजयराज चुंडाला जब वराहियों के हाथ से मारा गया तो उस समय उसका प्रोहित लूणा उसके कंवर देवराज के प्राण बचाने में सफल हुए | कुंवर को लेकर वह पोकरण के पास अपने गाँव में जाकर रुके | वराहियों ने उसका पीछा करते हुए वहां आ धमके | उन्होंने जब बालक के बारे में पूछताछ की तो लूणा ने बताया की मेरा बेटा है | परन्तु वराहियों को विस्वाश नहीं हुआ | तब लूणा ने आपने बेटे रतनू को साथ में बिठाकर खाना खिलाया | इससे देवराज के प्राण बच गए परन्तु ब्राह्मणों ने रतनू को जातिच्युत कर दिया | इस पर वह सोरठ जाने को मजबूर हुआ | जब देवराज अपना राज्य हस्तगत करने में सफल हुआ तब उसने रतनू का पता लगाया और सोरठ से बुलाकर सम्मानित किया और अपना पोळपात बनाया | रतनू साख में डूंगरसी ,रतनू ,गोकल रतनू आदी कई प्रख्यात चारण हुए है |

13 नदी

यमुना :- भगवान् श्रीकृष्ण की राजधानी यमुना नदी किनारे पर रही ,इसी के कारन भाटी यमुना को पवित्र मानते है |

14.वृक्ष

पीपल और कदम्ब :- भगवान् श्री कृष्णा ने गीता के उपदेश में पीपल की गणना सर्वश्रेष्ठ वृक्षों में की है | वेसे पीपल के पेड़ की तरह प्रगतिशील व् विकासशील प्रवर्ती के रहे है | जहाँ तक कदम्ब का प्रश्न है , इसका सूत्र भगवान् श्री कृष्णा की क्रीड़ा स्थली यमुना नदी के किनारे कदम्ब के पेड़ो की घनी छाया में रही थी | इसके आलावा यह पेड़ हमेशा हर भरा रहता है इसलिए भाटियों ने इसे अंगीकार किया हे | वृहत्संहिता में लिखा है की कदम्ब की लकड़ी के पलंग पर शयन करना मंगलकारी होता है | चरक संहिता के अनुसार इसका फूल विषनीवारक् तथा कफ और वात को बढ़ाने वाला होता है | वस्तुतः अध्यात्मिक और संस्कृतिक उन्नयन में कदम्ब का जितना महत्व रहा है | उतना महत्व समस्त वनस्पतिजगत में अन्य वृक्ष का नहीं रहा है

15. राग

मांड :- जैसलमेर का क्षेत्र मांड प्रदेश के नाम से भी जाना गया है | इस क्षेत्र में विशेष राग से गीत गाये जाते है जिसे मांड -राग भी कहते है | यह मधुर राग अपने आप में अलग पहचान लिए हुए है | मूमल ,रतनराणा ,बायरीयो ,कुरंजा आदी गीत मांड राग में गाये जाने की ऐक दीर्धकालीन परम्परा रही है |

16. माला

वैजयन्ती:- भगवान् श्रीकृष्णा ने जब मुचुकंद (इक्ष्वाकुवशी महाराजा मान्धाता का पुत्र जो गुफा में सोया हुआ था) को दर्शन दिया , उस समय उनके रेशमी पीताम्बर धारण किया हुआ था और उनके घुटनों तक वैजयंती माला लटक रही थी | भाटियों ने इसी नाम की माला को अंगीकार किया | यह माला विजय की प्रतिक मानी जाती है |

17. विरुद

उतर भड़ किवाड़ भाटी :-सभी राजवंशो ने उल्लेखनीय कार्य सम्पादित कर अपनी विशिष्ट पहचान बनायीं और उसी के अनुरूप उन्हें विरुद प्राप्त हुआ | दुसरे शब्दों में हम कह सकते हे की ‘; विरुद ” शब्द से उनकी शोर्य -गाथा और चारित्रिक गुणों का आभास होता है | ढोली और राव भाट जब ठिकानों में उपस्थित होते है , तो वे उस वंश के पूर्वजों की वंशावली का उद्घोष करते हुए उन्हें विरुद सुनते है

भाटियों ने उतर दिशा से भारत पर आक्रमण करने वाले आततायियों का सफलतापूर्ण मुकाबला किया था , अतः वे उतर भड़ किवाड़ भाटी अर्थात उतरी भारत के रक्षक कहलाये | राष्ट्रिय भावना व् गुमेज गाथाओं से मंडित यह विरुद जैसलमेर के राज्य चिन्ह पर अंकित किया गया है

18. अभिवादन

जयश्री कृष्णा :- ऐक दुसरे से मिलते समय भाटी ” जय श्री कृष्णा ” कहकर अभिवादन करते है | पत्र लिखते वक्त भी जय श्री कृष्णा मालूम हो लिखा जाता है |

19. राजचिन्ह

राजचिन्ह का ऐतिहासिक महत्व रहा है | प्रत्येक चिन्ह के अंकन के पीछे ऐतिहासिक घटना जुडी हुयी रहती हे | जैसलमेर के राज्यचिन्ह में ऐक ढाल पर दुर्ग की बुर्ज और ऐक योद्धा की नंगी भुजा में मुदा हुआ भाला आक्रमण करते हुए दर्शाया गया है | श्री कृष्णा के समय मगध के राजा जरासंघ के पास चमत्कारी भाला था | यादवों ने जरासंघ का गर्व तोड़ने के लिए देवी स्वांगियाजी का प्रतिक माना गया है | ढाल के दोनों हिरण दर्शाए गए है जो चंद्रमा के वाहन है | नीचे ” छत्राला यादवपती ” और उतर भड़ किवाड़ भाटी अंकित है | जैसलमेर -नरेशों के राजतिलक के समय याचक चारणों को छत्र का दान दिया जाता रहा है इसलिए याचक उन्हें ” छत्राला यादव ” कहते है | इस प्रकार राज्यचिन्ह के ये सूत्र भाटियों के गौरव और उनकी आस्थाओं के प्रतिक रहे है

राजपूतों की वंशावली

दस_रवि_से_दस_चन्द्र_से_बारह_ऋषिज_प्रमाण,
चार_हुतासन_सों_भये_कुल_छत्तिस_वंश_प्रमाण
भौमवंश_से_धाकरे_टांक_नाग_उनमान
चौहानी_चौबीस_बंटि_कुल_बासठ_वंश_प्रमाण

अर्थ:-दस सूर्य वंशीय क्षत्रिय, दस चन्द्र वंशीय, बारह ऋषि वंशी एवं चार अग्नि वंशीय कुल छत्तिस क्षत्रिय वंशों का प्रमाण है, बाद में भौमवंश. , नागवंश क्षत्रियों को सामने करने के बाद जब चौहान वंश चौबीस अलग- अलग वंशों में जाने लगा तब क्षत्रियों के बासठ अंशों का पमाण मिलता है।

सूर्य वंश की दस शाखायें:–

१. कछवाह	२. राठौड	३. बडगूजर	४. सिकरवार
५. सिसोदिया	६.गहलोत	७.गौर	८.गहलबार
९.रेकबार	१०.जुनने		

चन्द्र वंश की दस शाखायें:–

१.जादौन	२.भाटी	३.तोमर	४.चन्देल
५.छोंकर	६.होंड	७.पुण्डीर	८.कटैरिया
९.स्वांगवंश	१०.वैस		

अग्निवंश की चार शाखायें:–

१.चौहान	२.सोलंकी	३.परिहार	४.परमार.

ऋषिवंश की बारह शाखायें:-

१.सेंगर	२.दीक्षित	३.दायमा	४.गौतम
५.अनवार (राजा जनक के वंशज)	६.विसेन	७.करछुल	८.हय
९.अबकू तबकू	१०.कठोक्स	११.द्लेला	१२.बुन्देला

चौहान वंश की चौबीस शाखायें:–

१.हाडा	२.खींची	३.सोनीगारा	४.पाविया
५.पुरबिया	६.संचौरा	७.मेलवाल	८.भदौरिया
९.निर्वाण	१०.मलानी	११.धुरा	१२.मडरेवा
१३.सनीखेची	१४.वारेछा	१५.पसेरिया	१६.बालेछा
१७.रूसिया	१८.चांदा	१९.निकूम	२०.भावर
२१.छछेरिया	२२.उजवानिया	२३.देवडा	२४.बनकर

क्षत्रिय जातियो की सूची

(क्रमांक/ नाम/ गोत्र/वंश / स्थान और जिला)
१.सूर्यवंशी /भारद्वाज/सूर्य /बुलन्दशहर / आगरा , मेरठ, अलीगढ
२.गहलोत / बैजवापेण/सूर्य /मथुरा, कानपुर, और पूर्वी जिले
३.सिसोदिया /बैजवापेड/ सूर्य /महाराणा उदयपुर स्टेट
४.कछवाहा/ मानव/सूर्य /महाराजा जयपुर और ग्वालियर राज्य
५.राठोड/ कश्यप/ सूर्य / जोधपुर, बीकानेर और पूर्व और मालवा
६.सोमवंशी/अत्रय/ चन्द/प्रतापगढ और जिला हरदोई
७.यदुवंशी/ अत्रय/ चन्दराजकरौली, राजपूताने में
८.भाटी / अत्रय/ जादौनमहाराजा जैसलमेर. , राजपूताना
९.जाडेचा/ अत्रय/ यदुवंशीमहाराजा कच्छ, भुज
१०.जादवा/अत्रय/ जादौनशाखा अवा. कोटला ऊमरगढ, आगरा
११.तोमर/ व्याघ्र/चन्दपाटन के राव, तंवरघार, जिला ग्वालियर
१२.कटियार/ व्याघ्र /तोंवरधरमपुर का राज और हरदोई
१३.पालीवार/व्याघ्र/ तोंवरगोरखपुर/
१४.परिहार/ कौशल्य/अग्नि /इतिहास में जानना चाहिये
१५.तखी/ कौशल्य/ परिहारपंजाब, कांगडा , जालंधर, जम्मू में
१६.पंवार/ वशिष्ठ /अग्नि /मालवा, मेवाड, धौलपुर, पूर्व मे बलिया
१७.सोलंकी/ भारद्वाज/ अग्नि /राजपूताना , मालवा सोरों, जिला एटा
१८.चौहान/ वत्स /अग्नि / राजपूताना पूर्व और सर्वत्र
१९.हाडा/ वत्स / चौहान / कोटा , बूंदी और हाडौती देश
२०.खींची / वत्स/ चौहानखींचीवाडा , मालवा , ग्वालियर
२१.भदौरिया/ वत्स / चौहान/नौगंवां , पारना, आगरा, इटावा ,गालियर
२२.देवडा/वत्स/चौहान /राजपूताना, सिरोही राज
२३.शम्भरी /वत्स / चौहाननीमराणा , रानी का रायपुर, पंजाब
२४.बच्छगोत्री/ वत्स/ चौहानप्रतापगढ, सुल्तानपुर
२५.राजकुमार/वत्स / चौहान/दियरा , कुडवार, फ़तेहपुर जिला
२६.पवैया /वत्स / चौहान /ग्वालियर
२७.गौर, गौड/ भारद्वाज / सूर्य/शिवगढ, रायबरेली, कानपुर, लखनऊ
२८.वैस/ भारद्वाज/चन्द्र /उन्नाव, रायबरेली , मैनपुरी पूर्व में
२९.गेहरवार/ कश्यप / सूर्य / माडा , हरदोई, उन्नाव, बांदा पूर्व
३०.सेंगर/ गौतम/ ब्रह्मक्षत्रिय/जगम्बनपुर, भरेह, इटावा , जालौन,
३१.कनपुरिया/भारद्वाज / ब्रह्मक्षत्रिय/पूर्व में राजा अवध के जिलों में हैं
३२.बिसैन/ वत्स / ब्रह्मक्षत्रिय / गोरखपुर ,गोंडा , प्रतापगढ में हैं
३३.निकुम्भ/ वशिष्ठ/सूर्य/गोरखपुर, आजमगढ, हरदोई, जौनपुर
३४.सिरसेत/भारद्वाज /सूर्य/गाजीपुर, बस्ती, गोरखपुर
३५.कटहरिया/वशिष्ठ्या भारद्वाज / सूर्य/ बरेली, बंदायूं, मुरादाबाद, शहाजहांपुर
३६.वाच्छिल/अत्रय/ वच्छिलचन्द्र/ मथुरा, बुलन्दशहर, शाहजहांपुर
३७.बढगूजर/वशिष्ठ/सूर्य/अनूपशहर, एटा , अलीगढ, मैनपुरी , मुरादाबाद , हिसार, गुडगांव, जयपुर
३८.झाला/मरीच /कश्यप/चन्द्र/धागधरा , मेवाड, झालावाड, कोटा
३९.गौतम/गौतम/ ब्रह्मक्षत्रिय/ राजा अर्गल , फ़तेहपुर
४०.रैकवार/ भारद्वाज/ सूर्य/ बहरायच, सीतापुर, बाराबंकी

४१.करचुल /हैहय/कृष्णात्रेय/चन्द्र/बलिया ,फ़ैजाबाद, अवध
४२.चन्देल/चान्द्रायन/चन्द्रवंशी/गिद्धौर, कानपुर, फ़र्रुखाबाद, बुन्देलखंड, पंजाब, गुजरात
४३.जनवार/कौशल्य/सोलंकी शाखा/बलरामपुर, अवध के जिलों में
४४.बहरेलिया / भारद्वाज/ वैस की गोद/ सिसोदिया/रायबरेली, बाराबंकी
४५.दीत्तत/कश्यप/सूर्यवंश की शाखा/ उन्नाव, बस्ती, प्रतापगढ ,जौनपुर , रायबरेली, बांदा
४६.सिलार/ शौनिक/चन्द्र/ सूरत , राजपूतानी
४७.सिकरवार/ भारद्वाज/ बढगूजर/ ग्वालियर, आगरा और उत्तरप्रदेश में
४८.सुरवार/ गर्ग/ सूर्य /कठियावाड में
४९.सुर्वैया/वशिष्ठ/यदुवंश/काठियावाड
५०.मोरी/ ब्रह्मगौतम/सूर्य/मथुरा, आगरा, धौलपुर
५१.टांक (तत्तक)/शौनिक / नागवंश,मैनपुरी और पंजाब
५२.गुप्त/गार्ग्य/चन्द्र/अब इस वंश का पता नही है
५३.कौशिक/कौशिक/चन्द्र/ बलिया, आजमगढ, गोरखपुर
५४.भृगुवंशी/भार्गव/चन्द्र/वनारस, बलिया , आजमगढ, गोरखपुर

भाटी राजपूतों की शाखाएँ

भाटी यादव-अभोरिया भाटीं, गोगली भाटी, सिंघवार भाटी, लडूवा भाटी, चहल भाटी, खंगार भाटी, धूकड़ भाटी, बुद्ध भाटी, धाराधर भाटी, कूलरिया भाटी, लोहा भाटी, उतैराव भाटी, चनहड़ भाटी, खापरिया भाटी, थहीम भाटी, जेतुग भाटी, घोटक भाटी, चेदू भाटी, गाहाड़ भाटी, पोहड़ भाटी, छेना भाटी, अटैरण भाटीं, लहुवा भाटी, लपोड़ भाटी, पाहू भाटी, इणधा भाटी, मूलपसाव, धोवाभाटी, पावसणा भाटी, 'अबोहरिया भाटी, राहड़ भाटी, हटा भाटी, भीया भाटी, बानर भाटी, पलासिया भाटी, मोकल भाटी, महाजाल भाटी, जसोड़ भाटी, जयचन्द भाटी, सिहड़ भाटी, अड़कमल भाटी. जैतसिंहोत भाटी, चरड़ा भाटी, लूणराव भाटी, कान्हड़ भाटी, ऊनड़ भाटी, सता भाटी, कीता भाटी, गोगादे भाटी, हमीर भाटी, हम्मीरोत भाटी, अर्जुनोत्त भाटी, केहरोत भाटी, सोम भाटी, रूपसिंहोत भाटी, मेहजलं भाटी, जेसा भाटी, सांवतसी भाटी, एपिया भाटी, तेजसिंहोन भाटी, साधर भाटी, गोपालदे भाटी, लाखण (लखमणा) भाटी, राजधर भाटी, परबत भाटी. हक्का भाटी, कुम्भा भाटी, केलायचा भाटी, भेसडेचा भाटी, सातलोत भाटी, मदा भाटी, ठाकृत्रसिंहोत भाटी, देवीदासोत भाटी, दूदा भाटी, बेरीशालोत भाटी, ल्लूणकणोंत्तभाटी, दीदा भाटी, मालदेवोत , खेत्तसिंहोत्त भाटी, नारायणदायोन भाटी, सगतहोत भाटी, -आखेराजोत भाटी, कानोत, पृथ्वीराजोत भाटी, उदयसिंहोत्त भाटी, दूदावत भाटी, तेजमालोत भाटी, गिरधारीदासोत्त भाटी, वीरमदेवोत्त माटी, रावलोत भाटी, रावलोत देरावरिया भाटी, किलण भाटी, बिक्रमाजित केलण भाटी, शेखसरिया भाटी, हरभम भाटी, नेतावत भाटी, किशनावत भाटी, खीया भाटी-जेतावत, करणोत, धनराजोत्त माटी, बरसिह भाटी-वाला, सातल दूर्जनसालोन भाटी, पूणलिया भाटीं, बिदा भाटी, हमीर भाटी, शूरसेन यादव-बागड़िया, बनाफर छोकर

रावल परिवार के बहुमूल्य रत्न

यह पुस्तक मुख्यतः ठाकुर मोहर सिंह के पुत्र ठाकुर रामजस सिंह के वंशजों और एक सिमित सीमा तक ठाकुर मोतीराम सिंह और ठाकुर मुखराम सिंह के वंशजों के संबंध में जानकारी देती है। केवल आमका के ही नहीं बल्कि अन्य स्थानों जैसे धूम मानिकपुर, दादरी, घोड़ी बचेरा आदि में भी परिवार के अन्य सदस्य रहते हैं, जिन्होंने जीवन में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है, सरकारी और निजी संगठनों में उच्च स्थान प्राप्त किया है। इन्होने रावल परिवार नाम रोशन किया है और शोहरत दिलाई है । यदि उनके नाम और उपलब्धियों का इसमें उल्लेख नहीं किया गया तो पुस्तक अधूरी मानी जाएगी। ऐसे परिवार के सदस्यों के संबंध में जानकारी एकत्र करने का प्रयास किया गया है, ताकि अधिक से अधिक लोगों को इस श्रेणी में लाया जा सके । हालांकि, सूची अभी भी अधूरी है।परन्तु अभी परिवार के निम्नलिखित बहुमूल्य सदस्यों के बारे में जानकारी शामिल की गई है:

आमका

1. ठाकुर रघुराज सिंह रावल

ठाकुर रघुराज सिंह रावल

ठाकुर रघुराज सिंह रावल आमका के ठाकुर रिसाल सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। वह रावल परिवार के सबसे प्रतिभाशाली और उच्च सम्मानित व्यक्तित्वों में से एक थे। शिक्षा पूरी करने के बाद, वह उत्तर प्रदेश के आबकारी विभाग में निरीक्षक के पद पर उनकी नियुक्ती हुई। अपने सेवा काल के दौरान जब उनकी नियुक्ति मथुरा में थी तब उन्होंने तीन अंग्रेज़ लोगो को आतंकवाद सम्बंधित सामग्री की तस्करी करते हुए पकड़ा। अंग्रेजों के शासन काल में अंग्रेजों की गिरफ्तारी के लिए किसी भारतीय अधिकारी की ओर से यह बहुत ही साहसिक और अकल्पनीय कार्य था। सरकार द्वारा उनकी इस कार्रवाई की काफी सराहना की गई। इस सराहनीय उपलब्धि एवम उनके द्वारा किये गए अन्य उत्कृष्ट कार्यो के लिए, ब्रिटिश सरकार ने उन्हें ऑर्डर ऑफ द ब्रिटिश एम्पायर (OBE) की उपाधि से सम्मानित किया। वह यूपी सरकार से आबकारी आयुक्त के रूप में सेवानिवृत्त हुए।

ठाकुर रघुराज सिंह ने गाजियाबाद में मॉडल टाउन में एक बड़ा घर बनाया। उनके कोई संतान नहीं थी। इसलिए, उन्होंने सुश्री सरोज नाम की एक बेटी को गोद लिया। जिसका विवाह उन्होंने DRDO के एक वरिष्ठ अधिकारी श्री के.पी. सिंह के साथ संपन्न कराया। ठाकुर रघु राज सिंह का निधन वर्ष 1962 में हुआ था

2. ठाकुर रायदल सिंह, मुंसिफ साहब

ठाकुर रायदल सिंह

ठाकुर रायदल सिंह अपने समय की प्रमुख हस्तियों में से एक थे। वह क्षेत्र के जाने-माने और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। 1914 से 1919 तक प्रथम विश्व युद्ध के दौरान, उन्होंने भारतीय सेना के लिए भर्ती अभियान में सक्रिय रूप से भाग लिया। सेना को बड़ी संख्या में सैनिक उपलब्ध कराने में उनका महत्वपूर्ण योगदान था। उनकी सेवाओं को मान्यता प्रदान करने हेतु ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मुंसिफ यानी सिविल जज की उपाधि से सम्मानित किया। इसके अतिरिक्त ठाकुर रायदल सिंह को दो दुनाली बंदूके भी इनाम में दी। इन बंदूकों पर उनका का नाम अंकित था। मुंसिफ के रूप में, वह आमका में न्यायालय का संचालन करते थे। उनको केवल सिविल केसेस को सुंनने और उन पर आदेश देने का अधिकार था। उनके आदेशों को अन्य सिविल न्यायालयों के आदेशों की तरह लागू किया जाता था। ठाकुर रायदल सिंह का कोई पुत्र नहीं था। उसके एक लड़की थी। उसका नाम हरबंस कुंवर था। जिसका विवाह हरियाणा के जटौली गाँव के कुंवर रिसाल सिंह के साथ हुआ था

3. ठाकुर महावीर सिंह

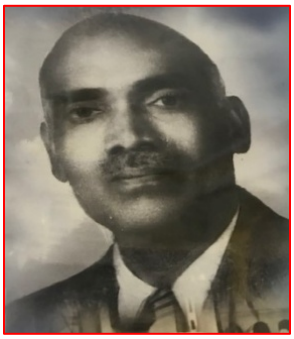

ठाकुर महावीर सिंह

श्रीमती गजेंद्र वती

ठाकुर महावीर सिंह, ठाकुर चंद्र भान सिंह के सबसे छोटे बेटे थे। उनका जन्म ज्येष्ठ बदी द्वादशी संवत 1958 तदनुसार 30 मई 1901 को आमका में हुआ था। सरकारी दस्तावेज़ों में उनके जन्म की तारीख 1 जुलाई 1903 लिखी हुई है। उन्होंने 1923 में बलवंत राजपूत हाई स्कूल, आगरा से हाईस्कूल की परीक्षा पास की। 1925 में एफ एससी पास किया और 1929 में आगरा विश्वविद्यालय से विज्ञान में सनातक की उपाधि ग्रहण की। 1930 से 1932 तक बनारस हिन्दू विश्वविद्याल्य में मास्टर ऑफ़ आर्ट्स की राजनीतिज्ञ शास्त्र में पढ़ाई की। ठाकुर महावीर सिंह आमका के रावल परिवार से पहले विज्ञान स्नातक थे। अपने छात्र काल में ठाकुर महावीर सिंह एक अच्छे खिलाड़ी थे। उन्होंने फुटबॉल, लंबी कूद, ऊंची कूद और व्यायामशाला सहित विभिन्न खेलों में भाग लिया। वह कुश्ती भी लड़ते थे।

शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने पटियाला राज्य पुलिस में सहायक पुलिस अधीक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया। वहां काम करते हुए, ठाकुर महावीर सिंह ने टारगेट शूटिंग प्रतियोगिता में भाग लिया जहां वह प्रथम स्थान पर आए। पुलिस महानिरीक्षक, पटियाला ने 23 दिसंबर 1937 को एक प्रमाण पत्र जारी किया, जिसमें उन्होंने संभावित 60 शॉट्स में से 55 स्कोर करके सूची में शीर्ष स्थान पहुंचने के लिए ठाकुर महावीर सिंह की प्रशंसा की।

बाद में वह लगभग तीन वर्षों के लिए खरीद (आपूर्ति विभाग) के मुख्य नियंत्रक के कार्यालय में सरकारी सेवा में नियुक्त हुये । इसके बाद, उन्होंने 24.01.1949 तक पुनर्वास और पुनर्वास महानिदेशालय में सहायक प्रबंधक / सहायक रोजगार अधिकारी और जनसंपर्क अधिकारी के रूप में क्षेत्रीय रोजगार कार्यालय दिल्ली में काम किया।

25 जनवरी 1949 को उन्हें संसद में कांग्रेस पार्टी के मुख्य सचिव श्री सत्य नारायण सिन्हा के निजी सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। श्री सिन्हा संसदीय मामलों के केंद्रीय मंत्री और मध्य प्रदेश के राज्यपाल भी बने।

ठाकुर महावीर सिंह सन 1950 में भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय के आयात और निर्यात कार्यालय में आयात और निर्यात के सहायक नियंत्रक बने जहाँ उन्होंने 1957 तक काम किया। इसके बाद उनकी पदोन्नति श्रेणी एक के राजपत्रित पद नियंत्रक (आयात और निर्यात) पर हो गई जहाँ से वह 1 जुलाई 1958 को सेवानिवृत्त हुए। उन्हें उसी कार्यालय में सेवानिवृत होने के बाद भी एक साल और चार महीने के लिए फिर से दुबारा नियुक्त किया गया।

1947 में देश के विभाजन के समय, सांप्रदायिक दंगे भड़क गए । उस समय ठाकुर महावीर सिंह को पुलिस अधिनियम, 1861 की धारा 15 के तहत विशेष पुलिस अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया। उन्हें श्री एम.एस. रंधावा आईसीएस, जिला मजिस्ट्रेट, दिल्ली के आदेश दिनांक 14.9.1947 के तहत कर्फ्यू के दौरान हथियार लेकर गश्त करने अनुमति थी।

श्री महावीर सिंह एकदम से शाकाहारी और मद्यत्यागी थे। वह धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे । वह हनुमान जी की पूजा करते थे और श्री हरि बाबा के अनुयायी थे। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती गजेंद्र वती था तथा उनके तीन बेटे और दो बेटियां थीं। इनके नाम हैं 1. जितेंद्र सिंह 2 महेंद्र सिंह 2 संतोष 4 ज्ञानेन्द्र सिंह और 5 सुषमा। कुर महावीर सिंह 2 नवंबर 1985 को निधन हुआ।

4. ठाकुर रणधीर सिंह रावल

ठाकुर रणधीर सिंह रावल

सुंदर प्रभा रावल

ठाकुर रणधीर सिंह रावल आमका के ठाकुर राज सिंह रावल के सबसे छोटे बेटे थे। गाजियाबाद में अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा के बाद वह ट्रैनिंग शिप डफरिन पर कार्य करने लगे । धूम मानिकपुर के कैप्टन सुरेंद्र सिंह के पुत्र श्री अतेन्द्र पाल सिंह रावल जिन्हें लाल साहब के नाम से भी जाना जाता है उनके मित्रों में थे। उस समय लाल साहब भी डफरिन जहाज के नेविगेशन विभाग में सेकंड इन कमांड के रूप में काम कर रहे थे । उन्होंने बताया कि ठाकुर रणधीर सिंह रावल ब्रिटिश ट्रेनिंग शिप डफ़रिन पर पहले भारतीय चीफ इंजीनियर थे। किसी भारतीय के लिए उस जहाज का चीफ इंजीनियर होना एक बड़ा सम्मान था। लाल साहब ने इस पुस्तक के लेखक से यह भी उल्लेख किया कि ठाकुर रणधीर सिंह ने समुद्री इंजीनियरिंग प्रशिक्षण निदेशालय (DMET) में उप निदेशक के पद कार्य किया था। वह मरीन इंजीनियरिंग के प्रत्याशियों को पढ़ाते थे और उनकी कक्षाएं लेते भी थे।

डफरिन कोई साधारण जहाज नहीं था। इसका गौरवशाली इतिहास रहा है। यह आरम्भ में रॉयल इंडियन मरीन के लिए एक सेना के जहाज के रूप में बनाया गया था। यह 14 सितंबर 1904 को लॉन्च हुआ। बाद मे 21 फरफरी 1905 को इस जहाज को बॉम्बे में भारत सरकार को सौंप दिया गया। इस जहाज का नाम भारत के पूर्व वायसराय और गवर्नर जनरल लॉर्ड डफरिन के नाम पर रखा गया था। डफ़रिन में प्रशिक्षित कई कैडेट अपने करियर के शिखर पर पहुँचे। इनमें प्रमुख है श्री ए.आर खान और श्री एस.एम. अहसान जो पाकिस्तान नेवी के चीफ बने । श्री जेटीजी परेरा और श्री उत्तम सिंह भारतीय नौसेना में वाइस एडमिरल बने

बाद में वह प्रतिष्ठित मोगुल लाइन्स जो एक मर्चेंट नेवी शिपिंग कंपनी थी उस में काम करने लगे। वह ब्रिटिश मोगुल लाइन्स शिप पर भी पहले भारतीय मुख्य अभियंता थे। यह उनके पेशेवर कौशल और उत्कृष्टता की एक बड़ी मान्यता थी क्योंकि उन दिनों कोई भी भारतीय मोगुल लाइन्स से संबंधित जहाजों पर मुख्य अभियंता के रूप में नियुक्त नहीं किया जाता था। 1947 में आजादी के बाद मुगल लाइन्स को शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया में मिला दिया गया था।

श्री रणधीर सिंह अपनी नौकरी की आवश्यकता के कारण ज्यादातर मुंबई में ही रहे। वह बहुत कम अपने गांव आमका जाते थे। इसलिए आमका में परिवार के सदस्यों को उनके पेशेवर कैरियर के बारे मेंअधिक पता नहीं था। आम तौर पर केवल यही मालूम तहत कि श्री रणधीर सिंह मर्चेंट नेवी में मरीन इंजीनियर है ।

श्रीमती सुंदर प्रभा और श्री रणधीर सिंह रावल

श्री रणधीर सिंह ने मुंबई में भारत के स्वतंत्रता दिवस के दिन 1947 को एक उद्योगपति की बेटी श्रीमती सुंदर प्रभा रावल से विवाह किया। वह एक गृहिणी थी। श्री रणधीर सिंह के 1990 में निधन तक वह उनके प्रति समर्पित रहीं। 28 साल बाद 2018 में उनका निधन हो गया। उनके तीन बच्चे है। सबसे बड़ी बेटी रशिमा, पुत्र संजीव सिंह और सबसे छोटी बेटी सलोनी हैं । रशिमा अब रशिमा वर्मा है और हैदराबाद में खुशी से कर रही है। सलोनी अब सलोनी सचदेव है और मुंबई में रहती है। संजीव सिंह की शादी संयुक्त राष्ट्र के एक राजनयिक की बेटी संगीता से हुई है। उनके दो बेटे हैं। धनंजय सिंह रावल बड़े है और छोटे है शारंग सिंह रावल। वह दोनों मुंबई में रहते हैं।

5. फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह रावल

फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह रावल

फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह रावल ठाकुर यशवीर सिंह रावल और श्रीमती पुष्पा लता रावल के इकलौते बेटे थे। उनका जन्म वामोर (ग्वालियर) में 28 अक्टूबर 1953 को हुआ था। सरकारी रिकॉर्ड में उनकी जन्मतिथि 2 जनवरी 1954 दर्ज है। उनकी प्राथमिक स्कूली शिक्षा जुलाई 1962 से दिसंबर 1964 तक सेंट एडवर्ड स्कूल, शिमला से हुई थी। उन्होंने 1969 यूपी के सैनिक स्कूल, लखनऊ से हाई स्कूल पास किया। उनके विषय थे हिंदी, अंग्रेजी, गणित, विज्ञान, ज्यामिति और कला। वह हॉकी, फुटबॉल, बास्केटबॉल और वॉलीबॉल के एक अच्छे खिलाड़ी थे। उन्होंने हाउस वाइज कैडेट कैप्टन का पद संभाला। बाद में, संघ लोक सेवा आयोग द्वारा मई,

ठाकुर यशवीर सिंह रावल

1969 में राष्ट्रीय रक्षा अकादमी की 43 वी पाठ्यक्रम में प्रवेश के लिए आयोजित लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की । इसके बाद उन्होंने 07 जनवरी 1970 से 16 दिसंबर 1972 तक राष्ट्रीय रक्षा अकादमी में प्रशिक्षण लिया। प्रशिक्षण के दौरान, उन्हें 10 दिसंबर 1971 को पर्वतारोहण के लिए मेजर जनरल एस. डी गुप्ता कमांडेंट, खड़गवासला ने ब्लू पदक से सम्मानित किया गया।

सैनिक स्कूल में एक कैडेट के रूप में, फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह रावल को 14 दिसंबर 1968 को अंग्रेजी में बेस्ट शॉर्ट स्टोरी के लिए सर्टिफिकेट भी प्रदान किया गया। वायु सेना में भर्ती होने से पहले, उन्होंने मार्च 1967 में एनसीसी की एयर विंग जूनियर एयर सर्टिफिकेट- । और 1968 में द्वितीय श्रेणी भी उत्तीर्ण की थी

फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह (सर्विस नंबर 13786) की 14 जुलाई 1982 को वायुसेना के MIG क्रैश में 29 वर्ष की बहुत कम उम्र में असमय मृत्यु हो गई। यह पूरे रावल परिवार के लिए एक बहुत बड़ी क्षति थी। फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह बहुत होनहार व्यक्ति थे। यदि उनकी हवाई दुर्घटना में नहीं हुई होती, तो वे संभवत: वाइस एयर चीफ के पद से सेवानिवृत्त होते। उनके बैच के कुछ साथी उस पद से सेवा निवृत हुए है।

6. डॉ. संजीव सिंह रावल, एमबीबीएस, एलएलएम

डॉ. संजीव सिंह और संगीता

डॉ. संजीव सिंह रावल ठाकुर रणधीर सिंह के बेटे हैं। उनका जन्म 26 फरवरी 1953 को हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा कैंपियन स्कूल में हुई थी। उन्होंने एलफिंस्टन कॉलेज में भी अध्ययन किया और टीएनएमसी कॉलेज नायर अस्पताल से 1978 में मेडिसिन में ग्रेजुएशन किया । इसके बाद उन्होंने मुंबई के कस्तूरबा अस्पताल में संक्रामक रोगों के लिए प्रशिक्षण प्राप्त किया। उन्होंने अपनी निजी प्रैक्टिस एक जनरल फिजिशियन के रूप में शुरू की। डॉ. संजीव रावल ने समय समय पर विभिन्न संस्थाओ में जैसे कि शिपिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया, थॉमस कुक इंडिया लिमिटेड, देना बैंक, एसएफ डायस एंड केमिकल, बैंक ऑफ इंडिया और यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के लिए चिकित्सा सलाहकार के रूप में भी काम किया।

डॉ संजीव रावल ने 2002 में एक्यूपंक्चर चिकित्सा पद्यति में प्रशिक्षण लिया। अब वे जनरल फिजिशियन होने के साथ-साथ एक्यूपंक्चर के द्वारा भी चिकिता करते है। उन्होंने 2006 में मुंबई विश्वविद्यालय से आपराधिक कानून की पढ़ाई की और एलएलएम की डिग्री प्राप्त की। अब वह मेडिको-लीगल कंसल्टेंट के रूप में सलाह भी देते हैं।

धनंजय सिंह रावल

शारंग सिंह रावल

डॉ संजीव सिंह ने संगीता से विवाह किया . वह एक गृहिणी हैं और GITA का प्रसार भी करती हैं। वह मैत्री बोध परिवार के द्वारा कॉर्पोरेट सामाजिक दायित्व (सीएसआर) से भी जुड़ी हुई हैं। उनके दो बेटे हैं धनंजय सिंह रावल। उनका जन्म 16 अक्टूबर 1981 को हुआ था। वह विज्ञापन एजेंसियों के साथ रचनात्मक सलाहकार के रूप में काम करते हैं और एक कवि हैं। उनकी कई रचनाएँ प्रकाशित हो चुकी है। छोटे के नाम शारंग सिंह रावल है। उनका का जन्म 16.12.1985 को हुआ। वह मार्केटिंग प्रोफेशनल हैं और एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त रियल एस्टेट फर्म में कार्य करते है ।

7. ठाकुर संजय सिंह

ठाकुर संजय सिंह रावल

ठाकुर संजय सिंह रावल काशीपुर में रहते है और अपनी खेती करते है। उनके पिता ठाकुर बिजेंद्र सिंह आमका में रहते थे । वह लगभग 1970 में आमका से काशीपुर चले गए क्योंकि उन्हें यूपी सरकार द्वारा काफी खेती की जमीन आवंटित हुई थी । श्री बिजेंद्र सिंह, ठाकुर रघुवीर सिंह के दूसरे बेटे हैं। उनके बड़े भाई ठाकुर देवेंद्र सिंह थे।

स्थानीय कॉलेज से ग्रेजुएशन करने के बाद, श्री संजय सिंह ने स्थानीय राजनीति में भाग लेना शुरू कर दिया। 1989 में, वे जसपुर ब्लॉक के क्षेत्र पंचायत के सदस्य बने। वह मार्केटिंग कमेटी, काशीपुर के सदस्य भी थे। 2003 में, उधम सिंह नगर की जिला पंचायत के सदस्य बन गए । इसके बाद, श्री संजय सिंह ने उत्तराखंड के किसान कांग्रेस के सचिव का पद संभाला। 2005 में काशीपुर के मंडी समिति के सदस्य बने। उधम सिंह नगर की जल प्रबंधन समिति के भी वह अध्यक्ष थे। वह केंद्रीय फिल्म सेंसर बोर्ड, दिल्ली के सदस्य भी थे। वह पूर्वोत्तर रेलवे की परामर्श समिति के सदस्य भी रहे है । ठाकुर संजय सिंह जिला कांग्रेस कमेटी, ऊधम सिंह नगर के उपाध्यक्ष और उत्तराखंड कांग्रेस कमेटी के पूर्व सचिव भी थे।

ठाकुर संजय सिंह उत्तराखंड की सामाजिक अवं राजनैतिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेते है।इन क्षेत्रों में उन्होंने अपना एक अच्छा स्थान बनाया लिया है। श्री संजय सिंह के दो बेटे हैं जिनका नाम श्री विशाल रावल और श्री अमित रावल है। पूरा परिवार काशीपुर (उत्तराखंड) में ही रहता है।

8. सुश्री रितु रावल

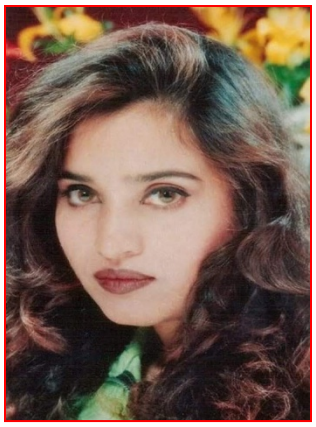

रितु रावल

रितु श्री सुरेन्द्र पाल सिंह रावल और श्रीमती कमलेश रावल की बेटी हैं। उनका जन्म 6 मई 1969 को हुआ था। रितु की आरम्भिक पढ़ाई सेंट मैरी स्कूल, नई दिल्ली में हुई । कॉलेज की शिक्षा उन्होंने श्यामा प्रसाद मुखर्जी कॉलेज नई दिल्ली से प्राप्त की । इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन टेक्नोलॉजी, नई दिल्ली से रितु ने फैशन डिजाइनिंग में 2 साल का डिप्लोमा भी पास किया है । इसके अलावा वह इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय से पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोत्तर हैं।

दुर्भाग्य से जब रितु तीन साल की थी तब उन्हें दिमागी बुखार हो गया जिससे उनका कमर से नीचे के हिस्से को लकवा मार गया। लेकिन भगवान की असीम कृपा से उन्हें असाधारण साहस और शक्ति मिली हुई है । उन्होंने न केवल अपने आप को आत्म निर्भर बनाया है, वह स्वतंत्र रूप से अपना व्यवसाय भी कर रही है। वह पार्टी प्लानिंग और कैटरिंग के अलावा सिल्वर स्टार कम्युनिकेशन के नाम से अपनी इवेंट मैनेजमेंट कंपनी चलाती है। उन्होंने इस कंपनी को 1997 में शुरू किया था और अब भी इसे चला रही है। "थंडरबॉल" नाम से उनकी एक नृत्य मंडली है। वह एक प्रसिद्ध कोरियोग्राफर है। रितु को एक हज़ार से अधिक स्टेज शो करने का श्रेय प्राप्त है । उनकी थंडरबॉल नृत्य मंडली ने अब तक अनेक रोड शो, वीडियो एल्बम रिकॉर्डिंग, स्टार अवार्ड, स्टार नाइट्स इत्यादि में भाग लिया है । उनकी मंडली को अपने कुशल प्रदर्शन के कारण हमेशा सराहना मिली है ।

एस पी एस रावल, रितु और कमलेश रावल

रितु रावल

अपने शो में ऋचा शर्मा, दलेर मेहंदी, जस्सी, जसपिंदर नरूला, मीका और अभिजीत जैसे प्रतिष्ठित और स्थापित कलाकार सम्मलित और देखने को मिले है। वह कई फिल्मों के लिए जूनियर आर्टिस्ट कास्टिंग डायरेक्टर रही है। ऐसी कुछ फिल्मो के नाम है १) हमरा दिल आपके पास है २) बधाई हो बधाई ३) क्यूंकि मैं झूठ नहीं बोलता ४) तेरे नाम ५) रन ६) रिफ्फुजी इत्यादि ।

समाचार पत्रों, गल्फ न्यूज़ टाइम्स ऑफ इंडिया, हिंदुस्तान टाइम्स, पंजाब केसरी, दैनिक जागरण, अमर उजाला सहित कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में उन पर लेख प्रकाशित हुए है। रितु का साक्षात्कार भी विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हुआ है। उनकी जीवनी को दिल्ली के स्कूलों की चौथी कक्षा के बच्चों को पढ़ाया जा रहा है।

फेस बुक पर रितु का भरपूर उल्लेख है। यू-ट्यूब पर उनकी रचनाओं को देखा जा सकता है।रितु शेयर बाजार के कारोबार में भी हैं। वह एक शेयर निवेश सलाहकार है।

9. डॉ अत्तर सिंह रावल

डॉ अत्तर सिंह रावल

डॉ अत्तर सिंह रावल ठाकुर देशराज सिंह के तीसरे पुत्र थे। उनका जन्म लगभग 1905 में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा खुर्जा में हुई जो उस समय क्षेत्र में रहने वाले व्यक्तियों के लिए शिक्षा का एक बड़ा केंद्र था। डॉ. अत्तर सिंह एक प्रतिभाशाली छात्र थे। वह एक अच्छे खिलाड़ी थे। वह हॉकी में अपनी कॉलेज टीम के कप्तान थे । उनकी कप्तानी में उनकी टीम ने तीन साल तक लगातार स्थानीय टूर्नामेंट जीता।

डॉ. अतर सिंह के पोते श्री मनोज सिंह रावल के अनुसार उन्होंने अपना एलएसएमएफ और एफआरसीएस किया। अपनी चिकित्सा योग्यता प्राप्त करने के बाद वह सेना में शामिल हो गए और सात वर्षों तक सेवा की। उन्हें VCO (वायसराय कमीशन अधिकारी) के रूप में नियुक्त किया गया था। सेना छोड़ने के बाद डॉ. अत्तर सिंह ने जिला बुलंदशहर के एक छोटे से शहर स्याना में अपना क्लिनिक खोलने का फैसला किया। उस समय स्याना में वह ही पहले और एकमात्र एलोपैथिक डॉक्टर थे। उनसे पहले वहां के लोगों का इलाज यूनानी और आयुर्वेदिक पद्धति से हकीमों और वैद्यों द्वारा किया जाता था।

वह क्षेत्र में एक बहुत लोकप्रिय डॉक्टर थे। ऐसे कई व्यक्ति जिन्होंने अपना इलाज डॉ अतर सिंह से कराया अब भी मिल जाते है। श्री के.के शर्मा, जो भारत सरकार के केंद्रीय लोक निर्माण विभाग से मुख्य अभियंता के रूप में सेवानिवृत्त हुए और वर्तमान में नोएडा में रहते हैं, उन लोगों में से एक हैं जिनका इलाज डॉ अत्तर सिंह ने उनके बचपन में किया था। उन्हें याद है कि डॉ अत्तर सिंह के पास एक बड़ी मोटर सायकल थी जिस पर वह दूर दराज के गाँवों में जाकर मरीजों का उपचार करते थे । गर्मियों के दौरान वह एक सोला हैट पहनते थे । वह एक जनरल प्रैक्टिशनर थे लेकिन बच्चों के इलाज में उनको दक्षता हासिल थी। श्री शर्मा के अनुसार वह अपने मरीजों को बोतल में कुछ मिश्रण देते थे और वे ठीक हो जाते थे। वह बहुत मददगार स्वाभाव के व्यक्ति थे। उनके पोते श्री मनोज कुमार ने बताया कि डॉ, अत्तर सिंह एक सर्जन भी थे और गरीब लोगों का मुफ्त में इलाज करते थे।

सेवानिवृत्ति के बाद डॉ अत्तर सिंह स्याना में बस गए। वर्ष 1985 में उनका निधन हो गया।

धूम मानिकपुर

1. ठाकुर टीकम सिंह स्वतंत्रता सेनानी

ठाकुर टीकम सिंह

ठाकुर टीकम सिंह, ठाकुर राजाराम सिंह के पुत्र थे। उनका जन्म 7 जून 1899 को धूम मानिकपुर में हुआ था। अपनी गाँव में प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने खुर्जा के एक सरकारी स्कूल में दाखिला लिया। बचपन से ही उनकी शिक्षा में कोई रुचि नहीं थी। वह भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अधिक रुचि रखते थे। इसलिए एक किशोर के रूप में, ठाकुर टीकम सिंह भारत के स्वतंत्रता संग्राम से जुड़े एक संगठन में शामिल हो गए और इसकी गतिविधियों में सक्रिय भाग लेने लगे । मथुरा के पास वृदावन में, श्री हसरत मोहानी, एक भिक्षु (संन्यासी) कपथियान कुंज में रहते थे। उन दिनों उत्तर प्रदेश में कपथियान कुंज क्रांतिकारियों की गतिविधियों का केंद्र था। यह केंद्र स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं श्री भगत सिंह, चंद्र शेखर आज़ाद, राज गुरु और अन्य के संपर्क में था। ठाकुर टीकम सिंह के साथ उनके अन्य मित्र जैसे श्री स्यमवीर सिंह, शत्रु सूदन, मेहताब सिंह, पन्ना लाल, हरिबाबू, धन्नी लाल और कई अन्य युवा भी श्री हसरत मोहानी के अनन्य शिष्य थे। श्री हसरत मोहानी के निर्देशानुसार, ये सभी व्यक्ति सरकारी खजाने को लूटने और अन्य विघटनकारी कार्यों में लिप्त थे। श्री हसरत मोहानी मैंनपुरी कांड में भी सक्रिय रूप से शामिल थे, जिसके मुख्य नेता पंडित गेंदा लाल दीक्षित थे।

इन गतिविधियों के कारण, ठाकुर टीकम सिंह लंबे समय तक खुद को सरकार से छिपा नहीं सके। उन्हें खुर्जा में स्कूल के छात्रावास से जनवरी 1920 को गिरफ्तार किया गया। पुलिस सबूत न होने के कारण मामला स्थापित नहीं कर सकी। इसलिए उन्हें तीन महीने बाद जेल से रिहा कर दिया गया। इसके बाद उन्होंने खुर्जा छोड़ दिया और मेरठ के देवनागरी स्कूल में प्रवेश लिया। 10 वीं कक्षा तक पढ़ाई करने के बाद उन्होंने आगे की पढ़ाई नहीं की।

उनका विवाह ठाकुर मंगल सिंह राघव की बेटी सत्यवती से दिनक 16 जून 1921 हुआ। शादी के बाद भी ठाकुर टीकम सिंह ने क्रांतिकारी संगठनों के साथ अपना सम्बन्ध जारी रखा। उनके क्रांतिकारियों के गुट में तेज सिंह नाम का एक व्यक्ति था, जो पुलिस का मुखबिर था। उसकी सूचना पर बरेली के एक मजिस्ट्रेट ने ठाकुर टीकम सिंह, श्री श्याम वीर सिंह और शत्रु सूदन के खिलाफ 26 जून 1922 को एक मामले में गिरफ्तारी वारंट जारी किया। इन सभी लोगो पर आरोप था की उन्होंने पुलिस अधिकारियों पर गोलीबारी की थी। श्री टीकम सिंह को 20 सितंबर 1922 को धूम मानिकपुर से गिरफ्तार किया गया और बुलंदशहर जेल भेज दिया गया। उनके अन्य दो सहयोगियों श्री शत्रु सूदन और श्री स्यामवीर सिंह को भी गिरफ्तार किया गया था। इन सभी पर भारतीय दंड संहिता की धारा 370, 307, 109, 302 और 506 के तहत आरोप लगाए गए। इन आरोपियों की कम उम्र को ध्यान में रखते हुए, उन्हें 250 रुपया जुर्माने के साथ आजीवन कारावास का दंड दिया गया। उच्च न्यायालय ने इनकी अपील खारिज कर दी। जेल में रहते हुए, श्री टीकम सिंह ने आमरण अनशन किया। बड़ी अनुनय-विनय के बाद, उन्होंने अपनी भूख हड़ताल तोड़ दी। तीन अवसरों पर, उन्हें तीन - तीन महीने के लिए काल कोठरी में रखा गया था। 13 जून 1934 को जेल से रिहा होने के बाद, वह धूम मानिकपुर आए। जेल अवधि ने ठाकुर टीकम सिंह को मानसिक और शारीरिक रूप से बहुत कमज़ोर कर दिया था । फिर भी उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम में कांग्रेस का समर्थन करना जारी रखा। 1947 में स्वतंत्रता के बाद, उन्हें धूम मानिकपुर के ग्राम प्रधान के रूप में नामित किया गया था। ठाकुर टीकम सिंह एक समाज

सुधारक थे और जातिवाद के विरोधी थे। घोर विरोध के बावजूद, उन्होंने गाँव में शिव मंदिर जाने वाले हरिजनों का समर्थन किया। वह सोशलिस्ट पार्टी के आचार्य नरेंद्र देव, श्री अशोक मेहता के करीबी थे। वह डॉ बी.वी. केसकर के भी बहुत करीबी थे, जो केंद्र सरकार में मंत्री थे। 18 जनवरी 1954 को उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु पर, श्री केस्कर ने केंद्र सरकार की ओर से तथा ठाकुर बाल भद्र सिंह ने उत्तर प्रदेश राज्य सरकार की ओर से उनकी चिता पर पुष्पांजलि अर्पित की।

(यह लेख ठाकुर टीकम सिंह की पत्नी श्रीमती सत्यवती के लिखित कथन पर आधारित है)

2. श्रीमती सत्यवती रावल, विधायक

सत्यवती रावल

श्रीमती सत्यवती बुलंदशहर के धौरऊ गाँव के ठाकुर मंगल सिंह राघव की बेटी थीं। उन्होंने हाथरस के संस्कृत गुरुकुल स्कूल में पढ़ाई की और 16 जून 1922 को धूम मानिकपुर के स्वतंत्रता सेनानी ठाकुर टीकम सिंह से शादी की। ठाकुर टीकम सिंह की मृत्यु के बाद ही वह सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में प्रमुखता से आईं। वह धूम मानिकपुर की ग्राम प्रधान चुनी गईं। इसके बाद, उन्हें 1957 में दादरी सीट से विधायक का चुनाव लड़ने के लिए कांग्रेस पार्टी द्वारा टिकट दिया गया। श्रीमती सत्यवती रावल 1956 में बनी दादरी विधानसभा सीट से पहली महिला प्रत्याशी थीं। उस चुनाव में उन्हें 19144 वोट मिले थे। उन्होंने श्री महाराज सिंह को 10394 मतों से हराया। वह 8750 वोटों के अंतर से जीतीं और दादरी सीट से पहली महिला विधायक बनीं। वह अप्रैल 1957 से मार्च 1962 तक विधायक रहीं। वह लंबे समय तक जिला परिषद की सदस्य भी रहीं। वह बहुत बुद्धिमान, सामाजिक रूप से सक्रिय और एक मददगार महिला थी ।

अपने दिवंगत पति ठाकुर टीकम सिंह की याद में, उन्होंने ठाकुर टी एस रावल जूनियर गर्ल्स हाई स्कूल की स्थापना की। 2 फरवरी 1965 को इस विद्यालय को 8 वीं कक्षा तक चलने की अनुमति मिली थी । हालांकि, वित्तीय समस्याओं के कारण स्कूल वर्तमान में अस्थायी रूप से बंद कर दिया गया है। उम्मीद है कि बहुत जल्द स्कूल को फिर से शुरू किया जाएगा। श्रीमती सत्यवती 99 वर्ष तक जीवित रहीं। वह 10 दिसंबर 1999 को स्वर्ग सिधार गयी।

3. ठाकुर रवेंद्र सिंह रावल आई.आर. एस

ठाकुर रवेंद्र सिंह रावल और विमला रावल

ठाकुर रवेंद्र सिंह रावल के पिता धूम मानिकपुर के ठाकुर नवरतन सिंह रावल थे और उनकी माताजी का नाम श्रीमती रानी चन्द्रावली था। वह जिला अलीगढ के ग्राम कपासिया की रहने वाली थी। ठाकुर रविंद्र सिंह का जन्म 5 सितंबर 1913 को धूम मानिकपुर में हुआ था। उनकी पढ़ाई ऑक्सफोर्ड स्कूल, खुर्जा से हुई । फिर 1933 में क्रिश्चियन कॉलेज, इलाहाबाद से विज्ञान में स्नातक किया। ठाकुर रविंद्र सिंह ने विशेष रूप से गणित में कई पदक जीते। वह एक उत्कृष्ट और मेघावी छात्र थे। उन्होंने 1936 में भारतीय राजस्व सेवा परीक्षा उत्तीर्ण की। मिर्जापुर में उप निरीक्षक के रूप में उनकी पहली नियुक्ति हुई । ठाकुर रवेंद्र सिंह रावल को 1956 में पंजाब में सहायक आयुक्त के पद पर नियुक्त किया गया। उन्होंने 1959 से 1964 तक अतिरिक्त आयुक्त अमृतसर एवं जोधपुर के रूप में भी काम किया। उनकी आखिरी नियुक्ति दिल्ली में

आय कर आयुक्त के रूप में में दिल्ली में थी । वह एक टिटोटलर और शाकाहारी थे।

सन्नी प्रताप सिंह

ठाकुर रवेंद्र सिंह रावल की शादी श्रीमती विमला रावल से हुई थी । उनका जन्म 13 अगस्त 1919 को हुआ था। श्रीमती विमला रावल बनारस के ठाकुर गुल्लू राम जी की बेटी थीं। ठाकुर गुल्लू राम अपने समय के बहुत ही प्रतिष्ठित और जाने माने व्यक्ति थे। उन्होंने लंदन से कानून का अध्ययन किया और लाहौर कोर्ट में बैरिस्टर के रूप में कार्य किया। ठाकुर रवेंद्र सिंह की पत्नी ने अपनी स्कूली शिक्षा लाहौर के विक्टोरिया स्कूल से की और हिंदी में स्नातक और रतन प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। 9 सितंबर 1996 को उनका निधन हो गया।

ठाकुर रवेंद्र सिंह जी का एक बेटा सन्नी प्रताप सिंह था। उनका जन्म 2 दिसंबर 1950 को हुआ था। सनी भी एक कुशाग्र बुद्धि छात्र थे। दुर्भाग्य से कई वर्षों के लंबे इलाज के बाद 7 मई 1967 को कैंसर से उनकी असामयिक मृत्यु हो गई।

कर्नल रवींद्र सिंह और अरुण प्रभा

कर्नल रवींद्र सिंह की एक बेटी श्री मति अरुण प्रभा है । उनका जन्म 23 सितंबर 1944 को सहारनपुर में हुआ था। उन्होंने गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वूमेन, अमृतसर से स्नातक की उपाधि ग्रहण की। वह सीनियर विंग NCC कैडेट के रूप में अपनी राइफल की ट्रेनिंग पूरी की। श्रीमति अरुण प्रभा का विवाह ठाकुर सुमेर सिंह कुशवाहा के पुत्र कर्नल रवींद्र सिंह के साथ संपन्न हुआ था । उनकी तीन बेटियां हैं जो सभी विवाहित हैं और अच्छी तरह से सेटल हैं।

ठाकुर रावेंद्र सिंह रावल का 30 दिसंबर 1985 को निधन हो गया।

4. DR (PROF) सुधीर रावल

(MBBS, MS, M.CH, D.N.B (UROLOGY) चिकित्सा निदेशक और चीफ ऑफ़ URO-GENITO ONCOLOGY, RAJIV GANDHI CANCER INSTITTUE, DELHI)

डॉ. सुधीर रावल

डॉ सुधीर रावल ठाकुर शालिवाहन सिंह रावल और श्रीमती सुरेश कुमारी के पुत्र हैं। उनका जन्म 5 जनवरी 1962 को धूम मानिकपुर में हुआ था। उन्होंने अपनी प्राथमिक शिक्षा गाँव में पूरी की और दादरी में कॉलेज की शिक्षा प्राप्त की। प्रारंभ में डॉ. रावल को अपनी शिक्षा पूरी करने में काफी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा क्योंकि उनके गाँव में बिजली नहीं थी और उन्हें अपनी हाईस्कूल की पढ़ाई पूरी करने के लिए जूनियर हाई स्कूल और फिर मिहिर भोज डिग्री कॉलेज के लिए दादरी तक पैदल जाना पड़ता था। वित्तीय कठिनाइयों के कारण, उनके पिता डॉक्टर रावल की उच्च शिक्षा के लिए या प्री-मेडिकल टेस्ट कोचिंग कक्षाओं के लिए पैसों का जुगाड़ करने में असमर्थ थे। उनकी बड़ी बहन की शादी भी जल्द करनी आवशयक थी। इसलिए, डॉ. रावल ने कुछ महीनों तक काम किया और उत्तर प्रदेश के कंबाइंड प्रीमेंडिकल टेस्ट देने के लिया कुछ पैसे जुटाए । उच्च शिक्षा के लिए उनकी मदद सिहानी गाँव के श्री नरेश त्यागी ने भी की। वह धूम मानिकपुर के पास ही गाजियाबाद के मेयर श्री दिनेश चंद गर्ग के स्वामित्व वाली राम

किशन इस्पात कारखाने में कार्यरत थे। उन्होंने वहां 450 रूपए के मासिक वेतन पर लगभग 3.5 महीने तक काम किया। नौकरी छोड़ने के बाद, डॉ. रावल ने जो पैसा कमाया कमाया उससे उन्होंने तीन महीने तक गाजियाबाद के गांधीनगर में प्री मेडिकल की कोचिंग ली और परीक्षा उत्तीर्ण की । चूंकि वह सूची में काफी ऊंचे स्थान पर थे, इसलिए उन्हें के. जी. मेडिकल कॉलेज, लखनऊ में प्रवेश मिल गया। उन्होंने इस कॉलेज से क्रमशः 1986 और 1990 में MBBS और MS किया। इसके बाद 1992 में डॉ. रावल अपना यूरोलॉजी प्रशिक्षण पूरा करने तीन साल के लिए वेल्लोर के क्रिश्चियन मेडिकल कॉलेज गए। उन्होंने DNB (1995 में नेशनल बोर्ड ऑफ एग्जामिनेशन, नई दिल्ली से यूरोलॉजी) और जनवरी-मई 2001 में प्रोस्टेट डिजीज रिसर्च सेंटर से फैलोशिप की।

गाजियाबाद में नौकरी के एक छोटे से कार्यकाल के बाद, वह जुलाई 1996 में राजीव गांधी कैंसर संस्थान चले गए जहां वह अभी भी यूरो-जिनेटो ऑन्कोलॉजी के निदेशक और प्रमुख के रूप में काम कर रहे हैं।

डॉ. सुधीर रावल रोबोटिक सर्जरी में विशेष रुचि रखने वाले भारत के प्रमुख यूरो-जेनिटल सर्जनों में से एक हैं। उन्हें जेनिटो यूरिनरी ऑन्कोलॉजी सर्जरी में 30 से अधिक वर्षों का अनुभव है। वह नियमित रूप से रेडिकल प्रोस्टेटेक्टॉमी, रेडिकल सिस्टेक्टॉमी, रेडिकल हिस्टेरेक्टॉमी, आरपीएलएनडी, और कॉम्प्लेक्स यूरिनरी डायवर्सन जैसे कॉन्टिनेंट पाउच और नियो ब्लैडर जैसी प्रक्रियाएं करते है। वह उत्तर भारत के पहले यूरो गाइन सर्जिकल ऑन्कोलॉजिस्ट हैं और संस्थान की स्थापना के बाद से विभाग के प्रमुख हैं। उन्होंने पहली बार भारत के निजी क्षेत्र में रेट्रोप्रुबिक रेडिकल प्रोस्टेटैक्टॉमी खोला। इसके अलावा उन्होंने देश में अधिक से अधिक रेडिकल प्रोस्टेटेक्टॉमी, रेडिकल सिस्टोप्रोस्टेटेक्टॉमी नोबलाडर, रोबोट वीआईआईएल, रोबोट आरपीएलएनडी (पोस्ट केमो) किया है।

डॉ। रावल उर-ऑन्कोलॉजी से निपटने वाले कुछ बहुत ही प्रतिष्ठित राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय संस्थानों के सदस्य हैं। उनमें से कुछ नीचे सूचीबद्ध हैं:

1. अमेरिकन यूरोलॉजिकल एसोसिएशन

2. यूरोपीय यूरोलॉजी एसोसिएशन

3. यूरोलॉजिकल सोसायटी ऑफ इंडिया

4. सोसाइटी इंटरनैशनल'ऑरलॉगी

उपलब्धियां

डॉ। सुधीर रावल की अनेक उपलब्धिया है । अपने क्षेत्र में, उन्होंने कई कीर्तिमान स्थापित किए है . उनकी कुछ महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ निम्नलिखित हैं:

1. उत्तरी भारत में जीनिटो-मूत्र ऑन्कोलॉजी विशेषता विकसित की। 1996 में राजीव गांधी कैंसर संस्थान और अनुसंधान केंद्र में इस प्रकार का पहला विभाग उत्तर भारत में स्थापित किया।

2. भारत में निजी क्षेत्र में पहले रेडिकल प्रोस्टेटैक्टॉमी का ऑपरेशन किया।

3. डिज़ाइनर पॉट्स पॉट इलियल नियोब्लाडर जिसके परिणाम अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए और दुनिया भर ने इसको मान्यता दी।

4. Minilapcystoprostatectomy की मूल तकनीक विश्व में पहली बार विकसित की, जिसे दुनिया भर के कई केंद्रों अपनाया ।

5. देश में पहली बार पेरिनिअल रेडिकल प्रोस्टेटक्टॉमी की गए।

6. मार्च 2009 में भारत में सबसे पहले प्रोस्टेट के लिए न्यूनतम इनवेसिव HIFU प्रक्रिया अधिकतम अनुभव के साथ विकसित की ।

7. रोबोटिक सिस्टेक्टॉमी, प्रोस्टेटेक्टॉमी, नेफ्रॉन स्पैरिंग सर्जरी, रेट्रोपरिटोनियल लिम्फ नोड विघटन, वीडियो इंडोस्कोपिक ग्रोइन नोड विघटन और राडिक्डल सिस्टेक्टेक्टॉमी सहित पायनियरिक रोबोट जेनिटो मूत्र ओन्को सर्जरी। डॉ. रावल 2000 से अधिक रोबोट सर्जरी कर चुके हैं जो भारत और यूरेशियन क्षेत्र में एक व्यक्तिगत सर्जन के लिए सबसे अधिक हैं।

8. दुनिया में अधिकतम रोबोट वीईआईएल (ग्रोइन के लिम्फ नोडल विघटन) कर चुके हैं जिसके परिणाम जर्नल ऑफ यूरोलॉजी में प्रकाशित हुए है ।

9. भारतीय रोगियों में प्रोस्टेट कैंसर के आणविक पहलुओं जैसे ERG जीन अभिव्यक्ति पर अग्रणी काम किया।

10. दुनिया में अधिकतम पोस्ट कीमोथेरेपी अवशिष्ट द्रव्यमान के लिए रोबोट रेट्रोपरिटोनियल लिम्फ नोड विच्छेदन किया है और परिणाम इंडियन जर्नल ऑफ यूरोलॉजी में प्रकाशित हुए है । निसंदेह , उरो-ऑन्कोलॉजी के क्षेत्र में इस प्रक्रिया को सबसे चुनौतीपूर्ण सर्जरी माना जाता है।

11. भारत और दुनिया भर में यूरो जेनेटिक ऑन्कोलॉजी के उन्नत क्षेत्र में 20 से अधिक डॉक्टरों को प्रशिक्षित किया

डॉ। सुधीर रावल ने भारत और विदेश में व्यापक रूप से यात्रा की है। उन्होंने अमेरिका, पूरे यूरोप, ऑस्ट्रेलिया, चीन, जापान, सिंगापुर, अर्जेंटीना, चिली इत्यादि का दौरा किया है

5. ब्रिगेडियर राजदीप सिंह रावल

ब्रिगेडियर राजदीप सिंह रावल और सोनिका रावल

ब्रिगेडियर राजदीप सिंह रावल स्वर्गीय श्री जितेंद्र पाल सिंह रावल और श्रीमती कमलेश रावल के दो बेटों में से एक हैं। ब्रिगेडियर राजदीप का जन्म 1968 में मुरादाबाद (यूपी) में हुआ था। उनके पिता वहां एक सरकारी कॉलेज में व्याख्याता थे। वहीं से 1991 में प्रधानाध्यापक के रूप में सेवानिवृत्त भी हुए। ब्रिगेडियर राजदीप ने अपनी स्कूली शिक्षा और स्नातक मुरादाबाद से की और जुलाई 1988 में आई आई टी रूडकी से भौतिकी में स्नातकोत्तर के लिए प्रवेश लिया ।

वह अपने कई परिवार के सदस्यों से बहुत प्रभावित थे जो सशस्त्र / पुलिस बलों की सेवा कर रहे थे और जिनकी तस्वीरों वर्दी में गर्व से उनके पैतृक घर की दीवारों पर प्रदर्शित थी। उन्होंने उनका अनुसरण करने फैसला लिया और

प्रतिष्ठित आईआईटी रुड़की को छोड़ जनवरी 1989 में देहरादून के भारतीय सैन्य अकादमी में शामिल हो गए। जून 1990 में उन्हें भारतीय सेना की इंजीनियरिंग कोर में लेफ्टिनेंट के रूप में नियुक्त किया गया।

श्रीमती कमलेश रावल और श्री जेपीएस रावल

रोहन सिंह रावल

2. सेना में उनका कैरियर जम्मू और कश्मीर में तैनाती के साथ शुरू हुआ जो 1990 के दशक में खतरनाक रूप से उथल पुथल भरा था। उन्होंने कई अभियानों में भाग लिया और एक अच्छे सैन्य नेता के रूप में अपनी पहचान बनाई। उन्होंने पुणे के कॉलेज ऑफ मिलिट्री इंजीनियरिंग से बी टेक पूरा किया। अपने करियर के शुरुआती दौर में सफलता पूर्वक डिफेंस इंस्टीट्यूट ऑफ पुणे से एमटेक किया।

सेना में उनके अच्छे प्रदर्शन के कारण, उन्हें 2003 में संयुक्त राष्ट्र के सैन्य लोकतांत्रिक गणराज्य कांगो में तैनाती के लिए चुना गया था। डेमोक्रेटिक रिपब्लिक ऑफ़ कांगो उस समय गंभीर जातीय हिंसा की चपेट में था और ऐसे वातावरण में सैन्य पर्यवेक्षकों की तैनाती और कामकाज बहुत चुनौतीपूर्ण था। कई मौकों पर उनकी जान को ख़तरा होने के बावजूद, ब्रिगेडियर राजदीप ने वहां बहुत अच्छा प्रदर्शन किया और उनके प्रदर्शन को कई अन्य देशों के सैन्य अधिकारियों ने भी सराहा।

3. ब्रिगेडियर राजदीप को 2009 में पूर्ण कर्नल के रूप में पदोन्नति हुई। पदोनत्ति पर उन्हें ऊंचाई वाले क्षेत्र में कमान सौंपी गई। उन्होंने वहां भी अपना कौशल प्रदर्शित किया और उनकी यूनिट ने बहुत ही जोखिम भरी परिस्थितियों में असाधारण प्रदर्शन किया। अपने अच्छे प्रदर्शन के कारण उन्हें कॉलेज ऑफ डिफेंस मैनेजमेंट में प्रतिष्ठित हायर डिफेंस मैनेजमेंट कोर्स करने के लिए नामांकित किया गया था। 2017 में उनका प्रदर्शन बहुत उत्तम होने के कारण उनको और कई महत्वपूर्ण लॉजिस्टिक और बुनियादी ढांचे के पदों पर लगाया गया। 2017 में उनकी पदोनत्ति ब्रिगेडियर के पद पर हुई। तब से वह उत्तर पूर्व में सीमा सड़क संगठन में मुख्य अभियंता के रूप में काम रहे है। अपने 30 साल के लंबे करियर के दौरान उन्हें नौ पदक और चार प्रशस्ति पत्र से सम्मानित किया गया है।

4. ब्रिगेडियर राजदीप की शादी सोनिका रावल से हुई जो मुरादाबाद की रहने वाली है। वह पिछले 25 वर्षों से वह उनकी ताकत की स्तंभ है। श्रीमती सोनिका रावल ने उनके पेशेवरकार्य में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उनको खाना पकाने, संगीत और कला जैसे कई शौक हैं। जब भी संभव हुआ, वह विभिन्न स्कूलों में पढ़ाती भी हैं। उन्होंने हाल ही में कैंसर को हराया है और अब इस लड़ाई में अन्य कैंसर रोगियों की सहायता करना चाहती है। उनका इकलौता बेटा रोहन एक आई टी ग्रेजुएट है और नोएडा की टाटा कंसल्टेंसी सर्विसेज में सेवारत है।

6. कर्नल धुरेंद्र सिंह रावल

धुरेंद्र सिंह रावल परिवार के साथ

धूम मानिकपुर के ठाकुर नवरतन सिंह रावल के चार बेटे थे। चारो बेहद प्रतिभाशाली और गुणवान थे। सभी श्रेणी एक के राजपत्रित अधिकारी थे। उनके तीन बेटे कैप्टन सुरेंद्र सिंह रावल, मेजर नरेंद्र सिंह रावल और कर्नल धुरेंद्र सिंह रावल सेना में थे। चौथे श्री रविंद्र सिंह रावल एक भारतीय राजस्व सेवा (आईआरएस) के अधिकारी थे। कर्नल धुरेंद्र सिंह सबसे कम उम्र के थे। उनका जन्म 16 अक्टूबर 1920 को धूम मानिकपुर में हुआ था। उनकी माता का नाम रानी चंद्रावली था।कर्नल धुरेंद्र सिंह का विवाह श्रीमती सावित्री देवी (जन्म 1930)से हुआ था। वह ठाकुर राम गोविंद सिंह की बेटी थीं, जो रीवा के शाही परिवार से ताल्लुक रखती थीं। उन्होंने हिंदी विश्व विद्यालय, इलाहाबाद से साहित्य रत्न की डिग्री प्राप्त की थी। कर्नल धुरेंद्र सिंह की बुनियादी शिक्षा धूम मानिकपुर और दादरी में स्थानीय स्कूल में हुई थी। उन्होंने बलवंत राजपूत कॉलेज आगरा से गणित में विशेष योग्यता के साथ ग्रेजुएशन किया। वह 1942 में रॉयल इंडियन आर्मी में शामिल हुए और बर्मा में द्वितीय विश्व युद्ध लड़ा। अपनी सराहनीय सेवा के लिए, कर्नल धुरेंद्र सिंह को 1960 में भारत-चीन सीमा में संयुक्त राष्ट्र शांति सेना के अध्यक्ष के रूप में तैनात किया गया था। उन्होंने नागपुर के राष्ट्रीय नागरिक सुरक्षा कॉलेज के निदेशक के रूप में कार्य किया। 30 साल की सराहनीय सेवा के बाद वह 1972 में सेवानिवृत्त हुए । सेवानिवृत्ति के बाद कर्नल धुरेंद्र सिंह अपने गांव धूम में बस गए।

लक्ष्मी सिंह और सत्येंद्र सिंह राणा

कर्नल धुरेंद्र सिंह की दो बेटियां और एक बेटा था। बड़ी बेटी लक्ष्मी सिंह का जन्म 1952 में हुआ था। वह एक पोस्ट ग्रेजुएट थीं और भारतीय राजस्व सेवा के अधिकारी के रूप में कार्यरत थीं। उन्होंने श्री सत्येंद्र सिंह राणा आईआरएस से शादी की, जो केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी) से सदस्य के रूप में सेवानिवृत्त हुए। वे दिल्ली में अपनी दो बेटियों के साथ रहते हैं

सुनीता सिंह ब्रिगेडियर अनिल चन्देले के साथ

उनकी दूसरी बेटी श्रीमती सुनीता सिंह का जन्म 1958 में हुआ। वह दिल्ली के लेडी श्रीराम कॉलेज से पोस्ट ग्रेजुएट थीं। उनकी शादी ब्रिगेडियर अनिल चंदेल से हुई । वे नोएडा में अपने एक बेटे और एक बेटी के साथ रहते हैं।कर्नल धुरेंद्र सिंह के बेटे श्री राजेश सिंह रावल का जन्म 23 अगस्त 1954 को हुआ था। उन्होंने 1976 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेजुएशन किया। वह डीसीएम में मार्केटिंग एक्जीक्यूटिव थे। उन्होंने श्रीमती आशा रावल

सिसोदिया से शादी की। वह एयर इंडिया में एयर होस्टेस थीं। श्री राजेश सिंह रावल का 20 फरवरी 2016 को निधन हो गया। उनकी पत्नी श्रीमती आशा रावल अब नोएडा में रहती हैं।

आशा रावल और राजेश सिंह

ठाकुर नवरतन सिंह के परिवार का वर्णन अधूरा रहेगा यदि उनके दो और बेटों का उल्लेख नहीं जाता जो सेना में थे। सबसे बड़े थे कैप्टन सुरेंद्र सिंह रावल और दूसरे थे मेजर नरेंद्र सिंह रावल। मेजर साहेब का जन्म 10 नवंबर 1919 को धूम में हुआ था। उन्होंने बीआर कॉलेज, आगरा से हाईस्कूल किया। वे एक महान सामाजिक कार्यकर्ता थे। उन्होंने सेवादल नामक एक स्वमसेवी संस्था का गठन किया। यह प्रेरित युवाओं का एक समूह था, जो विशेष रूप से उत्सवों और मेलों के

मेजर नरेंद्र सिंह और श्रीमती चंद्रकांता

दौरान ग्रामीणों को सुरक्षा प्रदान करता था । उनकी सेवाओं को ब्रिटिश सरकार द्वारा 26 जुलाई 1940 को दिए गए पत्र द्वारा भी मान्यता दी थी। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान, मेजर नरेंद्र सिंह वायसराय कमीशन के अधिकारी के रूप में सेना में शामिल हुए। उन्होंने कुछ समय के लिए सेना छोड़ दी लेकिन 1950 में फिर से भर्ती हो गए। वह 1975 में मेजर के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने द्वितीय और 1971 के युद्ध लड़े। वह 1939-1945 के युद्ध पदक और "बर्मा स्टार मेडल 'सुशोभित थे। उन्होंने श्रीमती चंद्रकांता रावल से शादी की और उनके दो बेटे श्री अजीत सिंह और कप्तान सुजीत सिंह थे। मेजर नरेंद्र सिंह का 21 सितंबर 2004 को निधन हो गया।

कर्नल धुरेंद्र सिंह, कप्तान सुरेंद्र सिंह श्री रवेंद्र सिंह और मेजर नरेंद्र सिंह

ठाकुर नवरतन सिंह रावल के सबसे बड़े बेटे कैप्टन सुरेंद्र सिंह रावल का जन्म 1905 में हुआ था। गाँव में शुरुआती स्कूली शिक्षा के बाद; अपनी स्नातक और कानून की डिग्री पूरी करने के लिए वे बी आर कॉलेज, आगरा और लखनऊ गए। वह 1942 में सेना में शामिल हुए और 1962 में सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद, वह पैतृक तालाब वाली कोठी में अपने गांव धूम में बस गए। उनके दो बेटे और तीन बेटियां थीं, जिनकी शादी उन्होंने कर दी थी । जुलाई 1982 में कैप्टन सुरेंद्र सिंह का निधन हो गया।

7. श्री विनोद सिंह रावल आई. जी. बीएसएफ

विनोद सिंह रावल और चन्द्र प्रभा

श्री विनोद सिंह रावल ठाकुर अमर सिंह रावल और श्रीमती अनार देवी के सबसे छोटे बेटे हैं। । उनका जन्म 30 जुलाई 1949 को धूम मानिकपुर में हुआ था। उनके पिता ठाकुर अमर सिंह उत्तर प्रदेश में पुलिस उपाधीक्षक थे। वह ब्रिटिश काल के दौरान वीरता के लिए किंग्स पुलिस मैडल से सुशोभित थे। श्री विनोद का विवाह देवगढ़ (ग्वालियर) के श्री देवेन्द्र सिंह की पुत्री श्रीमती चन्द्र प्रभा से हुआ। उन्होंने जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर से स्नातकोत्तर और अन्नामलाई विश्वविद्यालय से एम एड किया। समय-समय पर वह विभिन्न स्कूलों में जिसमे ग्वालियर का प्रतिष्ठित सिंधिया स्कूल भी विनोद सिंह ने 1972 में बलवंत राजपूत कॉलेज, आगरा से अपनी स्नातक की पढ़ाई की। शामिल है पढ़ाती रही है । मुरादाबाद में अपनी प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद, श्री इसके बाद, उन्होंने चेन्नई में ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी ऑफ़ इंडियन आर्मी ज्वाइन की और 29 अप्रैल 1973 को बतौर लेफ्टिनेंट कमीशन प्राप्त किया। उन्होंने पांच साल तक भारतीय सेना की सेवा की। इस अवधि के दौरान, श्री विनोद सिंह रावल रांची कैम्प में युद्ध के पाकिस्तानी कैदियों की देखभाल करने और बाद में उन्हें वाघा बॉर्डर पर पाकिस्तानी सेना को सौंपने के काम में शामिल थे।

ठाकुर अमर सिंह रावल और श्रीमती अनार देवी

भारतीय सेना के साथ उनका करार पांच साल के लिए था । इसके पूरा होने पर वह 1978 में सीमा सुरक्षा बल (BSF) में सहायक कमांडेंट के रूप में शामिल हुए। BSF में, श्री विनोद रावल को कई प्रशंसापत्र एवं पुरस्कार मिले । उन्होंने भारत-पाक सीमा पर भारतीय सेना के विभिन्न अभियानों में हिस्सा लिया और प्रशंसा अर्जित की। उन्हें 1994 में मोजाम्बिक में कमांडर के रूप में शांति बनाए रखने के लिए संयुक्त राष्ट्र की सेना में नियुक्त किया गया था, जहां उन्होंने उस देश की सभी पुलिस गतिविधियों की निगरानी की। उनकी मेधावी सेवा के लिए, संयुक्त राष्ट्र के महासचिव ने उन्हें संयुक्त राष्ट्र पदक और प्रमाण पत्र प्रदान किया।

अपने संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्य को पूरा करने पर, श्री विनोद रावल को जम्मू और कश्मीर एवं उत्तर पूर्व जैसे उग्रवाद ग्रसित क्षेत्रों में तैनात किया गया था, जहाँ वह कई आतंकवादी घटनाओ को विफल करने वाले अभियानों में शामिल रहे. उन्हें 1998 में नेशनल सिक्योरिटी गार्ड्स (NSG) में प्रतिनियुक्ति पर भी भेजा गया था, जहां उन्होंने

ब्लैक कैट कमांडो समूहों की कमान संभाली थी और खूंखार आतंकवादियों के खिलाफ विभिन्न कमांडो ऑपरेशन किए। उन्होंने उप प्रधानमंत्री सहित अन्य अनेक वीवीआईपी व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान की।

UNITED NATIONS NATIONS UNIES

This is to certify that
The Secretary - General of the United Nations
has awarded
The United Nations Medal
to

Addl Supt Vinod S Rawal

In recognition of having completely met the requirements of eligibility as a Civilian Police Officer of the United Nations Peace Keeping Operation in Mozambique (ONUMOZ). Given under my hand at CIVPOL Headquarters Maputo.

This 14th day of ... 199[illegible]

Aly M. Mahmood
Police Commissioner, CIVPOL

वी.एस.रावल
ग्रुप कमाण्डर
राष्ट्रीय सुरक्षा गारद

मैं, भारत का राष्ट्रपति के.आर.नारायणन, आपकी सराहनीय सेवा को मान्यता देते हुए आपको सराहनीय सेवा मेडल प्रदान करता हूँ।

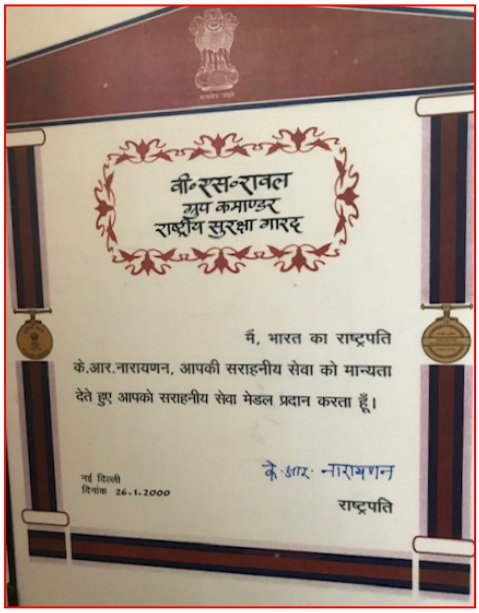

नई दिल्ली
दिनांक 26.1.2000

के.आर. नारायणन
राष्ट्रपति

सेवा के दौरान समय-समय पर उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए , श्री विनोद रावल को IG के दो और महानिदेशक BSF के तीन प्रशंसा पत्रों से सम्मानित किया गया। कर्तव्य के प्रति कठोर और निर्भीक सेवा के बेदाग रिकॉर्ड के लिए, श्री विनोद रावल को वर्ष 2000 में राष्ट्रपति पुलिस पदक से भी अलंकृत किया गया।37 साल की मेधावी सेवा पूरी करने के बाद, श्री रावल 30 जुलाई 2009 को महानिरीक्षक (SAG) के पद से सेवा से सेवानिवृत्त हुए। वर्तमान में, वह हार्टफुलनेस नामक संस्था के माध्यम से सरकार, कॉर्पोरेट, विश्वविद्यालयों और समाज के विभिन्न वर्गों को मैडिटेशन का प्रशिक्षण देने की मुफ्त सामाजिक सेवा में व्यस्त हैं।

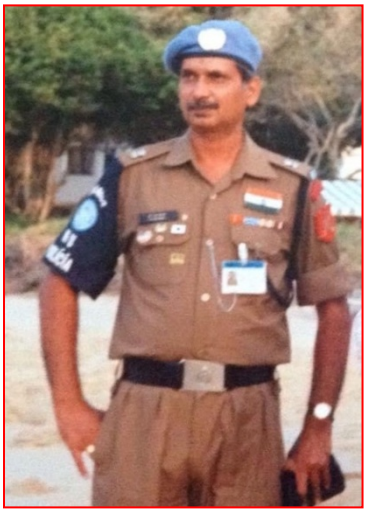

श्री विनोद रावल का एक बेटा दुष्यंत और एक बेटी दामिनी है। दुष्यंत ने दिल्ली से कंप्यूटर साइंस में बी.टेक किया और सिम्बायोसिस यूनिवर्सिटी पुणे से एमबीए किया। वर्तमान में, वह कतर में एक बहुराष्ट्रीय विद्युत कंपनी का नेतृत्व कर रहा है। उनकी पत्नी लवेटा ने भी कंप्यूटर विज्ञान में बी.टेक किया है और कतर के टेक्सास विश्वविद्यालय

में मुख्य प्रशासनिक अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं। उनकी बेटी दामिनी ने फ्लोरिडा यूनिवर्सिटी यूएसए से बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन किया। उनकी शादी श्री प्रदीप सिंह से हुई जिन्होंने अपना मास्टर्स कंप्यूटर साइंस और एमबीए यूएसए से किया। यूएसए में 15 साल तक काम करने के बाद, अब वे अपना व्यवसाय देखने के लिए भारत लौट आए हैं। श्री विनोद रावल के दो पोते और दो पोतियां हैं। सभी प्राइमरी स्कूल में पढ़ रहे हैं।

8 कैप्टेन विशाल रॉवल, भारतीय नौसेना

कैप्टन विशाल रावल, IN, Cdr गोपाल सिंह रावल (सेवानिवृत्त) और श्रीमती कुलदीप रावल के छोटे बेटे हैं। । उनका जन्म 05 मई 1975 को हुआ था। वह नेशनल डिफेंस अकादमी से स्नातक हैं और 1997 में नौसेना की कार्यकारी शाखा में उन्हें कमीशन मिला । उन्होंने नेविगेशन और डायरेक्शन में विशेषज्ञता हासिल की और एमएससी (नॉटिकल साइंसेज) की डिग्री प्राप्त की। इसके बाद, कैप्टेन विशाल ने विभिन्न जहाजों में नाविक अधिकारी के रूप में कार्य किया और प्रशिक्षक के रूप में सिंगापुर गणराज्य की नौसेना में भी प्रतिनियुक्त पर गए। लेफ्टिनेंट कमांडर के पद पर, उन्होंने निर्देशित मिसाइल कोरवेट की कमान संभाली।

कैप्टन विशाल ने वेलिंगटन के डिफेंस सर्विसेज स्टाफ कॉलेज में स्टाफ कोर्स किया। वहां उन्होंने रक्षा अध्ययन में एमएससी की डिग्री हासिल की और पहले स्थान पर रहे। उन्होंने सर्वश्रेष्ठ शोध प्रबंध के लिए भी एक पुरस्कार प्राप्त किया। तत्पश्चात, उन्हें फ्लीट नेवीगेटिंग ऑफिसर के रूप में नियुक्त किया गया। इस पद पर रहते हुए कैप्टेन विशाल ने फ्रंटलाइन गाइडेड मिसाइल फ्रिगेट की कमान संभाली। कैप्टन के पद पर विशाल ने जापान में हायर कमांड कोर्स किया। उन्होंने कमांड और नेवल हेडक्वार्टर में काम किया। उन्हें नवाचार (नई खोज) के लिए C-in-C Commendation से भी सम्मानित किया गया है।

Cdr गोपाल सिंह रावल और श्रीमती कुलदीप रावल

विशाल रावल पूजा और उनकी बेटियां

कैप्टन विशाल की शादी श्रीमती पूजा से हुई है और उनकी दो बेटियाँ हैं, जो दसवीं और छट्टी कक्षा में पढ़ती हैं। पूजा के पास मैटेरियल्स मैनेजमेंट में डिप्लोमा है, और उन्होंने बच्चों की देखभाल और शिक्षा में भी योग्यता प्राप्त की है। उन्होंने किंडरगार्टन को पढ़ाया है। श्रीमती पूजा पूरे घर को संभालती है। उन्हे पेंटिंग, रखरखाव और यात्रा पसंद है ।

दादरी से

1. ठाकुर नैपाल सिंह आई.ई.एस.

ठाकुर नैपाल सिंह

ठाकुर नैपाल सिंह ठाकुर राम सहाय सिंह के पुत्र थे। उनका जन्म दादरी में 1894 में हुआ था। श्री नैपाल सिंह एक प्रतिभाशाली छात्र थे। उनके पिता श्री राम सहाय सिंह जी ने उन्हें उच्च अध्ययन के लिए इंग्लैंड भेजा। उन्होंने भारतीय शिक्षा सेवा की परीक्षा पास की और वह उत्तर प्रदेश के शिक्षा विभाग में सेवारत जहाँ से वे 1949 में शिक्षा निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए।

ठाकुर नेपाल सिंह का विवाह श्रीमती गंगा देवी से हुआ था। उनका एक बेटा और दो बेटियां थीं। उनके पुत्र ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह भी शिक्षाविद थे और पटना विश्वविद्यालय के कुलपति रहे । ठाकुर नेपाल सिंह की दो बेटियाँ थीं जिनका नाम श्रीमती राज बाई और श्रीमती भगवती देवी था । उन्होंने अपने बेटे ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह और बेटी श्रीमती राज बाई को उच्च शिक्षा के लिए इंग्लैंड भेजा । श्रीमती राज बाई का विवाह ठाकुर इंदर प्रताप सिंह चौहान से हुआ था। श्रीमती राज बाई और ठाकुर इंद्र प्रताप सिंह के एक पुत्र श्री अरुण प्रताप सिंह चौहान और एक पुत्री सुश्री सुजाता चौहान थीं। श्री अरुण प्रताप भारतीय सेना में शामिल हुए और मेजर जनरल के पद से सेवानिवृत्त हुए। सुश्री सुजाता चौहान ने भारतीय लेखा परीक्षा पास की और भारत सरकार की IA & AS सेवा में कार्य किया। वह भारत सरकार में एक वरिष्ठ पद से सेवानिवृत्त हुईं। ठाकुर नैपाल सिंह की दूसरी बेटी श्रीमती भगवती देवी का विवाह श्री रवि राघव से हुआ, जो उत्तर प्रदेश के बलिया में प्रोफेसर थे।

ठाकुर नैपाल सिंह बहुत ही आध्यात्मिक किस्म के व्यक्ति थे। वृद्धावस्था के दौरान वह वाराणसी गए जहाँ उन्होंने 16 अक्टूबर 1954 को मोक्ष प्राप्त किया।

2. ठाकुर महेन्द्र प्रताप सिंह उप कुलपति पटना विश्वविद्यालय

ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह ठाकुर नेपाल सिंह के पुत्र थे। उनका जन्म 14 जनवरी 1915 को हुआ था। वह एक मेघावी छात्र थे। स्कूल / कॉलेज की शिक्षा पूरी करने के बाद उनके पिता ठाकुर नेपाल सिंह ने उन्हें उच्च अध्ययन के लिए ऑक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय, इंग्लैंड भेज दिया। श्रीमती इंदिरा गांधी भी उस समय में ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह के साथ ऑक्सफ़ोर्ड में पढ़ रही थी। इंग्लैंड से लौटने के बाद उन्होंने शिक्षण का पेशा चुना। वह एक लंबे समय तक वाराणसी के प्रतिष्ठित उदय प्रताप कॉलेज के प्राचार्य रहे । उनके छात्र अभी भी पूरे भारत में बिखरे हुए हैं। कहा जाता है कि पूर्व प्रधानमंत्री श्री चंद्र शेखर सिंह यूपी कॉलेज के छात्र थे।

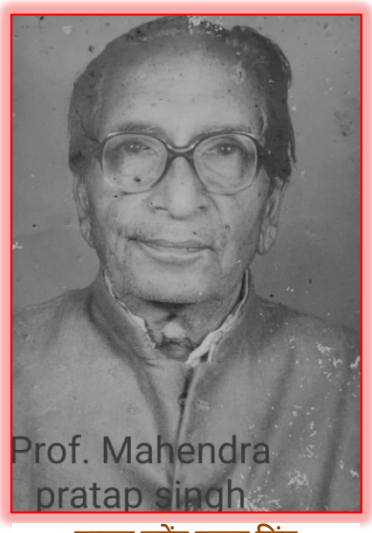

ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह

ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह अपनी माता जी के साथ

यू पी कॉलेज छोड़ने के बाद वह पटना विश्वविद्यालय के कुलपति बने। ठाकुर महेंद्र प्रताप उस पद पर 14.11.70 से 20.4.72 तक रहे । उन्होंने शादी नहीं की और जीवन भर कुंवारे रहे। अपने पिता ठाकुर नेपाल सिंह की तरह वह भी एक बहुत ही आध्यात्मिक व्यक्ति थे। सेवानिवृत्ति के बाद श्री महेंद्र प्रताप सिंह अपने गृह नगर दादरी में बस गए, जहाँ 16 जून 1997 को उनकी मृत्यु हो गई

3. डॉ. (प्रो) रामप्रताप सिंह रावल

डॉ राम प्रताप सिंह और डॉ (प्रो) वेदी कुमारी

डॉ राम प्रताप सिंह ठाकुर केहर सिंह और श्रीमती जया देवी के पुत्र हैं। उनका जन्म 26 जुलाई 1936 को दादरी, जिला गौतम बुद्ध नगर, यूपी में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा दादरी में हुई थी। तत्पश्चात, डॉ. राम प्रताप ने हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय में प्रवेश लिया। उन्होंने वहां से साहित्य और वेदालंकार पाठ्यक्रम किए जो क्रमशः हाई स्कूल और स्नातक की डिग्री के बराबर हैं। इसके बाद, उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से पोस्ट ग्रेजुएशन और दिल्ली विश्वविद्यालय से संस्कृत में डॉक्टरेट की।

वह स्वर्गीय ठाकुर नेपाल सिंह आई इ. एस के भतीजे है और स्वर्गीय ठाकुर महेंद्र प्रताप सिंह के चचेरे भाई हैं जो पटना विश्वविद्यालय के कुलपति रहे हैं । अपने चाचा और चचेरे भाई की तरह ही डॉ राम प्रताप भी एक बहुत ही मेघावी अवं कुशाग्र छात्र थे। उन्होंने पेशे के रूप में अध्यापन को चुना और विश्वेश्वरानंद वैदिक अनुसंधान संस्थान, होशियारपुर पंजाब में संस्कृत में व्याख्याता के रूप में अपना करियर शुरू किया, जहां उन्होंने 1962 से 1964 तक दो साल काम किया। इसके बाद, उन्होंने जम्मू विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग में 1964 से 1996 तक व्याख्याता, रीडर, प्रोफेसर और प्रमुख के रूप में काम किया। वह यूनिवर्सिटी सिंडिकेट के मेंबर और डीन, फैकल्टी ऑफ आर्ट्स भी रहे ।

डॉ। राम प्रताप के लेख 100 से अधिक संस्कृत, हिंदी और अंग्रेजी की विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुके है । इसके अलावा, उनकी कई पुस्तके प्रकाशित हुई है । उनमें से कुछ के नाम नीचे दिए गए हैं:

1. पूरनंम कवीरुप्तया विवेचनम्, पुराण विमर्ष
2. मम्मोट्टारि युग में भारतीय काव्य शास्त्र में नूतन अवधरायणाए
3. साहित्य सुधा सिंधु (हिंदी अनुवाद)
4. भल्लता शतक (संस्कृत, हिंदी, अंग्रेजी)
5. राजेंद्र कर्णपुर (संस्कृत और हिंदी),
6. उर्मिका (संस्कृत),
7. पुरंध्री पंचकर्म (संस्कृत)
8. मेरे गीत तुम्हारे गीत (हिंदी)
9. साहित्य और संस्कृत निबन्ध (हिन्दी)
10. त्रिविधा काव्य समीक्षा

डॉ. राम प्रताप ने पंद्रह पीएचडी और बीस एम फिल विद्वानों का मार्गदर्शन किया है। वे विश्वविद्यालय की समीक्षा ऋतंभरा के संपादक भी थे।

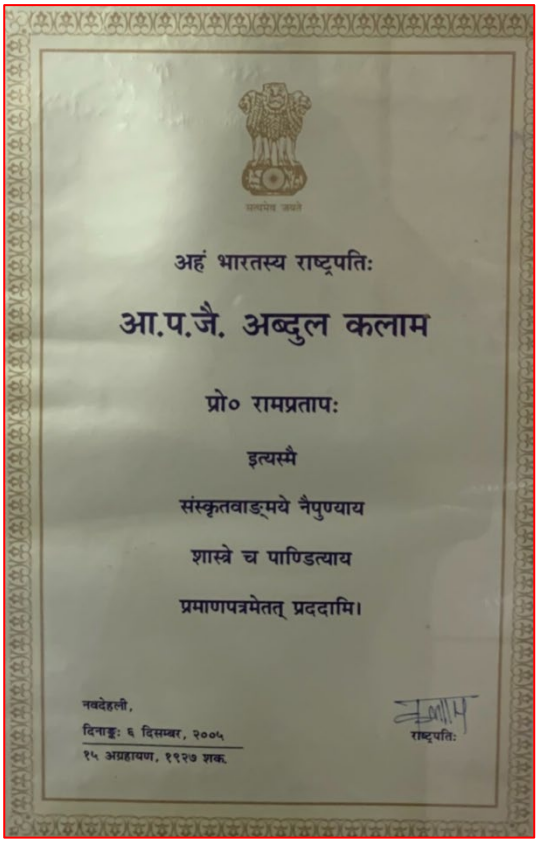

अहं भारतस्य राष्ट्रपतिः

आ.प.जै. अब्दुल कलाम

प्रो० रामप्रतापः

इत्यस्मै

संस्कृतवाङ्मये नैपुण्याय

शास्त्रे च पाण्डित्याय

प्रमाणपत्रमेतत् प्रददामि।

नवदेहली,
दिनाङ्कः ६ दिसम्बर, २००५
१५ अग्रहायण, १९२७ शक

राष्ट्रपतिः

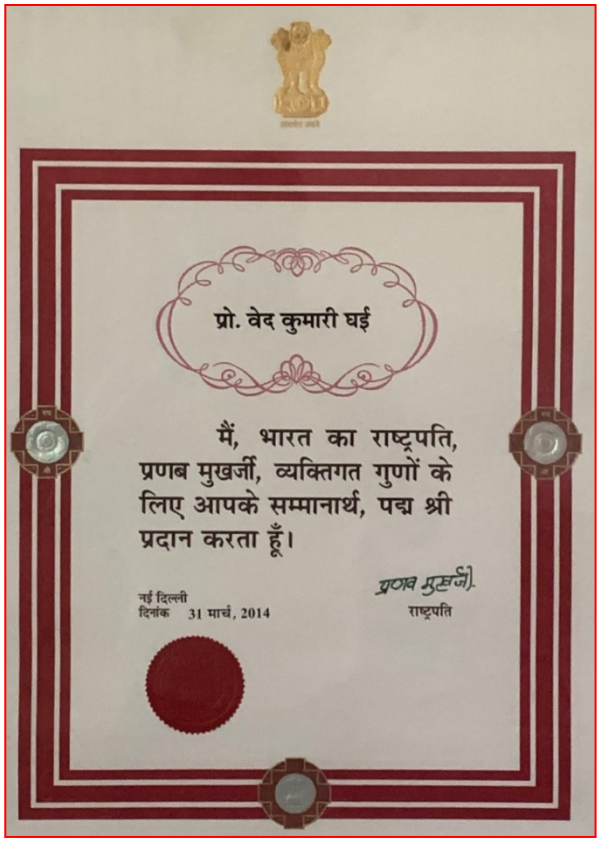

प्रो. वेद कुमारी घई

मैं, भारत का राष्ट्रपति, प्रणब मुखर्जी, व्यक्तिगत गुणों के लिए आपके सम्मानार्थ, पद्म श्री प्रदान करता हूँ।

नई दिल्ली
दिनांक 31 मार्च, 2014

प्रणब मुखर्जी
राष्ट्रपति

डॉ राम प्रताप निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित हैं:

1. संस्कृत में अनुसंधान और अध्ययन के लिए 2006 में भारत का राष्ट्रपति सम्मान पुरस्कार।
2. उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी द्वारा 2004 में भल्लात शतक और साहित्य सुधा सिंधु के लिए पुस्तक पुरस्कार।
3. 2007 में राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, जम्मू द्वारा सम्मानित।

वह एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं और कई ऐसे संस्थानों से जुड़े हुए हैं। वह बी.आर.वी घई धर्मार्थ ट्रस्ट के ट्रस्टी हैं। यह ट्रस्ट 1969 से अंबफला जम्मू में प्राकृतिक स्वच्छता संस्थान का प्रबंधन करता है

डॉ। राम प्रताप ने 15 दिसंबर 1963 को डॉ (प्रो) वेदी कुमारी से शादी की। वह एक अंतरराष्ट्रीय प्रशंसित संस्कृत विद्वान और जम्मू विश्वविद्यालय के पूर्व डीन फैकल्टी ऑफ आर्ट्स हैं। उसका जन्म जम्मू में हुआ था। वहीँ से अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्होंने 1953 में पंजाब विश्वविद्यालय से संस्कृत में स्नातकोत्तर और 1958 में प्राचीन

भारतीय इतिहास और संस्कृति में मास्टर ऑफ आर्ट्स किया। उन्होंने बनारस हिंदू विश्वविद्यालय से 1960 में संस्कृत में पीएचडी की। श्रीमति वेद कुमारी ने अपने करियर की शुरुआत जम्मू के गवर्नमेंट कॉलेज फॉर वूमेन में संस्कृत

डॉ वेद कुमारी राष्ट्रपति श्री प्रणव मुख़र्जी से पद्मा अवार्ड प्राप्त करते हुए

डॉ राम प्रताप राष्ट्रपति से सम्मान पत्र ग्रहण करते हुए

की प्रोफेसर के रूप में की। वह 31 दिसंबर 1991 को सेवानिवृत्त होने तक जम्मू विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर स्तर के संस्कृत विभाग की प्रमुख थीं। उन्होंने 1966-67 और 1978-80 में भारतीय अध्ययन संस्थान, कोपेनहेगन विश्वविद्यालय, डेनमार्क में पाणनि का संस्कृत व्याकरण और साहित्य पढ़ाया।

वह डोगरी भाषा की विद्वान हैं और हिंदी भी जानती हैं। वह सामाजिक कार्यों में भाग लेती है और अमरनाथ श्राइन बोर्ड की सदस्य हैं। डॉ (प्रो) वेद कुमारी निम्नलिखित पुरस्कारों से सम्मानित है : -

1. उन्हें 2014 में भारत के चौथे सबसे बड़े नागरिक पुरस्कार पद्म श्री से सम्मानित किया गया था।

2. भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मान का प्रमाण पत्र उनकी संस्कृत में छात्रवृत्ति के लिए ।

3. सामाजिक कार्यों के लिए जम्मू और कश्मीर सरकार द्वारा 1995 में स्वर्ण पदक।

4. 1997 में संस्कृत के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार।

5. 2005 में डोगरा रतन पुरस्कार

6. 2009 में लाइफटाइम अचीवमेंट अवार्ड

7. 2010 में स्त्री शक्ति पुरस्कार

डॉ राम प्रताप का एक बेटा वीर भानू है। उनका जन्म 13 मई 1965 को हुआ था। वर्तमान में श्री भानु बैंगलोर में एक आईटी सॉफ्टवेयर और प्लेटफ़ॉर्म कंपनी सुवेन्चर सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड के सीईओ हैं। उनकी शादी श्रीमती भावना से हुई और उनके दो बच्चे हैं जिनका नाम निकिता भानु और निखिल भानू है। निकिता अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर हैं और वाशिंगटन डीसी में कार्यरत हैं। उनका बेटा निखिल बेंगलुरु में खेल पत्रकार है।

डॉ राम प्रताप की बेटी ऋचा एक डॉक्टर हैं जिनका विवाह डॉ. पवन अरोड़ा से हुआ जो एक सर्जन है। वे दोनों जम्मू के एक सरकारी अस्पताल में कार्यरत हैं। उनके दो बच्चे हैं - ओजस और मानस। ओजस जहां जम्मू में इंजीनियरिंग कर रहे हैं, वहीं मानस टोरंटो कनाडा में कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग की पढ़ाई कर रहे हैं।

घोड़ी बछेड़ा से

1. कोमोडोर राजिन्दर सिंह रावल

कमोडोर राजिंदर सिंह रावल और श्रीमती सरोज

कमोडोर राजिंदर सिंह रावल कर्नल जगमाल सिंह और श्रीमती भोता राघव के बेटे हैं। उनका जन्म 16 जनवरी 1961 को घोड़ी बछेरा गाँव में हुआ था। उन्होंने सेंट फ्रांसिस एंड क्राइस्ट द किंग झांसी, सेंट मैरी मेरठ और माउंट सेंट मैरी दिल्ली जैसे कॉन्वेंट स्कूलों में शिक्षा प्राप्त की है। वह सेंट जोसेफ्स अकादमी देहरादून के छात्र भी थे। कोमोडोर राजिंदर सिंह रावल ने अपना ICSE और ISC देहरादून से किया। सेंट जोसेफ अकादमी में हेड बॉय के रूप में उन्हें एकेडेमिक्स चैंपियंस ट्रॉफी से सम्मानित किया गया। उनका विवाह अजमेर राजस्थान के ठाकुर रणवीर सिंह राठौर की बेटी श्रीमती सरोज से हुआ है।

कोमोडोर राजिंदर सिंह रावल अपने परिवार के इतिहास में पहले व्यक्ति है जिन्होंने कमीशन प्राप्त किया और भारतीय नौसेना की विशिष्ट पनडुब्बी शाखा में शामिल हुए थे। उन्हें 01 जुलाई 1984 को कमीशन दिया गया था और वह पदोन्नति करते हुआ कमोडोर के पद तक जा पहुंचे । उन्हें पाकिस्तान के साथ कारगिल युद्ध के दौरान चार में से एक उत्कृष्ट जर्मन सबमरीन INS शंकुश को कमान सँभालने का गौरव प्राप्त हुआ। सबमरीन आर्म में, कोमोडोर राजिंदर सिंह रावल को सर्वश्रेष्ठ सबमरीनर के रूप में चुना गया। वह अपने बैच के सर्वश्रेष्ठ सबमरीनार चुने गए और अपने बैच में प्रथम आने के कारण उन्हें प्रतिष्ठित "डॉल्फिन ट्रॉफी" से सम्मानित किया गया था।

कमोडोर राजिंदर सिंह रावल के दो बच्चे हैं। विश्रुत सिंह रावल पुत्र हैं और हितिशा सिंह पुत्री हैं। वे क्रमशः 24 और 28 वर्ष की आयु के हैं। दोनों भारतीय नौसेना और भारतीय सेना में अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी के सेना में कमीशन अधिकारी के रूप में काम कर रहे हैं। लेफ्टिनेंट विश्रुत सिंह रावल भारतीय नौसेना में राष्ट्रीय इंडियन मिलिट्री कॉलेज (RIMC) से "वेवेल स्वोर्ड ऑफ ऑनर" सम्मानित है । उन्हें लाइट वेट कैटेगरी में उत्तराखंड का सर्वश्रेष्ठ मुक्केबाज भी चुना गया था।

उनकी बेटी लेफ्टिनेंट हितिशा रावल ने रावल परिवार में पहली कमीशन गर्ल बनकर एक नया ऐतिहासिक अध्याय जोड़ा है। वह भारतीय सेना के न्यायाधीश एडवोकेट जनरल (JAG) शाखा में हैं। दोनों को हाल ही में 2018 और 2019 में कमीशन दिया गया है। उसके कमीशन मिलने से पहले लेफ्टिनेंट हितिशा ने 86% अंकों के साथ एलएलएम किया और दिल्ली की उच्च न्यायालय और A F T में वकालत भी की।

विश्रुत सिंह नौसेना में सब लेफ्टिनेंट बने

मेरठ | वरिष्ठ संवाददाता

मेरठ के एक और होनहार ने भारतीय नौसेना में कमीशन पाते हुए शहर एवं परिवार का नाम रोशन कर दिया है। सेना के जरिए देशसेवा करने की परिवार की परंपरा को आगे बढ़ाते हुए विश्रुत नौसेना में सब लेफ्टिनेंट बने हैं। केरल में हुई पासिंग आउट परेड में विश्रुत देशभर के उन 150 कैडेट्स में शुमार रहे जो भारतीय नौसेना का हिस्सा बने हैं।

विश्रुत सिंह रावल इंडियन नेवल एकेडमी (आईएनए) से चार वर्ष बीटेक उत्तीर्ण करते हुए क्लान वन कमीशनड ऑफिसर बने हैं। बुधवार को केरल में इझिमाला स्थित आईएनए में पासिंग आउट परेड हुई। बेटे की इस उपलब्धि का पूरा परिवार गवाह बना। विश्रुत के पिता कैप्टन आरएस रावल भी इस वक्त नौसेना में देशसेवा कर रहे हैं। विश्रुत ने परिवार में तीसरी पीढ़ी के रूप में नौसेना में शामिल कर देशसेवा की परपंरा को आगे बढ़ाया है। विश्रुत के दादा कर्नल जगमाल सिंह पूरे क्षेत्र में पहले ऐसे व्यक्ति थे जो पाकिस्तान एवं चीन के खिलाफ तीन युद्ध में शामिल हुए। विश्रुत के पिता कैप्टन आरएस रावल ने भी कारगिल युद्ध के दौरान भारतीय नौसेना में आईएनएस शंकुश को कमांड किया था। विश्रुत ने देहरादून के प्रसिद्ध स्कूल आरआईएमसी से अपनी स्कूलिंग पूरी की। यहां स्कूल में बतौर कैडेट सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने पर वेवव स्वार्ड से सम्मानित किया गया था। विश्रुत के परिजन पासिंग आउड परेड में शामिल रहे। विश्रुत ने सफलता का श्रेय माता-पिता को दिया है। विश्रुत के अनुसार परिवार से ही उन्हें यह प्रेरणा मिली।

नाम रोशन किया

- मेरठ के शास्त्रीनगर निवासी विश्रुत सिंह इंडियन नेवल एकेडमी से पूरा किया है बीटेक
- तीन पीढ़ियों से नौसेना में देशसेवा कर रहा है परिवार, पिता भी नौसेना में ऑफिसर

नौसेना में सब लेफ्टिनेंट बने विश्रुत सिंह रावल अपने परिवार के साथ। • हिन्दुस्तान

कर्नल जगमाल सिंह और श्रीमती भोता राघव

लेफ्टिनेंट बन इतिशा ने रचा इतिहास

मेरठ | वरिष्ठ संवाददाता

सेना में शामिल हो तीन पीढ़ियों से देश सेवा कर रहे रावल परिवार की बेटी ने आर्मी में कमीशन पाकर इतिहास रच दिया। इतिशा रावल ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी (ओटीए) चेन्नई में शुक्रवार को हुई पासिंग आउट परेड में कमीशन मिल गया। बेटी की इस उपलब्धि पर पूरा परिवार गदगद है। इतिशा परिवार में पहली लड़की हैं जो सेना में पहुंची हैं। इतिशा ने जज एडवोकेट जनरल ब्रांच से सेना में एंट्री की है।

लेफ्टिनेंट इतिशा रावल कृष्णालोक मवाना रोड निवासी कर्नल जगमाल सिंह की पौत्री हैं। यह परिवार तीन पीढ़ियों से सेना के जरिए देश सेवा कर रहा है। इतिशा के पिता कैप्टन आरएस रावल हाल ही में नौसेना से रिटायर हुए हैं। आरएस रावल ने कारगिल ऑपरेशन के दौरान अग्रिम पंक्ति में पनडुब्बियों को कमांड किया था। इतिशा के छोटे भाई सब-लेफ्टिनेंट विश्रुत सिंह रावल भी इस वक्त नौसेना में अधिकारी हैं।

इतिशा ने देहरादून से 82 फीसदी अंकों के साथ एलएलएम करने के बाद आर्मी में जज एडवोकेट जनरल ब्रांच से प्रवेश किया। आर्मी में चयन से पहले इतिशा ने आईएफटी दिल्ली और हाईकोर्ट दिल्ली में अपनी इंटर्नशिप की। पासिंग आउट परेड में जैसे ही इतिशा को कमीशन मिला तो पूरा परिवार खुशियों से झूम उठा।

कृष्णालोक मवाना रोड निवासी इतिशा ने लेफ्टिनेंट बनकर परिवार का नाम रोशन किया।

यह उल्लेखनीय है कि उनके पिता श्री जगमाल सिंह और चाचा श्री के.पी सिंह भी सेना में थे। वह दोनों कर्नल के पद तक पहुंचे। कोमोडोर जगमाल सिंह के बाबा ठाकुर राम चंदर सिंह के बड़े पुत्र कर्नल जगमाल सिंह रावल को देश के उन सभी बड़े युद्धों में भाग लेने का गौरव प्राप्त हुआ, जिन्हें देश ने 1962, 1965 और 1971 में स्वतंत्रता के बाद लड़ा था।

कमोडोर राजिंदर सिंह रावल ने देश और विदेश की व्यापक यात्रायें की है। वह श्रीलंका, केन्या, मुंबस्सा, तंजानिया, सिसलस, सिंगापुर, रूस और इंग्लैंड (यूके) में प्रतिनियुक्ति पर रहे हैं। जनवरी 2018 में भारतीय नौसेना से सेवानिवृत्ति के बाद कमोडोर राजिंदर सिंह रावल देहरादून उत्तराखंड में बस गए हैं।

घोड़ी बछेड़ा गांव के एक ही परिवार के सेना में तीन पीढ़ियों का उच्च अधिकारियों के पद पर होना प्रतियेक रावल के लिये एक गर्व का विषय है

2. ठाकुर दिगेन्द्र सिंह रावल

श्री दिगेन्द्र सिंह और श्रीमती राज बाला सिंह

श्री दिगेन्द्र सिंह का जन्म 4 जनवरी 1943 को ग्रेटर नोएडा के घोरी बछेरा गाँव, जिला गौतम बुद्ध नगर (उ.प्र।) में हुआ। वह ठाकुर मही लाल सिंह और श्रीमती सुखदेवी जी के पुत्र हैं। । अपनी स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, श्री दिगेंद्र सिंह ने मेरठ कॉलेज, आगरा विश्वविद्यालय से बी.एससी की। इसके बाद उन्होंने 1964 में एच बी टी आई कानपुर में केमिकल इंजीनियरिंग में प्रवेश लिया, जिसे उन्होंने 1968 में पूरा किया। 1983 में लंदन विश्वविद्यालय से एमबीएम भी किया। श्री दिगेंद्र सिंह ने श्रीमती राज बाला सिंह से शादी की है जो गांव समाना, ग़ाज़ियाबाद के श्री राजेन्द्र नारायण सिंह की पुत्री है। उसकी जन्म तिथि 1 जनवरी 1948 है और वह इतिहास में एम.ए. है।

श्री दिगेंद्र सिंह को सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों में काम करने का व्यापक अनुभव है। उन्होंने सीमेंट कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया में कार्यकारी अभियंता के रूप में एक साथ 8 सीमेंट परियोजनाओं को कार्यान्वित किया। इसके बाद, श्री दिगेंद्र सिंह ने इंजीनियरिंग इंडिया लिमिटेड में प्रोजेक्ट इंजीनियर नियुक्त हुए। वहां उन्होंने मथुरा रिफाइनरी, बॉम्बे में एरोमेटिक कॉम्प्लेक्स और विशाखापट्टनम की परियोजनाओं को कार्यवन्तित करने में अपना योगदान दिया । अंत में वे वाणिज्य मंत्रालय के तहत प्रोजेक्ट्स एवं इंजीनियरिंग कारपोरेशन से मुख्य महाप्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुए। पीईसी में, श्री दिगेंद्र सिंह ने 1982 से 2003 तक काम किया जहां उन्होंने छह महाद्वीपों के लगभग 35 देशों की परियोजनाओं का काम देखा। PEC में काम करते हुए, उन्होंने कई देशों जैसे स्विट्जरलैंड, यूके, यूएस ऑस्ट्रेलिया, नेपाल, UAE, USSR आदि के साथ गोल्ड, सिल्वर, कॉपर, केरोसीन ऑयल, गेहूं, चावल आदि का व्यापार किया। उपरोक्त के अलावा, उन्होंने गृह मंत्रालय के तहत सांप्रदायिक सद्भाव के लिए बनाई गयी राष्ट्रीय फाउंडेशन में सितंबर 2004 से जनवरी 2007 तक संयुक्त सचिव के रूप में काम किया। उस पद पर रहते हुआ वह सीधे गृह सचिव को रिपोर्ट करते थे ।

श्री दिगेंद्र सिंह के एक पुत्र आदित्य कुमार और एक बेटी लक्ष्मी सिंह हैं। श्री आदित्य बीई, एमबीए हैं और वर्तमान में एक आईटी कंपनी के अध्यक्ष के रूप में यूएसए में कार्यरत हैं। आदित्य एक साइबर विश्वविद्यालय के निदेशक भी हैं जो अमरीका के वरिष्ठ रक्षा अधिकारियों को प्रशिक्षण प्रदान करती हैं। उनकी कंपनी रूस, कोरिया, जापान, सिंगापुर, जर्मनी और भारत सहित विभिन्न अमेरिकी दूतावासों में काम कर रही है। उनकी बेटी लक्ष्मी सिंह का विवाह भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड में डिप्टी जनरल मैनेजर के रूप में कार्यरत श्री उमेंद्र प्रताप सिंह के साथ हुआ।

श्री दिगेंद्र सिंह ने भारत और विदेश की यात्राएँ की हैं। वह अमेरिका, कनाडा, स्विटजरलैंड, जर्मनी, लक्जमबर्ग, एम्सटर्डम, यूके, फ्रांस, जर्मनी, श्रीलंका, यूएई आदि की यात्रा कर चुके है।

रावल परिवार की सात पीडियां

हम अपने परिवार के इतिहास के मालिक नहीं हैं। हम बस इसे अपने आने वाली संतानों के लिया सुरक्षित रख सकते है।

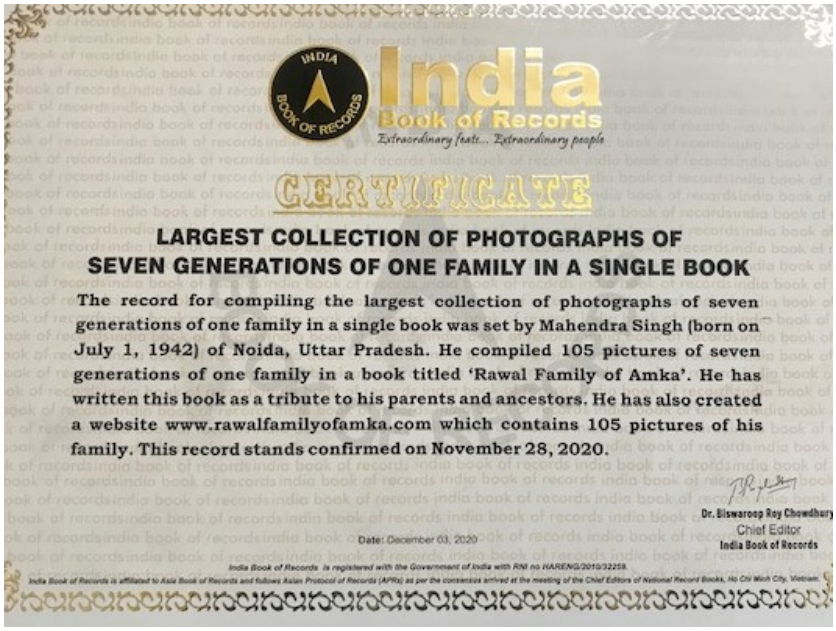

India
Book of Records
Extraordinary feats... Extraordinary people

CERTIFICATE

LARGEST COLLECTION OF PHOTOGRAPHS OF SEVEN GENERATIONS OF ONE FAMILY IN A SINGLE BOOK

The record for compiling the largest collection of photographs of seven generations of one family in a single book was set by Mahendra Singh (born on July 1, 1942) of Noida, Uttar Pradesh. He compiled 105 pictures of seven generations of one family in a book titled 'Rawal Family of Amka'. He has written this book as a tribute to his parents and ancestors. He has also created a website www.rawalfamilyofamka.com which contains 105 pictures of his family. This record stands confirmed on November 28, 2020.

Date: December 03, 2020

Dr. Biswaroop Roy Chowdhury
Chief Editor
India Book of Records

India Book of Records is registered with the Government of India with RNI no HARENG/2010/32258.
India Book of Records is affiliated to Asia Book of Records and follows Asian Protocol of Records (APR) as per the consensus arrived at the meeting of the Chief Editors of National Record Books, Ho Chi Minh City, Vietnam.

रावल परिवार की सात पीडियों का विवरण

आमका परिवार की सात पीडियों का पीढ़ी दर पीढ़ी वर्गीकरण किया गया है। इन सात पीडियों में ठाकुर मोहर सिंह से लेकर श्री माधव सिंह के पुत्र सत्यम तक कुल 146 सदस्य हुए है। इन सब के नामों को चिन्हित कर लिया गया है और उनके चित्रों को भी उनके नाम के साथ प्रदर्शित किया गया है। परिवार के कुछ सदस्यों ने फोटो नहीं दिए हैं। इनके प्राप्त होने पर इनको भी वेबसाइट पर अपलोड कर दिया जाएगा। यदि किसी का नाम अनजाने में छूट गया है तो उसका नाम हमें पीढ़ी के संबंधित समूह में शामिल करने के लिए भेज दे।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि इस पुस्तक को भारत में एक ही परिवार की सात पीडियों के सबसे अधिक फोटोज एकत्रित करने की लिए इंडिया बुक ऑफ़ रिकॉर्डस में शामिल किया गया है। इस सम्भन्ध में मिला प्रशस्ति पत्र एवं पदक की चित्रलिपि ऊपर दर्शायी गयी है।

146 परिवार के सदस्यों में से, 18 सदस्यों की तस्वीरें ढुंडी नहीं जा सकती क्योंकि या तो उनके समय में फोटोग्राफी तकनीक उपलब्ध नहीं थी या यह आम जनता को आसानी से उपलब्ध नहीं थी। इसलिए उनका फोटो नहीं लगाया जा सका है । शेष 128 परिवार के सदस्यों में से हमारे पास 120 की तस्वीरें हैं। केवल 8 शेष हैं। उनकी तस्वीरों को भी प्राप्त करने का प्रयत्न किया जा रहा है और जैसे ही वह उपलब्ध होंगी, वेबसाइट पर प्रदर्शित कर दिया जायेगा।

निम्नलिखित चार्ट में 04 अप्रैल 2021 तक की तथ्यात्मक स्थिति को दर्शाया गया है।

पीढ़ी संख्या	सदस्यों की संख्या	उपलब्ध तस्वीरें
पीढ़ी एक	1	0
पीढ़ी दो	3	1
पीढ़ी तीन	10	04
पीढ़ी चार	15	10
पीढ़ी पांच	24	22
पीढ़ी छः	44	37
पीढ़ी सात	49	46
कुल	146	120

पहली पीढ़ी

ठाकुर मोहर सिंह

दूसरी पीढ़ी

ठाकुर रामजस सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर मोती राम सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर मुखराम सिंह

तीसरी पीढ़ी

ठाकुर बलवंत सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर श्रीराम सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर हरबंस सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर रिसाल सिंह

ठाकुर रायदल सिंह

ठाकुर खज़ान सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर अमीचंद सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर देशराज सिंह

ठाकुर नारायण सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर नवल सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

चौथी पीढ़ी

ठाकुर चंद्रभान सिंह

ठाकुर नरपत सिंह

ठाकुर तुंगल सिंह

ठाकुर रघुवीर सिंह

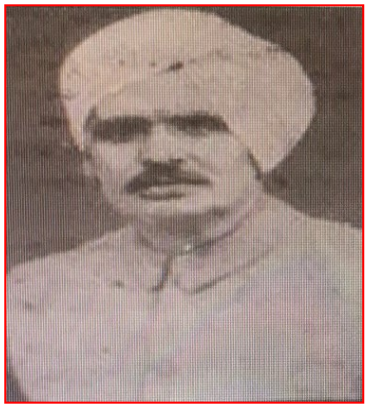

ठाकुर राज सिंह

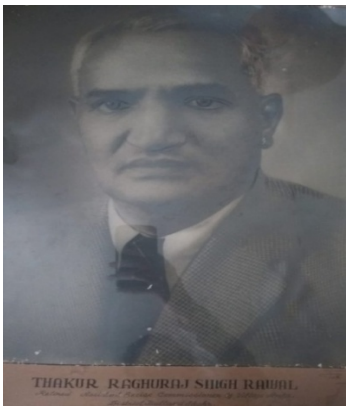

ठाकुर रघुराज सिंह ओ.बी.ई

ठाकुर प्रहलाद सिंह

ठाकुर रामचंद्र सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

डॉ अत्तर सिंह

मेजर वीर सिंह

ठाकुर भारत सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर इंद्रजीत सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर निर्भय सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर हरदन सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

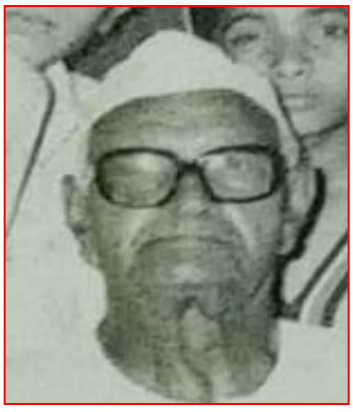

ठाकुर चवल सिंह

पांचवीं पीढ़ी

ठाकुर बानी सिंह

ठाकुर बिशन सिंह

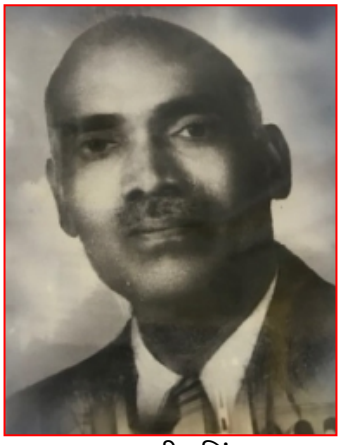

ठाकुर महावीर सिंह

ठाकुर उदय वीर सिंह

ठाकुर श्योराज सिंह

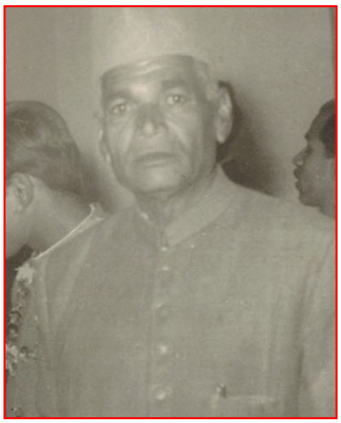

ठाकुर अमर सिंह

ठाकुर देवेंद्र सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर बिजेंद्र सिंह

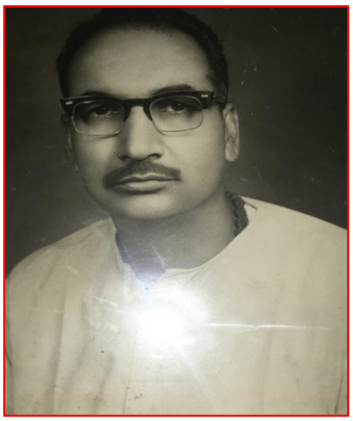

ठाकुर राजेंद्र सिंह

ठाकुर नरेंद्र सिंह

ठाकुर रवेंद्र सिंह

ठाकुर उदय प्रताप सिंह

ठाकुर सुखबीर सिंह

ठाकुर रणधीर सिंह

ठाकुर यशवीर सिंह

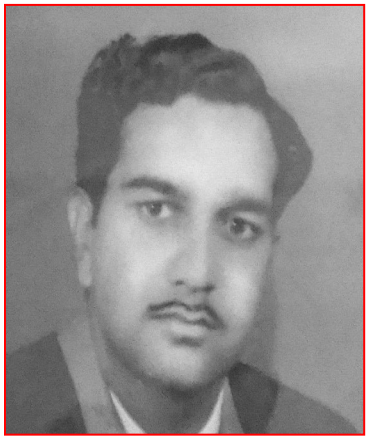

ठाकुर अभय सिंह

ठाकुर नलिन सिंह -मेजर वीर सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

ठाकुर इंद्र पाल सिंह

ठाकुर राज पाल सिंह

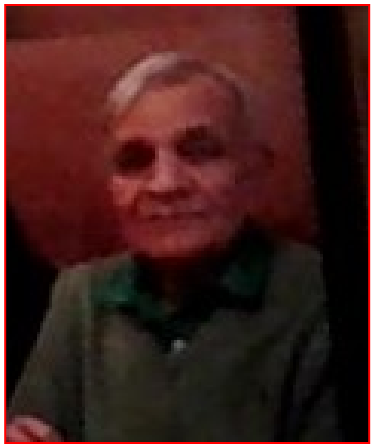

ठाकुर कुशल पाल सिंह

ठाकुर महेंद्र सिंह (वक़ील साहब)

ठाकुर विजय पाल सिंह

ठाकुर जतन सिंह

ठाकुर रणवीर सिंह

छठी पीढ़ी

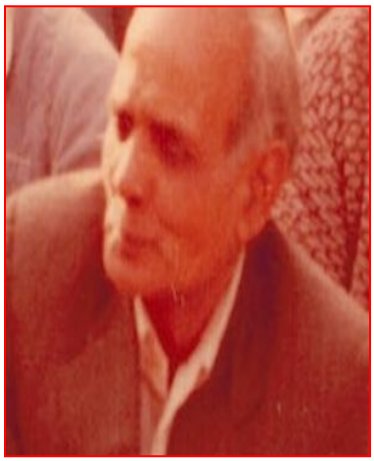

ठाकुर राजवीर सिंह

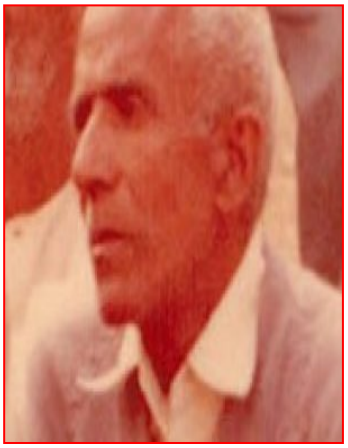

ठाकुर बृजबीर सिंह

ठाकुर सूरज पाल सिंह

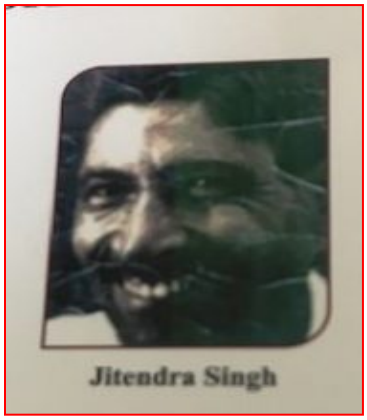

श्री जितेंद्र सिंह

श्री महेंद्र सिंह

श्री ज्ञानेन्द्र सिंह

श्री चन्द्र पाल सिंह

श्री सुरेन्द्र पाल सिंह

श्री धीरेन्द्र पाल सिंह

श्री किशन पाल सिंह

श्री दिग्विजय सिंह

श्री वीरेन्द्र पाल सिंह

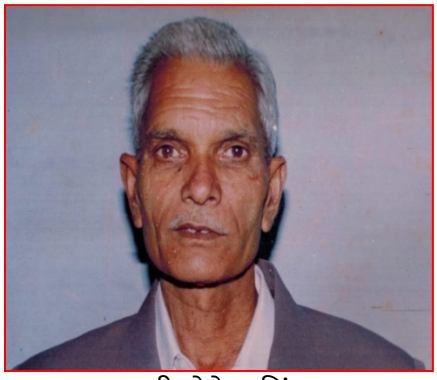

श्री योगेन्द्र सिंह

श्री विक्रम सिंह

श्री कमलेन्द्र सिंह

श्री मनवीर सिंह

श्री नायपाल सिंह रावल काशीपुर

श्री अशोक सिंह काशीपुर

श्री अजय सिंह रावल काशीपुर

श्री सतेंद्र सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री संजय सिंह रावल (काशीपुर)

श्री गजेन्द्र सिंह

श्री आनंद सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री कुलदीप सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री विनय कुमार सिंह रावल

श्री अनिल कुमार सिंह

श्री जसवीर सिंह रावल

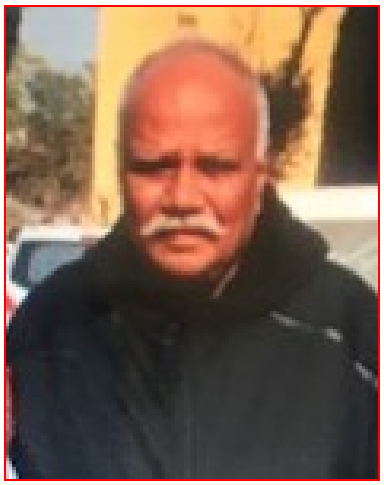

श्री सुधीर सिंह

डॉ संजीव सिंह
पुत्र ठाकुर रणधीर सिंह

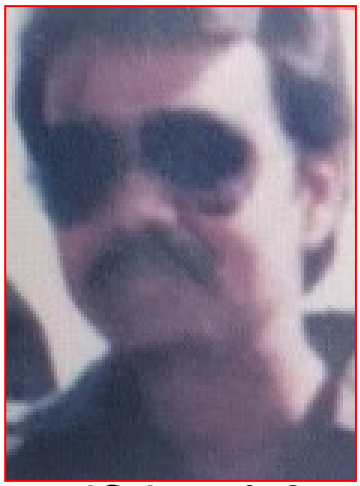

फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह

श्री मनोज सिंह (सयाना)

श्री शोभेन्द्र सिंह

श्री भशिंदर सिंह

रणवीर सिंह पुत्र
ठाकुर राजपाल सिंह

डॉ. जय कीर्ति सिंह पुत्र
ठाकुर कुशाल पाल सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री प्रिया दर्शन सिंह पुत्र
ठाकुर कुशाल पाल सिंह
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री संजय सिंह पुत्र
श्री महेंद्र सिंह वकिल साहब
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री भानु प्रताप सिंह

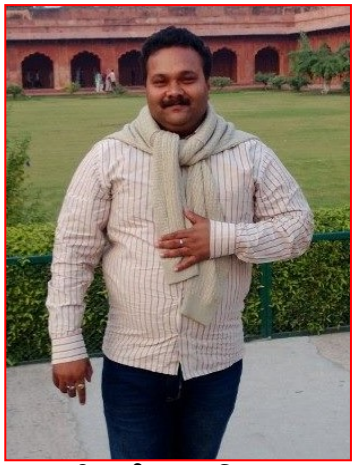

श्री सूर्य प्रताप सिंह

श्री जय राज सिंह

श्री माधव सिंह

श्री मोहित सिंह

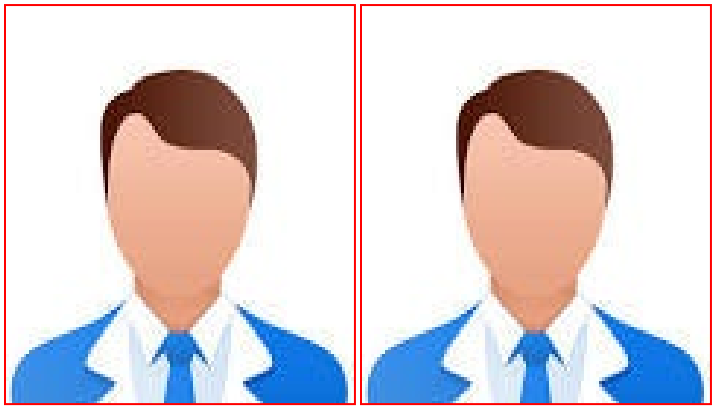

श्री नलिन सिंह के बेटे और मेजर वीर सिंह के पोते
(नाम और तस्वीरें नहीं उपलभ्ध नहीं)

सातवीं पीढ़ी

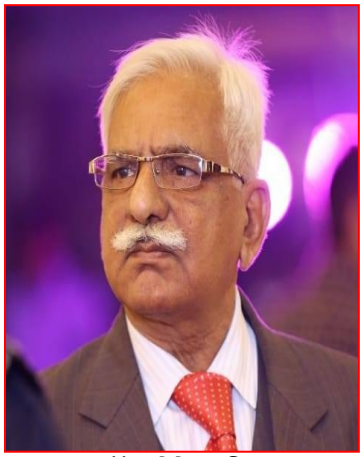

डॉ. लोकेंद्र सिंह

श्री अशोक रावल

श्री हरीश रावल

श्री विनोद रावल

श्री शैलेन्द्र सिंह

श्री हरेंद्र सिंह

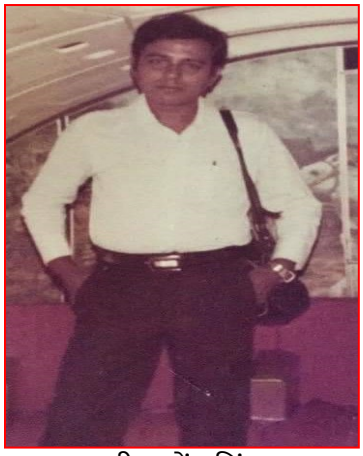

श्री सत्येंद्र सिंह

श्री अजय रावल

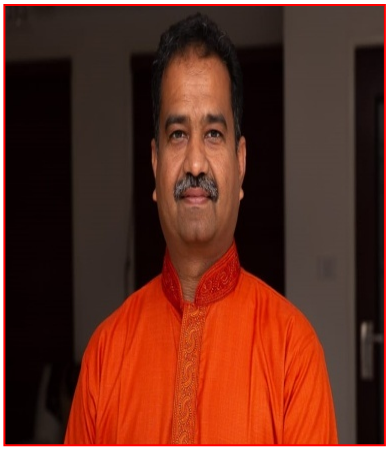

श्री राहुल रावल, ऑस्ट्रेलिया

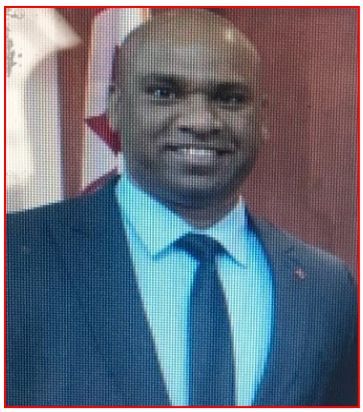

श्री अमित रावल, कनाडा

श्री दीपक रावल

श्री गौरव रावल

श्री सौरव रावल

श्री रजत रावल

श्री राजीव रावल

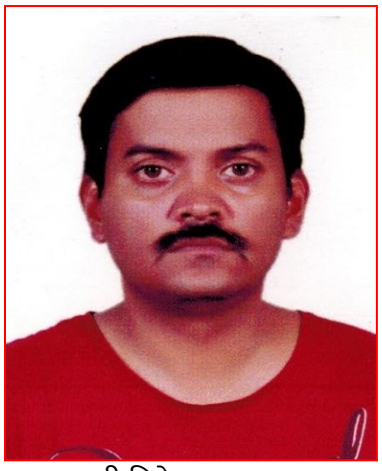

श्री विवेक रावल

श्री भूपेंद्र रावल

श्री नितिन रावल

श्री निशित रावल

श्री शुभम रावल

श्री उदित रावल

श्री टेकम सिंह

श्री रोहित सिंह (काशीपुर)

श्री मोहित सिंह (काशी पुर)
(फोटो उपलब्ध नहीं)

श्री विशाल सिंह रावल (काशीपुर)

श्री अमित सिंह रावल (काशीपुर)

श्री सूर्य प्रताप सिंह (काशीपुर)

श्री भानु प्रताप सिंह

श्री अजय सिंह

श्री अभय सिंह

श्री भारत सिंह

श्री गगनदीप सिंह

श्री जगदीप सिंह

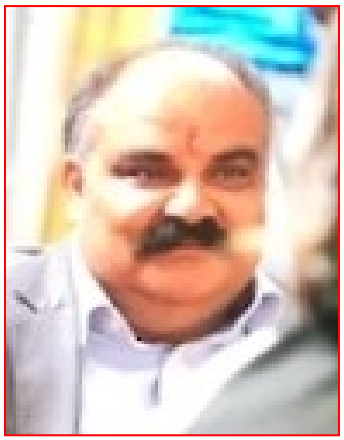

श्री अमित सिंह रावल

श्री प्रदीप सिंह

श्री अथर्व सिंह (सयाना)

श्री देवेश सिंह (सयाना)

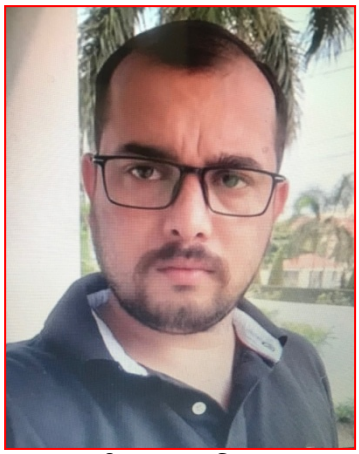

श्री शशांक सिंह

श्री हरीश रावल (मोनू)

श्री नीरज रावल

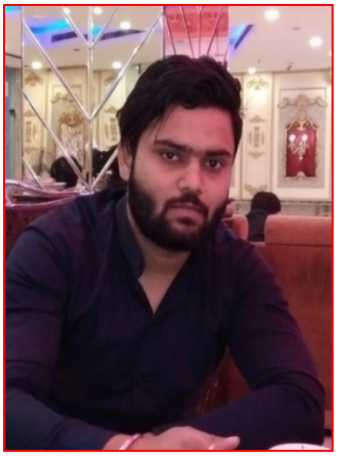

श्री प्रद्युम्न सिंह

श्री नकुल सिंह

श्री विनायक सिंह

श्री सत्यम सिंह

श्री मान सिंह

श्री धनंजय सिंह रावल

श्री शारंग सिंह रावल

श्री संजय सिंह के बेटे और महेंद्र सिंह के पोते
(नाम और तस्वीरें नहीं उपलभ्ध नहीं)

श्री संजय सिंह के बेटे और महेंद्र सिंह के पोते
(नाम और तस्वीरें नहीं उपलभ्ध नहीं)

परिवार के उभरते सितारे

इस पुस्तक में एक नया प्रकरण "RISING STARS" के नाम से जोड़ा गया है जिसमे परिवार के ऐसे युवा सदस्यों का संक्षिप्त परिचय एवं चित्र दिया गया है जिनमे आगे चल कर परिवार के ज्वेल्स बनने की प्रतिभा अवं क्षमता है। इस श्रेणी में आने के लिए निम्नलिखित दिशानिर्देश बनाये गए है :-

1. न्यूनतम क्लास II के राजपत्रित अधिकारी या सशस्त्र या अर्ध सैन्य बलों में लेफ्टिनेंट के समकक्ष पद पर या न्यूनतम 7,50,000 / - प्रति वर्ष के वेतन पर किसी निजी / सार्वजनिक क्षेत्र के कार्यालय में कार्यरत होना चाहिए ।

2. चिकित्सा विज्ञान, इंजीनियरिंग, सूचना प्रौद्योगिकी, व्यवसाय प्रबंधन आदि की किसी भी शाखा में स्नातकोत्तर योग्यता होनी चाहिए।

3. खेल, सामाजिक कार्य या सार्वजनिक सेवा या कृषि के क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले को भी इस सेक्शन में जगह दी जा सकती है।

अभी परिवार के नीचे दर्शाये गए सदस्य राइजिंग स्टार्स की श्रेणी में आते हैं। ऐसी आशा की जाती है कि भविष्य में इनमे से कुछ ज्वेल्स की जगह लेंगे।

अमित रावल श्री ज्ञानेन्द्र सिंह के पुत्र हैं। वह एक कनाडाई नागरिक हैं और वर्तमान में कनाडा के सबसे बड़े बैंक रॉयल बैंक ऑफ कनाडा (RBC) में वरिष्ठ प्रबंधक के रूप में काम कर रहे हैं। अमित को यात्रा करने, मनोरंजक खेल खेलने में आनंद आता है। वह अपनी फिटनेस पर अधिक ध्यान देते है ।

राहुल रावल श्री महेंद्र सिंह के पुत्र हैं। वह एक ऑस्ट्रेलियाई नागरिक हैं और वर्तमान में एक बहुराष्ट्रीय कंपनी सर्टिको ऑस्ट्रेलिया के आईटी विभाग के प्रमुख के रूप में काम कर रहे हैं।

अमर रावल, बी.टेक, डॉ लोकेन्द्र सिंह रावल के पुत्र है। उन्होंने NCR में अपने तीन ब्रांड आउटलेट्स और एक बेकरी फैक्ट्री की स्थापना की है। कई और आउटलेट खोलने की दिशा में काम चल रहा है. 2 करोड़ से अधिक का टर्नओवर है। वह रियल एस्टेट में भी कार्यशील है और गुरु ग्राम एवं गाजियाबाद में दो पेइंग गेस्ट हाउस चलाते हैं ।

लेफ्टिनेंट कमांडर अंकित रावल, बी.टेक, श्री हरेंद्र सिंह रावल के पुत्र हैं। वह 2010 से भारतीय नौसेना में है। वह एक विशेषज्ञ गोताखोर है और समुद्र में 350 मीटर तक गोता लगा सकते है। वह गौरवशाली पनडुब्बी समुदाय के सदस्य है

शुभेंद्र श्री शैलेंद्र सिंह के बेटे हैं। उन्होंने 2016 में अपलिफ्ट कण्ट्रोल प्राइवेट लिमिटेड नाम की एक लिफ्ट और उसके रखरखाव से संभंधित संस्था स्थापित की। अभी इनकी कंपनी लगभग 600 लिफ्टों का रखरखाव देख रही । इनकी कंपनी का कार्य दिल्ली, यूपी, पंजाब और हरियाणा में भी है। कुल कारोबार लगभग 2 करोड़ रुपए का है

लेफ्टिनेंट विश्रुत सिंह रावल घोड़ी बछेड़ा के कमोडोर राजिंदर सिंह रावल के बेटे हैं। वे जेएनयू से बीटेक हैं। अपने परिवार की तीसरी पीढ़ी के नौसेना / सेना के अधिकारी हैं। वह RIMC से वेवेल स्वोर्ड ऑफ ऑनर से सम्मानित है

लेफ्टिनेंट हितिशा रावल घोड़ी बछेड़ा गांव के कमोडोर राजिंदर सिंह रावल की बेटी हैं। वह रावल्स में पहली महिला है जिन्हे भारतीय सेना में कमीशन मिला हैं।

आरती रावल श्री ज्ञानेन्द्र सिंह की बेटी हैं। वह एमिटी यूनिवर्सिस्टी, नोएडा (यूपी) से एमबीए और कंप्यूटर एप्लीकेशन में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। आरती कनाडाई नागरिक है और अर्नेस्ट एंड यंग नमक संस्था में वरिष्ठ प्रबंधक के रूप में काम कर रही है। यह संस्था विश्व की चार शीर्ष कंसल्टेंसी फर्मों में से एक है।

सूर्य प्रताप सिंह एक वकील हैं। वह ठाकुर विजय पाल सिंह के पुत्र है। आधुनिक तकनीकों से आमका में मशीनी खेती करते हैं। वह एक सामाजिक कार्यकर्ता भी हैं। विभिन्न सामाजिक / राजनीतिक गतिविधियों में भाग लेते है।

डॉ साक्षी रावल श्री भानु प्रताप सिंह की बेटी हैं। वह दाँत की चिकित्सक है। वर्तमान में सुभारती कॉलेज, मेरठ से एमडीएस कर रही है।

अनुभव श्री विनोद रावल के बेटे हैं। उन्होंने बीटेक मैकेनिकल इंजीनियरिंग में प्रथम श्रेणी में किया। अभी वह स्टॉक होल्डिंग कॉरपोरेशन ऑफ इंडिया में ट्रेनी अधिकारी के रूप में कार्यरत हैं

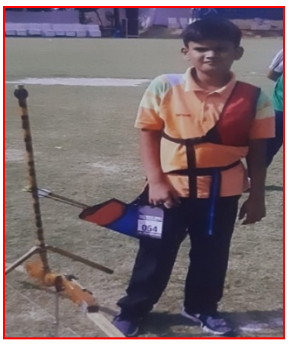

वंश श्री विवेक रावल के पुत्र हैं। वह एक होनहार तीरंदाज है। उन्होंने रायपुर, लोनी, जालंधर में सी बी इस सी क्लस्टर खेला और राष्ट्रीय स्तर पर तीरंदाजी में कई रजत और स्वर्ण पदक जीते।

प्रदीप सिंह रावल आमका के ठाकुर सुधीर सिंह रावल के बेटे हैं और बॉबी के नाम से भी जाने जाते हैं । वह एक प्रगतिशील किसान है और उनके पास प्रयाप्त खेती योग्य भूमि है। जिसके लिए वह आधुनिक तकनीकों का उपयोग करते है । सामाजिक और राजनीतिक गतिविधियों में भी गहरी दिलचस्पी लेते है

दुष्यंत धूम मानिकपुर के श्री विनोद सिंह रावल के पुत्र हैं। कम्प्यूटिंग में बीटेक है। वह क़तर में एक इलेक्ट्रिक हाउस की शाखा में बड़े पद पर कार्यरत हैऔर उनकी कंस्ट्रक्शन और ट्रेडिंग के क्षेत्र में भी व्यावसायिक रुचि है।

भारत रावल आमका के श्री विनय कुमार रावल के पुत्र हैं। वह एमसीए, पीजीडीसीए, एडीसीए, सीआईसी, एमए, बीएससी है। इस समय वह एमिटी विश्वविद्यालय, ग्रेटर नोएडा कॉम्प्लेक्स में सहायक रजिस्ट्रार के रूप में कार्यरत हैं।

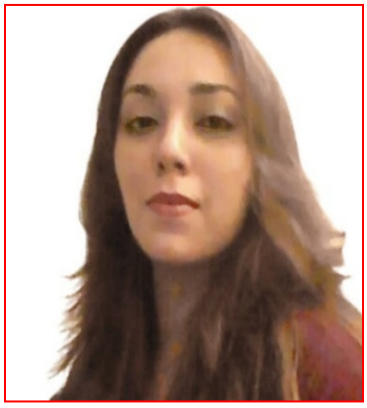

अपर्णा आमका के श्री सत्येंद्र रावल की बेटी हैं। वह रणनीतिक (रक्षा और आतंकवाद का मुकाबला) करने के मामलों में शोधकर्ता और विश्लेषक है। अपर्णा अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और अंतरराष्ट्रीय आतंकवाद में विशेषज्ञता वाले कूटनीति ज्ञान में ग्रेजुएशन किया हैं। वह 10 साल अमरीका में थी। वहां काम करते हुए, उन्होंने SUNY बुफेलो (New York) से बैचलर ऑफ मीडिया स्टडी की डिग्री प्राप्त की

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

परंपरागत रूप से, परिवार के राय जी रावल परिवार में नए जन्म, विवाह या किसी भी महत्वपूर्ण गतिविधि का रिकॉर्ड रखते है । वह स्वम अथवा उनका कोई प्रतिनिधि समय-समय पर परिवार के विकास के बारे में जानकारी को संरक्षित करने के लिए आमका का दौरा करते रहते है । यह व्यवस्था सदियों से चली आ रही है । वर्तमान राय जी श्री राधेश्याम सिंह बापू हैं, जो अब भीलवाड़ा (राजस्थान) में रहते हैं। रायजी के पास उपलब्ध अभिलेखों के अनुसार, राजा जैत सिंह 1496 से 1528 तक जैसलमेर के राजा थे। उनके नौ बेटे थे। इनके नाम हैं 1. लुनकरन सिंह, 2. करम सिंह, 3. महरावल, 4.राजो 5.मांडलेक 6. नर सिंह दास 7. जय सिंह देव 8. रावल राम 9. तिलोक सिंह उर्फ भैरू सिंह उर्फ बेरिसाल सिंह।

राजा जैत सिंह के दूसरे पुत्र श्री करम सिंह 15 जनवरी 1528 को गंगा में स्नान करने के लिए जैसलमेर से पश्चिमी यूपी चले गए। उनके दो भाई श्री रावल राम और श्री तिलोकसी उर्फ भैरू सिंह उर्फ बेरीसल बेरिस उनके साथ थे। रास्ते में, उन्होंने ऐंचर गढ़ के राजा लूथ वर्मा के साथ लड़ाई लड़ी। इस लड़ाई में राजा लूथ वर्मा की हार हुई। परन्तु श्री करम सिंह और श्री रावल राम दो भाई भी शहीद हो गए। तीसरे भाई तिलोक सिंह उर्फ़ बेरिसाल सिंह ने पराजित राजा वर्मा के 360 गांवों पर अधिकार कर लिया और क्षेत्र में अपना शासन स्थापित किया।

आमका रावल परिवार के वंश वृक्ष को उनके पूर्वज श्री बेरीसल जी से लेकर ठाकुर मोहर सिंह तक बनाने का प्रयास किया है। इस उद्देश्य के लिए रावल (भाटी) जाति का इतिहस जो राजस्थान के रावल इतिहास प्रकाशन समिति भीलवाड़ा द्वारा प्रकाशित किया गया था को परामर्श किया और 1987 में धूम मानिकपुर के कर्नल डीएस रावल द्वारा छापी गई एक छोटी पुस्तिका रावलौत भाटिस - ब्रीफ हिस्ट्री का भी सावधानीपूर्वक अध्ययन किया गया। इसके अतिरिक्त ठाकुर रणजीत सिंह जी के ऊपर की छह पीडियों के पूर्वजों की सूची धूम मानिकपुर के श्री शिव प्रताप सिंह रावल ने उपलब्ध कराई। इन दस्तावेजों और सूचनाओं का सावधानीपूर्वक अध्ययन करने के बाद बेरीसल जी से ठाकुर मोहर सिंह जी तक की वंशावली बनायीं जो निम्नानुसार है:

आमका रावल परिवार का वंश वृक्ष

जैसलमेर के महाराज जैत सिंह 1496-1528

जैत सिंह के छोटे भाई करम सिंह, अपने दो भाइयों बेरीसलजी और रावल राम के साथ जैसलमेर से 15 जनवरी 1528 को गंगा में स्नान के लिए प्रस्थान किया । करम सिंह और रावल राम स्थानीय राजा लूथ वर्मा के साथ युद्ध में मारे गए थे। बेरीसल जी ने पराजित राजा लूथ वर्मा के 360 गांवों पर कब्जा कर क्षेत्र में अपना शासन स्थापित किया। उनके वंशज निम्नानुसार हैं:

बेरिसाल जी के पुत्र

राव कासलजी

ने कासल गढ़ की स्थापना की जो अब गौतम बुद्ध नगर में है।

!

राव जालोजी
!
राव दल्लोजी
!
राव तेसोजी
!
राव शोडोजी
!
राव संपत जी
!
विचित्र सिंहजी
!
अनंगपालजी
!
धरजीत जी
!
मेला वीरमजी
!
राव गारव रावल
!
टोडरमल सिंह
!
मौबत सिंह
!
लच्छी राम सिंह
!
उदय राज सिंह
!
विजय राज सिंह
!
राव रणजीत सिंह जी
!
मोहर सिंह जी ने 1818 में आमका की स्थापना की

प्रारंभ में आमका का रावल परिवार ग्राम धूम मानिकपुर से संबंधित था, जो इसके उत्तर में लगभग 1.5 किलोमीटर पर स्थित है। रावल परिवार के पूर्वजों में से एक ठाकुर रंजीत सिंह, धूम मानिकपुर के निवासी थे। वे बेरीसल सिंह के वंशज थे। उसके पांच बेटे जिनके नाम थे 1. ठाकुर मोहर सिंह 2. ठाकुर झूम सिंह 3. ठाकुर सिपाही सिंह 4. ठाकुर राम दयाल सिंह और 5. ठाकुर धर्म सिंह। ठाकुर रणजीत सिंह के बड़े बेटे श्री मोहर सिंह ने 1818 में आमका गाँव की स्थापना की। इस गाँव में लगभग 2100 बीघे उपजाऊ भूमि है, जो सारी रावल परिवार के कब्जे में थी। अब कुछ मालिकों ने अपनी जमीन बेच दी है और दूसरी जगहों पर रहने के लिए चले गए है।

यहाँ यह उल्लेखनीय है कि पिछले पाँच सौ वर्षों के दौरान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई गाँवों और कस्बों में बेरिसाल जी के वंशज फैल चुके हैं। मुख्य रूप से रावल राजपूतों द्वारा बसाए गए कुछ महत्वपूर्ण गांव हैं धूम मानिकपुर, घोड़ी बछेड़ा, आमका , दादरी, जैतपुर, हाजी पुर, सममुद्दीन पुर। इसके अलावा, रावल राजपूतों ने अब गॉवों से गाज़ियाबाद, नोएडा, ग्रेटर नोएडा, गुरु ग्राम, दिल्ली इत्यादि अन्य स्थानों पर पलायन कर लिया है। कई लोगों ने गांवों में अपनी पैतृक संपत्ति का निपटान कर दिया है और बेहतर जीवन स्तर, सुरक्षा, शिक्षा, चिकित्सा और अन्य सुविधाओं के के लिए स्थायी रूप से शहरी क्षेत्र में स्थानांतरित हो गए हैं। कुछ तो मुंबई, इंग्लैंड, कनाडा और ऑस्ट्रेलिया जैसे दूर के स्थानों पर भी चले हो गए हैं। वह समय दूर नहीं, जब रावल परिवार के प्रत्येक सदस्य को खोजना भी मुश्किल जायेगा

रावल परिवार की आमके में हवेलियां

जब केवल बड़े जागीरदार और ठिकानेदार अपने निवास के लिए बड़ी इमारतों का निर्माण करने में सक्षम थे तब रावल परिवार के पूर्वजों ने 18 वीं शताब्दी के अंत में दो से तीन मंजिला बड़ी हवेलियों का निर्माण करवाया था । इसके अलावा, पुरुषों के बैठने और मेहमानों के लिए अलग-अलग इमारतों का भी निर्माण किया गया था। इनको घेर या बैठक के नाम से जाना जाता है। गूगल से लिया गया आमके का एक नक्शा नीचे दिया गया है जिस पर इस अध्याय में उल्लिखित विभिन्न भवनों के स्थानों को अंकित किया गया है। हो सकता है कि यह पूरी तरह से सही न हो, लेकिन काफी हद तक यह सटीक है:

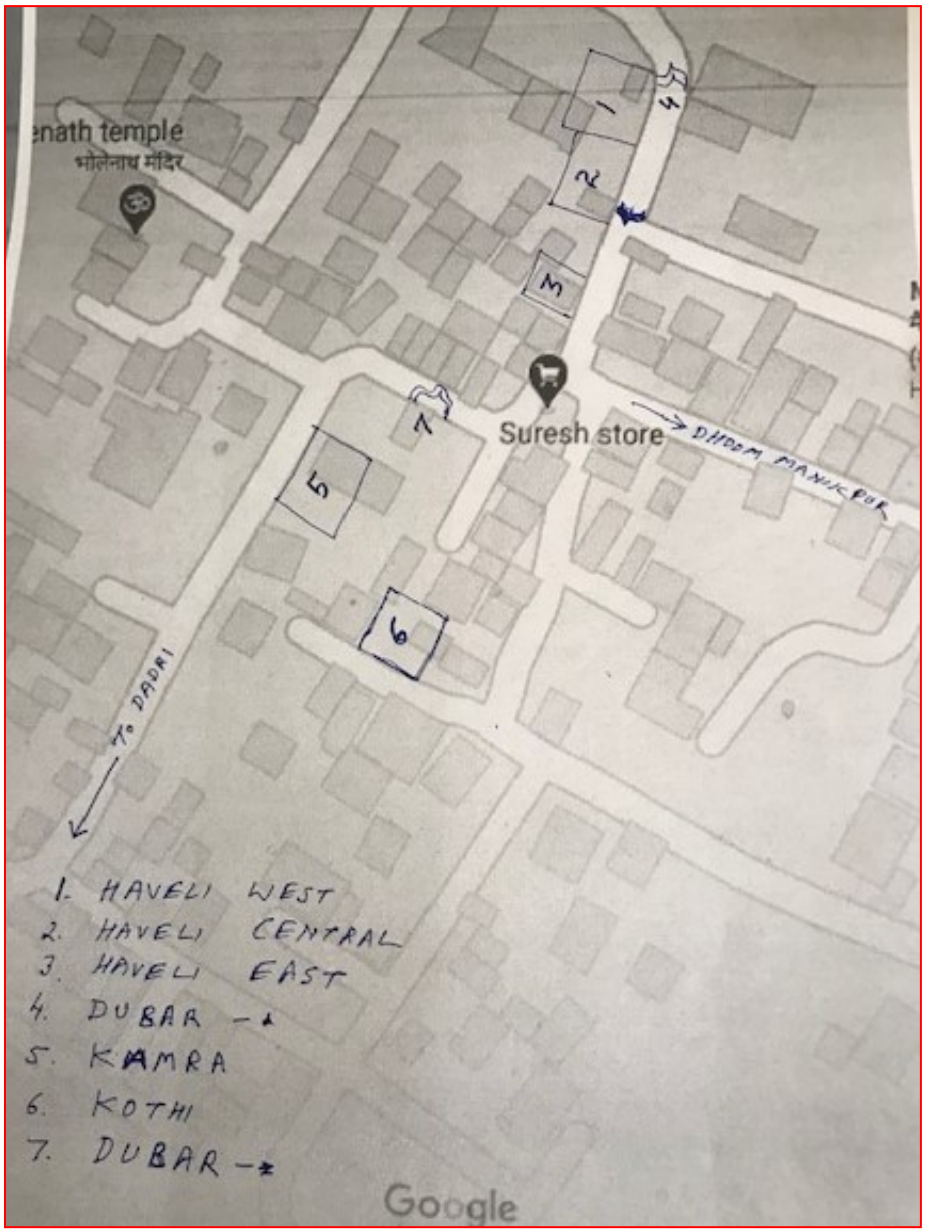

रावल परिवार के पूर्वजों द्वारा निर्मित विभिन्न भवनों के स्थानों को दर्शाता हुआ मानचित्र

इस हवेली का निर्माण ठाकुर मोतीराम सिंह ने 1880-90 के दौरान करवाया था

सबसे पहले तीन मंज़िला हवेली का निर्माण ठाकुर मोहर सिंह के दूसरे बेटे ठाकुर मोती राम सिंह ने 1870 और 1880 के बीच करवाया था। यह इमारत ईटों की संरचना है जिस पर प्लास्टर नहीं किया गया । इस हवेली में तीनो मंज़िलों में कुल मिलाकर 16 कमरे हैं। ये कमरे तीन तरफ हैं यानी पूर्व, पश्चिम और दक्षिण में है और सामने की ओर एक भव्य द्वार है । यह इमारत अभी भी गाँव के बीच में सबसे ऊँची खड़ी है। लगभग 10 से 15 साल पहले तक ठाकुर मोती राम सिंह के कुछ वंशज इस हवेली में रहते थे। अब यह जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है और खाली है। लकड़ी के बड़े द्वार संरचना इसकी भव्यता की गवाही देते हैं। हवेली की हाल ही में ली गई दो तस्वीरें नीचे दी गई हैं::

हवेली का साइड व्यू

यह दुबार ऊपर दिखाई गई हवेली के बगल में है। इसका निर्माण हवेली के साथ ही हुआ था और यह इतना ऊँचा है कि एक हाथी भी इसमें से आसानी से गुजर जायेगा अब यह खराब स्थिति में है।

दूसरी हवेली का निर्माण ठाकुर मोहर सिंह के पोते ठाकुर श्रीराम सिंह ने 1880–90 के दौरान करवाया था। यह हवेली पहली हवेली के पूरव में उससे सटी हुई है । यह भी एक दुमंज़िला उजागर ईंटों की संरचना है। इसे बिचली हवेली के नाम से पुकारते है। इस हवेली में भूतल पर आठ कमरे हैं और पहली मंजिल पर दो कमरे है। सामने की और बड़ा दरवाज़ा है जिसके ऊपर आर्चनुमा डिज़ाइन में तीन झरोखे है जो इसे भव्यता प्रदान करते हैं। इसके सामने एक खुली जगह है। इस हवेली में भी ठाकुर श्रीराम सिंह के वंशज कुछ समय पहले तक रहा करते थे। अब इसके अंतिम निवासी श्री गौरव रावल और श्री सौरव रावल हाल ही में उनके द्वारा निर्मित एक अन्य भवन में चले गए हैं। अब इसमें कोई नहीं रहता। सुरक्षा कारणों से बाईं ओर का पहली मंज़िल पर बना भाग गिरा दिया गया है। इमारत जीर्ण शीर्ण अवस्था में है।

इस हवेली का निर्माण ठाकुर श्रीराम सिंह ने 1880-90 के दौरान करवाया था

उपरोक्त हवेली के अलावा ठाकुर श्रीराम सिंह ने एक पक्के भवन का भी निर्माण किया जिसमे एक बड़ा हॉल और दो छोटे कमरे और एक बरामदा था । यह परिवार के पुरुष सदस्यों और मेहमानों के लिए बैठक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। आमतौर पर लोग इसको कमरे के नाम से पुकारते थे । मुख्य कमरे की दीवारों पर हिरणों के सिर उसके सींगों के साथ दीवारों पर सजे हुए रहते थे। एक बहुत बड़ा कपडे का पंखा छत से लटका रहता था जिसे एक व्यक्ति रस्सी के माध्यम से खींचा करता तहत ताकि कमरे में बैठे लोगो को हवा लग सके। सन 1960 के बाद यह जगह रिहाइश के रूप में इस्तेमाल होने लगी । इस ईमारत को अब तोड़ दिया गया है और उस

जगह पर एक आधुनिक भवन का निर्माण हो गया है। ऐसा माना जाता है कि ठाकुर श्रीराम सिंह ने हवेली बनाने से पहले इस भवन का निर्माण करवाया था। भवन की एक तस्वीर उपलब्ध है जो नीचे दिया गया है

ठाकुर श्रीराम सिंह द्वारा निर्मित और कमरा के नाम से जाने इस ईमारत को अब गिरा दिया गया है। इसकी झलक पाने के लिए यह एकमात्र तस्वीर है

इस घेर में प्रवेश करने के लिए ठाकुर श्रीराम सिंह ने एक बड़े दुबार का निर्माण भी कराया था । यह इतना ऊंचा था कि हाथी या ऊंट आसानी से इसमें से गुजर सकता था । इस दुबार के दो विशाल लकड़ी के गेट थे और मुख्य द्वार बंद होने पर व्यक्तियों को आने जाने के लिए लकड़ी की एक छोटी खिड़की थी। दुर्भाग्य से यह दुबार भी अब मौजूद नहीं है और ना ही इसकी कोई तस्वीर उपलब्ध है।

तीसरी हवेली का निर्माण ठाकुर मुखराम सिंह के पुत्र ठाकुर देशराज सिंह जो ठाकुर मोहर सिंह के पोते थे, उन्होंने कराया था। इसका निर्माण अन्य दो हवेलियों की तुलना में कुछ बाद में 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में हुआ था। यह हवेली अब मौजूद नहीं है। अंतिम निवासी मेजर वीर सिंह थे। उन्होंने इस हवेली को ठाकुर विजय पाल सिंह को बेच दिया गया जिन्होंने इसे गिरा कर अपने आधुनिक घर का निर्माण कराया है । दुर्भाग्य से,इस हवेली की कोई तस्वीर भी उपलब्ध नहीं है।

ठाकुर श्रीराम सिंह के पुत्र ठाकुर नरपत सिंह ने पिछली शताब्दी के मध्य चालीसवें दशक में एक अति सुंदर कोठी का निर्माण किया। यह षट्कार संरचना थी। इसमें एक बड़ा हॉल और दो साइड कमरे तथा एक बरामदा था। दुर्भाग्यवश यह कोठी भी अब अस्तित्व में नहीं है। हालाँकि इसकी एक खूबसूरत तस्वीर उपलब्ध है जो नीचे दी गई है

:

ठाकुर नरपत सिंह आमका में अपनी कोठी के सामने बैठे हुए है

ठाकुर रायदल सिंह मुंसिफ साहेब की सुपुत्री कुंवर हरबंस कुवंर के विवाह के अवसर पर सन 1917 में लिया गया फोटो

बाये से दाये बैठे हुए 1 ठाकुर रिसाल सिंह 2 ठाकुर श्रीराम सिंह 3 ठाकुर मुखराम सिंह 4 ठाकुर रायदल सिंह 5 ठाकुर देशराज सिंह

खड़े हुए बाये से दाये 1 गनेशी 2 ठाकुर रोशन सिंह 3 ठाकुर नरपत सिंह 4 ठाकुर चंद्र भान सिंह 5 ठाकुर तुंगल सिंह 6 ठाकुर राघबीर सिंह 7 सलगी नाइ

ठाकुर मोहर सिंह / ठाकुर रामजस सिंह के वंशज

ठाकुर रणजीत सिंह के सबसे बड़े बेटे थे ठाकुर मोहर सिंह। वह धूम मानिकपुर में रहते थे। किसी करणववश ठाकुर मोहर सिंह ने धूम मानिकपुर में रहना छोड़ दिया और उन्होंने वहां से स्थानांतरित होकर 1818 में गाँव अमका की स्थापना की। नीचे एक परिवार चार्ट दिखाया गया है जिसमें ठाकुर रंजीत सिंह, उनके बेटों और पोतों को दर्शाया गया है।

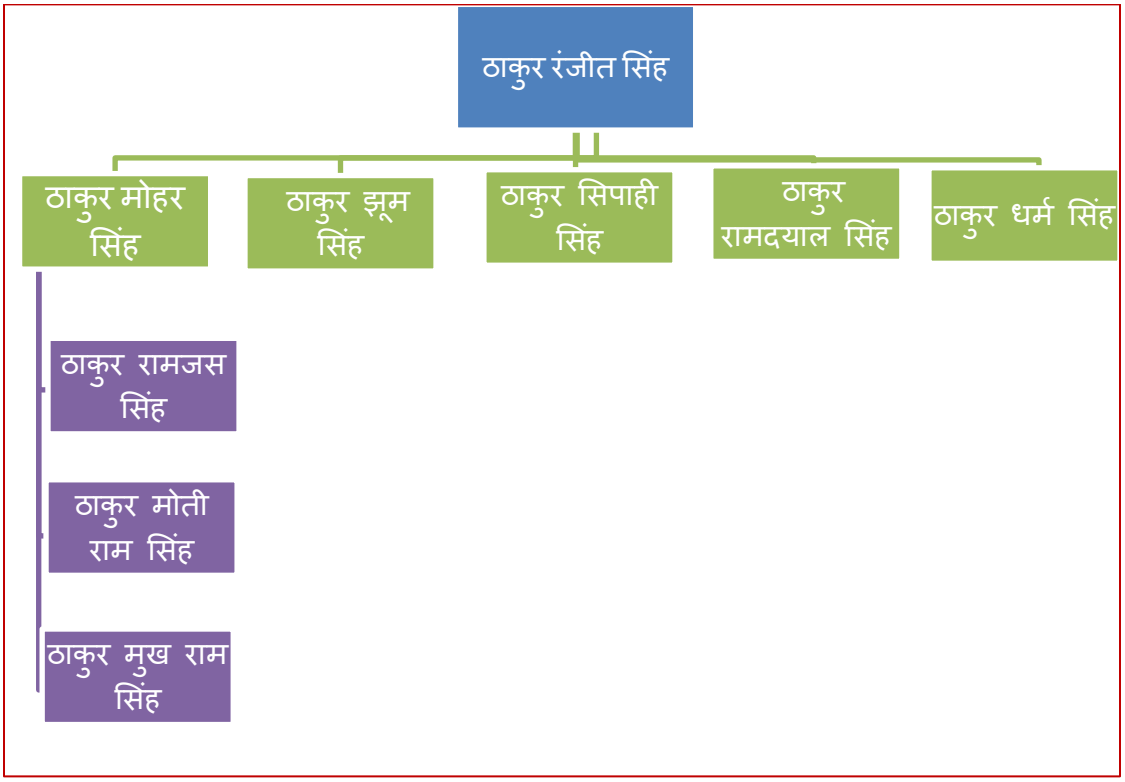

ठाकुर मोहर सिंह

ठाकुर मोहर सिंह ने 1818 में आमका गांव की स्थापना की । ऐसा माना जाता है कि धूम मानिकपुर के दक्षिण में लगभग 1.5 किलोमीटर की दूरी पर एक आम का पेड़ था जो ठाकुर मोहर सिंह के हिस्से में आयी भूमि पर स्थित था। व्यावहारिक कारणों से उन्होंने ने इस पेड़ के पास बसने का फैसला कर वहाँ अपना घर बना लिया। आम के पेड़ की वजह से गांव का नाम आमका पड़ा। यहाँ पर ठाकुर मोहर सिंह के हिस्से में आयी भूमि का कुल क्षेत्रफल 2100 बीघे था । उनके तीन लड़के थे जिनके नाम 1. ठाकुर रामजस सिंह 2 ठाकुर मोती राम सिंह और 3 ठाकुर मुखराम सिंह थे। आज, इन तीनों भाइयों की संतानों ने एक विशाल वृक्ष का आकार ले लिया है। उनमें से कुछ स्थायी रूप से आमका के बाहर गाजियाबाद, दिल्ली इत्यादि और यहां तक कि विदेशों में भी जाकर के बस गए हैं। परिवार के ऐसे सदस्यों के बारे में आंकड़े एवं तथ्यों को संकलित करने के लिए यह उचित समय है। यदि यह काम अब नहीं किया गया, तो जो भी जानकारी उपलब्ध है, वह भी इतिहास के गर्भ में लुप्त हो जाएगी ।

ठाकुर रामजस सिंह

ठाकुर रामजस सिंह के बारे में बहुत कुछ ज्ञात नहीं है, सिवाय इसके कि उनके दो बेटे थे - ठाकुर बलवंत सिंह और ठाकुर श्रीराम सिंह। ठाकुर बलवंत सिंह के पास कोई संतान नहीं थी। इसलिए, ठाकुर रामजस सिंह की संपत्ति ठाकुर श्रीराम सिंह को विरासत में मिली

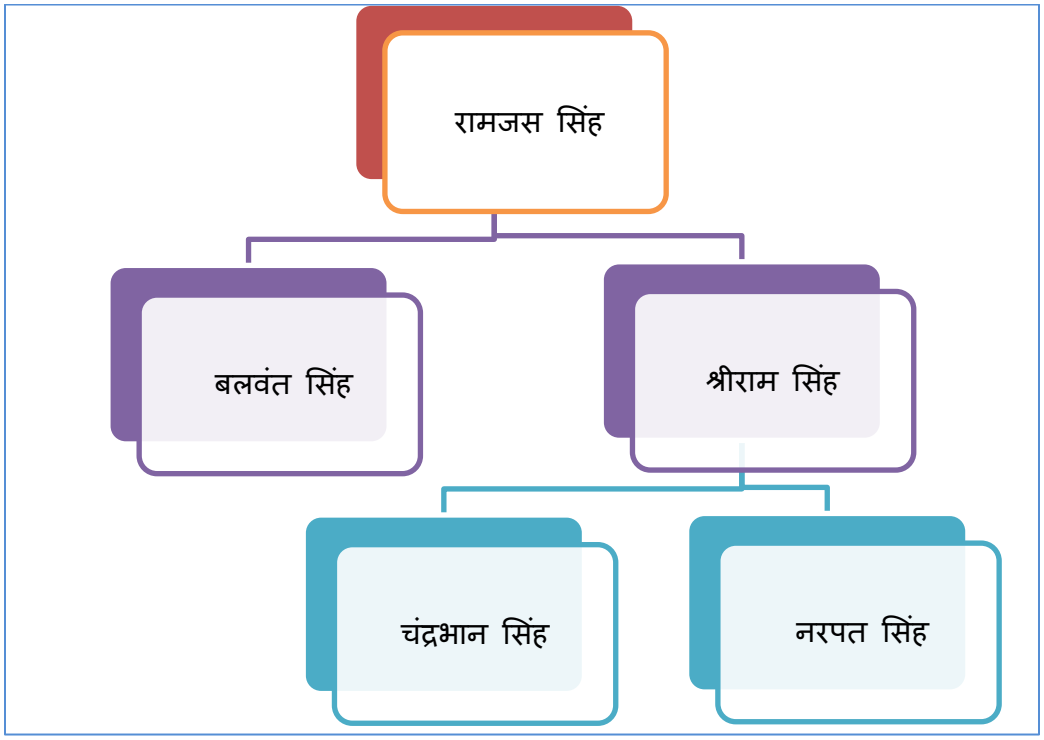

ठाकुर श्रीराम सिंह

ठाकुर श्रीराम सिंह

ठाकुर श्रीराम सिंह 700 बीघा जमीन के मालिक थे जो उन्हें अपने पिता ठाकुर रामजस सिंह से विरासत में मिला थी । उनके दो बेटे ठाकुर चंद्र भान सिंह और ठाकुर नरपत सिंह थे । गाँव में परिवार के लिए दुमंजिला हवेली के निर्माण का श्रेय ठाकुर श्रीराम सिंह को जाता है जिसे उन्होंने लगभग 1880 - 1890 के बीच बनवाया था । ऊपर हवेली की एक तस्वीर नीचे दी गई है जिसमे अब कोई नहीं रहता। इसके अंतिम निवासी श्री गौरव रावल और श्री सौरव रावल ने हाल ही में इस हवेली को खाली कर अपने नए माकन में चले गए है। यह अब जर्जर हालत में है और तत्काल मरम्मत की आवश्यकता है। सुरक्षा कारणों इसके बाईं ओर की पहली मंजिल को गिरा दिया गया है।

1880 और 1890 के बीच ठाकुर श्रीराम सिंह द्वारा निर्मित हवेली। अब यह जीर्ण-शीर्ण स्थिति में है। सुरक्षा कारणों से बाईं ओर की पहली मंजिल को गिरा दिया गया है

ठाकुर चंद्राभान सिंह

ठाकुर चंद्र भान सिंह के बेटों और पोतों का विवरण निम्न चार्ट में दिखाया गया है।

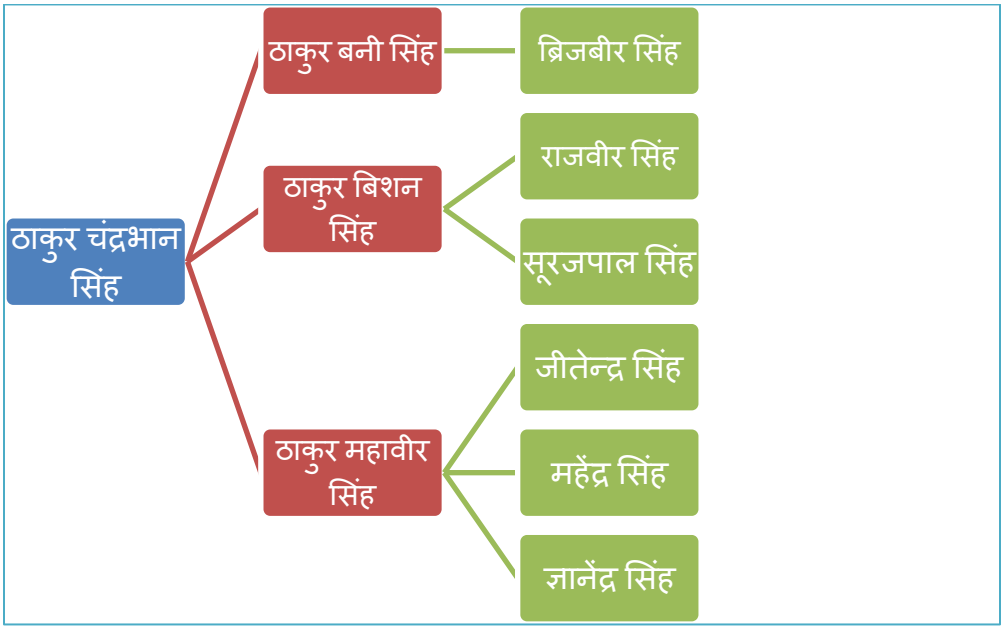

ठाकुर चंद्र भान सिंह

आज भी कुछ लोग जीवित हैं जिन्होंने ठाकुर चंद्र भान सिंह को देखा है । वह अपने इलाके के एक सम्मानित और प्रगतिशील सोंच वाले व्यक्ति थे। उन्होंने अपने बड़े बेटे ठाकुर बानी सिंह के साथ मिलकर प्रथम विश्व युद्ध के लिए भर्ती अभियान में भारतीय सेना की काफी सहायता की।इस विश्व युद्ध में लड़ने के लिए आसपास के क्षेत्रों से बड़ी संख्या में लोगों को सैनिकों के रूप में भर्ती किया गया था। सरकार ने उनके प्रयासों के लिए गाजियाबाद के पास ग्राम पटवारी में ठाकुर चंद्र भान सिंह को 700 बीघा जमीन आवंटित की। इस भूमि का 1968 में विक्रय कर दिया गया था।

ठाकुर चंद्र भान सिंह के तीन लड़के थे। इनके नाम ठाकुर बानी सिंह, ठाकुर बिशन सिंह और ठाकुर महावीर सिंह हैं। ठाकुर चंद्र भान सिंह ने अपने सभी बेटों को उच्च शिक्षा प्रदान की। अपनी अच्छी शैक्षिक पृष्ठभूमि के कारण उनके तीनों बेटों को सम्मानजनक सरकारी नौकरी मिली। जबकि, ठाकुर बानी सिंह सेना से सूबेदार के पद से सेवानिवृत्त हुए, ठाकुर बिशन सिंह सहायक वन संरक्षक के रूप में उत्तरप्रदेश सरकार में सेवारत थे और वहीँ से वह सेवानिवृत हुआ। सबसे छोटे ठाकुर महावीर सिंह केंद्र सरकार में थे। वे 1958 में तत्कालीन भारत सरकार के वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय, से नियंत्रक आयात और निर्यात वर्ग एक के राजपत्रित पद से रिटायर हुए।

सूबेदार ठाकुर बनी सिंह

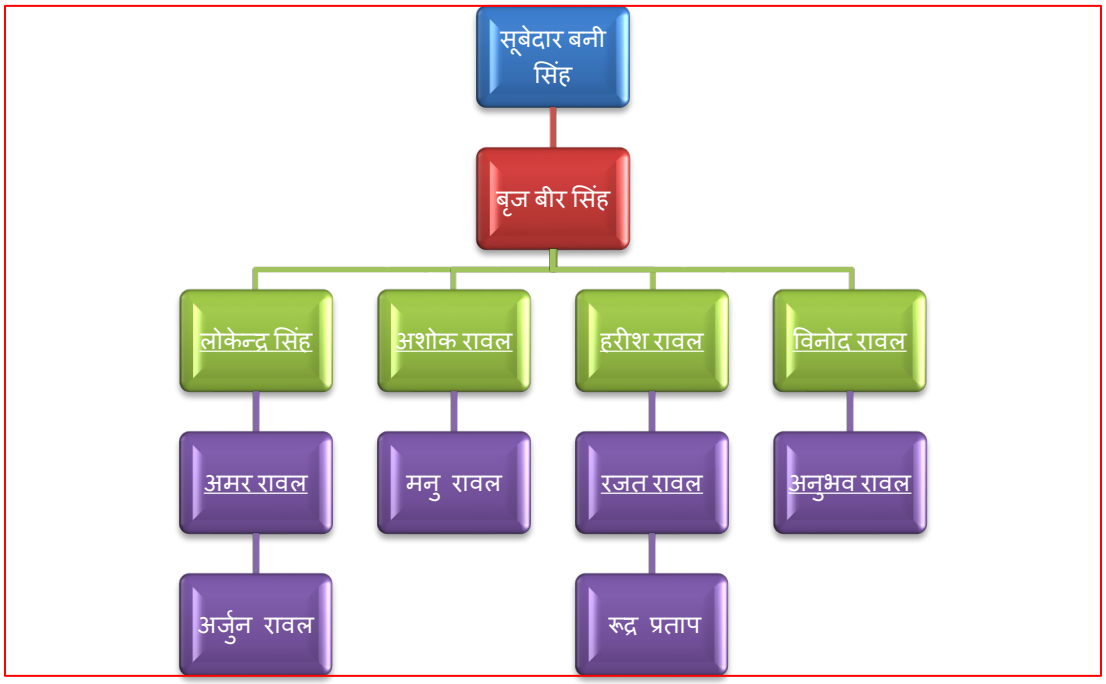

सूबेदार बनी सिंह ठाकुर चंद्र भान सिंह के सबसे बड़े बेटे थे। उनका जन्म 1892 में ग्राम आमका में हुआ था। उनकी पत्नी का नाम श्रीमती चन्द्र वती था जो दिल्ली के रिठाला गांव की थीं । ठाकुर बनी सिंह अपने समय के हिसाब से उच्च शिक्षा प्राप्त थे। वह ग्वालियर की राज्य सेना में सूबेदार के पद पर कार्यरत थे। उन्हें प्रथम और द्वितीय दोनों विश्व युद्धों में भाग लेने का गौरव प्राप्त है। वह मेसोपोटामिया और मध्य पूर्व में लड़े। सेना से सेवानिवृत्त होने के बाद, उन्होंने आमका में अपनी भूमि पर कृषि सम्बन्धी कार्य का प्रबंधन किया। उनके एक पुत्र ठाकुर बृज बीर सिंह और तीन बेटियाँ थीं। जिनके नाम है 1 श्रीमती प्रेम 2 श्रीमती शिक्षा 3 श्रीमती प्रभा। तीनों बेटियों का विवाह प्रतिष्ठित परिवारों में हुआ । 8 जुलाई 1986 को सूबेदार बानी सिंह का निधन हो गया

सूबेदार बनी सिंह

ठाकुर ब्रजबीर सिंह

ठाकुर बृजबीर सिंह श्रीमती मालती देवी

ठाकुर बृजबीर सिंह, ठाकुर बानी सिंह के इकलौते पुत्र थे जिनका जन्म 1924 में हुआ था। उनका विवाह अलीगढ़ जिले के सलारपुर गाँव की मालती देवी से संपन्न हुआ। उनकी शिक्षा बलवंत राजपूत हाई स्कूल, आगरा और सिंधिया स्कूल, ग्वालियर में हुई। चूंकि वे एकमात्र पुत्र थे और उनके पिता ठाकुर बानी सिंह सेना में थे; ठाकुर बृज बीर सिंह को कोई रोजगार की आवश्यकता नहीं थी । उनके पास आमका में अपनी कृषि भूमि के प्रबंधन का ही पर्याप्त काम था । अपने स्कूल के दिनों में वह हॉकी के शानदार खिलाड़ी थे। उनके पास असाधारण रूप से अत्यंत सुन्दर लिखने की कला थी। वह जो भी लिखते थे ऐसा लगता था जैसे प्रिंटिंग प्रेस में छपा है । उनके चार बेटे और तीन बेटियां थीं। उनके चार बेटों के नाम है 1 डॉ. लोकेंद्र सिंह 2 श्री अशोक रावल, 3 श्री हरीश रावल और 4 विनोद रावल। उनकी तीन बेटियों के नाम 1 आशा 2 पूनम और 3 निशा हैं। सन 2013 में 90 साल की आयु में उनका निधन हुआ ।

डॉ. लोकेन्द्र सिंह

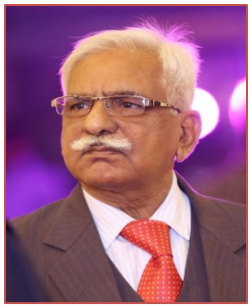

डॉ. लोकेंद्र सिंह ममता रावल

डॉ. लोकेंद्र सिंह ठाकुर बृज बीर सिंह के सबसे बड़े पुत्र हैं। उनका जन्म 1 जुलाई 1947 को आमका में हुआ था। उन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की है। 1963 से 1966 तक दादरी के गुर्जर इंटर कॉलेज मे पढ़ाई की और वहां से हाईस्कूल और इंटरमीडिएट पास करने के बाद, उन्होंने बीआर कॉलेज आगरा से 1971 में बीएससी किया। फिर इसी कॉलेज से उन्होंने 1973 में एमएससी (एग्री) भी पास की। उनका विवाह ममता रावल से हुआ.

सेवा काल के दौरान भी डॉ. लोकेन्द्र रावल ने अपनी शिक्षा जारी रक्खी और 1996 में उन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से बागवानी में डॉक्टरेट की डिग्री प्राप्त की । उनकी थिसिस का विषय पंत नगर, नैनीताल की तराई वाली परिस्थितियों में आलू की कुछ किस्मों की संस्कृति, ग्रोथ, ट्यूबराइजेशन, यील्ड और क्वालिटी बिहेवियर का अध्यन था ।डॉ. रावल सेना की राष्ट्रीय कैडेट कोर सीनियर डिवीज़न के बी सर्टिफिकेट धारक भी हैं। एनसीसी में वह आगरा की 16 वीं यूपी बटालियन के अवर अधिकारी का पद संभाल रहे थे।

उन्होंने अलीगढ़ के एक इंटर कॉलेज में व्याख्याता के रूप में अपना करियर शुरू किया। लंबे समय तक वहां काम नहीं किया क्योंकि 1974 में उन्हें मेरठ की एक चीनी मिल में केन प्रबंधक के रूप में नियुक्ति गयी । उसी वर्ष उन्हें NAFED में भी मार्केटिंग असिस्टेंट के रूप में नियुक्ति मिली जहाँ उन्होंने 1974 से 1978 तक काम किया। । इसके बाद डॉ. लोकेन्द्र सिंह 1978 में इफको में जिला प्रबंधक (विपणन) के नियुक्त हुए । इस संस्था में इन्होने 10 साल काम किया। इसके बाद वह कृभको में राज्य प्रबंधक (विपणन) की नौकरी मिल गए। वहां से डॉ. रावल 2006 में सेवानिवृत्त हुए।

जब डॉ. रावल KRIBHCO में काम कर रहे थे तब उन्हें इंटरनेशनल कोऑपरेटिव एलायंस द्वारा ग्रामीण प्रबंधन में प्रशिक्षण के लिए 1989-90 में जापान और दक्षिण कोरिया भेजा गया था ।

डॉ। रावल का एक बेटा अमर और दो बेटियां भारती और कविता हैं। उनके सभी बच्चों की शादी हो चुकी है। 3 जून 1978 को जन्मी भारती की शादी श्री रजनीश मिश्रा से हुई है। भारती ने आईएमएस गाजियाबाद से बैचलर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन और यू. पी. टेक्निकल यूनिवर्सिटी आगरा से मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन किया। पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने पेप्सीको, आईसीआईसीआई बैंक जैसे प्रसिद्ध संगठनों के साथ काम किया। वर्तमान में वह एक गृहिणी हैं।उनके पति श्री रजनीश मिश्रा आगरा विश्वविद्यालय से एमबीए हैं। वर्तमान में, वह एचडीएफसी बैंक में सहायक उपाध्यक्ष के वरिष्ठ पद पर कार्यरत हैं। उनकी एक बेटी रक्षिता है जिनका जन्म 25.01.2007 को हुआ था।

रजनीश रक्षिता भारती

जय आराध्या कविता

डॉ. लोकेन्द्र सिंह की छोटी बेटी कविता का जन्म 3 अगस्त 1983 को हुआ था। वह एक पोस्ट ग्रेजुएट हैं। उनकी विवाह श्री जय पुंडीर से 07.11.2011 को संपन्न हुआ। वह बिरालसी गांव जिला मुज़फ्फर नगर के श्री सत्य पाल सिंह जी के पुत्र है। श्री जय पुंडीर ने IIT रुड़की से गणित में डॉक्टरेट की हैं। वह वर्तमान में भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) में वैज्ञानिक के रूप में तैनात हैं। उनकी एक बेटी आराध्या है जिसका जन्म 06.12.2012 को हुआ।

अमर रावल

श्वेता रावल

डॉ। लोकेन्द्र सिंह के बेटे अमर रावल का जन्म 28 जुलाई 1980 को हुआ था। उन्होंने 2002 में नागपुर विश्वविद्यालय के यशवंत राव कॉलेज ऑफ़ इंजीनियरिंग से अपनी कंप्यूटर टेक्नोलॉजी में स्नातक किया है । उनका विवाह श्वेता से हुआ। उनके एक पुत्र और एक पुत्री है। पुत्र का नाम अर्जुन है जिसका जन्म 01.08.2012 को और बेटी नंदिनी का जन्म 12.05.2017 को हुआ। उनकी पत्नी श्वेता गढ़वाल विश्वविद्यालय से बायो टेक्नोलॉजी में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद अमर को WIPRO नमक संस्था में तकनीकी सहायता कार्यकारी के रूप में नौकरी मिली जहां

नंदिनी

अर्जुन

उन्होंने मार्च 2004 से मार्च 2006 तक काम किया। इसके बाद उन्होंने भवन निर्माण का अपना व्यवसाय शुरू किया। 2009 से वह जेपी / पंचशील / वेव ग्रुप और अन्य प्रतिष्ठित बिल्डर्स के चैनल पार्टनर हैं। 2006 से ही वह अपने व्यवसाय को बढ़ा रहे है। इसी उद्देश्य से उन्होंने पेइंग गेस्ट आवास क्षेत्र में प्रवेश किया। उनकी दो पेइंग गेस्ट इकाइयाँ हैं - एक गाजियाबाद और दूसरी गुड़गांव में। अमर रावल 2016 में सर जॉन बेकरी कैफे की मेगा फ्रेंचाइजी पार्टनर बन गए । अमर ने अब अपने कारोबार का और विस्तार किया ।

अब उन्होंने सर जॉन बेकरी के साथ फ्रैंचाइज़ी को बंद कर अपनी खुद की सर बॉन्ड के नाम से बेकरी उत्पादों का अपना कारखाना स्थापित किया हैजिसके गाजियाबाद में तीन आउटलेट चल रहे है ।

श्री अशोक रावल

अशोक रावल और शशि बाला

श्री अशोक रावल का जन्म 21 जून 1953 को ग्राम आमका में हुआ था। वह ठाकुर बृज बीर सिंह के दूसरे नंबर के पुत्र हैं। उन्होंने 1970 में उत्तर प्रदेश बोर्ड से हाई स्कूलऔर 1972 में इंटरमीडिएट परीक्षा पास की । उन्होंने स्नातक तक की पढ़ाई की है। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वह एक विशेष आयोजक के रूप में पीयरलेस फाइनेंस कंपनी में शामिल हो गए। उसके बाद श्री अशोक रावल ने बटन निर्माण के लिए आमका में एक कारखाना लगाया । वह बहुत परिश्रमी, उद्यमी और स्व-निर्मित व्यक्ति है। उन्होंने धूम मानिकपुर में साबुन बनाने का एक और कारखाना भी स्थापित किया। श्री अशोक रावल बहुत ही साधन एवं युक्ति संपन्न व्यक्ति हैं। वह शुरू में गाजियाबाद अर्बन कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड के प्रबंधन बोर्ड में निदेशक के रूप में चुने गए। इसके बाद वह इसके अध्यक्ष चुने गए। वह 12 वर्षों तक इस पद पर रहे। अध्यक्ष के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान बैंक ने काफी प्रगति की। कई नई शाखाएँ खोली और जमा राशि में कई गुना वृद्धि हुई। बैंक के अध्यक्ष रहते हुए श्री अशोक रावल को निम्नलिखित पुरस्कार मिले:

1. 26 जुलाई 2001 को नई दिल्ली में भारतीय आर्थिक विकास और अनुसंधान संघ के 22 वें राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर श्री बच्ची सिंह रावत उत्तर प्रदेश के माननीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री ने श्री अशोक रावल को भारतीय गौरव पुरस्कार से सम्मानित किया।

2. नई दिल्ली में 2001में आयोजित 39 वें राष्ट्रीय संगोष्ठी के अवसर पर ऑल इंडिया अचीवर्स कॉन्फ्रेंस ने श्री रावल को समाज की उत्कृष्ट सेवा और गतिविधियो की उत्कृष्टता के लिए जेम ऑफ इंडिया अवार्ड से पुरस्कृत किया।

3. थाईलैंड के माननीय विदेश मंत्री ने इंडो थाई मैत्री और सहयोग की ओर से श्री अशोक रावल को वर्ष 2002 में गोल्ड स्टार मिलेनियम अवार्ड से सम्मानित किया।

4. श्री अशोक रावल को 2003 में ग्लोबल इकनोमिक काउंसिल द्वारा स्थापित राष्ट्र की व्यापक प्रगति के लिए विशेष क्षेत्रों में विविध रूप से व्यापक योगदान देने हेतु नेपाल के माननीय प्रधान मंत्री द्वारा काठमांडू मेंअंतर्राष्ट्रीय कोहिनूर पुरस्कार दिया गया।

श्री अशोक रावल राजनीति में भी बहुत सक्रिय रहे है । उन्होंने लगभग दो वर्षों तक उत्तर प्रदेश की भारतीय जनता पार्टी की राज्य इकाई के कोषाध्यक्ष का पद संभाला। जब श्री राज नाथ सिंह जी पार्टी अध्यक्ष थे, तब वे पार्टी के कोषाध्यक्ष थे।

मनु रावल पुरुस्कार प्राप्त करते हुए

श्री शक्ति सिंह और भवाना

श्री अशोक रावल ने श्रीमती शशि बाला से विवाह किया है। उनका एक पुत्र श्री मनु रावल है जिनका जन्म 29.08.1990 को हुआ। उन्होंने अपनी बीबीए और एमबीए की पढ़ाई क्रमशः इंस्टीट्यूट ऑफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलॉजी, गाजियाबाद से वर्ष 2012 और 2014 में की । मनु को अभिनय, गायन और संगीत का शौक है ।

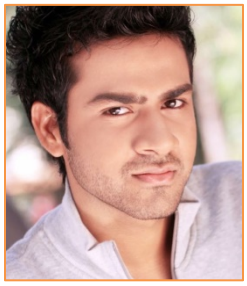

मनु रावल

उन्होंने कई कार्यशालाओं में भाग लिया है। इनमे से कुछ महत्वपूर्ण हैं "एक और ताजमहल", "चरण दास चोर", "सायन भये कोतवाल" ": झोटा चक्रम" और "तुम चंदन हम जानी"। मनु एक प्रतिभाशाली अभिनेता हैं। उन्हें अभिनय के लिए कई पुरस्कार मिले हैं। उनमें से कुछ इस प्रकार हैं:

1. श्री शिव राज बी पाटिल पूर्व स्पीकर लोकसभा और गृह केंद्रीय मंत्री ने उत्कृष्ट उपलब्धियों और राष्ट्र की विशिष्ट सेवा के लिए 24 जुलाई 2016 को उन्हें भारत निर्माण पुरस्कार से सम्मानित किया।

2. उन्हें 23 जनवरी 2016 को यूएई में भारतीय राजदूत श्री टी. पी. सेथाराम ने मनु को एक अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में वैश्विक उपलब्धि और प्रतिष्ठित वैश्विक सेवाओं के लिए "ग्लोबल भारतीयों का सम्मान" प्रदान किया ।

3. भारत विकास परिषद द्वारा गायन की उत्कृष्टता और भागीदारी के लिए प्रमाण पत्र दिया गया।

उपासना और श्री अभिजीत गहलोत

श्री अशोक रावल की दो बेटियाँ हैं - भवाना और उपासना। भावना की शादी कानपुर के राय बहादुर परिवार से सम्बंधित श्री शक्ति सिंह के पुत्र डॉ. बी.पी. सिंह हुई है। वह स्टॉक होल्डिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया में टीम लीडर के रूप में काम कर रहे हैं। उपासना ने हाल ही में 28 अप्रैल 2018 को गोवा के श्री राजेंद्र गहलोत के बेटे अभिजीत गहलोत से शादी की।श्री गहलोत पेशे से आर्किटेक्ट हैं।

एक सिख गुरु द्वारा सम्मानित

न्यायमूर्ति ओ.पी. वर्मा, पंजाब के राज्यपाल
द्वारा श्री अशोक रावल सम्मानित

डॉ. संजय सिंह के साथ श्री अशोक रावल

अशोक रावल ने श्री बच्ची सिंह, विज्ञान और प्रौद्योगिकी राज्य मंत्री यूपी से पुरस्कार प्राप्त किया

अशोक रावल ने भीष्म नारायण सिंह, तमिलनाडु के राज्यपाल से पुरस्कार प्राप्त किया

अशोक रावल श्री राम कुमार वर्मा सहकारिता मंत्री साथ

अशोक रावल अमका में एक सामाजिक समारोह के अवसर पर उ.प्र के राज्य वित्त मंत्री डॉ. एस.एस. शिशोदिआ के साथ

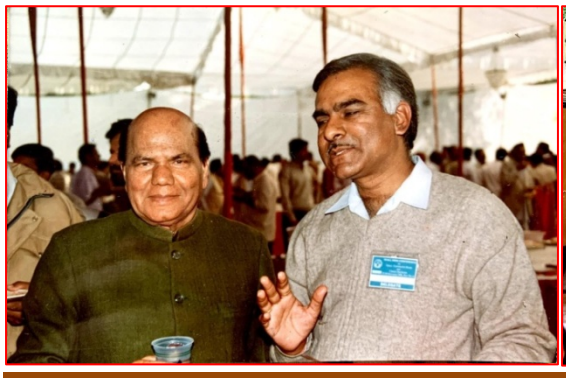

अशोक रावल डॉ. सवाई सिंह शिशोदिअ अध्यक्ष NAFCUB के साथ

श्री अशोक रावल की पत्नी शशि बाला निदेशक गाजियाबाद अर्बन कोऑपरेटिव की एजीएम को संबोधित करते हुए

श्री हरीश रावल

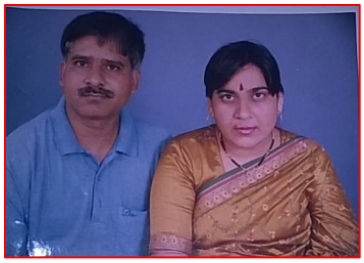

हरीश रावल और नीरज रावल

श्री हरीश रावल ठाकुर बृज बीर सिंह के तीसरे नंबर के पुत्र हैं। उनका जन्म 1 अक्टूबर 1960 को हुआ था। उन्होंने मिहिर भोज डिग्री कॉलेज, दादरी से स्नातक तक पढ़ाई की। 30 नवंबर 1987 को गांव जखौता के श्री राजेंद्र सिंह चौहान की बेटी सुश्री नीरज से विवाह हुआ । उनका एक बेटा रजत रावल और एक बेटी अनामिका है। उनके बेटे और बेटी दोनों अब शादीशुदा हैं।

रजत का जन्म 29.08.1989 को हुआ था। उन्होंने श्री सिंह राज सिंह तोमर की बेटी पूजा से शादी की है। पूजा बहुत योग्य है। उसने एमएससी बी.एड किया हुआ है। रजत ने इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज, गाजियाबाद से बैचलर ऑफ़ बिज़नेस अड्मिनिस्ट्रेशन और IMT गाजियाबाद से पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा इन मैनेजमेंट किया। वर्तमान में वह गाजियाबाद में होम शॉप 18 के साथ कार्यरत हैं।

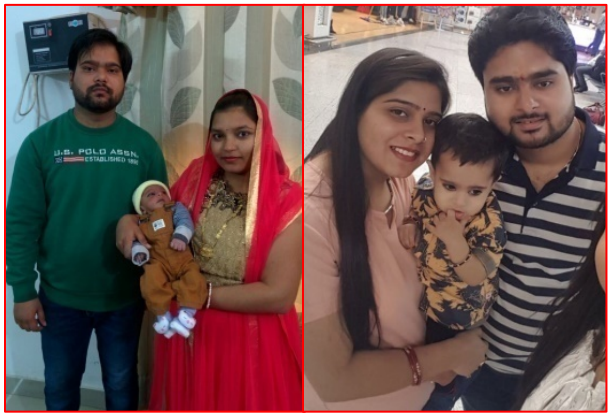

रजत, पूजा और एकलव्य

अनामिका और तोयज

श्री हरीश रावल का एक पोता है। उसका नाम एकलव्य है। श्री हरीश रावल ने लगभग 24 वर्षों तक नेफेड में वरिष्ठ सहायक के रूप में काम किया। वे 2015 में सेवानिवृत्त हुए। उनकी बेटी अनामिका का विवाह श्री तोयज़ चौहान से29.01.2016 को हुआ। ।

श्री विनोद रावल

विनोद रावल

हेमलता

श्री विनोद रावल स्वर्गीय ठाकुर बृज बीर सिंह रावल के सबसे छोटे पुत्र हैं। । उनका जन्म 26 जनवरी 1964 को दादरी में हुआ था। उन्होंने गाँव आमका में प्राइमरी शिक्षा प्राप्त की। इसके बाद अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई एम. बी. इंटर कॉलेज, दादरी से और इंटरमीडिएट चंपा अग्रवाल इंटर कॉलेज, मथुरा से की। श्री विनोद रावल ने 1983 में आगरा विश्वविद्यालय के B S A कॉलेज, मथुरा, स्नातक की उपाधि ली ।

श्री विनोद ने 1984 में एक शिक्षक के तौर पर अपने करियर की शुरुआत दादरी के विवेकानंद बाल निकेतन स्कूल से की। वह 13 मई 1985 को भारतीय वायु सेना की तकनीकी स्ट्रीम, इलेक्ट्रॉनिक्स और दूरसंचार विभाग में एक गैर-कमीशन वायु योद्धा के रूप में नियुक्त हुए ।

श्री विनोद रावल ने अपने पेशेवर करियर को विभिन्न चरणों में पूरा किया । भारतीय वायु सेना में राष्ट्र के लिए 23 वर्षों की अपनी लंबी सक्रिय सेवा के दौरान, उन्हें पूरे भारत में कई स्थानों पर तैनाती मिली। 1988 में गुजरात की सीमा पर भुज, खावड़ा, तलाला, सोमनाथ इत्यादि स्थानों की रेड अलर्ट टुकड़ी के सदस्य भी रहे । वह वायु सेना के ऑपरेशन विजय का हिस्सा थे। यह कश्मीर केअवंतिपुरा वायु सेना स्टेशन पर नार्थ टॉप और कारगिल में आयोजित एक अति ऊंचाई पर किया गया ऑपरेशन था।

उनकी 23 वर्षों की सेवा के दौरान उन्हें निम्न पदकों से सम्मानित किया गया:

1. 9 साल का मेधावी सेवा पदक

2. 15 वर्ष का मेधावी सेवा पदक।
3. संचालन विजय पदक
4. ऑपरेशन कारगिल मेडल
5. जम्मू और कश्मीर पदक
6. असम और बंगाल मेडल

श्री विनोद रावल ने सेवा में रहते हुए कई विभागीय परीक्षाएँ दीं। 2001 में JWO की उन्नति के लिए प्रबंधन पाठ्यक्रम की परीक्षा को सफलतापूर्वक पूरा किया। 1992 में रडार फिटर के लिए 60% अंक प्राप्त कर इस प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया। इसके अलावा श्री विनोद रावत ने वर्ष 2010 में इलेक्ट्रॉनिक्स / रेडियो एवं संचार इंजीनियरिंग में डिप्लोमा भी पास किया। । इस डिप्लोमा को इंजीनियरिंग के समकक्ष डिग्री के रूप में मान्यता प्राप्त है जैसा की इसके प्रमाण पत्र में भी निर्दिष्ट है।

श्री विनोद की अंतिम पोस्टिंग बरेली में थी जहाँ से उन्होंने 31 मई 2008 को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली। इसके बाद उन्होंने नई दिल्ली में एक पीडब्ल्यूडी परियोजना के लिए प्रोजेक्ट मैनेजर के रूप में ज्वाइन किया जहाँ वे अभी भी कार्यरत हैं। श्री विनोद रावल सामाजिक रूप से बहुत सक्रिय हैं। वर्तमान में वह मई 2016 से आसियाना ले रेजिडेंसी अपार्टमेंट ओनर्स एसोसिएशन के अध्यक्ष हैं। इससे पहले वह मई 2014 से मई 2016 तक इस एसोसिएशन के उपाध्यक्ष थे। वह मई 2014 से गाजियाबाद की आरडब्ल्यूए फेडरेशन के सदस्य भी हैं।

श्री विनोद रावल का विवाह जिला अलीगढ़ के ग्राम चिड़ावाली के ठाकुर मनवीर सिंह चौहान की बेटी हेमलता चौहान से हुआ। ठाकुर मनवीर सिंह उत्तर प्रदेश के कृषि विभाग से उप-मंडल अधिकारी के रूप में सेवानिवृत्त थे ।

अनुभव

उनका एक बेटा अनुभव है जो 11 अगस्त 1996 को पैदा हुआ था। वर्ष 2018 में मैकेनिकल इंजीनियरिंग पूरी करने के बाद अनुभव 10 फरवरी 2020 से ऑफिसर ट्रेनी के रूप में स्टॉक होल्डिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के पटना कार्यालय में काम कर रहे है

INDIAN AIR FORCE

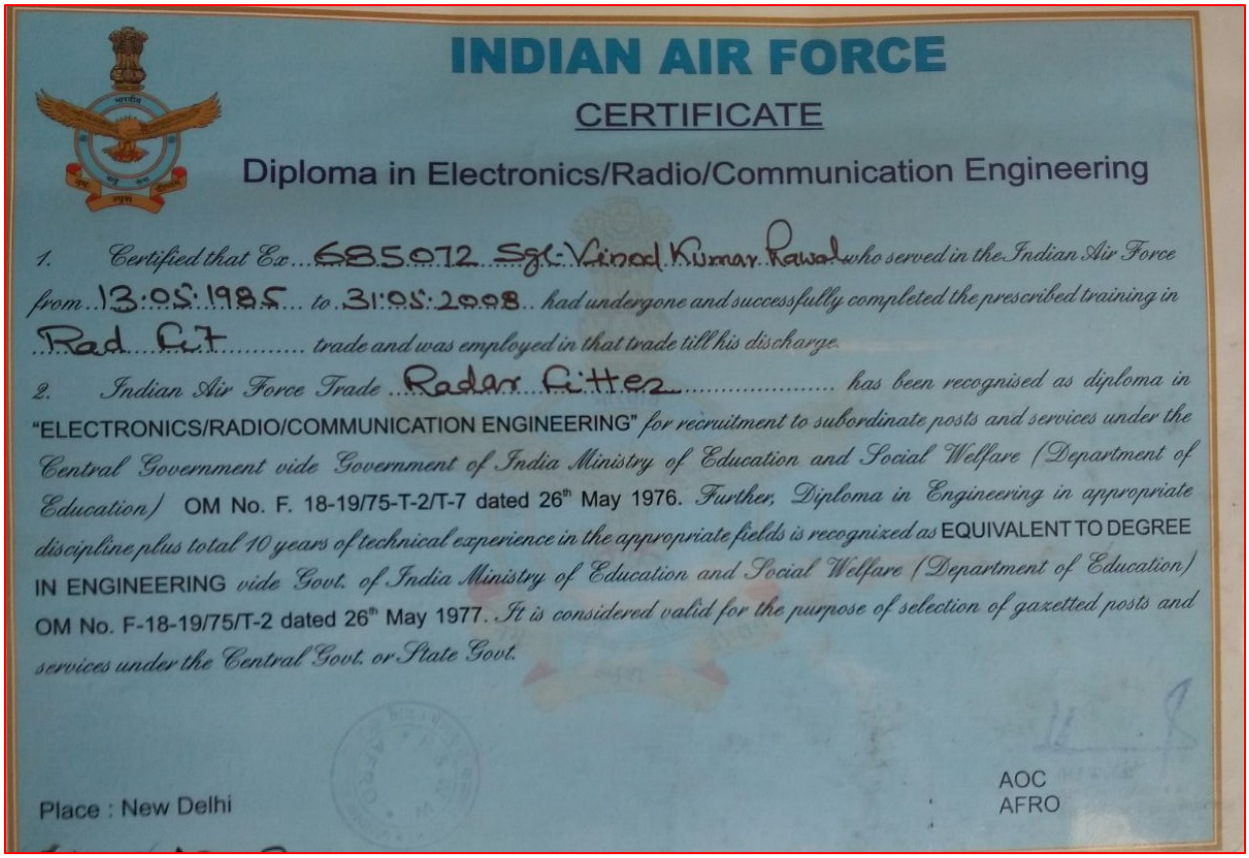

CERTIFICATE

Diploma in Electronics/Radio/Communication Engineering

1. Certified that Ex 685072 Sgt Vinod Kumar Rawal who served in the Indian Air Force from 13.05.1985 to 31.05.2008 had undergone and successfully completed the prescribed training in Rad Fit trade and was employed in that trade till his discharge.

2. Indian Air Force Trade Radar Fitter has been recognised as diploma in "ELECTRONICS/RADIO/COMMUNICATION ENGINEERING" for recruitment to subordinate posts and services under the Central Government vide Government of India Ministry of Education and Social Welfare (Department of Education) OM No. F. 18-19/75-T-2/T-7 dated 26th May 1976. Further, Diploma in Engineering in appropriate discipline plus total 10 years of technical experience in the appropriate fields is recognized as EQUIVALENT TO DEGREE IN ENGINEERING vide Govt. of India Ministry of Education and Social Welfare (Department of Education) OM No. F-18-19/75/T-2 dated 26th May 1977. It is considered valid for the purpose of selection of gazetted posts and services under the Central Govt. or State Govt.

Place : New Delhi

AOC
AFRO

उपाधि क्रमांक / **Degree Serial No.**
B.TECH/2018/45158

नामांकन संख्या / **Enrollment No.**
142904056302

अनुक्रमांक संख्या / **Roll No.**
1429040019

डा. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम प्राविधिक विश्वविद्यालय, उत्तर प्रदेश

(पूर्ववर्ती उत्तर प्रदेश प्राविधिक विश्वविद्यालय, लखनऊ)

विश्वविद्यालय की विद्या परिषद की अनुशंसा पर

अनुभव सिंह रावल

को *मैकेनिकल इंजीनियरिंग* विधा में *प्रौद्योगिकी की स्नातक* उपाधि
प्रथम श्रेणी में

उनके द्वारा इस उपाधि की अवाप्ति हेतु
विश्वविद्यालय द्वारा विहित अपेक्षाओं को सफलतापूर्वक पूरा करने पर
एतद्द्वारा सन् ***2018*** में प्रदान की जाती है।

Dr. A. P. J. Abdul Kalam Technical University, Uttar Pradesh

(Formerly Uttar Pradesh Technical University, Lucknow)

Upon the recommendation of the Academic Council,
the University hereby confers the degree of

Bachelor of Technology in Mechanical Engineering

upon

ANUBHAV SINGH RAWAL

who has successfully completed the requirements prescribed by the University
for the award of this degree in

First Division

in the year 2018

लखनऊ, (उ.प्र.), भारत
Lucknow, (U.P.), India
दिनांक/Dated: 12/10/2018

(विनय कुमार पाठक)
कुलपति
(Vinay Kumar Pathak)
Vice-Chancellor

ठाकुर बिशन सिंह

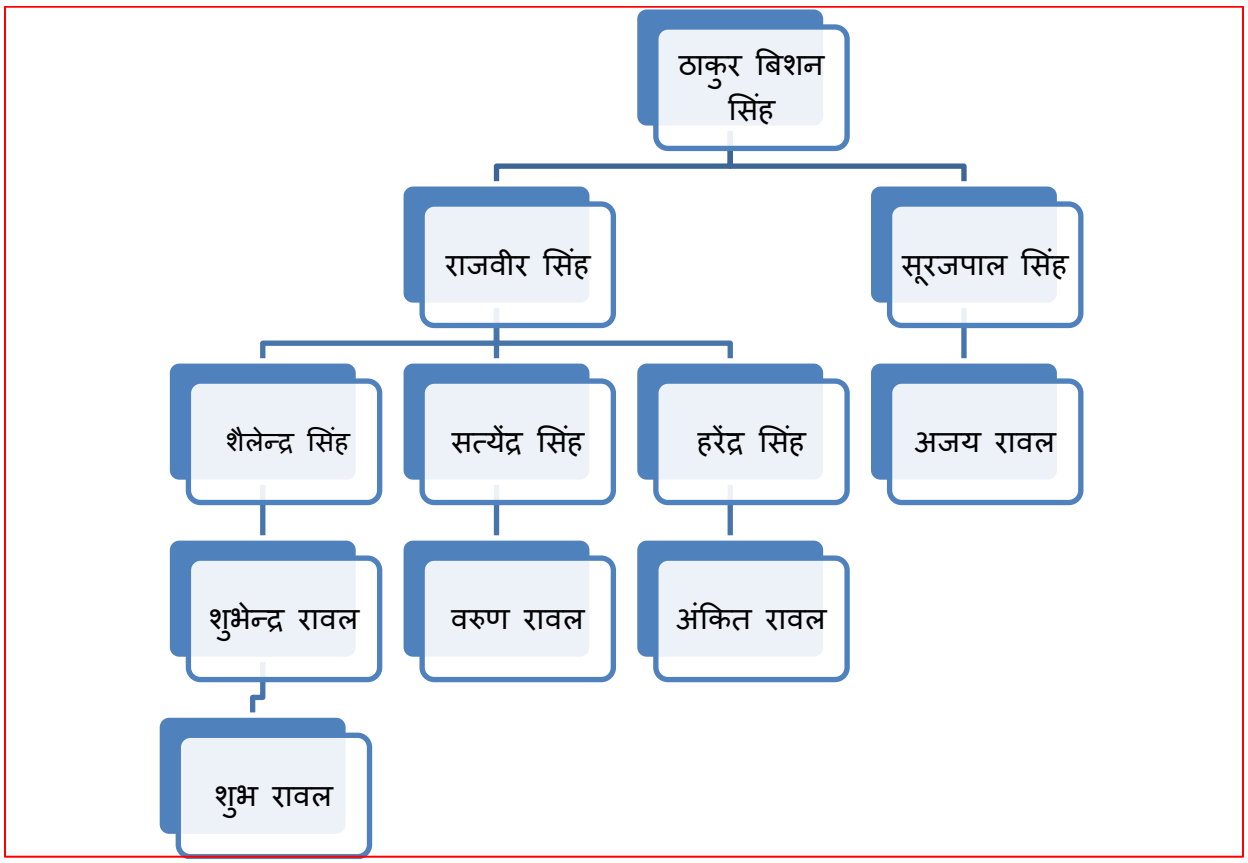

ठाकुर चंद्र भान सिंह के दूसरे पुत्र थे ठाकुर बिशन सिंह जिनका जन्म 1897 में आमका में हुआ था। उनका विवाह दिल्ली के ग्राम रिठाला की सुश्री राज वती से हुआ। उनके के दो बेटे थे ठाकुर राजवीर सिंह और ठाकुर सूरजपाल सिंह। उनकी तीन बेटियाँ भी थीं। उनके नाम श्रीमती कांति देवी श्रीमती उमा देवी और श्रीमती पुष्पा देवी हैं। ठाकुर बिशन सिंह ने अच्छी शिक्षा पायी थी। तीनो बेटियों की शादी उन्होंने अच्छे परिवारों में की ।

ठाकुर बिशन सिंह और उनकी उमा देवी की बेटी

अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद वह उत्तर प्रदेश के वन विभाग में नियुक्त हो गए। ठाकुर बिशन सिंह वन अनुसंधान संस्थान, देहरादून द्वारा रेंजर्स प्रशिक्षण के लिए गए चुने गए प्रथम बैच में थे । वह बहुत ईमानदार और मेहनती थे जिसके परिणामस्वरूप उनको पदोन्नति मिली और अंत में 1952 में सरकारी सेवा से वन संरक्षक के रूप में सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद, वे अपनी कृषि भूमि की देखभाल करने के लिए आमका में बस गए। वर्ष 1983 में उनका निधन हो गया

ठाकुर राजवीर सिंह

ठाकुर राजवीर सिंह और अयोध्या देवी

ठाकुर राजवीर सिंह ठाकुर बिशन सिंह के बड़े बेटे थे। उनका जन्म 1922 में आमका में हुआ था। उन्होंने अपनी हाई स्कूल और इंटरमीडिएट की परीक्षा मेरठ से पास की। ठाकुर राजवीर सिंह ने 1943-45 के बीच बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, पिलानी (राजस्थान) में अपना सिविल इंजीनियरिंग कोर्स भी किया। पर वह इसे पूरा नहीं कर सके। ठाकुर राजवीर सिंह का विवाह ग्राम जिरौली जिला अलीगढ़, उ.प्र के ठाकुर धूम सिंह की पुत्री सुश्री अयोध्या देवी से हुआ।

उन्होंने 1958 में पन्निजी शुगर मिल्स, बुलंदशहर को कैन इंस्पेक्टर के रूप में ज्वाइन किया। समय समय पर उन्हें उसी संगठन तरक्की मिलती गयी और वह श्रम अधिकारी के पद तक पहुंचे । वह न केवल श्रम विवादों बल्कि चीनी मिल से संबंधित सभी कानूनी मामलों की देखभाल करने के लिए अधिकृत थे । वह वर्ष 1990 में पन्नी जी शुगर मिल्स से सेवानिवृत्त हुए।

ठाकुर राजवीर सिंह के तीनबेटे है । उनके नाम हैं 1 श्री शैलेंद्र सिंह 2 श्री सत्येंद्र सिंह और 3 श्री हरेंद्र सिंह। उनकी चार बेटियां भी थीं। बड़ी बेदी मंजू की शादी श्री सुरेंद्र सिंह तोमर से हुई वह कानपुर के लॉ कॉलेज से प्रिंसिपल के पद से सेवानिवृत हुये। दूसरी बेटी अंजू का विवाह श्री ओम प्रकाश राणा से हुआ जो सैन्य इंजीनियरिंग सेवा के निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए। तीसरी बेटी शशि का विवाह श्री देवेंद्र सिंह चंदेल से हुआ। वह चूरू (राजस्थान) की एक बैंक में शाखा प्रबंधकहै और चौथी बेटी अनिता का विवाह भूषण स्टील्स लिमिटेड भुवनेश्वर के उपाध्यक्ष श्री नरेश राघव से हुआ है।

ठाकुर राजवीर सिंह का निधन 20 अप्रैल 2003 को हुआ था।

श्री शैलेन्द्र सिंह

शैलेन्द्र सिंह और दीपा रावल

श्री शैलेन्द्र सिंह ठाकुर राजवीर सिंह के सबसे बड़े पुत्र हैं। उनका जन्म 18 फरवरी 1948 को हुआ था। उनका विवाह सुश्री दीपा रावल से हुआ। उनके एक पुत्र श्री शुभेन्द्र रावल और एक पुत्री शिवानी है। श्री शुभेन्द्र ने 12 वीं कक्षा तक की शिक्षा इंग्राहम इंग्लिश स्कूल से प्राप्त की थी। इसके बाद गाज़ियाबाद के आइडियल इंजीनियरिंग कॉलेज से इलेक्ट्रॉनिक्स एंड कम्युनिकेशन में बीटेक किया। श्री शुभेंद्र ने 10 साल के लिए एलेवेटर में काम करने वाली एक बहुराष्ट्रीय कंपनी ThyssenKrupp लिफ्ट इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में इलेक्ट्रिकल डिज़ाइन हेड के रूप में काम किया।

शुभेंद्र

शिखा

अब उन्होंने गाजियाबाद में अपनी औद्योगिक इकाई शुरू की है। शुभेंद्र ने 2008 में शिखा से शादी की जो आर्ट्स में ग्रेजुएट हैं। उसने इंटीरियर डिजाइनिंग में डिप्लोमा कोर्स भी किया है। उनकी एक बेटी सानवी और एक बेटा शुभ है।

आदित्य राणा

शिवानी राणा

श्री शैलेन्द्र की बेटी शिवानी ने एम. कॉम, बी.एड. करने के बाद एमएमएच कॉलेज, गाजियाबाद से M.A. (एजुकेशन) पास की। उन्होंने NIIT से कंप्यूटर में तीन साल का डिप्लोमा कोर्स भी किया। वह रयान पब्लिक स्कूल, नोएडा में शिक्षिका के रूप में कार्यरत उन्होंने श्री आदित्य राणा से शादी की है, जो टेलीविजन कंपनी आजतक में वरिष्ठ निर्माता के रूप में काम कर रहे हैं।

श्री शैलेन्द्र रावल ने डाबर इंडिया लिमिटेड में सुरक्षा प्रबंधक के रूप में काम किया, जो एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी है और 30 वर्षों से इस क्षेत्र में कार्यरत है। वह वर्ष 2008 में सेवा से सेवानिवृत्त हुए। वह राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद और अन्य ऐसे संगठनों में औद्योगिक सुरक्षा मुद्दों पर एक अतिथि वक्ता रहे है। वह अभी भी कई कंपनियों में सुरक्षा सलाहकार के रूप में काम कर रहे हैं। श्री शैलेन्द्र रावल ने डाबर इंडिया लिमिटेड में सुरक्षा प्रबंधक के रूप में काम किया, जो एक बहुराष्ट्रीय दवा कंपनी है और 30 वर्षों से इस क्षेत्र में कार्यरत हैं . वह वर्ष 2008 में सेवा से सेवानिवृत्त हुए। वह राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद और अन्य ऐसे संगठनों में औद्योगिक सुरक्षा मुद्दों पर एक अतिथि वक्ता रहे है। वह अभी भी कई कंपनियों में सुरक्षा सलाहकार के रूप में काम कर रहे हैं।

शुभ

सानवी

श्री सत्येंद्र सिंह रावल

सत्येंद्र सिंह रावल और प्रतिभा रावल

श्री सत्येंद्र सिंह रावल ठाकुर राजवीर सिंह के दूसरे नंबर के पुत्र हैं। उनका जन्म 1949 में हुआ था। यू पी एजुकेशन बोर्ड से इंटरमीडिएट की परीक्षा पूरी करने के बाद, श्री सत्येन्द्र पुणे के फिल्म्स एंड टेलीविजन इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया में प्रवेश लिया । उन्होंने वहां से मोशन फोटोग्राफी में तीन साल का डिप्लोमा कोर्स पूरा किया। श्री सत्येंद्र सिंह रावल भारतीय फिल्म उद्योग में निर्माता और छायाकार थे। उन्होंने चंद्रकिरण, लाल कोठी, गृह प्रवेश और बन्नो जैसी फिल्मों का निर्माण किया। अपने शो गुड शॉट्स में उन्होंने अनुपम खेर के साथ भी काम किया था।

श्री सत्येंद्र ने 27 नवंबर 1978 को श्रीमती प्रतिभा रावल से शादी की। उनकी पत्नी एयर इंडिया से वरिष्ठ प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुईं। वह एयर इंडिया में इन-फ्लाइट सेवाओं की प्रमुख थी। उन्होंने 1990 में भारत सरकार द्वारा कुवैत में संकट के समय भारतियों को वापस लाने के अभियान में भाग लिया। इसके अतिरिक्त २००६ में यमन और सीरियाई संकट के दौरान भी भारतियों के वापस लाने के अभियान में वह शामिल थीं ।

वरुण रावल

उनका एक बेटा वरुण और एक बेटी अपर्णा है। वरुण एक कमर्शियल पायलट हैं और उन्होंने कैलिफोर्निया के बेला एयर से अपनी उड़ान का परिक्षण पूरा किया । उनकी बेटी अपर्णा एस रावल ने यूनिवर्सिटी ऑफ़ न्यूयॉर्क से स्नातक डिग्री प्राप्त की है। वह विश्वविद्यालय में भारतीय छात्र संघ के कार्यकारी बोर्ड की निर्वाचित सदस्य थी। उन्होंने छात्र मामलों के निदेशक (छात्र संघ एसए) के रूप में भी कार्य किया। अन्नामलाई विश्वविद्यालय चिदंबरम से अंतर्राष्ट्रीय संबंधों और कूटनीति में मास्टर की उपाधि प्राप्त की। वह वर्तमान में एक स्वतंत्र रक्षा शोधकर्ता और भारत से संबंधित विभिन्न आतंकवाद, भू-राजनीतिक और अंतरराष्ट्रीय संबंधों से संबंधित विषयों पर एक विश्लेषक के रूप में काम कर रही है। वह अक्सर भारतीय सैन्य समीक्षा, भारतीय रक्षा समीक्षा और विभिन्न थिंक टैंक के लिए भी लिखती हैं।

अपर्णा रावल

इसके अलावा, अपर्णा राजपूताना की सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक सम्बन्धी जागरूकता के लिए भी काम कर रही हैं। भारतीय राजपूत समुदाय के प्रमुख सदस्यों के साथ सामूहिक रूप से राजपूत पुनर्जागरण के नाम एक समूह चलातीं है

श्री हरेंद्र सिंह

हरेंद्र सिंह और शुभ्रा रावल

श्री हरेंद्र सिंह ठाकुर राजवीर सिंह के तीसरे और सबसे छोटे पुत्र हैं। उनका जन्म 02.01.1951 को हुआ था। उन्होंने अपनी हाई स्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा डीएवी स्कूल बुलंदशहर से की। अपने स्कूल के दिनों में वह क्रिकेट के एक बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। वह मेरठ कमिश्नरी में आयोजित अंतर क्षेत्रीय क्रिकेट टूर्नामेंट में अपनी टीम के उप कप्तान थे। 31.01.2011 को कलेक्टर कार्यालय गाजियाबाद से नजीर सदर के रूप में श्री हरेंद्र सिंह सेवानिवृत्त हुए।

अर्चना और अंकित

उन्होंने सुश्री शुभ्रा रावल से शादी की है। उनका एक बेटा अंकित रावल और दो बेटियां अंशु और अनुश्री हैं। अंशु ने 24 नवंबर 2016 को जिला बुलंदशहर में बनैल गांव के श्री सौरभ राघव से शादी की। श्री राघव केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल में निरीक्षक के रूप में कार्यरत हैं। वह प्रतिष्ठित कोबरा कमांडो फोर्स में है। श्री हरेंद्र के बेटे अंकित रावल 2010 से भारतीय नौसेना में लेफ्टिनेंट कमांडर के रूप में काम कर रहे हैं। अंकित ने समुद्र में 350 मीटर तक गोता लगाया है और गर्वित पनडुब्बी समुदाय के सदस्य है। उन्होंने आईआईएमटी नोएडा से बी.टेक किया। अंकित ने 18 फरवरी 2016 को अर्चना से शादी की। उनकी पत्नी अर्चना सेल्स मार्केटिंग मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं।

अनुश्री

अंशु

सौरव राघव

ठाकुर सुरज पाल सिंह

ठाकुर सूरज पाल सिंह रावल ठाकुर बिशन सिंह के छोटे बेटे थे। उनका जन्म 1931 में हुआ था। उन्होंने अपना हाई स्कूल, इंटरमीडिएट और ग्रेजुएशन बलवंत राजपूत कॉलेज आगरा से किया। उन्हें बैचलर ऑफ वेटरनरी साइंसेज एंड एनिमल हसबैंड्री के लिए मथुरा के कॉलेज में प्रवेश मिला। किन्ही कारणों से वह इसे पूरा नहीं कर सके। अपने स्कूल / कॉलेज के दिनों में वह एक बहुत अच्छे खिलाड़ी थे। श्री सूरज पाल सिंह अपनी कॉलेज टीम के लिए हॉकी खेलते थे।

बैचलर ऑफ एजुकेशन की डिग्री हासिल करने के बाद उन्हें 1964 में दिल्ली के एक सरकारी स्कूल में नौकरी मिल गयी । उन्होंने वहां

ठाकुर सूरज पाल सिंह रावल और श्रीमती कमलेश

टीजीटी शिक्षक के रूप में काम किया। श्री सिंह 1991 में दिल्ली सरकार से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद उन्होंने विद्यार्थियों को ट्यूशन पढ़ाया । उनको शादी के प्रस्तावों पर बातचीत करने का भी शौक था । उनके पास उन लड़कों और लड़कियों के बारे में बहुत बड़ा डेटा था जो शादी करने का इरादा रखते थे। श्री सूरज पाल सिंह का विवाह श्रीमती कमलेश रावल के साथ 1958 में संपन्न हुआ। श्रीमती कमलेश ठाकुर जगन नाथ सिंह की बेटी थी जो उत्तर प्रदेश के जिला मैनपुरी के रहने वाले थे। इस शादी के समय ठाकुर जगन नाथ सिंह लखनऊ के सीनियर सुपरिन्टेन्डेन्ट ऑफ़ पुलिस के पद पर लखनऊ में तैनात थे । श्री सूरज पाल सिंह का निधन 26 दिसंबर 2001 को हुआ था।

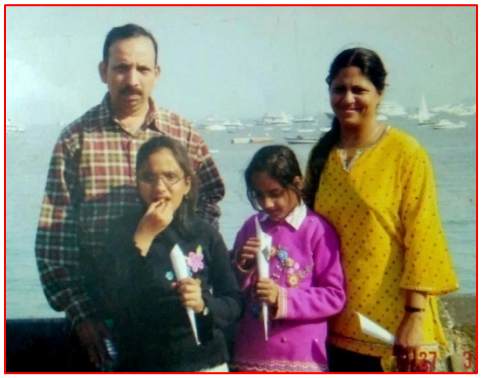

उनकी पत्नी श्रीमती कामेश रावल जन्म 1936 में हुआ और वह इलाहाबाद विश्वविद्यालय से हिंदी में स्नातकोत्तर थीं। वह दिल्ली सरकार के एक स्कूल में शिक्षिका थीं जहाँ से वह टीजीटी शिक्षक के पद से 1996 में सेवानिवृत्त हुईं। उनका निधन 21.02.2013 को हुआ।

श्री सूरज पाल सिंह रावल और श्रीमती कमलेश रावल का एक बेटा अजय रावल और एक बेटी विनीता रावल है । अपने जीवनकाल के दौरान ही उन्होंने अपने दोनों बच्चो की शादी करदी थी ।विनीता रावल का जन्म 27 अप्रैल 1967 को हुआ था। उन्होंने दिल्ली

श्री कमल मोहन परिहार और विनीता

विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ कॉमर्स और अजमेर विश्वविद्यालय से स्नातक की शिक्षा प्राप्त की। उनकी शादी 29 अप्रैल 1994 को श्री कमल मोहन परिहार से हुई। श्री परिहार भारत सरकार में संयुक्त निदेशक के पद पर कार्यरत हैं। उनकी दो बेटियां हैं जिनका नाम नेहा परिहार और रिधि परिहार है।

श्री अजय रावल

अजय रावल

रश्मि बाला

श्री अजय रावल ठाकुर सूरज पाल सिंह रावल के इकलौते पुत्र हैं। उनका जन्म 13 जुलाई 1959 को लखनऊ यूपी में हुआ था। उन्होंने 1975 में दिल्ली से हायर सेकेंडरी और 1979 में दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक किया। श्री अजय ने 1980 में IETC, दिल्ली से इलेक्ट्रॉनिक्स में तीन साल का डिप्लोमा भी पास किया। उन्होंने 1986 में रश्मि बाला से शादी की। वह स्वर्गीय ठाकुर हरनाथ सिंह कुशवाह की बेटी हैं। विवाह के समय ठाकुर हरनाथ सिंह जी इफ्को में एरिया मैनेजर के पद पर कार्यरत थे। रश्मि बाला का शानदार शैक्षणिक रिकॉर्ड है । वह हाई स्कूल और यूपी शिक्षा बोर्ड की इंटरमीडिएट परीक्षा में स्कूल की टॉपर है।

रश्मि ने 1983 में इलाहाबाद विश्वविद्यालय से वोकल म्यूजिक में पोस्ट-ग्रेजुएशन किया। उन्होंने 1985 में लखनऊ विश्वविद्यालय से बी एड और 1998 में दिल्ली विश्वविद्यालय से एम फिल किया। इसके बाद उन्होने एम फिल परीक्षा में विश्वविद्यालय में टॉप किया। वह 1993 से सरकारी सीनियर हायर सेकेंडरी स्कूल, दिल्ली में टीजीटी संगीत शिक्षक के रूप में कार्यरत हैं।

सूरजपाल सिंह कमलेश विनीता
रश्मि और अजय

श्री अजय रावल और रश्मि रावल की एक बेटी है जिसका नाम सोम्या है। उनका जन्म 3 अगस्त 1988 को हुआ था। उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक और रोहतक विश्वविद्यालय से एमबीए किया है । वह बैंक ऑफ अमेरिका में कार्यरत हैं। सोम्या की शादी श्री सचिन कुमार देवरा से 2014 में हुई है । श्री देवरा फ्रेंच कंपनी अल्फकॉम में प्रोजेक्ट इंचार्ज के रूप में कार्यरत हैं। सोम्या और सचिन की एक बेटी शानवी देवरा है जो 28 दिसंबर 2014 को पैदा हुई थी।

सचिन और सोम्या

रश्मि बाला स्कूल की विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक और अन्य पाठ्य गतिविधियों में बहुत उत्साह से भाग लेती है। कुछ का उल्लेख इस प्रकार है कि उन्होंने 2019-20 में शिक्षकों की अंतर जिला सांस्कृतिक प्रतियोगिता में भाग लिया और मेरिट का प्रमाणपत्र जीता। उन्हें 2008 के गणतंत्र दिवस समारोह में भाग लेने के लिए एक दक्षिता प्रमाण पत्र भी मिला। इसके अलावा उन्हें 2018 में आयोजित क्लस्टर स्तर के कार्यक्रम में न्यायाधीश के रूप में भाग लेने के लिए प्रशंसा प्रमाण पत्र मिला। कुछ तस्वीरें विभिन्न अवसरों पर ली गई थीं जिन्हें नीचे मुद्रित किया गया था।

रश्मि का ग्रुप फोटो

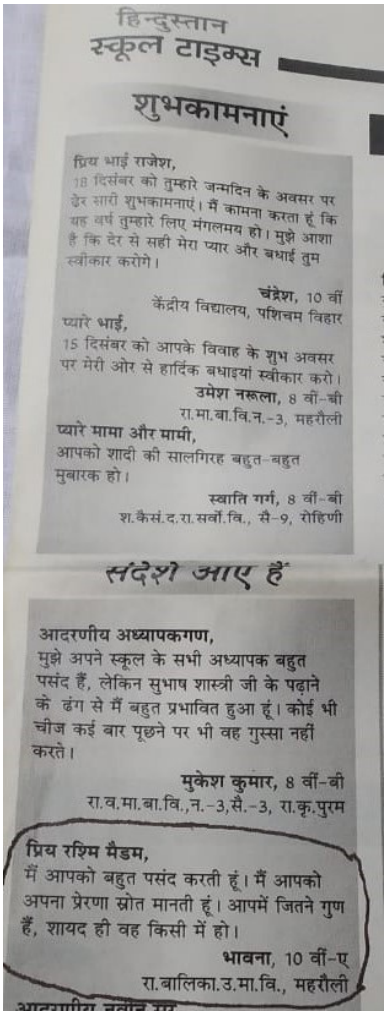

हिन्दुस्तान
स्कूल टाइम्स

शुभकामनाएं

प्रिय भाई राजेश,
18 दिसंबर को तुम्हारे जन्मदिन के अवसर पर ढेर सारी शुभकामनाएं। मैं कामना करता हूं कि यह वर्ष तुम्हारे लिए मंगलमय हो। मुझे आशा है कि देर से सही मेरा प्यार और बधाई तुम स्वीकार करोगे।

चंद्रेश, 10 वीं
केंद्रीय विद्यालय, पश्चिम विहार

प्यारे भाई,
15 दिसंबर को आपके विवाह के शुभ अवसर पर मेरी ओर से हार्दिक बधाइयां स्वीकार करो।

उमेश नरूला, 8 वीं-बी
रा.मा.बा.वि.न.-3, महरौली

प्यारे मामा और मामी,
आपको शादी की सालगिरह बहुत-बहुत मुबारक हो।

स्वाति गर्ग, 8 वीं-बी
श.कैसं.द.रा.सर्वो.वि., सै-9, रोहिणी

संदेशे आए हैं

आदरणीय अध्यापकगण,
मुझे अपने स्कूल के सभी अध्यापक बहुत पसंद हैं, लेकिन सुभाष शास्त्री जी के पढ़ाने के ढंग से मैं बहुत प्रभावित हुआ हूं। कोई भी चीज कई बार पूछने पर भी वह गुस्सा नहीं करते।

मुकेश कुमार, 8 वीं-बी
रा.व.मा.बा.वि.,न.-3,सै.-3, रा.कृ.पुरम

प्रिय रश्मि मैडम,
मैं आपको बहुत पसंद करती हूं। मैं आपको अपना प्रेरणा स्रोत मानती हूं। आपमें जितने गुण हैं, शायद ही वह किसी में हो।

भावना, 10 वीं-ए
रा.बालिका.उ.मा.वि., महरौली

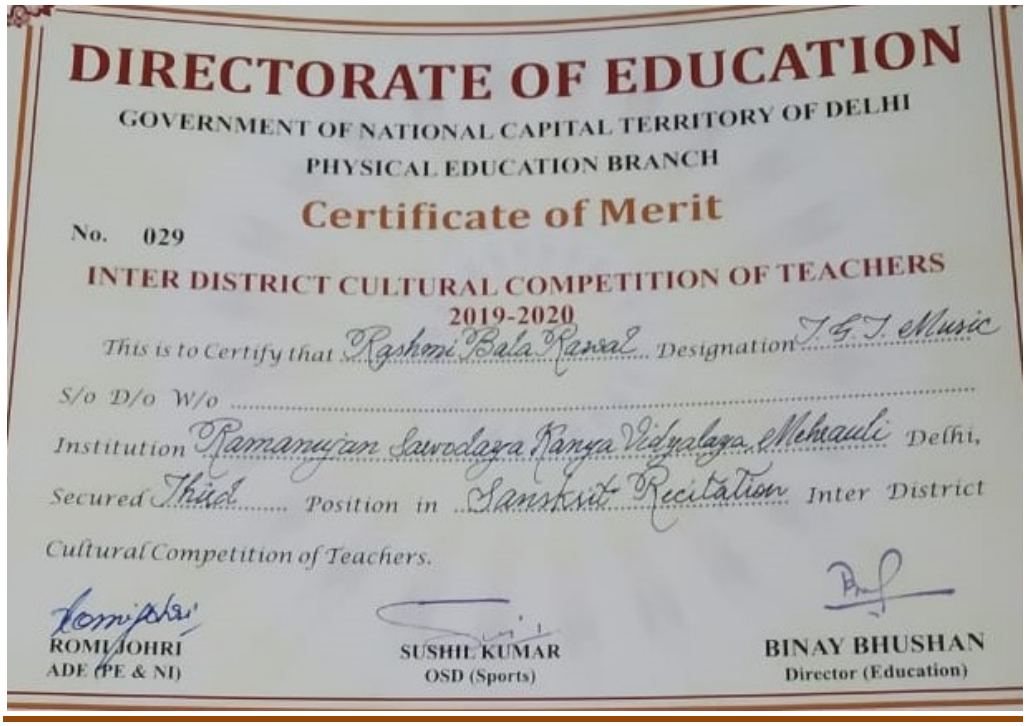

DIRECTORATE OF EDUCATION

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI

PHYSICAL EDUCATION BRANCH

Certificate of Merit

No. 029

INTER DISTRICT CULTURAL COMPETITION OF TEACHERS

2019-2020

This is to Certify that Rashmi Bala Rawal Designation T.G.T. Music

S/o D/o W/o .....

Institution Ramanujan Sarvodaya Kanya Vidyalaya, Mehrauli Delhi,

Secured Third Position in Sanskrit Recitation Inter District

Cultural Competition of Teachers.

ROMI JOHRI
ADE (PE & NI)

SUSHIL KUMAR
OSD (Sports)

BINAY BHUSHAN
Director (Education)

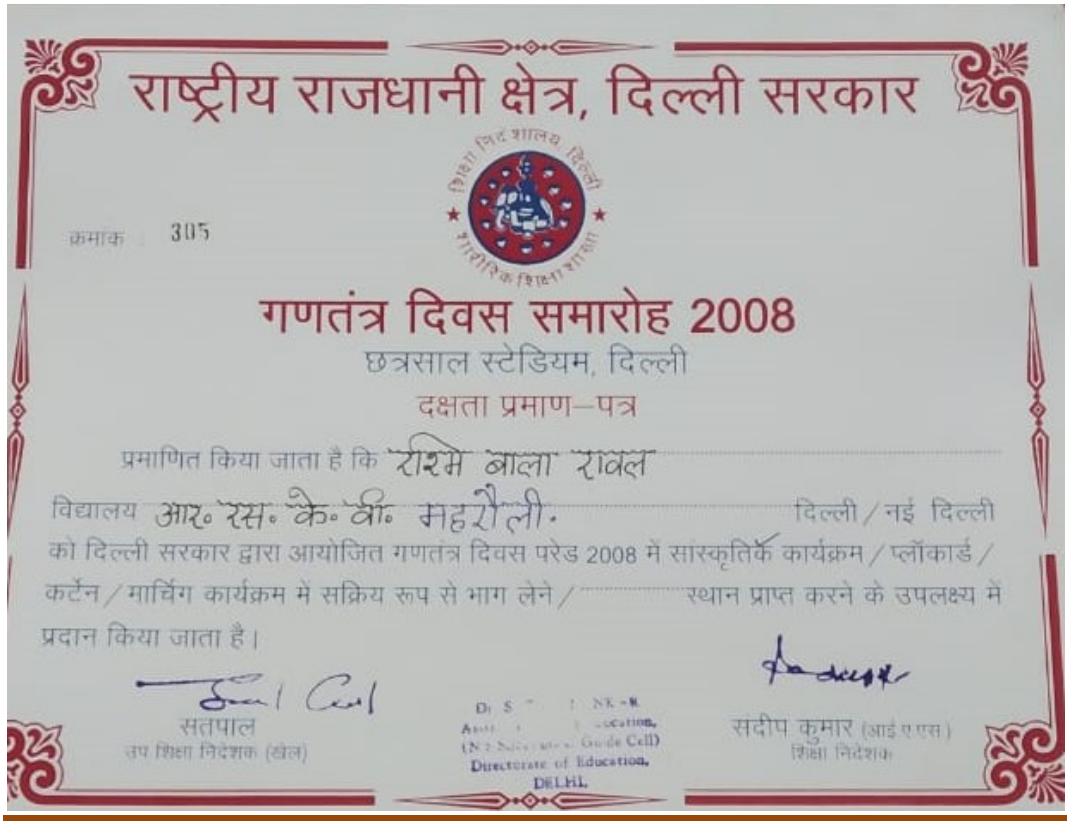

राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार

क्रमांक 305

गणतंत्र दिवस समारोह 2008

छत्रसाल स्टेडियम, दिल्ली

दक्षता प्रमाण–पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि रश्मि बाला रावल

विद्यालय आर० एस० के० वी० महरौली. दिल्ली / नई दिल्ली

को दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित गणतंत्र दिवस परेड 2008 में सांस्कृतिक कार्यक्रम / प्लॉकार्ड / कर्टेन / मार्चिंग कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लेने / ..... स्थान प्राप्त करने के उपलक्ष्य में प्रदान किया जाता है।

सतपाल
उप शिक्षा निदेशक (खेल)

Directorate of Education, DELHI

सदीप कुमार (आई.ए.एस.)
शिक्षा निदेशक

ाल किले पर आयोजित मुख्य समारोह में कुछ इस तरह झिंगा बनाया स्कूली छात्र-छात्राओं ने।

THE CONSTITUTION OF INDIA

PREAMBLE

WE, THE PEOPLE OF INDIA, having solemnly resolved to constitute India into a SOVEREIGN SOCIALIST SECULAR DEMOCRATIC REPUBLIC and to secure to all its citizens :

JUSTICE, social, economic and political ;

LIBERTY of thought, expression, belief, faith and worship ;

EQUALITY of status and of opportunity ;

and to promote among them all

FRATERNITY assuring the dignity of the individual and the unity and integrity of the Nation ;

IN OUR CONSTITUENT ASSEMBLY this twenty - sixth day of November, 1949, do HEREBY ADOPT, ENACT AND GIVE TO OURSELVES THIS CONSTITUTION.

CERTIFICATE OF APPRECIATION

Presented to

Rashmi Bala Kaval

for being a part of

DELHI's DEMOCRACY

and judging the Song/Dance Competition

at Ward/Assembly/Cluster Level

event held on 05-04-2018

(Manisha Saxena)

(Manish Sisodia)

ठाकुर महावीर सिंह

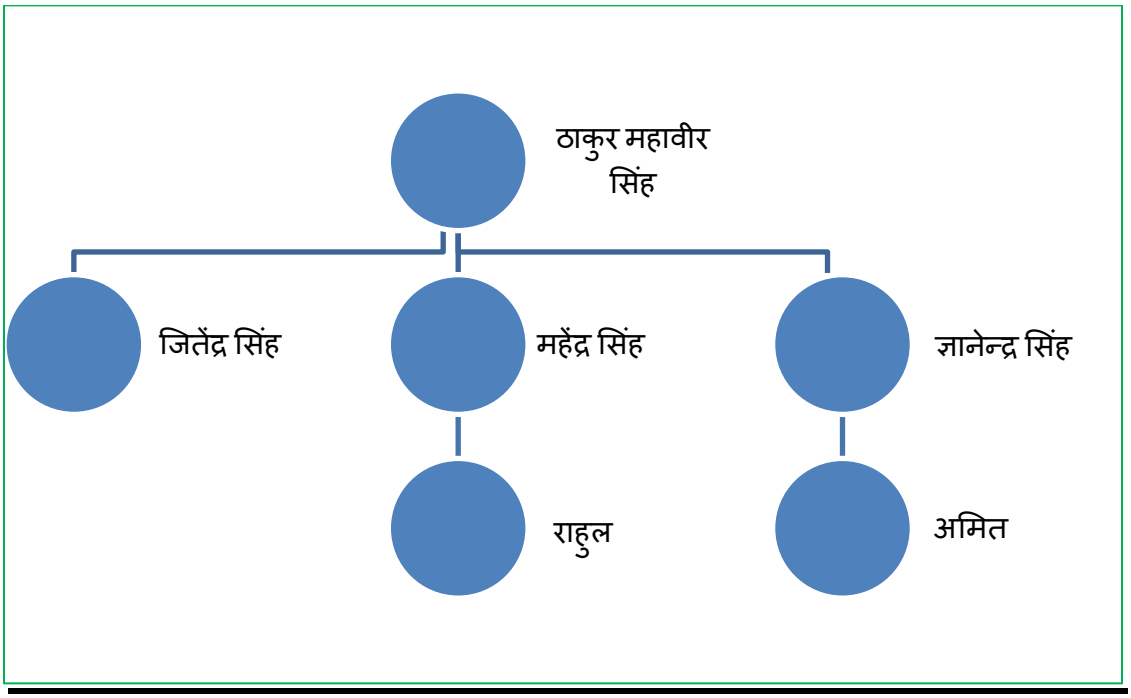

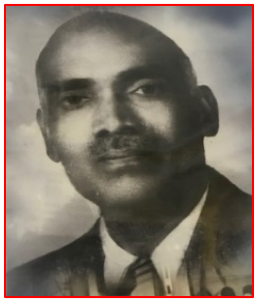

ठाकुर महावीर सिंह

श्रीमति गजेंद्र वती

ठाकुर महावीर सिंह ठाकुर चंद्र भान सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। उनका जन्म ज्येष्ठ बदी द्वादशी संवत 1958 को आमका में हुआ था। यह तिथि ईस्वी संवत के अनुसार 30 मई 1901 बनती है । सरकार के आधिकारिक रिकॉर्ड में उनके जन्म की तारीख 01 जुलाई 1901 दर्ज है।

उन्होंने बलवंत राजपूत हाई स्कूल आगरा से 1923 में हाई स्कूल और 1925 में एफ एससी पास किया। आगरा विश्वविद्यालय से ही 1929 में रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान और वनस्पति विज्ञान के साथ विज्ञान विषय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की । 1930 से 1932 तक बनारस हिन्दू विष्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान का एम ए में अध्ययन किया। अपने छात्र दिनों के दौरान ठाकुर महावीर सिंह एक अच्छे खिलाड़ी थे। उन्होंने फुटबॉल, लंबी कूद, ऊंची कूद, कुश्ती और जीमनासियम इत्यादि खेलों में भाग लेते थे ।

ठाकुर महावीर सिंह आमका रावल परिवार के पहले विज्ञान स्नातक थे।

शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने पटियाला राज्य पुलिस में सहायक पुलिस अधीक्षक के रूप में अपना करियर शुरू किया। पुलिस विभाग में उनका कार्यकाल तुलनात्मक द्रष्टि से छोटा था। वहां काम करते हुए ठाकुर महावीर सिंह ने टारगेट शूटिंग प्रतियोगिता में भाग लिया जहां वह प्रथम स्थान पर आए। पुलिस महानिरीक्षक, पटियाला के

आदेशानुसार 23 दिसंबर 1937 को उन्हे एक प्रमाण पत्र दिया गया जिसमें ठाकुर महावीर सिंह को संभावित 60 शॉट्स में से 55 स्कोर करके सूची में प्रथम आने पर उनकी प्रशंसा की और उन्हें बधाई दी गयी ।

बाद में उन्होंने लगभग तीन वर्षों तक भारत सरकार के आपूर्ति विभाग के मुख्य नियंत्रक के कार्यालय में सहायक पद पर काम किया । इसके बाद उन्होंने 24.01.1949 तक पुनर्वास एवं पुनर्स्थापन महानिदेशालय के क्षेत्रीय रोजगार विनिमय कार्यालय में विभिन्न पदों पर जैसे की सहायक प्रबंधक, सहायक रोजगार अधिकारी और जनसंपर्क अधिकारी के रूप में दिल्ली में काम किया। 25 जनवरी 1949 को उन्हें संसद में कांग्रेस पार्टी के मुख्य सचेतक श्री सत्य नारायण सिन्हा के निजी सचिव के रूप में नियुक्त किया गया। श्री सिन्हा संसदीय मामलों के केंद्रीय मंत्री और मध्य प्रदेश के राज्यपाल भी बने।

1950 में ठाकुर महावीर सिंह भारत सरकार के वाणिज्य मंत्रालय के आयात और निर्यात विभाग के मुख्य नियंत्रक कार्यालय में सहायक नियंत्रक बने। 1957 में नियंत्रक (आयात और निर्यात) पद पर पदोनत्ति पाकर वह क्लास वन गज़ेटेड अधिकारी हुए । वह 1 जुलाई 1958 को इस पद से सेवानिवृत्त हुए। उनकी कार्य क्षमता देखते हुऐ उन्हें इसी कार्यालय में और इसी पद पर एक साल चार महीने के लिए फिर से नियुक्त किया गया।

देश विभाजन के समय 1947 में सांप्रदायिक दंगे भड़क गए। उस समय ठाकुर महावीर सिंह को भारत पुलिस अधिनियम 1861 की धारा 15 के तहत विशेष पुलिस अधिकारी के रूप में नियुक्त किया गया था। श्री एम.एस. रंधावा आईसीएस, जिला मजिस्ट्रेट, दिल्ली के आदेश दिनांक 14.9.1947 के तहत उन्हें कर्फ्यू के दौरान हथियार ले जाने और बाहर रहने की अनुमति थी।

ठाकुर महावीर सिंह का कई ऐसे लोगों के साथ अच्छा परिचय था जो उस समय मायने रखते थे। उनके कुछ परिचित इस प्रकार हैं:

1. भारत के पूर्व प्रधानमंत्री चौधरी चरण सिंह आगरा कॉलेज में उनके साथी छात्र थे। वास्तव में श्री चरण सिंह जब वे यू.पी. सरकार में गृह मंत्री थे तब फरवरी 1962 में श्री महावीर सिंह के निमंत्रण पर उनके गाँव आमका आए थे।

2. श्री सत्य नारायण सिन्हा तत्कालीन केंद्रीय संसदीय मामलों के मंत्री, जो बाद में मध्य प्रदेश के राज्यपाल बने।

3. ग्वालियर की राजमाता विजया राजे सिंधिया के पिता श्री महेंद्र सिंह यूपीसीएस, डिप्टी कलेक्टर से उनका अच्छा परिचय था। उनके द्वारा ठाकुर महावीर सिंह को लिखे गए कुछ पत्र यहां मुद्रित किये गए है।

4. श्री आर.के. टंडन, भारत के पांडिचेरी में महावाणिज्य दूत ।

5. भारतीय रेलवे में एक वरिष्ठ अधिकारी श्री एस.एन.आगा जो श्री के.एन. काटजू, तत्कालीन गृह मंत्री, भारत सरकार के दामाद भी थे।

6. श्री जगन प्रसाद रावत जो दो बार यूपी विधानसभा के विधायक चुने गए छात्र दिनों से उनके मित्र थे।

7. श्री राम चंद्र विकल, पूर्व मंत्री यू.पी. सरकार

श्री महावीर सिंह एकदम शाकाहारी थे और शराब इत्यादि का सेवन बिलकुल नहीं करते थे । वह एक धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे जो हनुमान जी की पूजा करते थे। वह श्री हरि बाबा के अनुयायी थे। गंगा किनारे स्थित बदायूं जिले के ग्राम गवाँ में आयोजित होली और अन्य मौकों पर उनकी धार्मिक सभाओं में शामिल होते थे।

बाये से दाये संतोष अंजलि सुमिता और विनोद कुमार दोडिया

ज्ञानेन्द्र सिंह, जितेंद्र सिंह और महेंद्र सिंह
अपनी माताजी श्रीमति गजेंद्र वती के साथ

ठाकुर महावीर सिंह का दो बार विवाह हुआ। उनकी पहली पत्नी बुलंदशहर जिले के सबितगढ़ की थीं। इस शादी से उनका एक बेटा था। उसका नाम जितेंद्र सिंह था। पहली पत्नी की मृत्यु के बाद उन्होंने फिर से शादी की और दूसरी पत्नी श्रीमति गजेंद्र वती जिला अलीगढ़ के ग्राम जखौता के ठाकुर रघुबर सिंह की बेटी थी। इस शादी से उनके दो बेटे और दो बेटियां थीं। उनके नाम हैं 1. महेंद्र सिंह 2 संतोष 3 ज्ञानेन्द्र सिंह और 4 सुषमा।

श्री गजेन्द्र सिंह और परिवार की तस्वीर

नेशनल जिमनास्टिक कोचिंग कैंप, नई दिल्ली 1959। संतोष आगे की पंक्ति में भूमि पर तीसरे नंबर पर बैठी है । उसने 1959 में राष्ट्रीय जिमनास्टिक प्रतियोगिता में पदक जीता था।

श्री जितेन्द्र सिंह की शादी नहीं हुई थी। इसलिए उनकी कोई संतान नहीं थी । 25 दिसंबर 1944 को जन्मीं संतोष का विवाह 16 जनवरी 1966 को आगरा के श्री विनोद कुमार डोडिया से हुआ था। संतोष जिम्नास्टिक की राष्ट्रीय टीम में थी । उसने 1959 में नेशनल जिम्नेजियम प्रतियोगिता में पदक जीता था । संतोष की मृत्यु 5 जनवरी 2018 को हुई थी।

सुषमा का जन्म 1 अप्रैल 1951 को हुआ। सुषमा का विवाह ग्राम फजलपुर जिला बुलंदशहर के ठाकुर जंगपाल सिंह जी के पुत्र श्री गजेंद्र सिंह के साथ हुआ । वे अब फरीदाबाद (हरियाणा) में बस गए हैं।

ठाकुर महावीर का निधन 2 नवंबर 1985 को हुआ।

बिसंभर नाथ छात्रावास, आगरा कॉलेज 1923-24 महावीर सिंह दाएं से दूसरे भूमि पर बैठे हैं

राजपूत एसोसिएशन आगरा कॉलेज 1926-27 महावीर सिंह बाएं से 8 वें स्थान पर उस पंक्ति मे है जो कुर्सियों के एकदम पीछे हैं

पुलिस ट्रेनिंग स्कूल ग्रुप पुलिस लाइंस पटियाला 11 मई 1938. महावीर सिंह बाईं ओर की कुर्सियों पर दूसरे स्थान पर हैं

पटियाला राज्य पुलिस के अधिकारियों की फोटो 16 अक्टूबर 1937 को ली गई थी। महावीर सिंह कुर्सी पर दाये से पहले नंबर पर बैठे हैं।

1946 में ली गयी आपूर्ति विभाग के अधिकारियों और कर्मचारियों की फोटो । श्री महावीर सिंह तीसरी पंक्ति में दाईं से चौथे स्थान पर हैं।

श्री महावीर सिंह जब दिल्ली में रोजगार अधिकारी के रूप में कार्यरत थे। वह बिलकुल दायीं तरफ खड़े है । फोटो 9.9.1948 को ली गयी।

श्री महावीर सिंह पहली पंक्ति में बायीं ओर से तीसरे स्थान पर हैं।

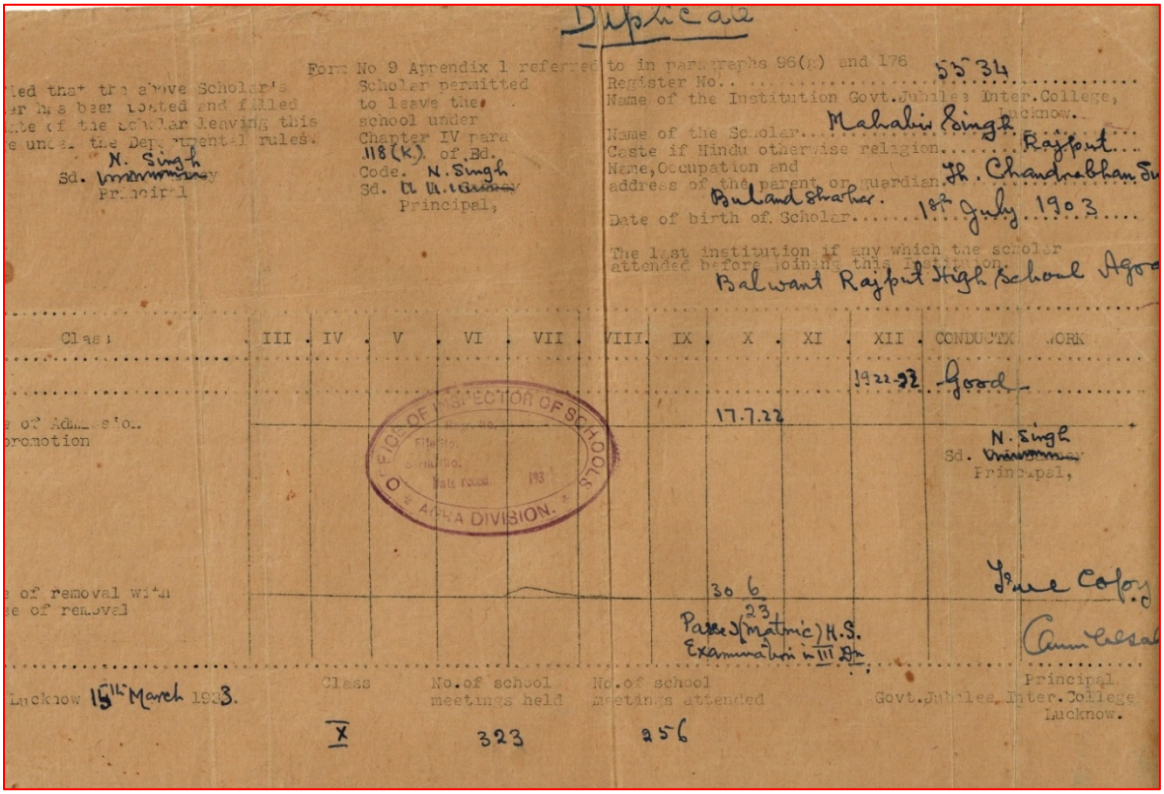

Duplicate

Form No 9 Appendix 1 referred to in paragraphs 96(g) and 176

...ied that the above Scholar's ...er has been posted and filled ...te of the scholar leaving this ...e under the Departmental rules.
Sd. N. Singh
Principal

Scholar permitted to leave the school under Chapter IV para 118(K) of Ed. Code.
Sd. N. Singh
Principal,

Register No.. 5534
Name of the Institution Govt. Jubilee Inter. College, Lucknow.
Name of the Scholar... Mahabir Singh
Caste if Hindu otherwise religion... Rajput
Name, Occupation and address of the parent or guardian. Th. Chandrabhan ... Bulandshahar.
Date of birth of Scholar... 1st July 1903
The last institution if any which the scholar attended before joining this Institution. Balwant Rajput High School Agra

Class	III	IV	V	VI	VII	VIII	IX	X	XI	XII	CONDUCT	WORK
										1922-23	Good	
...e of Admission promotion								17.7.22				
...e of removal with ...e of removal								30.6.23 Passed (matric) H.S. Examination in III Dn.				

Sd. N. Singh
Principal,

Fair Copy

Lucknow 15th March 1923.

Class	No. of school meetings held	No. of school meetings attended
X	323	256

Principal
Govt. Jubilee Inter. College
Lucknow.

श्री महावीर सिंह की हाईस्कूल की मार्कशीट दिनांक 15.03.1923

Duplicate

AGRA UNIVERSITY

Bachelor of Science

This is to Certify that Mahavir Singh Rawal (Agra College, Agra)

obtained the Degree of **Bachelor of Science** in this University in the Examination of 1929, and that he was placed in the Second Division.

The subjects in which he was examined were Chemistry, Zoology and Botany.

Agra University :
The 23rd November 1929.

Sd. Narayan Prasad Asthana
Vice-Chancellor.

True copy
Diwan Chand
Vice Chancellor

PATIALA.

D.O.No. 22608/4 23 th December, 37.

My dear Kanwar Mahabir Singh ji

On the result sheet of Target firing test, the Inspector General of Police, Patiala has been pleased to remark, "Please congratulate Kanwar Mahabir Singh, Assistant Superintendent of Police on topping the list with such a good score as 55 out of a possible of 60. This is really good".

Please accept congratulations in this behalf

Yours sincerely.

P.A. to I.G.P.

Sardar Kanwar Mahabir Singh ji
Assistant Superintendent of Police Lines,
PATIALA.

(M.RAJ)

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS

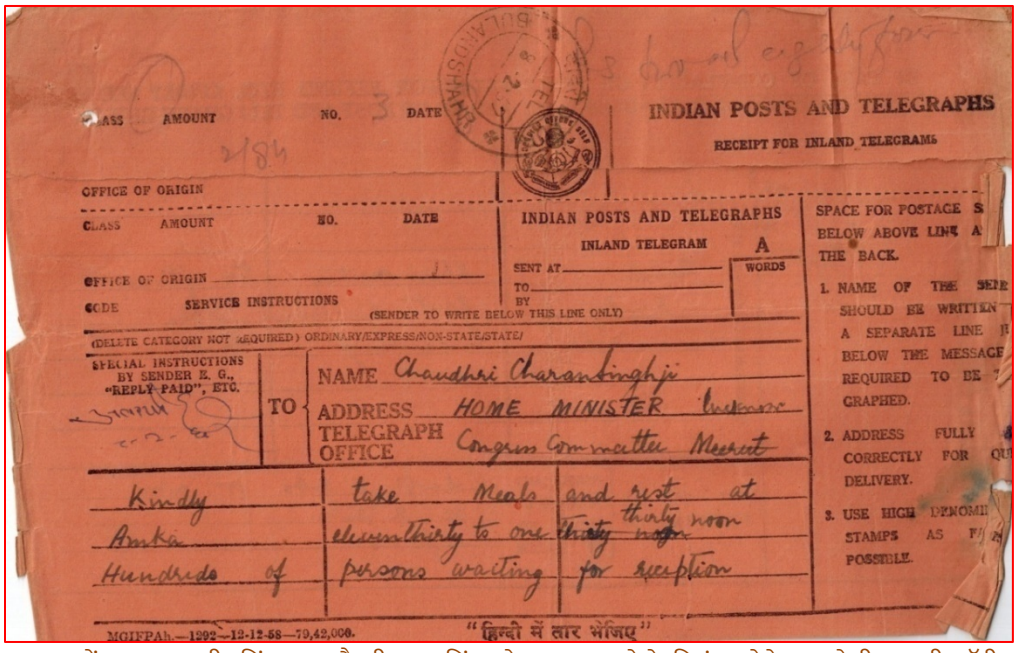

RECEIPT FOR INLAND TELEGRAMS

CLASS AMOUNT NO. 3 DATE

OFFICE OF ORIGIN

INDIAN POSTS AND TELEGRAPHS

INLAND TELEGRAM A

CLASS AMOUNT NO. DATE

OFFICE OF ORIGIN

CODE SERVICE INSTRUCTIONS

SENT AT
TO
BY

WORDS

(SENDER TO WRITE BELOW THIS LINE ONLY)

(DELETE CATEGORY NOT REQUIRED) ORDINARY/EXPRESS/NON-STATE/STATE/

SPECIAL INSTRUCTIONS BY SENDER E. G., "REPLY PAID", ETC.

TO

NAME Chaudhri Charan Singh ji

ADDRESS HOME MINISTER Lucknow

TELEGRAPH OFFICE Congress Committee Meerut

Kindly take Meals and rest at Amka eleven thirty to one thirty noon Hundreds of persons waiting for reception

SPACE FOR POSTAGE STAMPS BELOW ABOVE LINE AT THE BACK.

1. NAME OF THE SENDER SHOULD BE WRITTEN ON A SEPARATE LINE BELOW THE MESSAGE IF REQUIRED TO BE TELEGRAPHED.

2. ADDRESS FULLY AND CORRECTLY FOR QUICK DELIVERY.

3. USE HIGH DENOMINATION STAMPS AS FAR AS POSSIBLE.

MGIPPAh.—1992—12-12-58—70,42,000. "हिन्दी में तार भेजिए"

1962 में ठाकुर महावीर सिंह द्वारा चौधरी चरण सिंह को आमका आने के निमंत्रण देने वाला टेलीग्राम की कॉपी

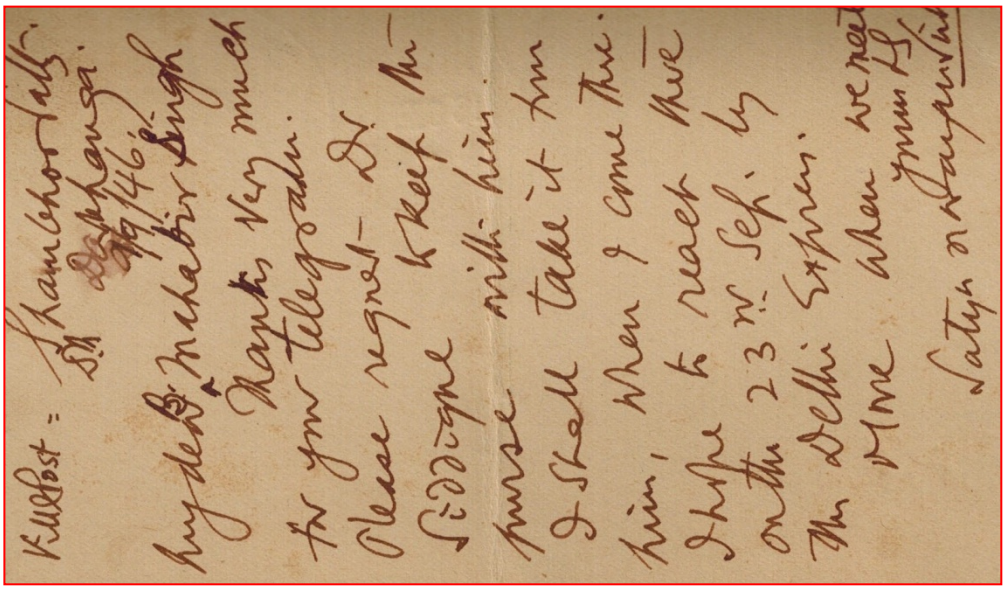

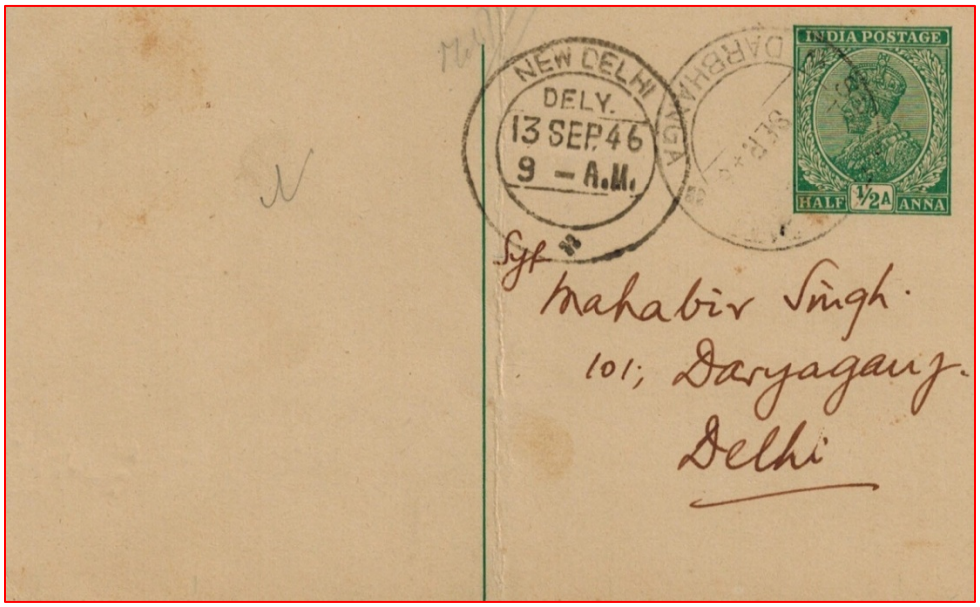

श्री सत्य नारायण सिन्हा द्वारा हाथ से लिखा लिखा पोस्ट कार्ड । इस पर 13.09.1946 की मुहर लगी है। श्री सिन्हा उस समय कांग्रेस पार्टी के मुख्य सचेतक और संसदीय मामलों के केंद्रीय मंत्री थे। बाद में मध्य प्रदेश के राज्यपाल बने।

SATYA NARAYAN SINHA
M.L.A. (Central)

I am glad to certify that Thakur Mahabir Singh comes of a respectable family of the District of Bulland Shahr (U.P.). I know him intimately for a fully-long time. He is very shrewd, intelligent, hard-talking & reliable. He has pleasing manners & is very well-behaved. He bears a good moral character. He is quite suitable for any of the administrative posts, recently advertised by the Govt of India.

I wish him success.

Satya narayan Sinha
Chief Whip of the Govt of India.
18/6/48

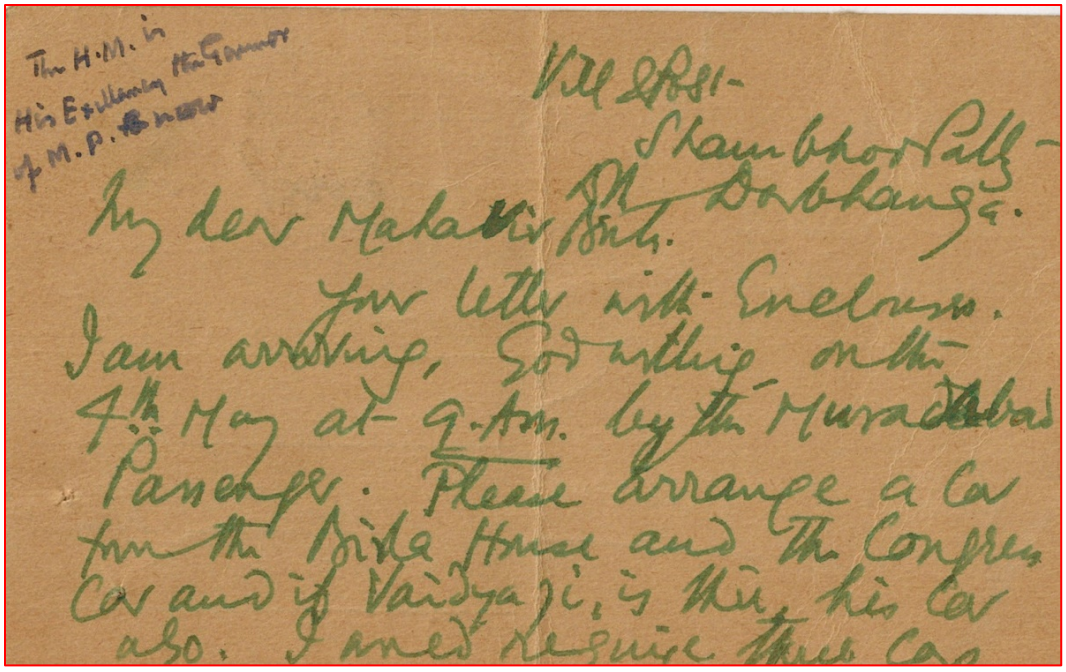

The H.M. is
His Excellency the Governor
of M.P. ~~Governor~~

Vill & Post-
Shambhoopatti-
Dt. Darbhanga.

My dear Mahavir Babu.

Your letter with Enclosure.
I am arriving, God willing on the
4th May at 9-A.m. by the Muradabad
Passenger. Please arrange a car
from the Birla House and the Congress
car and if Vaidyaji, is there, his car
also. I need require three cars

at the Ry Station.
Please inform ~~also~~
Miss Arora also of
my arrival time
& date.

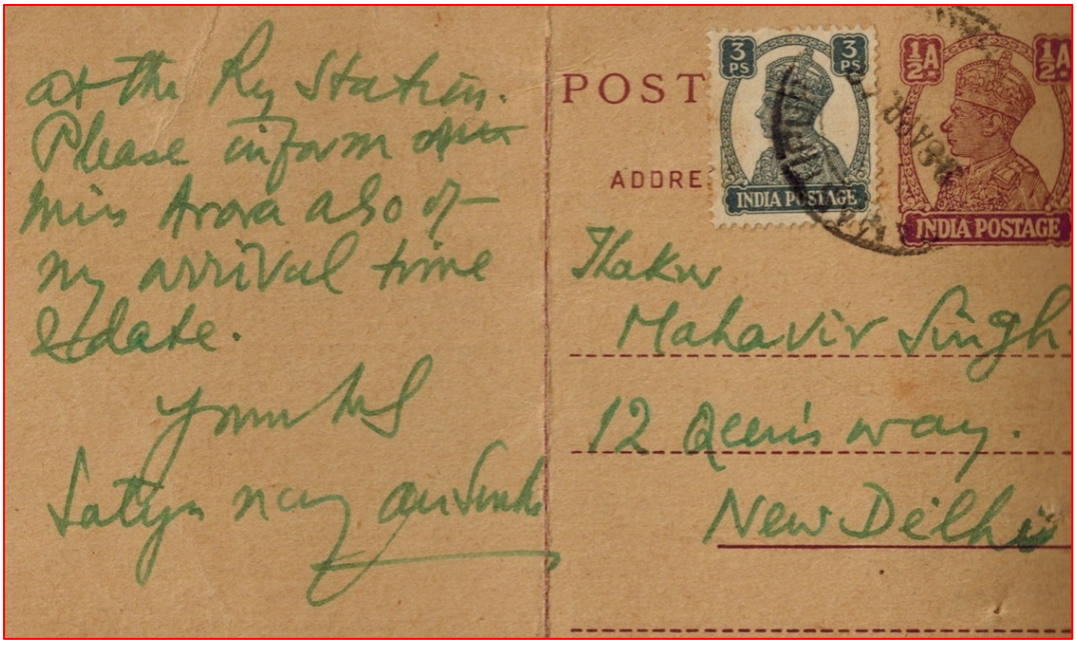

Yours aff
Satyanarayan Sinha

Thakur
Mahavir Singh
12 Queen's way.
New Delhi

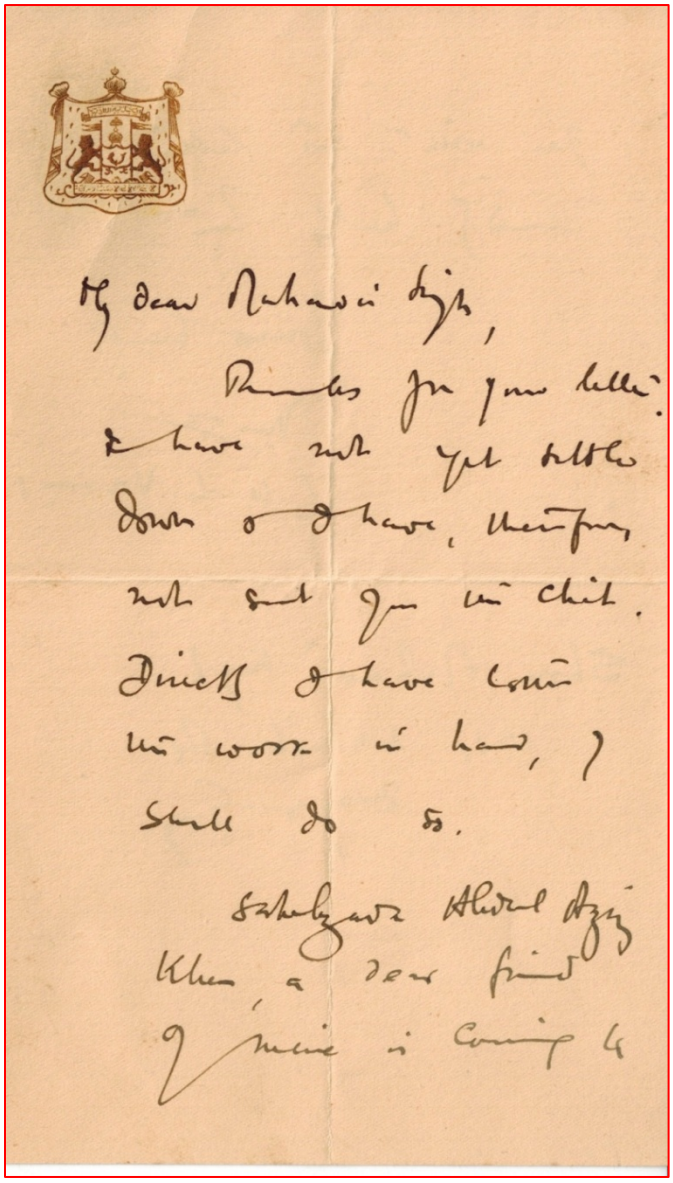

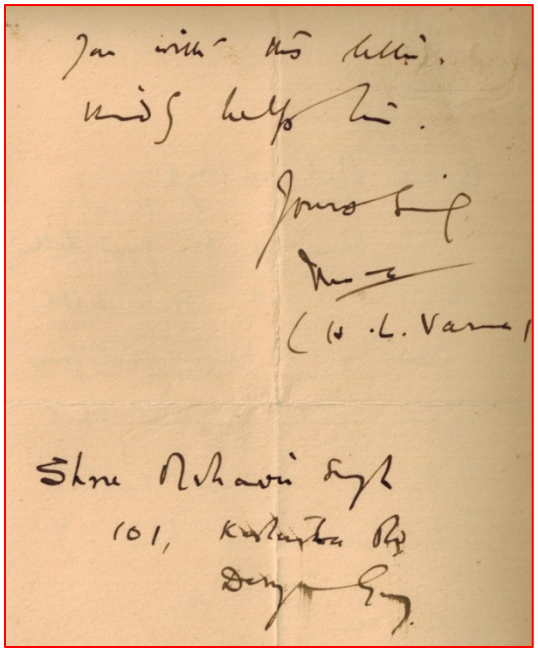

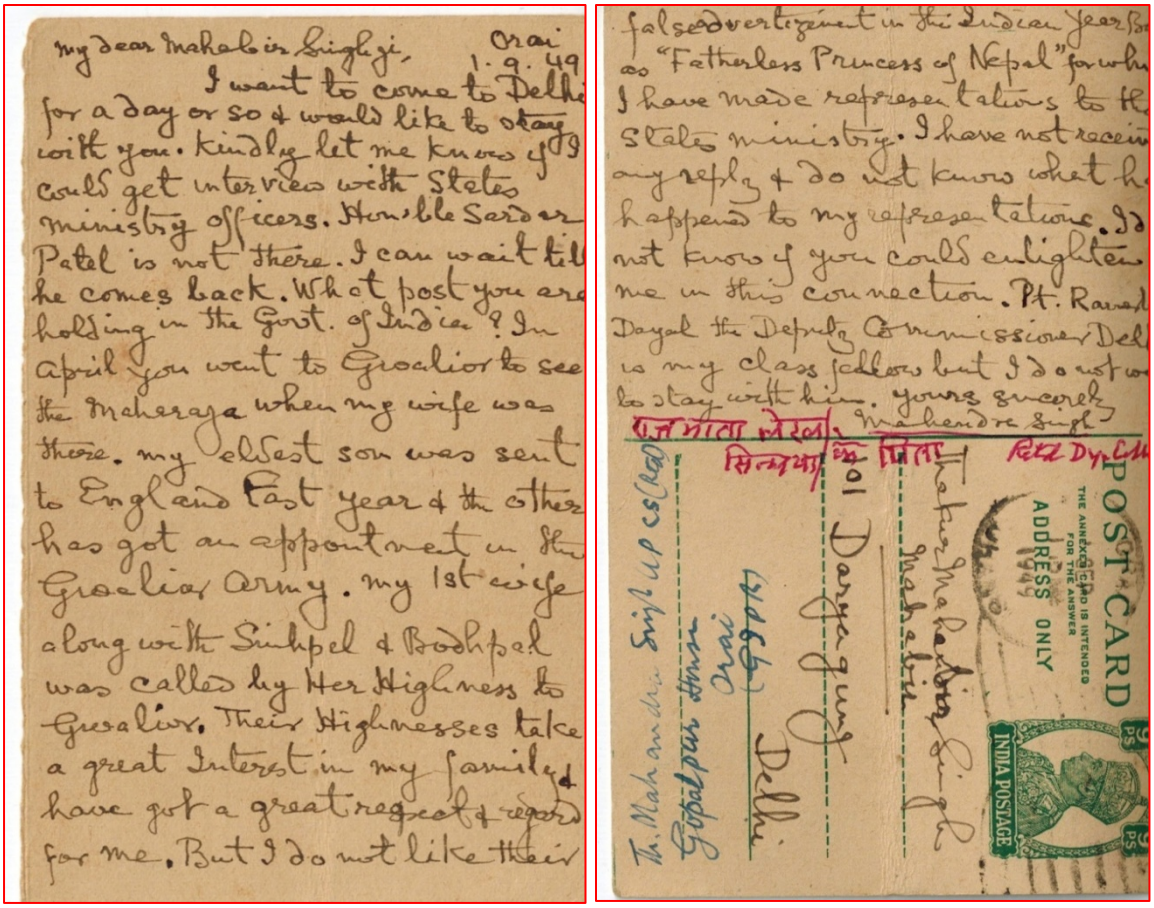

my dear Mahabir Singhji,   Orai 1.9.49

I want to come to Delhi for a day or so & would like to stay with you. Kindly let me know if I could get interview with States ministry officers. Hon'ble Sardar Patel is not there. I can wait till he comes back. What post you are holding in the Govt. of India? In April you went to Gwalior to see the Maharaja when my wife was there. My eldest son was sent to England last year & the other has got an appointment in the Gwalior Army. My 1st wife along with Sukhpal & Bodhpal was called by Her Highness to Gwalior. Their Highnesses take a great interest in my family & have got a great respect & regard for me. But I do not like their

false advertisement in the Indian Year Bo[ok] as "Fatherless Princess of Nepal" for which I have made representations to the States ministry. I have not receiv[ed] any reply & do not know what ha[s] happened to my representations. I do not know if you could enlighten me in this connection. Pt. Ramd[?] Dayal the Deputy Commissioner Delhi is my class fellow but I do not wa[nt] to stay with him. Yours sincerely, Mahendra Singh

राजमाता [illegible] सिन्धिया के पिता Retd Dy Coll

POST CARD
THE ANNEXED CARD IS INTENDED FOR THE ANSWER
ADDRESS ONLY

Thakur Mahabir Singh
101 Daryaganj
Delhi

Th. Mahendra Singh UPCS (Retd)
Gopalpur House
Orai (UP)

INDIA POSTAGE

श्री महेन्द्र सिंह डिप्टी कलेक्टर का पत्र दिनांक 1.9.1949 वह ग्वालियर की राजमाता विजयाराजे सिंधिया के पिता हैं

श्री जितेन्द्र सिंह

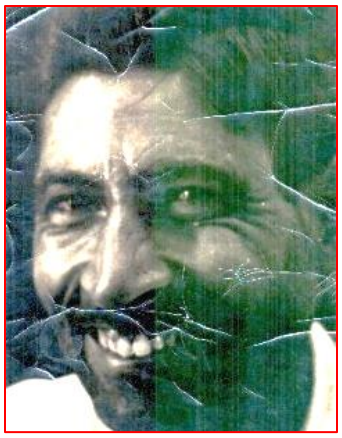

जितेन्द्र सिंह

श्री जितेन्द्र सिंह ठाकुर महावीर सिंह के सबसे बड़े पुत्र थे। उनका जन्म 1936 में हुआ था। उन्होंने अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा पूरी करने के बाद, प्रिंटिंग प्रेस में इक़मैन का हुनर सीखने के लिए दिल्ली के किंग्सवे कैंप में महात्मा गांधी के प्रबल अनुयायी श्री वियोगी हरि द्वारा संचालित गांधी आश्रम की एक संस्था में प्रवेश लिया । इसके बाद उन्होंने भारत सरकार की प्रिंटिंग प्रेस में नौकरी की जो उस समय मिंटो रोड, नई दिल्ली में थी । उन्होंने कुछ समय के लिए वहाँ काम किया लेकिन कुछ अज्ञात कारणों से नौकरी छोड़ दी। वह एक अच्छे स्पोर्ट्स मैन और गायक थे। उन्होंने शादी नहीं की। बीमारी के कारण 24 फरवरी 1993 को उनका निधन हो गया।

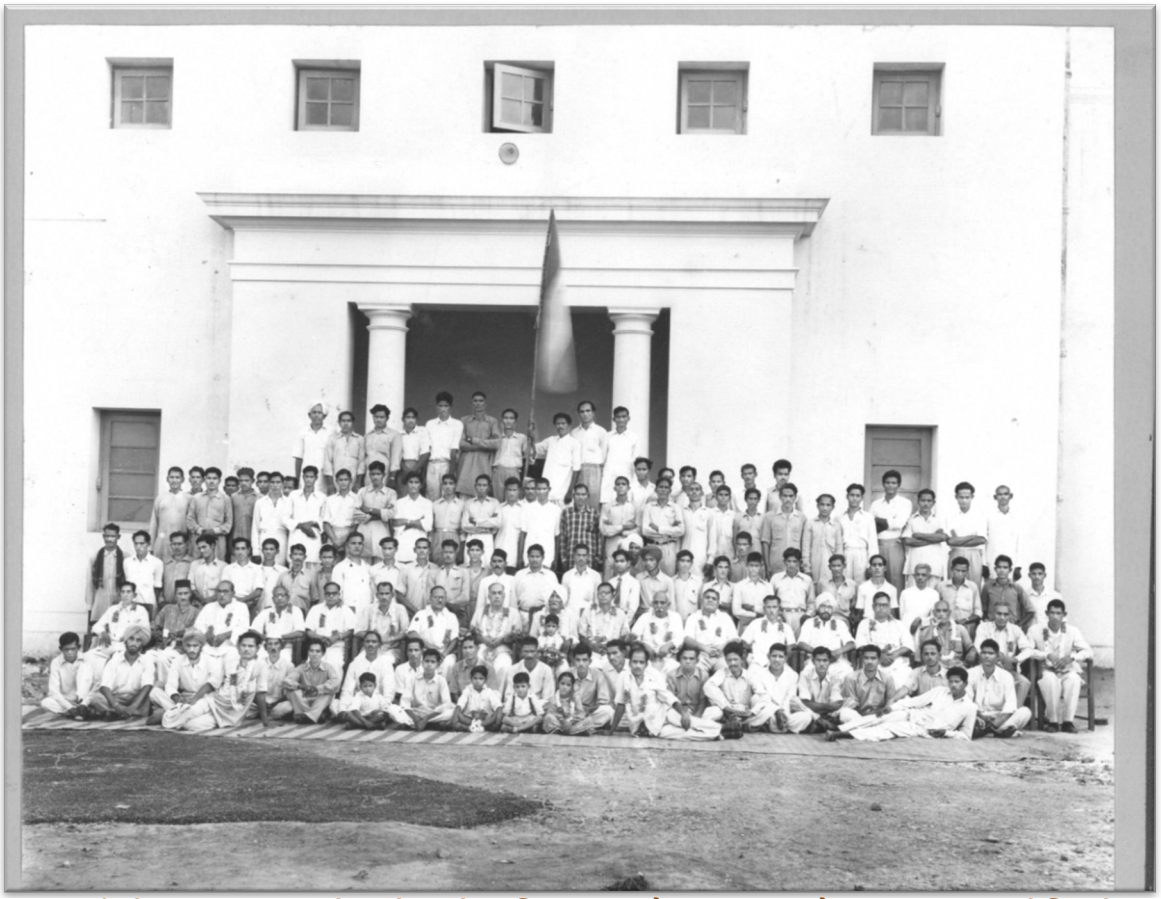

ठाकुर महावीर सिंह के सबसे बड़े पुत्र जितेंद्र सिंह अंतिम पंक्ति में बाएं से चौथे स्थान पर खड़े है । भारत सरकार प्रेस बिल्डिंग मिंटो रोड, नई दिल्ली के सामने लिया गया फोटो ।

श्री महेन्द्र सिंह

इस पुस्तक को मैं स्वयं ही लिख रहा हूँ इसलिए मैं खुद को प्रथम व्यक्ति के रूप में उल्लेखित करूँगा । मैं श्री महावीर सिंह का दूसरा नंबर का पुत्र हूं। मेरा जन्म 14 अगस्त 1940 को गाँव आमका में हुआ था। लेकिन आधिकारिक रिकॉर्ड में मेरी जन्मतिथि 1 जुलाई 1942 दर्ज है। चूंकि मेरे पिता दिल्ली में कार्यरत थे इसलिए मुझे आमका गांव में रहने का मौका कम मिला। मेरी सारी पढ़ाई प्राथमिक से लेकर उच्च शिक्षा तक दिल्ली में ही हुई। मैंने पंजाब विश्वविद्यालय से 1955 में मैट्रिक किया। उसके बाद 1957 में हिंदू कॉलेज,

महेन्द्र सिंह

विमलेश रावल

दिल्ली विश्वविद्यालय से प्रेप की परीक्षा पास की जो उच्चतर माध्यमिक के बराबर थी। मेरे पिता श्री महावीर सिंह सरकारी सेवा से वर्ष 1958 सेवानिवृत्त हुए। बाद परिवार आमका गांव में स्थानांतरित हो गया। परिणामस्वरूप मुझे कुछ समय के लिए और अध्ययन करने का मौका नहीं मिला। सौभाग्य से मेरे बहनोई श्री जेएस चौहान जी की सहायता से मुझे 1960 में सहकारिता विभाग, दिल्ली सरकार में सहकारी समितियों के सब इंस्पेक्टर के पद के लिए एक अवैतनिक उम्मीदवार के रूप में चुना लिया गया। मुझे छह महीने का डिप्लोमा पास करने की आवश्यकता थी। इसके बाद ही दिल्ली सरकार के सहकारिता विभाग में मुझे नियमित आधार पर नियुक्त किया जा सकता था ।अतः मैंने भारत सरकार के कोआपरेटिव ट्रेनिंग संस्थान की कक्षाओं में नियमित रूप से पढ़ाई शुरु कर दी। , यह संसथान उस समय दिल्ली विश्वविद्यालय के पास, कमला नगर में एक निजी भवन में स्थित था। प्रशिक्षण के दौरान किसी भी प्रकार की छात्रवृति देने का प्रावधान नहीं था। डिप्लोमा पास करने के बाद मुझे 26 नवंबर 1960 से सब-इंस्पेक्टर के पद पर नियुक्त किया गया । यह मुख्य रूप से एक फील्ड जॉब था। जिसमें दिल्ली के विभिन्न स्थानों पर स्थित सहकारी समितियों की कार्य प्रणाली की निगरानी एवं निरीक्षण करना होता था । परिवहन के लिए कोई व्यवस्था का प्रावधान भी नहीं था। इसलिए अपनी ही साइकिल का उपयोग करना पड़ता था गर्मी हो या सर्दी। फील्ड ड्यूटी होने के कारण काम का समय भी तय नहीं था। यह सहकारी समिति के पदाधिकारियों की सुविधा और उपलब्धता पर निर्भर था ।

जल्द ही मैंने महसूस किया कि अगर मुझे प्रगति करनी है तो उच्च योग्यता का होना बहुत आवश्यक है। उन दिनों कॉलेज में दाखिला लेने और एक नियमित छात्र के रूप में अध्ययन करने के लिए कार्यालय से अनुमति प्राप्त करना बहुत कठिन था। दिल्ली सरकार के विकास आयुक्त इस मामले में सक्षम अधिकारी थे और उनकी अनुमति आवश्यक थी। दो वर्षों से अधिक समय तक भारी प्रयासों के बाद मैं कुछ शर्तों के साथ सक्षम प्राधिकारी की अनुमति प्राप्त करने में सफल रहा। मुझे 1963 में शाम की कक्षाओं में भाग लेने के लिए दिल्ली विश्वविद्यालय के दयाल सिंह कॉलेज में बैचलर ऑफ आर्ट्स कोर्स के लिए प्रवेश मिला। 1966 में मैंने यह कोर्स पास किया । दिन में नौकरी और रात को पढ़ना यह एक कठिन काम था।

सौभाग्य से एक नए बनाए गए सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम भारत एल्युमिनियम कंपनी में सहायकों की कुछ रिक्तियों को 1966 में विज्ञापित किया गया था। श्री जी पी सिंह भारत सरकार के सूचना और प्रसारण मंत्रालय में अनुसंधान अधिकारी थे। वह हमारे परिवारी के बहुत शुभचिंतक थे। उन्होंने इस कार्य में मेरी सहायता की। आज तक मैं श्री जे. एस चौहान और श्री जी.पी सिंह के प्रति आभार और कृतज्ञ महसूस करता हूं जिन्होंने मुझे सही समय पर, सही रास्ते पर सही दिशा दिखाई । इसके बाद मैंने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और अपने आप आगे बढ़ता गया।

2 दिसंबर 1966 को मैं दिल्ली सरकार से प्रतिनियुक्ति पर भारत एल्युमिनियम कंपनी (बाल्को) में सहायक के रूप में नियुक्त हुआ। मेरी तैनाती कोरबा एल्युमिनियम प्लांट के मुख्य अभियंता श्री मिर्ज़ा फहीम बेग के साथ हुई । कोरबा एल्युमीनियम संयंत्र पर जल्द ही निर्माण कार्य शुरू होना था। इसके लिए यह आवश्यक था की कोरबा (मध्य प्रदेश) साइट पर एक कैंप कार्यालय स्थापित किया जाये । जुलाई 1967 में मेरा और मेरे असिस्टेंट ज्ञानेंद्र सिंह का मुख्य अभियंता के साथ कोरबा स्थानांतरित हो गया। मैं वहां 8 महीने रहा। इस समय तक 50 से अधिक व्यक्तियों की साइट पर नियुक्ति हो चुकी थी और कार्यालय सुचारु रूप से काम करने लगा था। जिस कार्य के लिए मैं कोरबा गया था वह लगभग पूरा हो गया था। मुझे फरवरी 1968 में दिल्ली वापस भेज दिया गया। सितंबर 1968 में मैंने दिल्ली सरकार से इस्तीफा दे दिया और 10 सितंबर 1968 से बालको में स्थायी रूप से नियुक्त हो गया। मुझे 29 जनवरी 1971 को वरिष्ठ सहायक के रूप में पदोन्नत मिली। बाद में कार्यालय अधीक्षक के रूप में और 26 नवंबर 1973 को सहायक कार्मिक अधिकारी के पद पर पदोन्नत किया गया। मैंने 10 फरवरी 1977 को बालको छोड़ दी।

जब मैं बाल्को में काम कर रहा था मैंने अपनी पढ़ाई जारी रखी। मैंने दिल्ली विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ मैनेजमेंट स्टडीज (FMS) में कार्मिक प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा करने के लिए सांध्यकालीन कक्षाओं में प्रवेश लिया। जिसे 1974 में विशिष्टिता के साथ पास किया ।

मैंने 10 फरवरी 1977 को बालको से त्याग पत्र दे दिया और 11 फरवरी 1977 को हिंदुस्तान पेपर कॉर्पोरेशन (HPC) में कार्मिक अधिकारी की हैसियत से नियुक्त हुआ । जब मैं एचपीसी में शामिल हुआ तो मुझे नहीं पता था कि इसका मुख्य कार्यालय जो दिल्ली में था उसको कलकत्ता स्थानांतरित करने का निर्णय पहले ही लिया जा चुका है। एचपीसी में शामिल होने के कुछ महीनों के बाद मुझे बताया गया कि मुझे कलकत्ता जाना है जिसके लिए मैंने अपनी अनिच्छा दिखाई। कलकत्ता की परिस्थितियों को जानने के लिए मुझे दो महीने के लिए कलकत्ता दौरे पर भी भेजा गया । परन्तु वह जगह मुझे पसंद नहीं थी। इसलिए दिल्ली लौटने पर मैंने किसी अन्य नौकरी की तलाश शुरू कर दी। संयोगवश मुझे नेशनल एग्रीकल्चरल कोऑपरेटिव मार्केटिंग फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड (NAFED) के जॉइंट मैनेजर (पर्सनेल) की नौकरी मिल गयी ।

मैंने 28 सितंबर 1978 को नैफेड में संयुक्त प्रबंधक (कार्मिक) का पदभार संभाला। इस पद को सँभालने के कुछ दिन बाद ही संयुक्त प्रभंदक का नाम परिवर्तन कर के प्रबंधक (कार्मिक) कर दिया गया। मुझे 5.2.1982 को पदोन्नति कर ऊपर का ग्रेड दिया गया लेकिन उस समय मेरे पदनाम में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। 1983 में कुछ समय बाद मुझे पदोन्नति देकर कार्यकारी निदेशक (कार्मिक) बनाया गया । इस पद पर में 25 अप्रैल 1990 तक रहा । इस तारीख को मुझे फिर से पदोनत्ति देकर नैफेड का अपर प्रभंद निदेशक का पदभार दिया गया ।

खाद्य और नागरिक आपूर्ति मंत्रालय के पत्र संख्या DO No; A-12011/2/91-Estt.I दिनांक 28.8.1991से मुझे 30 अगस्त 1991 के अनुसार भारत सरकार ने मुझे नैफेड से प्रतिनियुक्ति पर राष्ट्रीय सहकारी उपभोक्ता संघ लि (NCCF) के प्रबंध निदेशक के रूप में नियुक्त किया । मैंने 1.1.1993 तक एनसीसीएफ के प्रबंध निदेशक के रूप में काम किया। इसके बाद मैं अपनी मूल संस्था नैफेड में वापस आ गया। 3 मई 1994 को मल्टी स्टेट कोऑपरेटिव सोसाइटीज़ एक्ट 1984 के प्रावधानों के तहत गठित राष्ट्रीय सहकारी समितियों की चयन समिति ने मुझे नैफेड के प्रबंध निदेशक के पद के लिए चुना। यह निर्णय भारत सरकार के कृषि मंत्रालय ने नैफेड को अपने पत्र संख्या: L-11019/6/93 / -L & M दिनांक मई 1994 के द्वारा सूचित कर दिया गया। तदनुसार 13 जुलाई 1994 को मैंने नफेड के प्रबंध निदेशक का पदभार सम्हाला। निजी कारणों से मैंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति का निर्णय लिया । मेरे अनुरोध पर विचार नैफेड के निदेशक मंडल ने विचार कर अपनी स्वीकृति दिनांक 15.2.1995 को प्रदान की । मेरे नैफेड में काम करने के दौरान मुझे वर्ष 1982 में इंटरनेशनल कोऑपरेटिव ट्रेनिंग सेंटर, स्टैनफोर्ड हॉल, लवबोरो, इंग्लैंड भेजा। मुझे वहां मैनेजमेंट ऑफ एग्रीकल्चर कोऑपरेटिव्स के विशेष पाठ्यक्रम में सम्मलित होना था। इस कोर्स को पूरा करने के बाद मुझे फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली और जर्मनी में कृषि सहकारी समितियों का अध्ययन करने के जाना था। समय की पाबंदी के कारण मैंने फ्रांस, स्विटजरलैंड और इटली में अध्ययन तो पूरा किया परन्तु जर्मनी नहीं जा पाया।

22 सितंबर 1982 को आयोजित नैफेड की निदेशक मंडल की बैठक में मेरी सेवाओं की सराहना करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया। यह सराहना पत्र 14 जनवरी 1983 को विदेश यात्रा से मेरे वापस आने पर मुझे दिया गया ।

अपने सेवा काल के दौरान मैंने कई सम्मेलनों, सेमिनारों, कार्यशालाओं और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। कुछ प्रमुख प्रशिक्षण कार्यक्रम जो मैं शामिल हुए, निम्नानुसार हैं:

1. नैफेड द्वारा 21 और 22 मई 1993 आयोजित दो दिवसीय शीर्ष प्रबंधन विपणन कार्यशाला

2. भारत सरकार के ब्यूरो ऑफ पब्लिक एंटरप्राइजेज के सहयोग से इंडियन सोसाइटी फॉर ट्रेनिंग डेवलपमेंट द्वारा श्रीनगर में 6 जून से 11 जून तक आयोजित 6 दिवसीय जनशक्ति योजना और कैरियर विकास पर संगोष्ठी।

3. 21 दिसंबर 1981 से 2 जनवरी 1982 तक भारतीय लोक प्रशासन संस्थान द्वारा आयोजित प्रशासनिक नेतृत्व और व्यवहार में लघु अवधि प्रशिक्षण पाठ्यक्रम

4. अक्टूबर से दिसंबर 1982 तक सहकारी कॉलेज, लुवबोरो (यूके) में कृषि सहकारी समितियों के प्रबंधन का एक पाठ्यक्रम।

5. इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ़ मैनेजमेंट अहमदाबाद में 11 से 13 फरवरी, 1990 तक संगठनों में स्ट्रेस ऑडिट पर कार्यशाला।

NAFED में काम करते हुए मैंने मैनुअल लेखन का कौशल सीखा और विकसित किया।1984 में नैफेड की कार्मिक नियमावली लिखी। सेवानिवृति के बाद कई अन्य संस्थाओ के लिए निम्नलिखित मैनुअल लिखे:

1. 2000 में एनसीसीएफ कार्मिक और प्रशासन नियमावली

2. मैंने 1995 में TRIFED की कार्मिक नियमावली लिखी थी। जब मैं TRIFED मैनुअल मसौदा तैयार कर रहा था तब ट्राइफेड के प्रबंध निदेशक श्री के श्रीधर राव, I.A.S ने 7 जुलाई 1995 के पत्र द्वारा मेरे प्रयासों की सराहना की गयी ।

3. सन 2002 में अंटार्कटिक और महासागर अनुसंधान के लिए राष्ट्रीय केंद्र (NCAOR- GOA) के स्टोर और खरीद प्रक्रियाओं के साथ कार्मिक और प्रशासन मैनुअल।

4 एनसीसीएफ के मौजूदा प्रशासनिक सेट अप और स्टाफिंग पैटर्न के वर्गीकरण और पुन: संगठन पर फरवरी 2000 में अध्ययन की एक रिपोर्ट ।

5. मुझे भारत में कृषि सहकारी समितियों और अनौपचारिक सहकारी किसान आंदोलन के एक महत्वपूर्ण अध्ययन का संचालन करने के लिए अंतर्राष्ट्रीय सहकारी एलायंस (ICA) द्वारा कंट्री कंसल्टेंट नियुक्त किया गया था। मैंने 2003 में ICA को एक रिपोर्ट प्रस्तुत की जिस पर 27 से 29 मई 2003 तक कोलंबो में एशिया प्रशांत क्षेत्र में कृषि सहकारी समितियों को मजबूत करने के लिए आईसीए उप क्षेत्रीय कार्यशाला में चर्चा की गई ।

6. नेशनल कोऑपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड के प्रबंध निदेशक की हैसियत से मैं एशिया और प्रशांत महासागर के लिए उपभोक्ता सहकारी समितियों की आईसीए समिति का सदस्य था। मैंने इसके 20 वें अधिवेशन में भाग लिया। 6 से 7 मई 1992 तक कुआलालंपुर (मलेशिया) में हुई इसकी बैठक में भारत के वर्तमान राज्य उपभोक्ता सहकारी आंदोलन पर कंट्री पेपर (भारत) प्रस्तुत किया।

7. 26 से 30 जुलाई, 1994 तक श्रीलंका के कोलंबो में आयोजित तीसरे एशिया-प्रशांत सहकारी मंत्रियों के सम्मेलन में भारतीय प्रतिनिधिमंडल का सदस्य था।

8 आईएनएफए पब्लिकेशन्स द्वारा 1991-92 के लिए प्रकाशित पुस्तक भारत के हूज़ इज हू के पृष्ठ 180 पर मेरा उल्लेख किया है ।

10. मैंने 2018 में एक पुस्तक "रावल फॅमिली ऑफ़ आमका" लिखी थी। इसका दूसरा संस्करण 2020 में प्रकशित हुआ। इस पुस्तक को इंडिया बुक ऑफ़ रिकार्ड्स में एक ही परिवार की सात पीडियों के अधिकतम फोटोज एकत्रित करने का रिकॉर्ड बनाने के लिए शामिल किया गया है.

NAFED से सेवानिवृत होने के बाद, मैंने सितंबर 2002 तक कुछ निजी संगठनों में छोटी अवधि के लिए काम किया। उनमें से कुछ प्रमुख हैं:

1. उपाध्यक्ष, शारदा मोटर्स (मारुति उद्योग की सहायक एक सहायक संस्था)
2. प्रबंध निदेशक, आईईएम इंडिया लिमिटेड (राजधानी समूह)
3. 2000 से 2002 तक सलाहकार, पब्लिक सर्विस ब्राडकास्टिंग ट्रस्ट।

मैंने 2002 में निर्णय लिया की पैसे के लिए काम नहीं करूँगा और अपना समय सामाजिक कार्यों के लिए दूंगा । कुछ उल्लेखनीय संगठन जिनके साथ मैं जुड़ा हुआ हूँ वह इस प्रकार हैं:

1. संस्थापक अध्यक्ष गंगोत्री रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन (Regd) 1999 से 2002, 2004 से 2006 और 2008-2012 तक 9 वर्षों तक इसका अध्यक्ष रहा ।

2. संस्थापक, फेडरेशन ऑफ अलकनंदा अपार्टमेंट्स वेलफेयर असोसिएशंस (Regd) 2010 से 2013 तक इस संस्था का अध्यक्ष रहा ।

3. दिल्ली कॉइन सोसायटी का आजीवन सदस्य

4. संस्थापक , गंगोत्री एन्क्लेव सीनियर सिटिजन फोरम (Regd) 2008 से 2011 तक इसके महासचिव रहा और 2011 से अभी तक इस संगठन का अध्यक्ष हूं।

5. मई 2012 से अप्रैल 2014 तक कॉन्फ़ेडरेशन ऑफ़ सीनियर सिटीजन्स एसोसिएशन का संयुक्त सचिव ।

6. मेघदूतम सीनियर सिटीजन्स वेलफेयर फोरम (Regd) के संस्थापक महासचिव। अभी इसका पैट्रन हूँ

7. दो वर्ष तक सम्पर्क पत्रिका का मुख्य संपादक।

8. नोएडा फेडरेशन ऑफ अपार्टमेंट ओनर्स एसोसिएशन का संस्थापक सदस्य और आजीवन सदस्य
मेरा विवाह अनूपशहर के ठाकुर गंगा सिंह की पुत्री श्रीमती विमलेश से हुआ है।ठाकुर गंगा सिंह मूल रूप से ग्राम ग्वारौली जिला बुलंदशहर के रहने वाले है। विमलेश आगरा विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। वह एक विलक्षण कलाकार हैं और फैब्रिक पेंटिंग करने में दक्ष है ।

विमलेश की फैब्रिक पेंटिंग्स के कुछ नमूने

उन्होंने अनगिनत डिजाइन चित्रित किए हैं। कभी भी अपनी कृति को बेचा नहीं है। लेकिन अनेक मित्रो और स्वजनों को उपहार स्वरुप अपनी बनाई हुई पेंटिंग विभिन्न अवसरों भेंट की है। बहुत सारे बच्चो को और महिलाओं को निशुल्क फैब्रिक पेंटिंग सिखाई भी है।

हमारी शादी 16 मई 1970 को हुई थी। मेरा एक बेटा राहुल और एक बेटी अमिता है। दोनों शादीशुदा हैं। अमिता की शादी 20 फरवरी 1999 को श्री जितेंद्र पाल सिंह राघव सुपुत्र ठाकुर क्षेत्रपाल सिंह जी से हुई है । अमिता ने अपनी स्नातक की पढ़ाई कमला नेहरू कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से की और बाद में फैशन डिजाइनिंग का कोर्स पूरा किया। श्री राघव इंडियन इंस्टीटूट ऑफ़ टेक्नोलॉजी बॉम्बे से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में एम.टेक हैं। वह अभी भारतीय तट रक्षक, रक्षा मंत्रालय में उप महानिरीक्षक (DIG) पद पर कार्य कर रहे है । वर्तमान में, वह नई दिल्ली में तैनात हैं। उनकी एक बेटी तनिष्का है जो दिल्ली विश्वविद्यालय से B.Sc कर रही है.

25.12.2019 को कोस्ट गार्ड अधिकारी संस्थान में

मुझे भारत और विदेशों में बड़े पैमाने पर यात्रा करने का अवसर मिला है । उत्तर पूर्व के कुछ हिस्सों को छोड़कर सभी भारतीय राज्यों में गया हूँ । मैंने यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, स्विट्जरलैंड, इटली, यूएई, ओमान, सऊदी अरब, सिंगापुर, मलेशिया, थाईलैंड, श्रीलंका, ऑस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड जैसे कई देशों भ्रमण किया। उपरोक्त देशो में से कुछ में कई बार गया हूँ। मुझे पढ़ने, लिखने, सामाजिक कार्य और सिक्का संग्रह का शौक है। मेरे पास भारतीय और विदेशी सिक्कों का अच्छा संग्रह है।

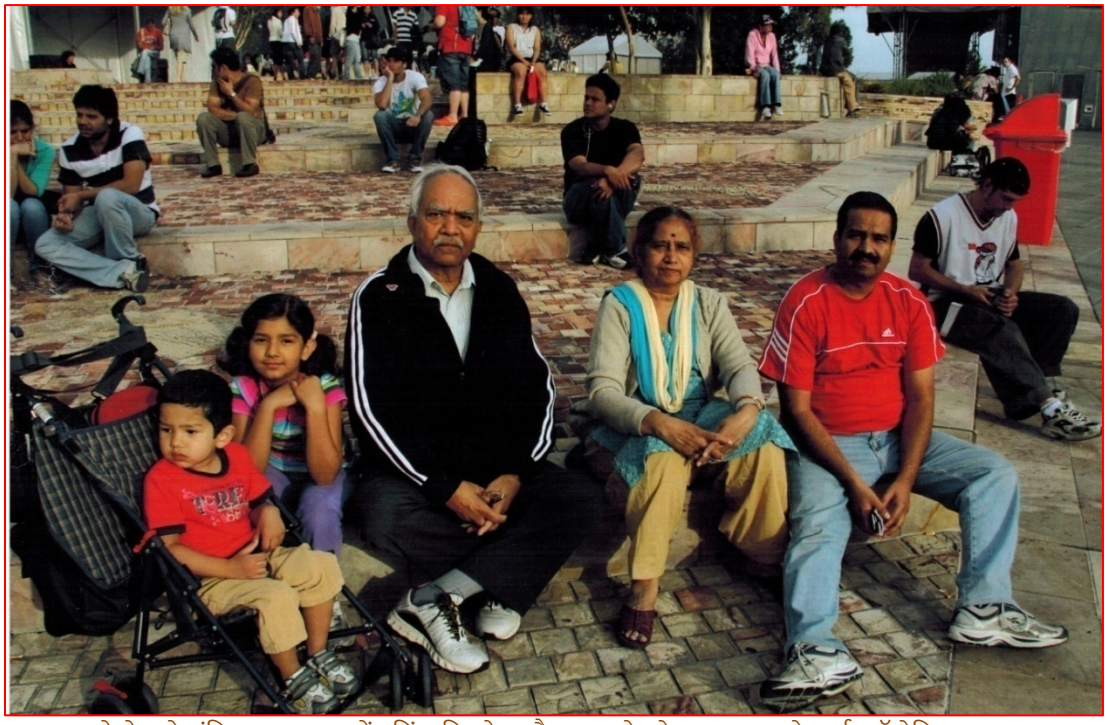

बाये से दाये अंकित, अनुष्का, महेंद्र सिंह, विमलेश और राहुल फेडरेशन स्क्वायर, मेलबर्न, ऑस्ट्रेलिया - 2009

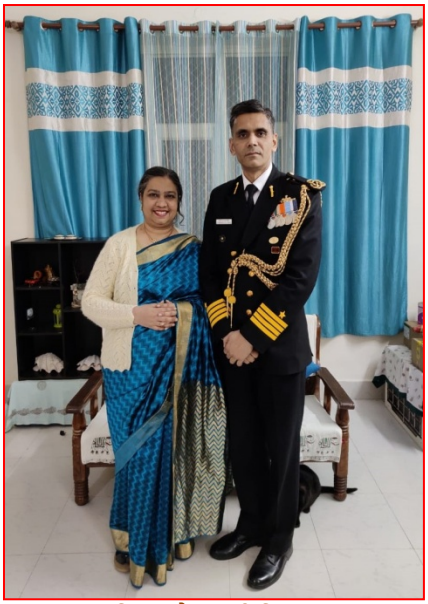

अमिता और जे.पी सिंह

अमिता जे.पी सिंह और अन्य

अनुष्का के 16 वें जन्मदिन 23.3.2017 के अवसर पर राहुल के सिडनी निवास ऑस्ट्रेलिया में ली गई तस्वीर

दिनांक 5.1.2020 को सुंदर कांड पाठ के अवसर पर लिया गया फोटो

नामांकन-संख्या Enrol. No. DS(E)2029

क्रम-संख्या Roll No. 222

दिल्ली विश्वविद्यालय

निष्ठा धृतिः सत्यम्

कार्मिक-प्रबंध-स्नातकोत्तर-उपाधिपत्र, 1974.

प्रमाणित किया जाता है कि नियत अध्ययन-क्रम पूरा कर 1974, की परीक्षा में उत्तीर्ण होने के उपरांत महेंद्र सिंह को कार्मिक-प्रबंध-स्नातकोत्तर-उपाधिपत्र प्रदान किया गया। इन्होंने विशिष्ट योग्यता-सहित परीक्षा उत्तीर्ण की

University of Delhi

POST-GRADUATE DIPLOMA IN PERSONNEL MANAGEMENT, 1974.

This is to certify that *Mahendra Singh* having pursued the prescribed course of study and passed the examination held in 1974, has been awarded the Post-Graduate Diploma in Personnel Management. He passed the examination with distinction.

दिल्ली विश्वविद्यालय UNIVERSITY OF DELHI निष्ठा धृतिः सत्यम्

कुल-सचिव,
दिल्ली विश्वविद्यालय
Registrar,
University of Delhi.

दिल्ली, दिनांक 10 जून, 1974.
Delhi, dated the 10th June, 1974.

कुलपति,
दिल्ली विश्वविद्यालय
Vice-Chancellor,
University of Delhi.

ISSUED ON 15 FEB 1975

CO-OPERATIVE COLLEGE

THE INTERNATIONAL CO-OPERATIVE TRAINING CENTRE

STANFORD HALL LOUGHBOROUGH

Specialist Course in

MANAGEMENT OF AGRICULTURAL CO-OPERATIVES

This is to certify that

MAHENDRA SINGH

followed this course in Co-operative Development Overseas

from 28th September to 17th December, 1982

The topics covered were:

CO-OPERATIVE POLICIES

AGRICULTURAL CO-OPERATIVES

ACCOUNTING, MANAGEMENT

MANAGEMENT OF SPECIFIC ACTIVITIES

FINANCIAL MANAGEMENT

The course studies included attachments, visits and case studies.

STANFORD HALL

DECEMBER 1982

PRINCIPAL

महेंद्र सिंह लवबोरो (यूके) के मेयर के साथ

बाये से दाये - आर ए पांडे, एम. के गिरधर, महेंद्र सिंह, वीसी नीलम और एस.एस. शर्मा -नैफेड के मेरे साथी और लवबोरो में मेरे सहपाठी

कुआलालुम्पुर, मलेशिया में महेंद्र सिंह के साथ जी के शर्मा - ICA के साउथ ईस्ट और पसिफ़िक के क्षेत्रीय डायरेक्टर

एस के अय्यर, पं नवल किशोर शर्मा चेयरमैन नेफेड जो बाद में केंद्रीय मंत्री और गुजरात के राज्यपाल बने डॉ बी हॉल्टन, कोऑपरेटिव कॉलेज, लवबोरो, यूके के प्रिंसिपल और महेंद्र सिंह

महेंद्र सिंह कोऑपरेटिव कॉलेज, लवबोरो (यूके) में

INDIAN INSTITUTE OF MANAGEMENT, AHMEDABAD
WORKSHOP ON STRESS AUDIT IN ORGANIZATIONS
February 11 - 13. 1990

1st Row Sitting (L to R)	Mr F Rahman, Mr SA Khan, IPS, Ms Nina Muncherji, Profs J Dua, DM Pestonjee. Udai Pareek, TV Rao, and Mr G Venkataswamy
2nd Row (L to R)	Messrs VP Ahuja, Chawla, AK Das, Mahendra Singh, KP Singh, SR Vohra, MR Thakkar, D Sudhir, and TVP Rao
3rd Row (L to R)	Messrs AR Shah, SK Senapati, P Reddy, Brig RS Kannan, K Subramanian, F Joseph, and AP Singh

महेंद्र सिंह और राज सिंह आईएएस और अन्य व्यक्ति वेल्स (यूके) में

Trifed

TRIBAL COOPERATIVE
MARKETING DEVELOPMENT
FEDERATION OF INDIA LTD.
NCUI BUILDING, 2ND FLOOR,
3, SIRI INSTITUTIONAL AREA,
KHEL GAON MARG, NEW DELHI-110016
Tel No. : 6866084 Fax : 91-11-6866149

K. SREEDHAR RAO, I.A.S.
MANAGING DIRECTOR

D.O. No: TFD|HO|P&A|95-96| 6666 7th July, 1995

47800D
(Rs)

Dear Shri Mahinder Singh,

I am deeply grateful to you for having drafted a number of chapters for the administrative manual which you had so kindly undertaken to prepare. The quality of the chapters provided by you are of an extraordinarily high calibre and you have brought to bear, your expertise and vast experience, upon the work and have provided us with material which will be of enduring value to TRIFED. I am eagerly looking forward to the remaining chapters on receipt of which I will be taking up the matter for obtaining the Board's approval.

With best wishes,

Yours sincerely,

(K. SREEDHAR RAO)

Shri Mahinder Singh
C-9-D, Gangotri Enclave
Alaknanda
New Delhi - 110019.

जे.सी काला, भारत सरकार के पूर्व सचिव, एम.एम माथुर, सेवानिवृत्त आयुक्त, केंद्रीय उत्पाद और सीमा शुल्क, पंकज सिंह, विधायक, प्रो। राजेश सहाय, राजीव सिंह और महेंद्र सिंह

महेंद्र सिंह और सुभाष चंद्र एम डी नेशनल फेडरेशन ऑफ फिशरमेनस कोऑपरेटिव लिमिटेड होटल ताज समुद्र कोलंबो, श्रीलंका

तीसरे एशिया प्रशांत सहकारिता मंत्री सम्मेलन 1994 के दौरान सवाई सिंह सिसोदिया, अध्यक्ष NAFCUB और पूर्व केंद्रीय उप-वित्त मंत्री के साथ महेंद्र सिंह ताज समुद्र , कोलंबो, श्रीलंका

बाये से दाएं महेंद्र सिंह, सवाई सिंह सिसोदिया, अध्यक्ष नेशनल फेडरेशन ऑफ अर्बन कोऑपरेटिव बैंक लिमिटेड, एक अन्य प्रतिनिधि और सुभाष चंद्र एम. डी. नेशनल फेडरेशन ऑफ फिशरमैन कोआपरेटिव लिमिटेड

पंचगनी (महाराष्ट्र) के स्ट्रॉबेरी किसानों के साथ महेंद्र सिंह

पंचगनी में किसानों की स्ट्रॉबेरी निर्यात शिपमेंट के उद्घाटन के अवसर पर महेंद्र सिंह

महेंद्र सिंह को नैफेड के पुणे कार्यालय में सम्मानित किया गया. दाएं तरफ सी. बी होल्डर, निदेशक, नैफेड हैं

महेंद्र सिंह को कोल्हापुर (महाराष्ट्र) के किसान संगठनों ने सम्मानित किया।

अपने बेटे राहुल की शादी के अवसर पर श्री नवल किशोर शर्मा, पूर्व केंद्रीय मंत्री और गुजरात के राज्यपाल के साथ महेंद्र सिंह

श्री कमालुद्दीन अहमद केंद्रीय नागरिक आपूर्ति राज्य मंत्री के साथ महेंद्र सिंह

श्री बलराम जाखड़ केंद्रीय कृषि मंत्रीके साथ महेंद्र सिंह

श्री बलराम जाखड़ केंद्रीय कृषि मंत्रीके साथ महेंद्र सिंह

Critical Study of Agricultural Cooperatives and Informal Farmers Cooperative Movement in India

STUDY REPORT

By

Mahendra Singh

Management Consultant

International Co-operative Alliance

Regional Office for Asia & the Pacific

New Delhi-110066

राहुल के बेटे अंकित का जन्म 2007 में सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में उनके किलडेयर रोड वाले फ्लैट में हुआ था। उस पूजा के समय लिए गए चित्र में बायीं ओर डीपीएस चौहान, जैकेट में विनोद राजपूत, दाईं ओर महेंद्र सिंह और राहुल।

महेंद्र सिंह के मित्रों ने 14.08.2017 को उनका 78 वां जन्मदिन मनाया। बाएं से दाएं रमेश महाजन, एस. पी. गोयल, डी. के. मेहरोत्रा, ए. के. संदवार .महेंद्र सिंह और डॉ.डी. शर्मा, सीओओ, अपोलो अस्पताल, नोएडा

2011 में ऑस्ट्रेलिया की यात्रा

Alaknanda's United front

By Vibha Sharma

Various Residents' Welfare Associations (RWAs) of Alaknanda came together to form the Federation of Alaknanda Residents Welfare Associations (FARWA) on May 8 at Aravali Apartments. RWAs of about 10 apartments joined hands to raise issues that concern residents on a higher platform. Representatives from seven RWAs attended the meeting while the remaining RWAs gave their consensus over phone.

FARWA plans to take up the common cause of its constituents with authorities like Delhi Development Authority (DDA), Municipal Corporation of Delhi (MCD), Delhi jal Board (DJB), Transport, power suppliers, State and Centre, Departments like Police, Post, Water, Electricity, Education, Medical etc.

It will also take up the case to any other authority/agency, with whom it has a complain. If any agency fails to perform, it will also redress the cause.

"There are many issues that remain unattended as individual apartments go unnoticed. FARWA will work to bring these issues in the limelight," shares RG Gupta, President, Aravali Apartments Residents' Welfare Association (RWA).

On the same day, a draft of Memorandum of Association was also cleared with some minor changes. As per the memorandum, RWAs can join FARWA after filling a membership form, together with the subscription and admission fee.

"The membership is open to RWAs and cooperative group housing societies of Apartments in Alaknanda," informs K Rama Moorthy, convenor of FARWA.

He adds, "The executive committee could not be formed during the meeting owing to some technical issues. I will send a letter to all RWAs to submit their membership fee."

Its president, general secretary and one more person nominated by the concerned RWA, will represent each RWA on the general body. The executive committee that consists of a chairman, vice chairman, general secretary, joint secretary and treasurer would be elected from these RWA representatives. A CA will be appointed as an auditor for the Federation and give his report for the year at every annual general meeting.

The treasurer will place the audited report in the general body meeting for approval. The executive body will decide the remuneration for the auditor.

Representatives of various RWAs gathered at Aravali Apartments

New brass for Gangotri Apts

A general body meeting of the Gangotri Enclave Residents' Welfare Association, Pocket-C was held on April 25 in the park opposite reception office of the association under president Mahendra Singh.

At the outset, Singh expressed thanks to CP Gupta, election officer for conducting smooth elections of the executive committee of the association. Thereafter, he requested Gupta to announce the results of the elections, which were conducted through a secret ballot system.

Gupta informed that elections were held for just one block in which Devendra Singh Dua was elected. Other block representatives were elected unopposed. Their names include Pavneeta Singh Chandna, JN Verma, NK Goel, Anil Chadha, Kamal Puri, Sushil Kakkar, A Punnose, Bal Ram Sharma, IP Batra, Rashmi Sinha, Sanjeev Sharma, Devendra Singh Dua, RK Chugh and K Sivaramakrishan.

Elected new team

Post	Candidate elected
President	Mahendra Singh
Vice President	Satish Chugh
General Secretary	YP Sharma
Joint Secretary	JS Kalsi
Treasurer	Kuldip Singh (unopposed)

Members of newly elected body

फेडरेशन ऑफ आरडब्ल्यूए ऑफ़ अलकनंदा अपार्टमेंट के गठन और गंगोत्री एन्क्लेव रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के चुनाव के बारे में हिंदुस्तान टाइम्स की G K II कनेक्ट दिनांक 14.05.2010 में छपा समाचार

हमारी 2011 में क्राइस्ट चर्च, न्यूज़ीलैंड की यात्रा

लिंगराज मंदिर, भुवनेश्वर (उड़ीसा)

उड़ीसा में भुवनेश्वर के पास राहुल, महेंद्र सिंह , हमारी माताजी गजेंद्र वती और विमलेश

WHY I WILL NEVER LEAVE GANGOTRI ENCLAVE

Jahanpanah Park is the biggest incentive for living here

Mahendra Singh

Being one of the oldest residents of Gangotri Enclave has given me an opportunity to witness a lot of changes in and around the colony.

I came to this area in 1985. Then except for Tara Apartments, all the other apartments in the vicinity were under construction. Schools like Don Bosco, Kalka Public School, St George and Greenfield Public School were constructed a few years later.

This colony has many aspects that make it self-sufficient, beautiful and livable.

Alaknanda market is one of the best markets of the city. It has everything right from a key maker, grocery shops, cloth shops to sundry other shops. It is so self-contained that one does not have to go to other markets for shopping as it caters to all the needs of a family.

But it is the presence of a 435-acre Jahanpanah Park that has become a blessing for this neighbourhood. For the last 20 years I have been visiting the park for my morning walks.

My flat is on the third floor and both my wife and I suffer from joint pains. Yet I do not want to leave this place because of the park. I have another flat in Noida that has a lift but I will not get Jahanpanah Park there.

Mahendra Singh says Gangotri Enclave has all the amenities that make for a comfortable life.

AMIT HASIJA / HT PHOTO

SINGH LOVES TO STAY IN GANGOTRI ENCLAVE AS IT IS A CLEAN AND GREEN COLONY WITH WIDE ROADS AND IS WELL-CONNECTED.

There are three Metro stations close by, Govindpuri, Kalkaji and Nehru Place, which makes the area well-connected. It is a neat, clean and green colony with broad internal roads. In all these years we have never faced problems related to electricity or water, which is again an incentive for residing here.

Most of the residents in this colony are senior citizens and have been living here since the Delhi Development Authority gave them possession of the houses. To keep themselves engaged, they meet regularly for chit-chat or a game of carom or chess.

I have always considered myself fortunate for being a resident of Gangotri Enclave, a colony that has become home to me and has given me so many family members.

हिंदुस्तान टाइम्स एचटी लाइव में महेंद्र सिंह का एक लेख दिनांक 18.11.2010

ओनिका मेहरोत्रा, प्रिंसिपल कालका पब्लिक स्कूल नई दिल्ली द्वारा महेंद्र सिंह को अलंकरण समारोह में विशिष्ट अतिथि के रूप में सम्मानित किया गया

जून 2011 में आयोजित अलंकरण समारोह में महेंद्र सिंह ने विशिष्ट अतिथि के रूप में कालका पब्लिक स्कूल के छात्रों को पुरुस्कार वितरित किये।

श्री राहुल रावल

राहुल उनकी पत्नी सरिता के साथ
बेटी अनुष्का और बेटा अंकित

श्री राहुल रावल श्री महेंद्र सिंह और श्रीमती विमलेश रावल के बेटे हैं। उनका जन्म 9 जुलाई 1973 को दिल्ली में हुआ था। उनकी स्कूली शिक्षा समर फील्ड्स स्कूल, कैलाश कॉलोनी, दिल्ली और कालका पब्लिक स्कूल, अलकनंदा, नई दिल्ली में हुई । वह एक अच्छे खिलाड़ी थे। स्कूल की खेल गतिविधियों और प्रतियोगिताओं में विशेषकर दौड़ स्पर्धाओं और क्रिकेट में बहुत रूचि लेते थे। इन खेलों में राहुल ने बहुत सारे पदक भी जीते । उन्होंने अपनी स्नातक की पढ़ाई देश बंधु गुप्ता कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय से वर्ष 1995 में पूरी की। स्नातक स्तर की पढ़ाई के बाद, उन्होंने टाटा इन्फोसिस से कंप्यूटर में डिप्लोमा कोर्स किया। एक निजी कंपनी इंडिया जिप्सम में नौकरी की और लगभग 8 वर्षों तक वहां काम किया। भारत जिप्सम में काम करने के दौरान राहुल को उनके उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए स्वर्ण पदक मिला। इसके बाद राहुल रावल ने इंटेंशिआ प्राइवेट लिमिटेड मुंबई में लगभग 4 महीने बिजनेस कंसल्टेंट के रूप में कार्यशील रहे । बाद में बैंगलोर में आई गेट ग्लोबल सॉल्यूशंस में उन्होंने मार्च 2006 तक काम किया। उन्होंने काम करते हुए आल इंडिया मैनेजमेंट एसोसिएशन से इंफोरमेंशन सिस्टम और मैनेजमेंट में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा पास किया। उनको इस नौकरी के दौरान एक बहुराष्ट्रीय जर्मन कंपनी सर्टिको ऑस्ट्रेलिया से नौकरी का प्रस्ताव मिला जिसे उन्होंने स्वीकार किया। 1 अप्रैल 2006 को सर्टिको ऑस्ट्रेलिया के कंप्यूटर विभाग के प्रमुख के रूप में उस संस्था में शामिल हो गए। वह अभी भी वहीँ काम कर रहे हैं। ऑस्ट्रेलिया में काम करते हुए, उन्होंने प्रोजेक्ट मैनेजमेंट प्रोफेशनल का पेशेवर पदनाम अर्जित किया ।

अनुष्का रावल

उन्होंने 8 दिसंबर 1999 को सरिता रावल से शादी की। सरिता अंग्रेजी में पोस्ट ग्रेजुएट हैं। उनकी एक बेटी अनुष्का का जन्म 23 मार्च 2002 को हुआ और 4 अगस्त 2007 को उनके पुत्र अंकित का जन्म हुआ। राहुल, सरिता और अनुष्का ने ऑस्ट्रेलियाई नागरिकता प्राप्त कर ली है। अंकित जन्म से ही ऑस्ट्रेलियाई नागरिक हैं क्योंकि उनका जन्म वहीं हुआ था।

अनुष्का ने ग्लेनवुड हाई स्कूल से अपनी स्कूलिंग पूरी की। उनको 12 वीं के ग्रेजुएशन सेरेमनी में मेडल ऑफ एक्सीलेंस मिला । अब वह मैक्वैरी विश्वविद्यालय से बैचलर ऑफ कॉमर्स, साइकोलॉजी और लॉ की पढ़ाई कर रही है। अभी हाल हे में उनको एक फुल टाइम जॉब भी मिल गया है। इसलिए अब अनुष्का अपनी आगे की पढ़ाई इसी यूनिवर्सिटी से इवनिंग क्लासेज के द्वारा करेंगी।

अंकित रावल

राहुल के बेटे अंकित की खेल में गहरी दिलचस्पी हैं। उन्होंने जिले में सर्वश्रेष्ठ एथलीट के लिए एज चैंपियन का ख़िताब जीता। इस कारण उसके स्कूल जॉन पामर ने 2008 में अपनी स्थापना के बाद पहली बार एथलेटिक्स चैंपियनशिप ट्रॉफी जीती। अंकित ने राज्य स्तर के एथलेटिक्स में भी अपने स्कूल का तिनिधित्व किया। उन्होंने 200 मीटर, डिस्कस, 100 मीटर और वॉक स्पर्धाओं में ब्लैक टाउन लिटिल एथलेटिक्स

क्लब के माध्यम से 13 वर्ष से कम आयु वर्ग में राज्य चैम्पियनशिप के लिए क्वालीफाई किया। उन्होंने 30.23 मीटर की दूरी के साथ डिस्कस फेंक कर सिडनी वेस्ट मेट्रो ज़ोन का रिकॉर्ड तोडा । फरवरी 2020 में क्लब चैम्पियनशिप के दौरान 800 मीटर और 1500 मीटर के लिए क्लब ग्राउंड रिकॉर्ड भी तोडा।

अंकित, निक्की, जे पी सिंह अमिता, सरिता और अनुष्का

अंकित, अनुष्का, सरिता और राहुल

अनुष्का

अनुष्का, और अंकित,

श्री ज्ञानेंद्र सिंह

ज्ञानेन्द्र सिंह रावल

रजनी रावल

श्री ज्ञानेन्द्र सिंह रावल ठाकुर महावीर सिंह और गजेन्द्र वती देवी के तीसरे पुत्र हैं। उनका जन्म 6 अक्टूबर 1948 को दिल्ली में हुआ था। उन्होंने स्नातक की उपाधि दिल्ली विश्वविद्यालय से प्राप्त की । संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद 1974 में वह भारत सरकार के गृह मंत्रालय (एमएचए) में नियुक्त हुए । उन्होंने 1977 में गृह मंत्रालय से त्यागपत्र दिया और नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड (भारत सरकार का एक उपक्रम) में शामिल हो गए।

गांव चंदौक जिला बुलंदशहर के ठाकुर बीरबल सिंह रघुवंशी की बेटी सुश्री रजनी से उनकी शादी हुई। रजनी मेरठ विश्वविद्यालय से स्नातक हैं। श्री ज्ञानेन्द्र सिंह की एक बेटी आरती रावल और एक बेटा अमित रावल है। यह दोनों कनाडा में उच्च पदों पर काम कर रहे है और अब वहीँ की नागरिकता उन्होंने ले ली है

संतोष, गजेंद्र वती और रजनी

नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड के साथ अपने कार्य के दौरान उन्होंने आगे की पढ़ाई जारी रखी । श्री ज्ञानेन्द्र सिंह ने प्रथम श्रेणी के साथ पत्राचार अध्ययन संस्थान, जयपुर विश्वविद्यालय राजस्थान से लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर की पढ़ाई की। लोक प्रशासन में स्नातकोत्तर के बाद वे उच्च प्रबंधकीय पदों के लिए योग्य हो गए। उन्होंने नेशनल फर्टिलाइजर्स लिमिटेड द्वारा 1984 में आयोजित प्रतियोगी परीक्षा उत्तीर्ण की। उसके बाद उनको सहायक कार्मिक अधिकारी के रूप में चुना लिया गया। यह पद प्राप्त काने के बाद भी उन्होंने आगे की अपनी पढ़ाई जारी रखी। पंजाब के पटियाला विश्वविद्यालय से कार्मिक प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा प्रथम श्रेणी पास किया। 2001 में उन्होंने

स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली और अब 2010 से ग्रेटर नोएडा में रह रहे हैं। अपनी सेवानिवृत्ति के समय श्री ज्ञानेन्द्र सिंह राष्ट्रीय उर्वरक में कार्मिक प्रबंधक के पद पर कार्यरत थे।

उनके बेटे अमित और बेटी आरती कनाडाई नागरिक हैं। ज्ञानेन्द्र सिंह और उनकी पत्नी रजनी भी 2017 से कनाडा के स्थायी निवासी है ।

ज्ञानेंद्र सिंह, रजनी रावल, आरती और अमित

माताजी गजेंद्र वती, ठाकुर बानी सिंह की पुत्री प्रभा देवी, गोदी में ज्ञानेंद्र और संतोष

माताजी गजेंद्र वती और ज्ञानेंद्र सिंह

रजनी रावल और ज्ञानेंद्र सिंह

गुना मध्य प्रदेश में - ज्ञानेंद्र सिंह रजनी, माताजी गजेंद्र वती, विमलेश, महेंद्र सिंह
आरती और संतोष की बेटियां अंजलि और सुमिता

, रजनी, और ज्ञानेंद्र सिंह

आरती रावल

आरती रावल

आरती श्री ज्ञानेन्द्र सिंह की पुत्री है। उनका जन्म 11 जून 1979 को दिल्ली में हुआ था। उन्होंने बहुत उच्च शिक्षा प्राप्त की है। दिल्ली विश्वविद्यालय से अंग्रेजी साहित्य में बीए (ऑनर्स) करने के बाद उन्होंने एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा से एमबीए किया । इसके अतिरिक्त उनोने TATA Infotech से कंप्यूटर एप्लीकेशन प्रोग्राम में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा किया और वह एक प्रमाणित चेंज मैनेजमेंट प्रैक्टिशनर है।

स्कूल में आरती पाठ्यक्रमेतर एवं अन्य गतिविधियों में सबसे आगे रहती थी। उन्होंने निबंध प्रतियोगिताओं और मैथ ओलंपियाड में पुरस्कार जीता तथा राज्य स्तरीय चित्रकला प्रतियोगिता में भी अपने स्कूल का प्रतिनिधित्व किया तथा पुरस्कार प्राप्त किये । उन्होंने सामग्री विकास के क्षेत्र में लिखने के प्रति अपना उत्साह और जुनून नोएडा की एक आई टी कंपनी INNODATA के साथ काम करते हुए जारी रखा। इसके बाद उन्होंने एनआईआईटी टेक्नोलॉजीज, नई दिल्ली में इंस्ट्रक्शनल डिज़ाइनर और टेक्निकल राइटर के रूप में काम किया। 2007 में आरती को ग्लोबल कंसल्टिंग फर्म डेलोइट के हैदराबाद कार्यालय में नौकरी मिल गई। वहाँ उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका के कैलिफोर्निया, पेन्सिलवेनिया, टेनेसी और फ्लोरिडा में स्थित विभिन्न ग्राहकों के लिए एस ए पी आधारित चेंज मैनेजमेंट, ट्रेनिंग और ट्रांसफॉर्मेशन सलाहकार के रूप में काम किया। आरती ने 2012 में HCL Technologies NOIDA में सीनियर मैनेजर - लर्निंग एंड डेवलपमेंट के पद पर ज्वाइन किया । 2015 में स्थायी निवासी बनने के लिए वह कनाडा चली गई। तभी से वह वहां रह रही है और एक परिवर्तन प्रबंधन, प्रशिक्षण और संचार परामर्श व्यवसायी के रूप में एस ए पी, ओरेकल और जेडीई के नेतृत्व वाले बड़े व्यापार परिवर्तनों के लिए काम कर रहीं है । वह अब एक कनाडाई नागरिक है और वर्तमान में टोरंटो स्थित अर्नस्ट एंड यंग एलएलपी के कार्यालय में प्रबंधक के रूप में कार्यरत है ।

आरती ने लिखना जारी रखा है - अब वह लिंक्डइन पर अपने नियोक्ता के संचार अभियानों के लिए समाचर पत्रिकायें लिखती है। ये पत्रिकाएं व्यापक रूप से विश्व स्तर पर साझा की जाती हैं। ग्राहक परामर्श परियोजना की गतिविधियों के लिए वह अपने ग्राहकों के लिए संचार लेख लिखती रहती है और अभियान चलाती है। इसके अलावा वह अपने लेखन कौशल के माध्यम से RFPs और RFI की बिक्री बोलियों के लिए अपने नियोक्ता के लिए एक बड़ी योगदानकर्ता है। उन्होंने अपने नियोक्ताओं और ग्राहकों से कई पुरस्कार भी जीते हैं जिन्होंने हमेशा उनके काम की गुणवत्ता और उत्कृष्टता सराहना की।आरती अपने गार्डन की देखभाल और नए /पुराने स्थानों पर जाना पसंद करती है। उ नको कथाएँ पढ़ने और क्रॉस वर्ड पहेली हल करने में भी आनंद आता है।

आरती रजनी और ज्ञानेंद्र सिंह

आरती और अमित रावल

आरती न्यू यॉर्क सिटी में

आरती वाशिंगटन डी सी में.

ऑस्टिन में अमित के घर के बहार

आरती अम्पायर स्टेट बिल्डिंग की छत पर

अमित रावल

अमित रावल

ज्ञानेन्द्र सिंह और रजनी रावल के पुत्र अमित रावल का जन्म 16 सितंबर 1980 को हरियाणा के पानीपत में हुआ था। अमित ने अपनी प्रारंभिक स्कूली शिक्षा केंद्रीय विद्यालय पानीपत से दूसरी कक्षा तक और दिल्ली पब्लिक स्कूल, विजयपुर म.प्र से कक्षा तीन से छः तक पूरी की। 1991 में उनके माता-पिता के दिल्ली आने के बाद, अमित ने अपनी स्कूली शिक्षा दिल्ली के ASN सीनियर सेकेंडरी स्कूल मयूर विहार से की। वह दिल्ली विश्वविद्यालय से वाणिज्य स्नातक हैं। एनआईआईटी लिमिटेड से जीएनआईआईटी कंप्यूटर डिप्लोमा भी पूरा कर चुके हैं। ग्रेजुएशन और जीएनआईआईटी डिप्लोमा दोनों करने बाद अमित ने नोएडा की एक आईटी कंपनी आरएमएसआई प्राइवेट लिमिटेड में असिस्टेंट सिस्टम इंजीनियर के पद से अपने करियर की शुरुआत की। 20 वर्ष की आयु तक पहुंचने से पहले सिस्टम इंजीनियर के पद पर पहुंच चुके थे।यह एक स्थायी नौकरी थी और इससे अमित को अपने करियर में आगे बढ़ने में मदद मिली, लेकिन उन्होंने यह भी महसूस किया कि किसी भी संगठन में बढ़ने के लिए आईटी में विशेषज्ञता के साथ उच्च शिक्षा आवश्यक थी। इसलिए अमित ने इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय में दाखिला लिया और कंप्यूटर एप्लीकेशन में पोस्ट ग्रेजुएट डिप्लोमा सफलतापूर्वक पूरा किया। इसके साथ ही अमित ने माइक्रोसॉफ्ट कॉर्पोरेशन और सन माइक्रोसिस्टम्स से उच्च तकनीकी प्रमाणपत्र भी हासिल किए । वह RMSI में सीनियर सिस्टम्स इंजीनियर का पद पर पहुंच गए। उस समय भारत में आईटी जॉब मार्केट फल-फूल रहा था। मई 2004 में अमित एक और प्रमुख संस्था एचसीएल टेक्नोलॉजीज में लीड इंजीनियर की पोस्ट पर नियुक्त हुए।

एचसीएल के साथ काम करते हुये अमित ने ए एम डी इंक (अमेरिका स्थित एक सेमी-कंडक्टर और फॉर्च्यून 500 कंपनी) के लिए काम करना शुरू किया। सितंबर 2004 में उन्होंने अमेरिका की पहली यात्रा की और ऑस्टिन, टेक्सास में रहे । यह यात्रा अमित के लिए काम सीखने और आंख खोलने वाला एक मूल्यवान अवसर था । इस यात्रा

में उनको दुनिया के विभिन्न हिस्सों के लोगों से मिलने का और उनके साथ काम का मौका मिला। पश्चिमी दुनिया में चीजें कैसे काम करती है यह जानने का सुअवसर भी मिला।

2005 में अमित की तैनाती अमेरिका में पुनः हो गयी। वह एच सी एल अमेरिका के ऐ एम डी ऑस्टिन कार्यालय में काम करने लगे। अमित को 2008 की शुरुआत में बोस्टन, मैसाचुसेट्स स्थित आर ए सए में प्रशिक्षण के लिए भेजा गया। प्रशिक्षण के बाद, अमित ने आरएसए से सूचना साइबर के क्षेत्र में एक और तकनीकी प्रमाणन सफलतापूर्वक पूरा किया। अमित को 2009 में फिर से एचसीएल के मर्क अमेरिकन फार्मास्युटिकल) के साथ नई जर्सी में तैनात किया। न्यूयॉर्क शहर के निकट होने के कारण अमित ने सप्ताहांत समय निकाला और न्यूयॉर्क शहर के सभी प्रमुख पर्यटन स्थलों का भ्रमण किया। इस बीच अमित ने कनाडा के अप्रवास के लिए आवेदन किया और उनको 2008 में कनाडा में स्थायी निवास के लिये वीजा मिल गया।

वह जनवरी 2010 में पहले और प्रमुख स्मार्ट फोन निर्माता ब्लैकबेरी में स्थायी रूप से काम करने के लिए कनाडा चले गए। वहां काम करते हुए, अमित ने कई तकनीकी पाठ्यक्रमों में भाग लिया और अपने काम सम्बंधित क्षेत्रों में अपने ज्ञान और कौशल में वृद्धि जारी रखी। अमित ने अक्टूबर 2014 में कनाडा की नागरिकता ले ली। इसके बाद उन्होंने एक्सेंचर इंक के लिए काम करना शुरू किया जो सूचना और साइबर सुरक्षा के क्षेत्र में एक बहुराष्ट्रीय कंसल्टेंसी कंपनी है और उन्हें तकनीकी वितर प्रबंधक के रूप में यूनाइटेड टेक्नॉलॉजी कॉरपोरेशन (प्रमुख अमेरिकी सरकारी रक्षा ठेकेदार और व्यापार समूह में से एक) के लिए काम करने के लिए सौंपा गया जो फार्मिंगटन कनेक्टिकट अमेरिका में स्थित है। उसके बाद उन्होंने सेंट लुइस, मिसौरी अमेरिका में एक अन्य प्रमुख अमेरिकी स्वास्थ्य देखभाल प्रदाता के साथ भी काम किया है।

ये सबसे अच्छे लेकिन सबसे कठिन कामों में से एक था जो उन्होंने अबतक किये थे । लगभग डेढ़ साल तक अमित हर हफ्ते कनाडा और अमेरिका के बीच यात्रा करनी पड़ती थी। अपने कार्य के सम्बन्ध में सोमवार की सुबह अमेरिका जाते थे और गुरुवार को देर से या शुक्रवार की सुबह वापस कनाडा लौटते थे। उनको इस दौरान हवाई यात्रा सम्बंधित कुछ कटु अनुभव भी हुए । यात्राओं का अचानक रद्द हो जाना , होटलों में रहना इत्यादि सम्मलित थे .लगभग डेढ़ साल तक उनका अमेरका और कनाडा के बीच हर हफ्ते आना जाना एक कठिन कार्य था। यह वास्तविकता उतनी ग्लैमरस नहीं है जितनी यह टीवी में दिखाई देती है। परन्तु इसने अमित को एक अमूल्य परिप्रेक्ष्य प्रदान किया जीके कारन उनको अगले काम में आगे बढ़ने में मदद मिली ।

घर केसामने का दृश्य

सर्दियों में कनाडा स्थित घर के पीछे कीओर का दृश्य

घर के पीछे की ओर का दृश्य गर्मियों के दौरान

अमित ने 2016 के अंत मे e Health ओंटारियो संस्था मे नौकरी शुरू की। यह सस्था ओंटारियो स्वास्थ्य मंत्रालय की ए शीर्षास्थ एजेंसी है उनके लिए एक साइबर सूचना सुरक्षा पेशेवर के रूप में काम किया । 2017 में उन्होंने ओंटारियो कनाडा के किचनर, वाटरलू क्षेत्र में एक घर खरीदा है ।

मई 2020 से अमित रॉयल बैंक ऑफ कनाडा के टोरंटो कार्यालय में डिजिटल पहचान और सुरक्षा बैंक के व्यक्तिगत और वाणिज्यिक बैंकिंग प्रभाग में वरिष्ठ प्रबंधकके पद पर कार्यरत है । रॉयल बैंक ऑफ कनाडा पूंजीकरण के हिसाब से कनाडा का सबसे बड़ा और उत्तरी अमेरिका में पांचवां सबसे बड़ा बैंक है। डिजिटल पहचान दुनिया भर में अपने ग्राहकों के साथ बैंकों और वित्तीय संस्थानों के संपर्क का तरीका बदल रही है। अमित की भूमिका बैंक के ग्राहकों के लिए और अधिक सुरक्षित, कुशल, सकारात्मक व्यवस्था उपलब्ध करने की है। नवंबर 2020 में अमि ने मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एमआईटी) स्लोन स्कूल ऑफ मैनेजमेंट डिजिटल बिजनेस स्ट्रेटेजी मैनेजमेंट कोर्स पूरा किया और कोर्स पूरा करने का सर्टिफिकेट प्राप्त किया।

अमित ने अपने व्यवसाईक जीवन में जिन कंपनियों और ग्राहकों के साथ काम किया, अपने कुशल कार्य और व्हवहार के कारण उनसे कई पुरस्कार अर्जित किए हैं। उनके कुछ पुरस्कारों में शामिल हैं:

i) एचसीएल से उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए मान्यता प्रमाण पत्र।

ii) ब्लैकबेरी लिमिटेड द्वारा वर्ष 2015 के लिए राइजिंग स्टार।

iii) ब्लैकबेरी लिमिटेड द्वारा कई बार कार्य प्रतिबद्धता, फोकस और सहयोग के लिए मान्यता।

iv) 2015, 2015 - 2016 के लिए एक्सेंचर इंक द्वारा उत्क्रष्ट कार्य के लिए मान्यता प्रमाण पत्र

Certificate Of Recognition

Presented To

AMIT RAWAL

For Outstanding Performance On The HCL - AMD Engagement
2006

Clay Cipione
CIO - Advanced Micro Devices

Shami Khorana
President - HCL America Inc.

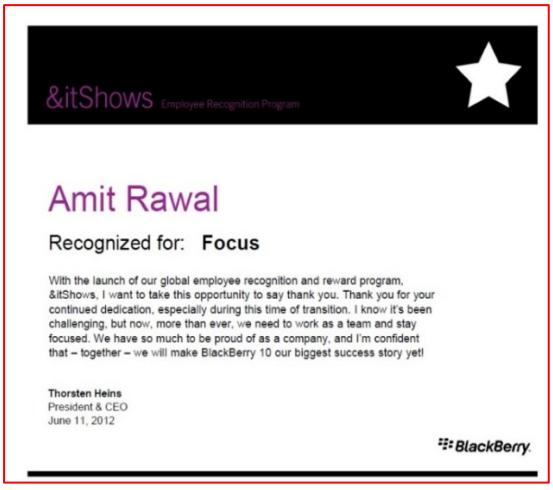
&itShows Employee Recognition Program

Amit Rawal

Recognized for: **Focus**

With the launch of our global employee recognition and reward program, &itShows, I want to take this opportunity to say thank you. Thank you for your continued dedication, especially during this time of transition. I know it's been challenging, but now, more than ever, we need to work as a team and stay focused. We have so much to be proud of as a company, and I'm confident that – together – we will make BlackBerry 10 our biggest success story yet!

Thorsten Heins
President & CEO
June 11, 2012

BlackBerry

अमित को स्वस्थ रहने चाव है। इसलिए वह जिम नियमित रूप जाते है । वह खेल भी खेलते हैं। अपनी स्थानीय खेल लीग का सदस्य है और नियमित रूप से वॉलीबॉल खेलते हैं। लंबी पैदल यात्रा, दौड़ आदि के अलावा, अमित लाइव प्रतिस्पर्धी खेल देखते हैं। अमित को यात्रा करना पसंद करता है। उन्होंने अनेक देशों जैसे कि यूनाइटेड किंगडम, क्यूबा, ऑस्ट्रेलिया, न्यूजीलैंड की यात्रा की है। इसके अतिरिक्त अधिकतर अमेरिकी स्टेट्स न्यूयॉर्क, न्यू जर्सी, मैसाचुसेट्स, पेंसिल्वेनिया, कैलिफोर्निया, मिसौरी, कनेक्टिकट, नेवादा, टेक्सास, वाशिंगटन डीसी और कनाडा के ओंटारियो और क्यूबेक की निजी और कार्यालय सम्बन्धी यात्राएं की है ।

MIT MANAGEMENT
SLOAN SCHOOL

MASSACHUSETTS INSTITUTE OF TECHNOLOGY
SLOAN SCHOOL OF MANAGEMENT

THIS IS TO CERTIFY THAT

Amit Rawal

HAS SUCCESSFULLY COMPLETED THE EXECUTIVE PROGRAM

Digital Business Strategy: Harnessing Our Digital Future

November 2020

Peter Hirst
Senior Associate Dean, Executive Education

1521212169

सिडनी, ऑस्ट्रेलिया में राहुल और अमित

पिकाडिली सर्कस, लंदन में अमित

पापा का जन्मदिन मना रहे हैं – 2019

कनाडा में दिवाली का त्यौहार

कनाडा में दिवाली का त्यौहार

ठाकुर नरपत सिंह

ठाकुर नरपत सिंह

ठाकुर नरपत सिंह ठाकुर श्रीराम सिंह के दूसरे पुत्र थे। वह ठाकुर चंद्र भान सिंह के छोटे भाई थे। उनकी बड़ी दूरदृष्टि थी। उनके तीन बेटे थे। 1) ठाकुर उदय वीर सिंह 2) ठाकुर श्योराज सिंह और 3) ठाकुर अमर सिंह। उन्होंने अपने तीनों बेटों को उस समय के लिहाज़ से अच्छी शिक्षा दी। पहले दोनों यानी ठाकुर उदय वीर सिंह और ठाकुर श्योराज सिंह यू पी पुलिस से इंस्पेक्टर के रूप में सेवानिवृत्त हुए। ठाकुर अमर सिंह को भारतीय सैन्य अकादमी (IMA), देहरादून से सैन्य में कमीशन मिला। निजी कारणों से ठाकुर अमर सिंह ने नौकरी छोड़ दी। ठाकुर नरपत सिंह की एक बेटी भी थी। उनका विवाह हरियाणा के बापोरा गाँव के श्री राम कुमार सिंह से हुआ था। यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक प्रतीत होता है कि पूर्व भारतीय सेना प्रमुख जनरल वी.के. सिंह (अब एक केन्द्रीय मंत्री) भी बापोड़ा गांव के ही निवासी है। ठाकुर नरपत सिंह जीवन पर्यन्त गाँव आमका में ही रहे और अपनी कृषि भूमि के प्रबंधन का कार्य देखते रहे। उन्होंने ने गांव में एक सुन्दर कोठी का निर्माण करवाया जिसका चित्र नीचे दिए गया है। दुर्भाग्य से अब यह कोठी गिर है। वर्ष 1965 में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी वंशावली इस प्रकार है:

ठाकुर उदयवीर सिंह

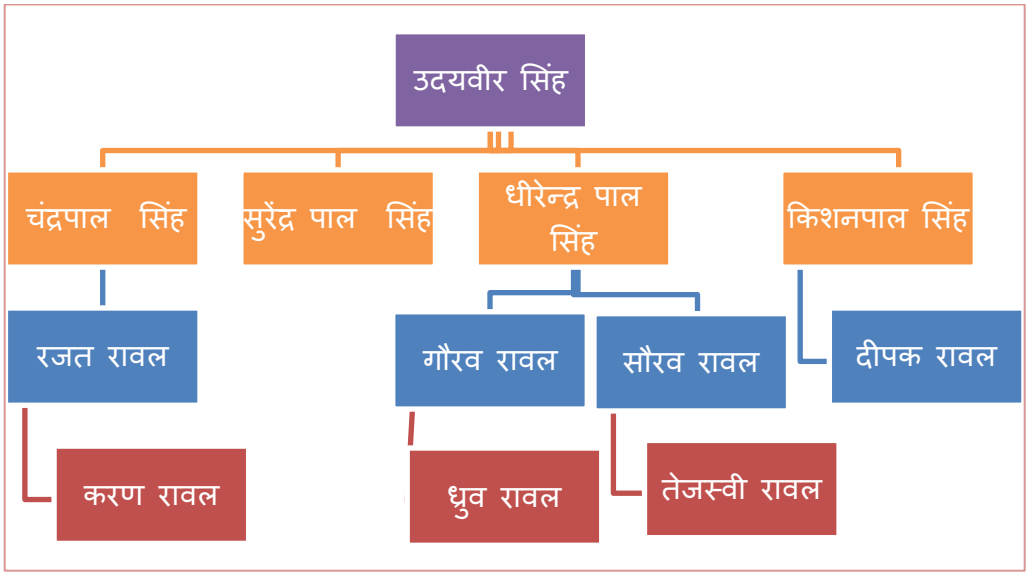

ठाकुर उदय वीर सिंह

ठाकुर उदय वीर सिंह ठाकुर नरपत सिंह के सबसे बड़े पुत्र थे। उनका जन्म 1898 में हुआ था। अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद ठाकुर उदय वीर सिंह को उत्तर प्रदेश के पुलिस विभाग में नौकरी मिल गई । पुलिस में उनका अच्छा सेवा रिकॉर्ड था। उनका विवाह श्रीमती दुलारी देवी से हुआ था। उनके चार बेटे और तीन बेटियां थीं। उनके पुत्र श्री चन्द्र पाल सिंह, श्री सुरेन्द्र पाल सिंह, श्री धीरेन्द्र पाल सिंह और श्री किशन पाल सिंह हैं। बेटी के नाम श्रीमती शैल कुमारी, श्रीमती स्नेह लता और श्रीमती शारदा देवी हैं। सभी बेटियों की शालीनता से अच्छे घरों में शादी कर दी गई। ठाकुर उदय वीर सिंह को दिल का दौरा पड़ने के कारण 1951 में उनका असामयिक निधन हो गया। मृत्यु के समय वे यूपी पुलिस में इंस्पेक्टर के पद पर कार्यरत थे।

श्री चन्द्र पाल सिंह

चन्द्र पाल सिंह

श्री चन्द्र पाल सिंह ठाकुर उदय वीर सिंह के सबसे बड़े पुत्र थे। उनका जन्म 1929 में हुआ था। वे डबल एमए और लॉ ग्रेजुएट थे। उन्होंने प्रतिष्ठित इलाहाबाद विश्वविद्यालय में उच्च शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने अपनी हाई स्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षा यूपी शिक्षा बोर्ड इलाहाबाद से की और इलाहाबाद विश्वविद्यालय से B.Sc और M. Sc की परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कीं। उन्होंने उसी विश्वविद्यालय से अर्थशास्त्र और कानून में एम. ए. किया। श्री चंद्र पल सिंह ने अपने करियर की शुरुआत लोकसभा सचिवालय से की थी जहाँ उन्हें शुरू में सहायक के रूप में नियुक्त किया गया था। इसके बाद वह हिंदुस्तान स्टील लिमिटेड में शामिल हो गए जिसे अब सेल के रूप में जाना जाता है। उस संस्था में वह उप महाप्रबंधक (कार्मिक) के पद पर आसीन हुए और 1987 में सेल से सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृति के बाद वह ग़ज़िआबाद में स्थायी रूप से रहने लगे। उनका एक बेटा रजत रावल और एक बेटी सोनू हैं । दोनों शादीशुदा हैं। श्री चंद्र पाल सिंह का निधन वर्ष 2010 में हुआ था।

श्री रजत रावल

श्री रजत रावल, श्री चन्द्र पाल सिंह रावल के इकलौते पुत्र हैं। उनका जन्म जुलाई 1970 में हुआ था। उनके बचपन झारखंड के रांची में बीता जहाँ उनके पिताजी तैनात थे। उन्होंने 1992 में रांची विश्वविद्यालय से अपना बैचलर ऑफ साइंस और 1995 में आईएमटी, गाजियाबाद से मास्टर ऑफ बिजनेस एडमिनिस्ट्रेशन किया। उनके पिता श्री चंद्र पाल सिंह स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया में निदेशक, कार्मिक के पद से सेवानिवृत्त हुए। उसके बाद परिवार गाजियाबाद में आकर रहने लगा ।

रजत रावल

श्री रजत ने सोनाली रावल से शादी की है। उसके दो बच्चे हैं। बेटी संघमित्रा और एक बेटा कर्ण रावल। रजत की बड़ी बहन सोनिया सिंह का विवाह श्री एन के सिंह से हुआ, जो वर्तमान में दिल्ली में रह रहे हैं। रजत रावल वर्तमान में रजत रियल एस्टेट कारोबार में है। वह आरजी इंफ्रा डेवलपर्स प्राइवेट लिमिटेड के नाम की एक कंपनी चला रहा है। यह कंपनी कॉलोनियों के विकास और बिक्री के व्यवसाय में है। इसके अलावा यह फ्लैटों का निर्माण और बिक्री भी करती है। श्री रजत की कंपनी गाजियाबाद, ग्रेटर नोएडा और आसपास के स्थानों में कार्यरत है ।

श्री सुरेंद्र पाल सिंह

सुरेंद्र पाल सिंह

रितु रावल

कमलेश रावल

श्री सुरेंद्र पाल सिंह ठाकुर उदय वीर सिंह के दूसरे नंबर के पुत्र हैं। उनका जन्म 12 दिसंबर 1937 को हुआ था। हालांकि आधिकारिक रिकॉर्ड में उनके जन्म की तारीख 2 जुलाई 1939 बताई गई है। वे उच्च शिक्षित हैं। यूपी शिक्षा बोर्ड इलाहाबाद से मैट्रिक और इंटर की परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद श्री सुरेन्द्र ने चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय मेरठ से स्नातक और उसी विश्वविद्यालय से समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर किया। श्री सुरेन्द्र पाल सिंह ने 1960 में दिल्ली प्रशासन के सहकारिता विभाग में शामिल होकर अपना करियर शुरू किया। लगभग 37 वर्षों तक सरकार की सेवा करने के बाद वे 31 जुलाई 1997 को ग्रेड एक के राजपत्र अधिकारी की हैसियत से दिल्ली राज्य के शिक्षा विभाग से सेवानिवृत्त हुए।

उन्होंने 10 मई 1965 को कमलेश कुमारी से शादी की। श्रीमती कमलेश ग्रेजुएट थी । उन्होंने ब्लू स्टार में मैनेजर ग्रेड एक के रूप में लंबे समय तक काम किया और 1997 में उसे छोड़ दिया। 27 नवंबर 2008 को उसकी मृत्यु हो गई।

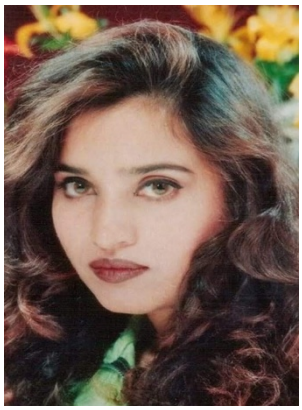
रितु रावल

रितु अपने पिता सुरेन्द्र पाल सिंह के साथ कुर्सी पर बैठी

श्री सुरेन्द्र की एक बेटी रितु रावल है। उनका जन्म 6 मई 1966 को हुआ था। तीन साल की उम्र में रितु रावल को दिमागी बुखार हो गया और उनको कमर से नीचे लकवा मार गया । लेकिन भगवान ने उनको असाधारण साहस और शक्ति प्रदान की है। वह न केवल आत्म-निर्भर है, बल्कि अपने स्वयं के व्यवसाय को स्वतंत्र रूप से चला रही है। रितु

ने इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फैशन डिजाइनिंग (IIFT) से फैशन डिजाइनिंग की और इग्नू से जर्नलिज्म का कोर्स भी किया। वह एक पार्टी प्लानर है और अपनी इवेंट मैनेजमेंट कंपनी चला रही है। वह एक शेयर निवेश सलाहकार भी हैं। वह पूरे भारत में अपने शोज़ का आयोजन करती है। उन्होंने एक ऐसा क्षेत्र चुना जहाँ पैर हिलाने का भी मतलब होता है। वह नई दिल्ली की एक बेहतर एवं प्रसिद्ध कोरियोग्राफर बन गई। उन्होंने 1500 से अधिक स्टेज शो किये है। यहां तक कि उनके पास अपनी एक नृत्य मंडली - थंडरबॉल के नाम से भी थी। उनके रोड शो और गायकों की वीडियो-एल्बम रिकॉर्डिंग भी शामिल थी। इसमें ऋचा शर्मा, दलेर मेहंदी, जस्सी, जसपिंदर नरूला, मिक्का और अभिजीत इत्यादि प्रसिद्ध कलाकारो के अभिनय और प्रदर्शन शामिल थे।

श्री धीरेन्द्र पाल सिंह

श्री धीरेन्द्र पाल सिंह ठाकुर उदय वीर सिंह के तीसरे पुत्र थे। उनका जन्म 1947 में हुआ था। उन्होंने अपना ग्रेजुएशन एमएमएच कॉलेज, गाजियाबाद से किया। उनका विवाह जिला हाथरस के ग्राम नंगला आलिया की सुश्री शैलेश रावल से हुआ था। चूँकि उनके सभी तीन अन्य भाई बहार नौकरी में थे और विभिन्न स्थानों पर तैनात थे, उन्होंने आमका में अपने कृषि फार्म का प्रबंधन किया। उनके दो बेटे है श्री गौरव रावल और श्री सौरव रावल और एक बेटी सीमा है। सीमा की शादी संजय चौहान से हुई है। श्री धीरेन्द्र की पत्नी श्रीमती शैलेश की मृत्यु 26 जुलाई 2002 को हो गई। इसके कुछ दिनों बाद 14 अक्टूबर 2003 को श्री धीरेंद्र पाल सिंह का भी देहांत हो गया ।

धीरेन्द्र सिंह सीमा, शैलेश

श्री गौरव रावल

गौरव रावल, ध्रुव, गौरी और गरिमा

श्री गौरव रावल का जन्म 1 अगस्त 1976 को हुआ था। वे श्री धीरेन्द्र पाल सिंह के बड़े पुत्र हैं। उन्होंने 1995 में मिहिर भोज डिग्री कॉलेज दादरी से ग्रेजुएशन किया। श्री गौरव ने 27 नवंबर 2002 को जिला बुलंदशहर के गाँव गिनौरा नागली की सुश्री गौरी रावल से शादी की। उनकी एक बेटी गरिमा सिंह हैं जो अब 11 वीं कक्षा में पढ़ती हैं। उनका जन्म 2 अक्टूबर 2003 को हुआ था। उनके बेटे ध्रुव रावल का जन्म 24 जून 2008 को हुआ था। वह अब दादरी में कक्षा IV में पढ़ रहे हैं। श्री गौरव रावल आमका में रहते हैं और अपनी कृषि भूमि का प्रबंधन करते हैं।

उनकी बेटी गरिमा एक प्रतिभाशाली छात्र है। वह दादरी में माउंट लिटेरा ज़ी स्कूल में पढ़ रही है। उसने दसवीं कक्षा की बोर्ड परीक्षा में 91% अंक प्राप्त करके स्कूल में टॉप किया था।

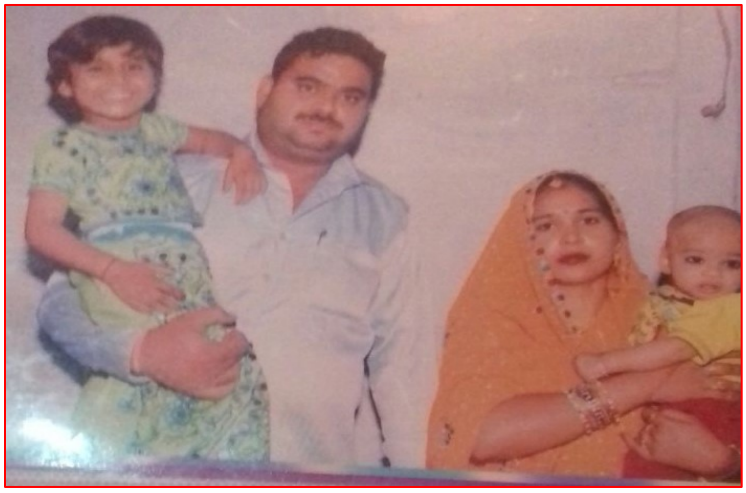

अपनी पत्नी गौरी, बेटे ध्रुव और बेटी गरिमा के साथ गौरव

श्री सौरव रावल

सौरव रावल

गौरव और सौरव होली खेलते हुए

सौरव का बेटा तेजस्वी

श्री सौरव रावल श्री धीरेंद्र पाल सिंह रावल के छोटे पुत्र हैं। उनका जन्म 18 जुलाई 1980 को हुआ था। वह 1999 में उन्होंने मिहिर भोज डिग्री कॉलेज दादरी ग्रेजुएशन किया । उनकी शादी 2008 में सुरभि रावल से शादी हुई । सौरव की एक बेटी ख़ुशी है।

उसका जन्म 12 जून 2009 को हुआ था। उनका एक बेटा भी है जिसका नाम तेजस्वी रावल है। उनकी जन्म तिथि 1 सितंबर 2011 है। ख़ुशी और तेजस्वी दोनों दादरी में स्कूल में पढ़ रहे हैं। श्री सौरव आमका में अपनी कृषि भूमि के प्रबंधन में व्यस्त हैं।

श्री किशन पाल सिंह

किशन पाल सिंह

ज्योति रावल

दीपक रावल

श्री किशन पाल सिंह ठाकुर उदय वीर सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। उनका जन्म 1948 में हुआ था। उन्होंने अपना हाई स्कूल और इंटरमीडिएट यू पी एजुकेशन बोर्ड इलाहाबाद से किया था। बाद में श्री किशन सिंह ने मुजफ्फर नगर, उत्तर प्रदेश से कृषि में एम. एससी पास किया। उन्होंने 4 फरवरी 1975 को ज्योति रानी से शादी की। उनका एक बेटा दीपक और एक बेटी पूजा रावल है। श्री किशन पाल सिंह ने हरियाणा के जिला सहकारी बैंक, रेवाड़ी में प्रबंधक के पद से अपने कर्रिएर की शुरुआत की थी। 1990 में एक दुर्घटना के कारण उनका असामयिक निधन हो गया। उनकी मृत्यु के बाद उनकी पत्नी ज्योति को बैंक में अनुकंपा के आधार पर रोजगार मिला। अब वह भी सेवानिवृत्त हो चुके हैं।

ठाकुर श्योराज सिंह

- श्योराज सिंह
- दिग्विजय सिंह
- राजीव रावल
- यशराज रावल

ठाकुर श्योराज सिंह

ठाकुर श्योराज सिंह ठाकुर नरपत सिंह के दूसरे पुत्र थे। उनका जन्म 1905 में हुआ था। उनका विवाह ठाकुर ब्रह्मजीत सिंह की सुपुत्री सुश्री विद्या वती से हुआ था। वह जिला सहारनपुर के ग्राम बहेरा संदल सिंह के रहने वाले थे। अपनी शिक्षा पूरी करने के तुरंत बाद, ठाकुर श्योराज सिंह यू पी पुलिस सेवा में शामिल हो गए। उनका एक बेटा और एक बेटी थी। उनके बेटे का नाम ठाकुर दिग्विजय सिंह है। बहन दिग्विजय सिंह से बड़ी हैं। उनका नाम श्रीमती सरोज चौहान है। उनका विवाह ग्राम घसीटपुर जिला अंबाला के ठाकुर जगदीश सिंह चौहान से हुआ था।

ठाकुर जे.एस. चौहान हरियाणा सरकार के अधिकारी थे और सहकारिता विभाग में वरिष्ठ पद पर काम करते थे। ठाकुर श्योराज सिंह लगभग 1963 में सेवानिवृत होकर अपनी ग्राम आमका आ गए थे। यहाँ वह अपनी खेती की जमीन की देखभाल करते थे। उनका निधन 5.1.1985 को हुआ था।

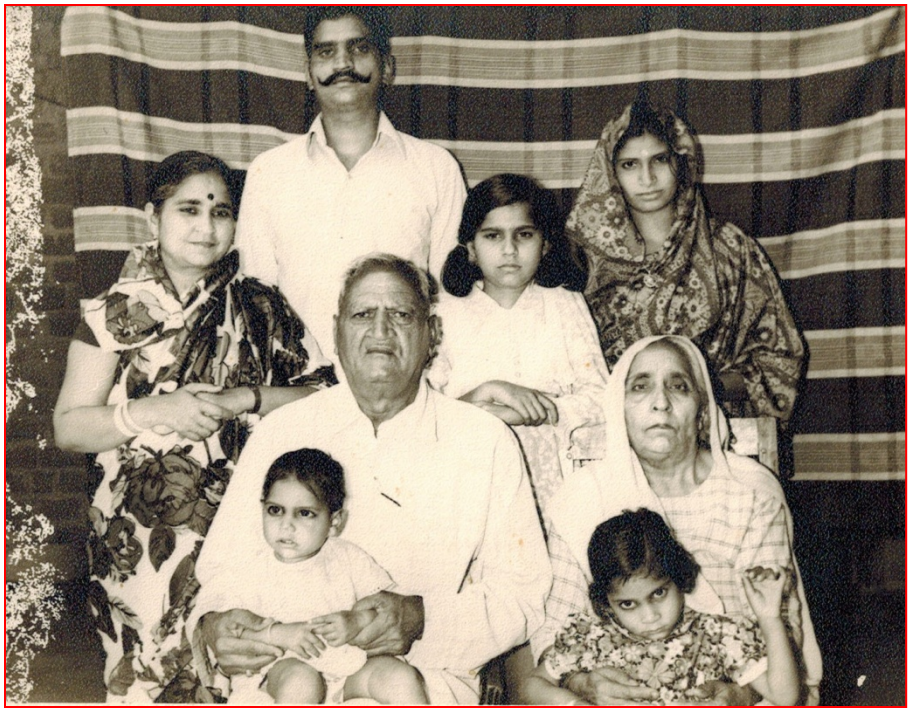

बाये से दाए बैठे हुये ठाकुर श्योराज सिंह, श्रीमती विद्यावती - गोदी में है राजू और
संगीता खड़े हुए है सरोज चौहान, दिग्विजय सिंह अमीता और उर्मिला

खड़े हुए बाये से दाये हेम सिंह, जे.एस. चौहान, बाल बीर राजपूत
(बड़े भाई ठाकुर श्यो राज सिंह) विनोद राजपूत की) रीता,
विद्या वती, विनोद राजपूत और सरोज चौहान

ठाकुर श्योराज सिंह

श्री दिग्विजय सिंह

श्री दिग्विजय सिंह ठाकुर श्योराज सिंह के इकलौते पुत्र थे। उनका जन्म 1946 को हुआ था। सुश्री उर्मिला से उनका विवाह हुआ था। उनके एक बेटा राजीव सिंह रावल और दो बेटियां संगीता और ज्योति हैं। उन्होंने हाई स्कूल तक की पढ़ाई की। अपनी कृषि भूमि की देखभाल के अलावा श्री दिग्विजय सिंह सामाजिक रूप से बहुत सक्रिय थे। वह भारत के पशु कल्याण बोर्ड के साथ आनरेरी पशु कल्याण अधिकारी थे। यह संगठन भारत सरकार के पर्यावरण और वन मंत्रालय के तहत काम करता है। श्री दिग्विजय सिंह बजरंग दल के कार्यकर्ता भी थे और उनके विभिन्न कार्यक्रमों में सक्रिय भाग लेते थे। उसके पास एक 30 बोर राइफल, एक डबल बैरल ब्रीच लोडिंग गन और एक पिस्तौल था जिसका लाइसेंस उन्हें सक्षम अधिकारी से प्राप्त था। श्री दिग्विजय सिंह का निधन 20.08.2013 को को हो गया।

दिग्विजय सिंह

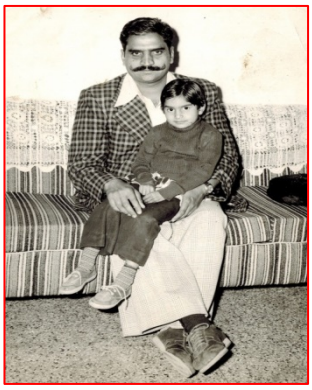

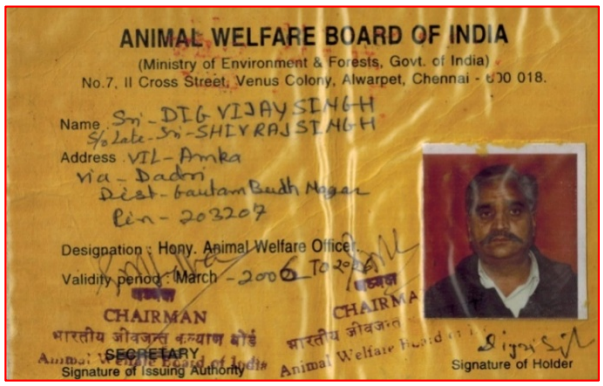

श्री राजीव रावल

श्री राजीव रावल, श्री दिग्विजय सिंह के पुत्र हैं। उनका जन्म 29.07.1975 को हुआ । उन्होंने दादरी के मिहिर भोज डिग्री कॉलेज में इंटरमीडिएट तक पढ़ाई की। 15 जून 1997 को उनकी बीना से शादी की। उनका एक बेटा यशराज रावल है, जिसका जन्म 15 जून 2003 को हुआ। एक बेटी प्राची रावल भी है। उसका जन्म 22 अगस्त 2001 को हुआ। उनका गाजियाबाद में खुद का व्यवसाय मेटल डोर सेक्शन मैन्युफैक्चरिंग यूनिट का है। अपने पिता श्री दिग्विजय सिंह की मृत्यु के बाद, उन्हें अपने हथियार विरासत में मिले हैं जो अब राजीव के नाम पर हैं।

बेटे यश, बेटी प्राची और पत्नी बीना के साथ राजीव

ठाकुर अमर सिंह

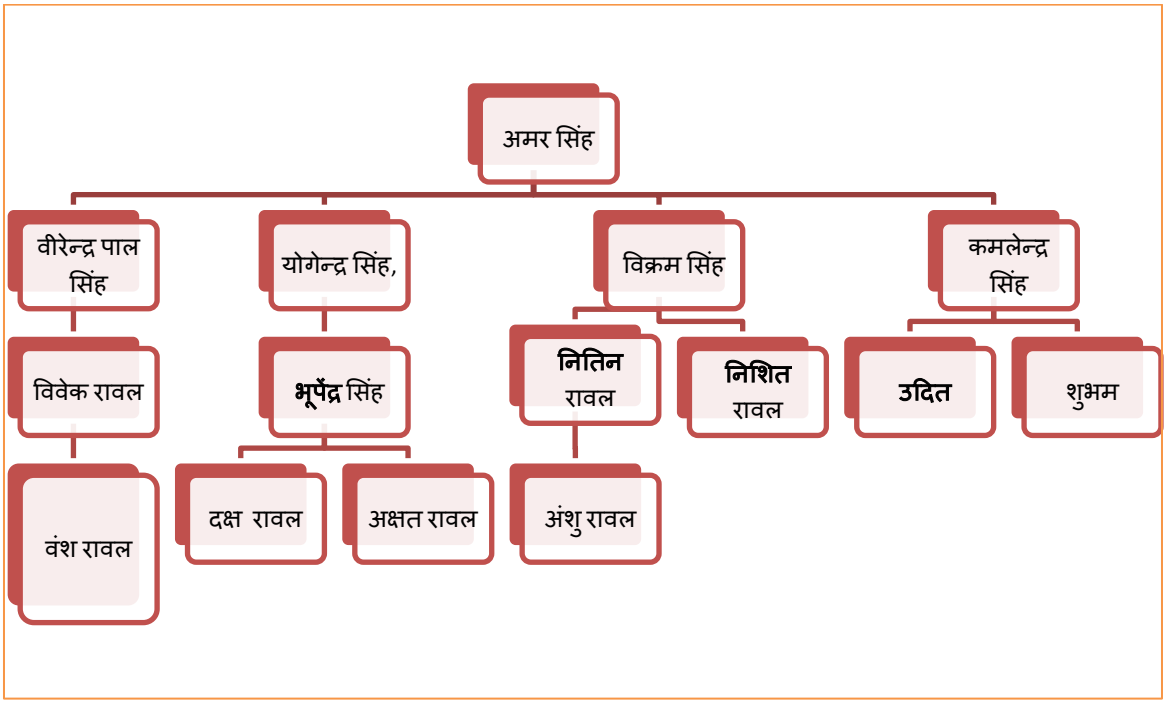

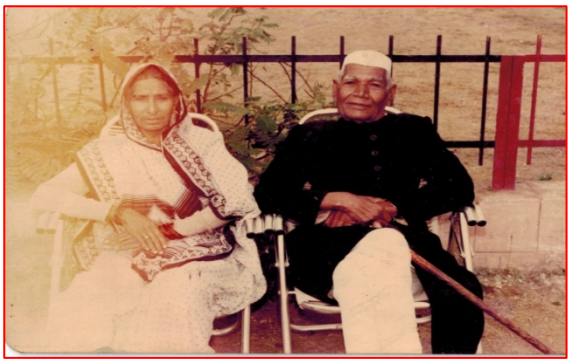

श्रीमती कुसुम लता और ठाकुर अमर सिंह

ठाकुर अमर सिंह का जन्म 1908 में हुआ था। वह ठाकुर नरपत सिंह के सबसे छोटे बेटे थे। उनका दो बार विवाह हुआ था। उनकी पहली पत्नी गाँव फकाना की शांति देवी थी। अपनी पहली पत्नी के निधन के बाद उन्होंने गाँव खेड़ा की सुश्री कुसुम लता से दोबारा विवाह किया। जबकि पहली पत्नी शांति देवी से श्री वीरेन्द्र पाल सिंह थे, दूसरी पत्नी से श्री योगेन्द्र सिंह, विक्रम सिंह और श्री कमलेन्द्र सिंह नाम के तीन पुत्र थे। ठाकुर अमर सिंह को भारतीय सेना में कमीशन मिला। उन्होंने व्यक्तिगत कारणों से वह नौकरी छोड़ दी। उन्होंने आमका में अपने कृषि फार्म का प्रबंधन किया। वे काफी संसाधन पूर्ण थे और राजनीति में सक्रिय भाग लेते थे। ठाकुर अमर सिंह धूम मानिकपुर की श्रीमती सत्यवती के बहुत करीबी थे। श्रीमति सत्यवती 1957 से 1962 तक उत्तर प्रदेश के दादरी विधानसभा क्षेत्र से कांग्रेस की विधायक थी । ठाकुर अमर सिंह श्री राज बहादुर के क्लास फैलो थे जो भारत सरकार में परिवहन और जहाजरानी मंत्री रहे थे। 1985 में उनका निधन हो गया।

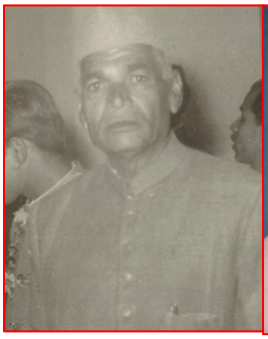

ठाकुर अमर सिंह

श्रीमती कुसुम लता

ठाकुर अमर सिंह अपने पुत्र श्री वीरेन्द्र पाल सिंह रावल के विवाह के अवसर पर वर्ष 1965

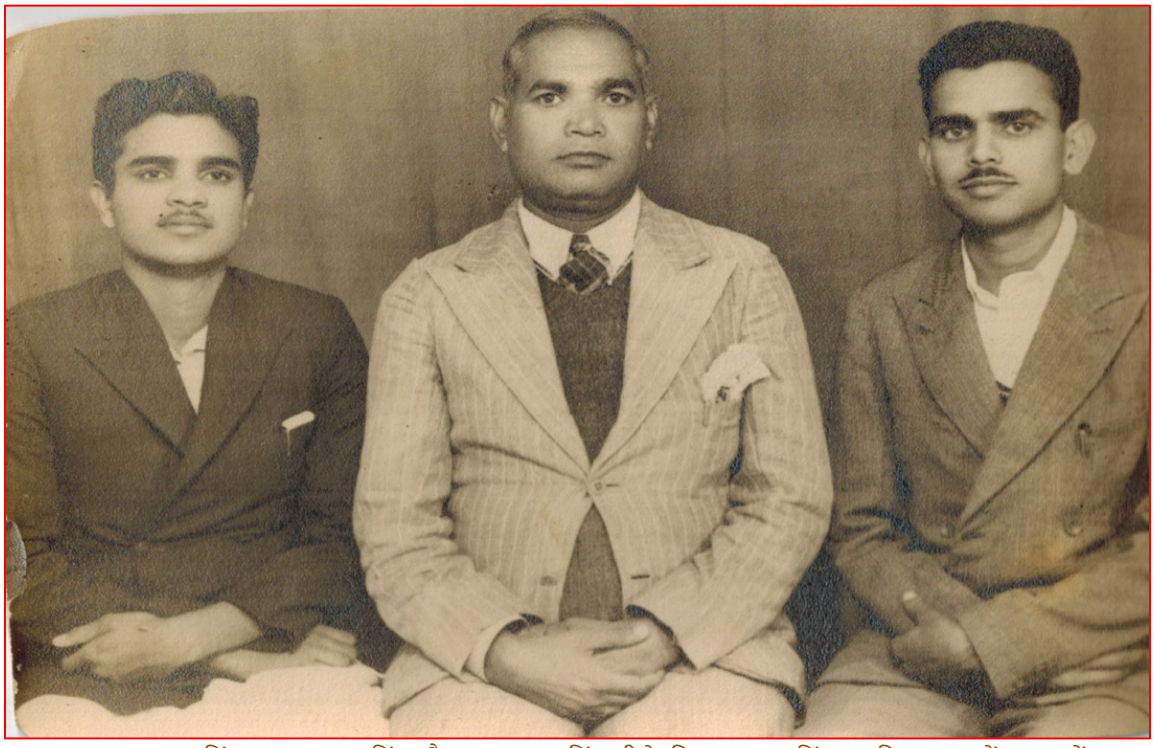

ठाकुर कुशाल पाल सिंह, ठाकुर अमर सिंह और कुशल पाल सिंह जी के मित्र सत्यपाल सिंह यह चित्र 1951 में आगरा में था

श्री वीरेंद्र पाल सिंह

वीरेन्द्र पाल सिंह रावल और सुश्री उषा रावल

श्री वीरेन्द्र पाल सिंह रावल ठाकुर अमर सिंह के सबसे बड़े पुत्र थे। उनका जन्म 30 मार्च 1939 को हुआ था। उन्होंने डीएवी कॉलेज, बुलंदशहर में पढ़ाई की और उत्तर प्रदेश बोर्ड से हाईस्कूल और इंटरमीडिएट पास किया। उनका विवाह सुश्री उषा रावल से हुआ था। उसके पिता देवगढ़ (ग्वालियर) के एक प्रतिष्ठित जमींदार थे। उनका एक बेटा विवेक रावल और एक बेटी वीनू सिंह है। श्री वीरेंद्र पाल सिंह ने गाजियाबाद की एक बहुराष्ट्रीय कंपनी हिंदुस्तान यूनिलीवर में लंबे समय तक काम किया। वह 2004 में वहां से सेवानिवृत्त हो गए। श्री वीरेंद्र सिंह ने गाजियाबाद के शास्त्री नगर में 400 वर्ग गज के भूखंड पर एक बड़ा घर बनाया। उनकी बेटी वीनू की शादी हरियाणा के पटौदी के गांव नरहेरा के कर्नल मोहन पाल सिंह से हुई है। ठाकुर अमर सिंह का 1985 में निधन हो गया ।

बाये से दाये योगेंद्र सिंह, वीरेंद्र पाल सिंह, विक्रम सिंह, कमलेद्र सिंह अपनी माताजी कुसुम लता के साथ। पीछे हैं भूपेंद्र, विवेक और नितिन। निशित, शुभम और उदित की गोद में हैं। सिंह

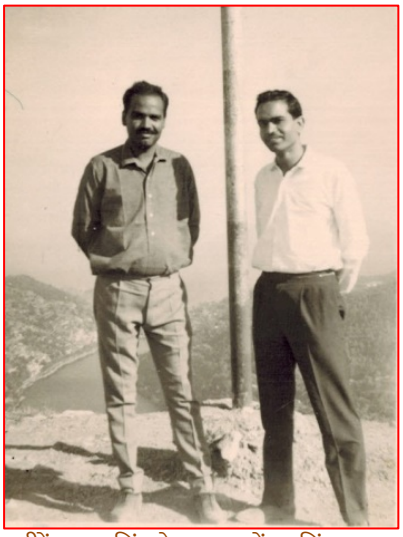

वीरेंद्र पाल सिंह के साथ महेंद्र सिंह नैनी चोटी नैनीताल में 1966

श्री विवेक रावल

श्री विवेक रावल, श्री वीरेन्द्र पाल सिंह के इकलौते पुत्र हैं। उनका जन्म 22 जुलाई 1979 को हुआ था। उनका विवाह आरती सिंह से हुआ है। आरती के पिता को देवघर के राजा हनुमंत सिंह के नाम से जाना जाता है। आरती ने सर्वोदय कन्या विद्यालय से इतिहास में एमए किया। विवेक ने 2002 में चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ से ग्रेजुएशन किया किया और 2004 में इसी विश्वविद्यालय से उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर किया। विवेक ने 2004 से 2005 तक मार्केटिंग अफसर के रूप में आई टी सी नामक प्रतिष्ठित संस्था में काम भी किया। इसके बाद उन्होंने 2005 से 2009 तक और 2009 से 2016 तक क्रमशः ट्यूलिप टेलीकॉम और एरिक्सन में काम किया। उनके एक बेटा वंश और एक बेटी वंशिका है। वर्तमान में वह अपना काम करने में लगे हुए हैं।

विवेक रावल और आरती रावल

श्री विवेक के बेटे वंश एक होनहार खेल व्यक्ति हैं। वह तीरंदाजी में गहरी दिलचस्पी लेते है। उन्होंने 2018 में इस खेल को खेलना शुरू किया। उस साल उन्होंने लोनी में CBSE क्लस्टर और उसके बाद रायपुर मेंराष्ट्रीय खेलों में भाग लिया। 2019 में उन्होंने जालंधर के टूर्नामेंट में भाग लिया और रजत पदक जीता। उसी वर्ष उन्होंने मेरठ में सीबीएसई क्लस्टर खेला और 2020 में स्कूल के खेलों में स्वर्ण पदक जीता।

तीरन्दाजी प्रतियोगितायों में वंश

Reg.No.-04/16/04/17086/15

संयुक्त भारत खेल संघ

UNITED INDIA GAMES-2019

5th NATIONAL CHAMPIONSHIP

ORG. BY:- SANYUKTA BHARTIYA KHEL FOUNDATION

HOST BY : INDU SHREE ORGANIZATION

INDU SHREE ORGANIZATION INDIA

Certificate

S.No 7471 This Is Awarded To

Master/Mr./Miss/Mrs. VANSH PRATAP SINGH

S/D/O Shri VIVEK RAWAL State U.P

Participated In ARCHERY In The United India Games Association.

Mega Event Held On

29th To 31st January 2019 At Punjab Armed Police (PAP) Head Quarter

Jalandhar, Punjab (India)

Age Group	U-14
Weight	

Rank	1st	2nd ✓	3rd
Participation			

Pankaj Gavale, Founder & President, SBKF, INDIA

The Great Khali, Chief Guest, WWE CHAMPION

Shiva Tiwari, General Secretary, SBKF, INDIA

2019

web : www.indushreeorganization.com

BRITISH COUNCIL

INTERNATIONAL SCHOOL AWARD 2016-2019

SILVER LINE PRESTIGE SCHOOL

(SLPS)

GHAZIABAD

CERTIFICATE OF MERIT

Awarded to Vansh Pratap Singh Class VI B

of Satyam House for getting 'Gold Medal' in

INTER HOUSE ARCHERY (SUB. JUNIOR BOYS)

for the session 2018-19

Date 09.10.2018

Director Principal

श्री योगेंद्र पाल सिंह

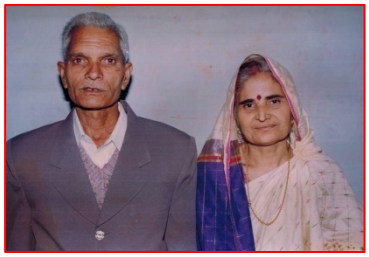

योगेन्द्र पाल सिंह और आशा रावल

श्री योगेन्द्र पाल सिंह ठाकुर अमर सिंह के दूसरे पुत्र थे। उनका जन्म 1947 में हुआ. उनका विवाह सुश्री आशा रावल से हुआ था। शिक्षा पूरी करने के बाद, उन्हें मंडी समिति में नौकरी मिला। नौकरी के अलावा उन्होंने गाँव में अपनी कृषि भूमि की भी देखभाल की। जब उनकी सेवानिवृत्ति के लिए बहुत कम समय बचा था, श्री योगेंद्र पाल सिंह का 2005 में निधन हो गया। उनका एक बेटा भूपेंद्र है। उनकी पाँच बेटियाँ भी थीं। उनके नाम 1 जया 2 कुमुद 3 तारा 4 राम और 5 मोनिका हैं। सभी पांच बेटियों की शादी अच्छे परिवारों में हुई है।

श्री भूपेंद्र सिंह

भूपेन्द्र वंदना और उनके पुत्र

श्री भूपेन्द्र सिंह, श्री योगेन्द्र पाल सिंह के इकलौते पुत्र हैं। आधिकारिक रिकॉर्ड में उनका नाम गौरव प्रताप सिंह रावल है। उनका जन्म 2 जून 1981 को हुआ था। उन्होंने 17 फरवरी 2005 को वंदना रावल से शादी की। उनकी पत्नी गौतमबुद्धनगर के पियावाली गांव की थीं। श्री भूपेंद्र ने दादरी के मिहिर भोज डिग्री कॉलेज से इंटरमीडिएट किया। चूकि उनके पिता श्री योगेंद्र पल सिंह जी की मृत्यु नौकरी करने के दौरान हे हुई थी इसलिए उनकी जगह उनके बेटे श्री भूपेंद्र सिंह को उनके कार्यालय में नौकरी मिल गयी। वे 2007 में मंडी समिति में सहायक मंडी निरीक्षक के रूप में शामिल हुए। श्री भूपेन्द्र के दो बेटे है। उनके बड़े बेटे का नाम दक्ष है और उनका जन्म 10 मई 2010 को हुआ और दूसरे बेटे का नाम अक्षत है जिसका जन्म 12 अक्टूबर 2013 को हुआ। वह मंडी समिति में नौकरी करने के साथ साथ अपना खेती का काम भी देखते है.

श्री विक्रम सिंह

विक्रम सिंह श्रीमती सुमन लता

श्री विक्रम सिंह रावल, ठाकुर अमर सिंह के तीसरे पुत्र हैं। उनका जन्म 30 जुलाई 1954 को हुआ था। उनका विवाह श्रीमती सुमन लता से हुआ। उन्होंने 1974 में मिहिर भोज इंटर कोलाज दादरी से हाई स्कूल पास किया। श्री विक्रम सिंह सेना में थे। वह 24 फरवरी 1975 को बंगाल इंजीनियरिंग ग्रुप में शामिल हुए। 28 फरवरी 1997 को हवलदार के पद से 22 साल की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हुए। सेवानिवृत्ति के बाद भी वे बहुत सक्रिय थे

रिटायरमेंट के बाद उनको कुछ निजी सुरक्षा संगठनों में काम मिला। लकिन अभी वह एक सेवानिवृत्त जीवन व्यतीत कर रहे हैं। उसके दो बेटे हैं। उनके नाम नितिन रावल और निशित रावल हैं। उनका जन्म क्रमशः 11 दिसंबर 1985 और 4 जुलाई 1990 को हुआ था।

नितिन ने अपना हाई स्कूल 2006 में यू पी बोर्ड से और 2008 में इंटरमीडिएट किया। उन्होंने 2009 में आईटीआई हापुड़ से डिप्लोमा कोर्स भी किया है। उनकी शादी निशा रावल से हुई है। उनका एक बेटा अंशु रावल है। नितिन नोएडा में ThyssenKrupp Elevators (India) Pvt Ltd में इंजीनियर के रूप में कार्यरत हैं।

नितिन रावल

निशा रावल

अंश रावल

निशित रावल

लवली रावल

श्री विक्रम के दूसरे बेटे निशित की शादी जिला उत्तर प्रदेश के केरोला गाँव के ठाकुर भगवान सिंह चौहान की बेटी लवली चौहान से हुई है। लवली बहुत योग्य है। उसने 2014 में बी.कॉम और 2016 में एम.कॉम किया। फिलहाल, वह बैंक परीक्षा की तैयारी में व्यस्त है।

श्री कमलेन्द्र सिंह

कमलेन्द्र सिंह और उर्मिला रावल

श्री कमलेन्द्र सिंह ठाकुर अमर सिंह के सबसे छोटे पुत्र हैं। उनका जन्म 1 दिसंबर 1957 को हुआ था। उन्होंने अपनी हाई स्कूल की पढ़ाई बनारस विश्वविद्यालय के जनता इंटर कॉलेज से की। इसके बाद, वह 1975 में कांस्टेबल के रूप में सीमा सुरक्षा बल में शामिल हो गए। वह वर्ष 1998 में हेड कांस्टेबल की क्षमता में बीएसएफ से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने उर्मिला रावल से शादी की है। उसके दो बेटे हैं। बड़ा वाला शुभम है

रावल का जन्म 16 अक्टूबर 1990 को हुआ था। वह कंप्यूटर एप्लीकेशन में स्नातक हैं। साथ ही ITS मोहन नगर, गाजियाबाद से वेब डिजाइनिंग की।

पूजा और शुभम

निधि

वर्तमान में, शुभम ओखला इंडस्ट्रियल एस्टेट दिल्ली में फ्लैक्सी बोर्ड में कार्यरत है। उन्होंने पूजा से शादी की है और उनका दो साल का बेटा युवराज है। श्री कमलेन्द्र सिंह के छोटे पुत्र उदित रावल हैं जिनका जन्म 5 अक्टूबर 1994 को हुआ था। उन्होंने बीएससी किया है। दादरी के मिहिर भोज डिग्री कॉलेज से। वर्तमान में, वह पीसीएस परीक्षा के लिए कोचिंग कक्षाएं ले रहा है। श्री कमलेन्द्र

सिंह की एक बेटी निधि है। उनका जन्म 14 मई 1988 को हुआ था। उनका विवाह श्री दीपक गहलौत से हुआ। .श्री कमलेन्द्र सिंह अब सेवानिवृत्त जीवन जी रहे हैं और अपनी कृषि भूमि की देखभाल के लिए गाँव में रहते हैं।

कमलेन्द्र सिंह एकदम बाये पर है

बाये से चौथे नंबर पैर है कमलेन्द्र सिंह

भाग द्वितीय

ठाकुर मोती राम सिंह

1870 और 1880 के बीच ठाकुर मोती राम सिंह द्वारा आमका में निर्मित पहली हवेली

ठाकुर मोती राम सिंह ठाकुर मोहर सिंह के दूसरे पुत्र थे। उनके तीन बेटे थे 1 ठाकुर हरबंस सिंह 2 ठाकुर रिसाल सिंह और 3 ठाकुर रायदल सिंह। ठाकुर हरबंस सिंह के पास कोई पुत्र नहीं था। ठाकुर मोती राम सिंह एक समझदार और दूरदर्शी व्यक्ति थे। आमका में एक पक्की हवेली का निर्माण की आवश्यकता की कल्पना करना उनकी दूरदर्शिता और समझदारी को दर्शाता है । उन्होंने 1870 और 1880 के बीच गांव में एक तीन मंज़िला हवेली का निर्माण कराया । यह गांव का पहला ईंट मोर्टार निर्माण था। यह अभी भी मौजूद है। लेकिन अब वहां कोई रहता नहींहै।

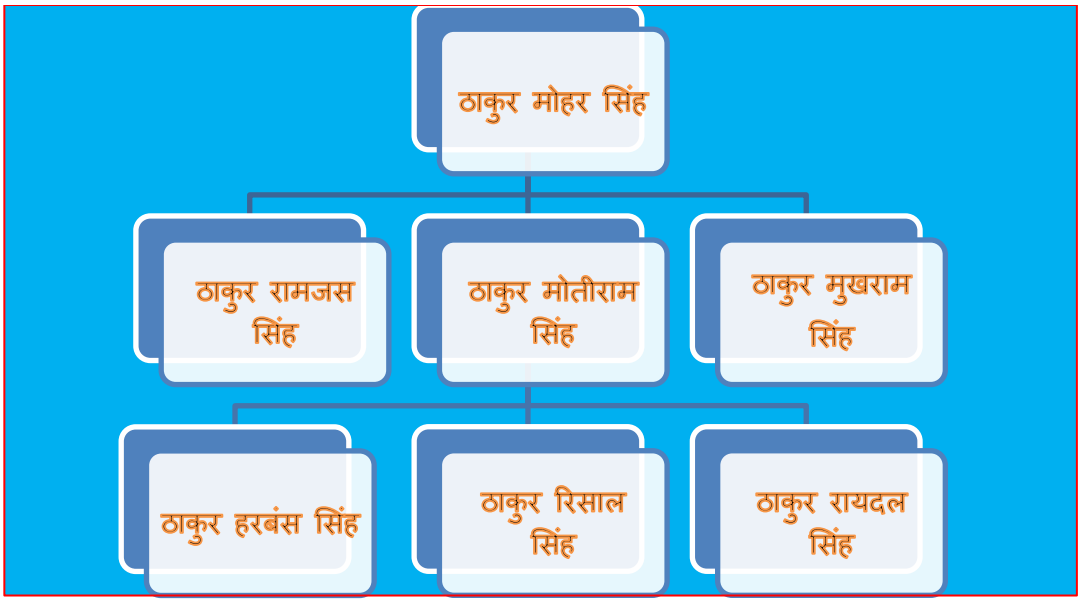

ठाकुर रिसाल सिंह

ठाकुर रिसाल सिंह, श्री मोती राम सिंह के दूसरे पुत्र थे। उसके चार बेटे थे। उनके नाम हैं 1 ठाकुर तुंगल सिंह 2 ठाकुर रघुवीर सिंह 3 ठाकुर राज सिंह और 4 ठाकुर रघुराज सिंह। उनके सभी चार बेटे बहुत सक्षम थे। ब्रिटिश सरकार ने उत्तर प्रदेश के आबकारी विभाग में अपनी सराहनीय सेवा के लिए ठाकुर रघुराज सिंह को ऑर्डर ऑफ़ द ब्रिटिश एम्पायर (OBE) से सम्मानित किया। ठाकुर तुंगल सिंह और ठाकुर रघुराज सिंह के पास कोई संतान नहीं थी ।

ठाकुर रिसाल सिंह

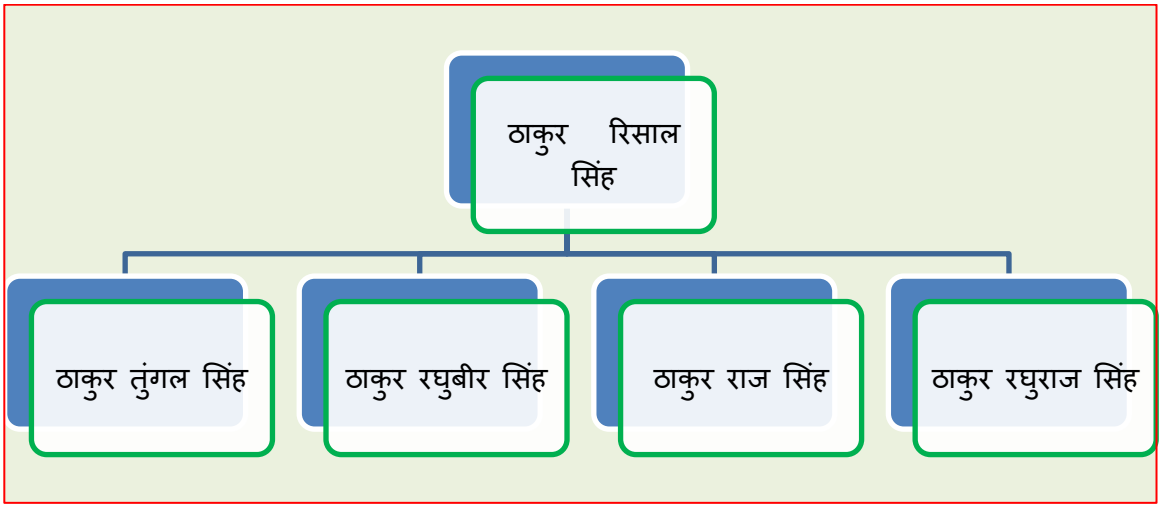

ठाकुर तुंगल सिंह

ठाकुर तुंगल सिंह

ठाकुर रघुबीर सिंह

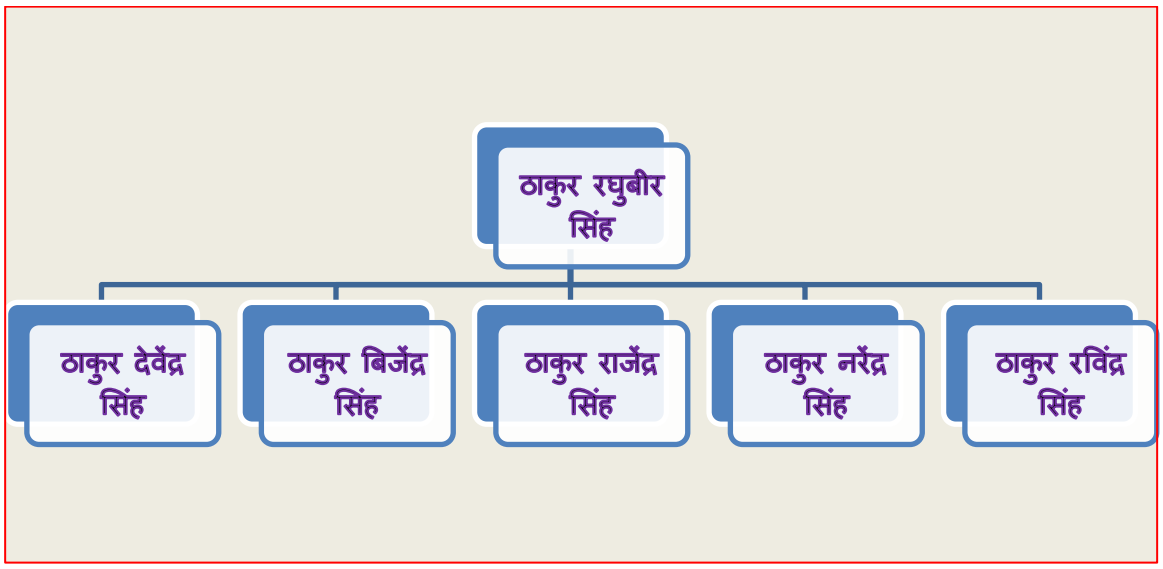

ठाकुर रघुबीर सिंह

ठाकुर रघुवीर सिंह ठाकुर रिसाल सिंह के दूसरे पुत्र थे। उसके पांच बेटे थे। उनके नाम 1 ठाकुर देवेंद्र सिंह 2 ठाकुर बिजेंद्र सिंह 3 ठाकुर राजेंद्र सिंह 4 ठाकुर नरेंद्र सिंह और 5 ठाकुर रवींद्र सिंह हैं। श्री राजेंद्र सिंह गाँव के दूसरे निर्वाचित प्रधान थे।

ठाकुर देवेंद्र सिंह

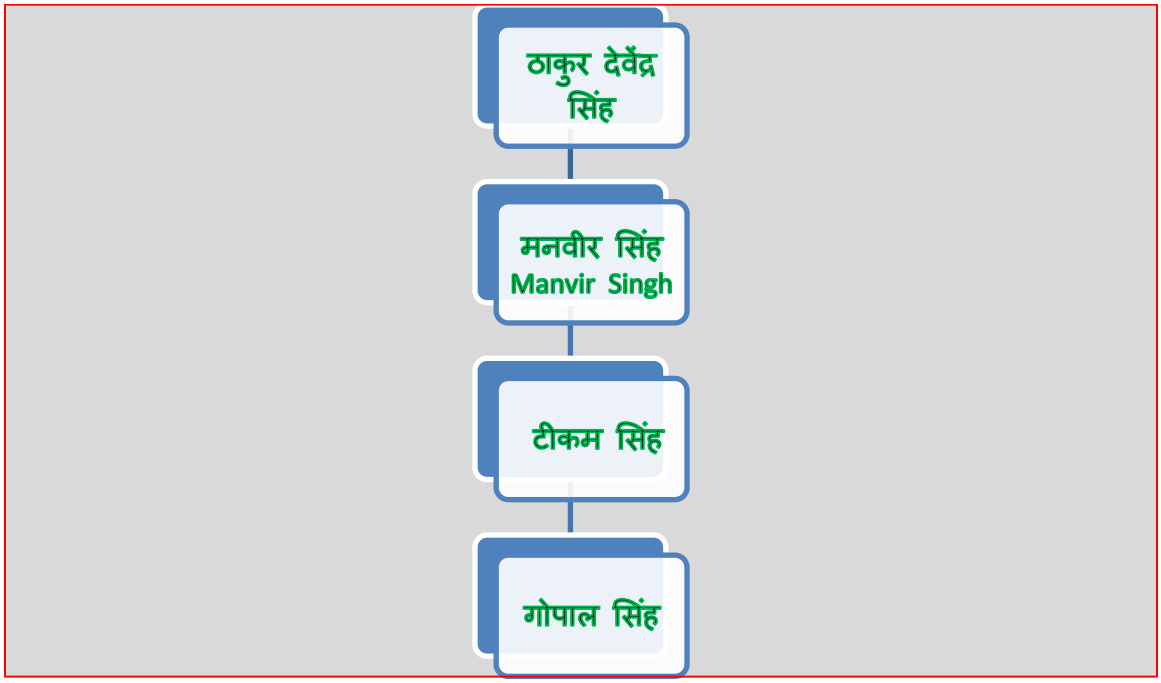

ठाकुर बिजेंद्र सिंह

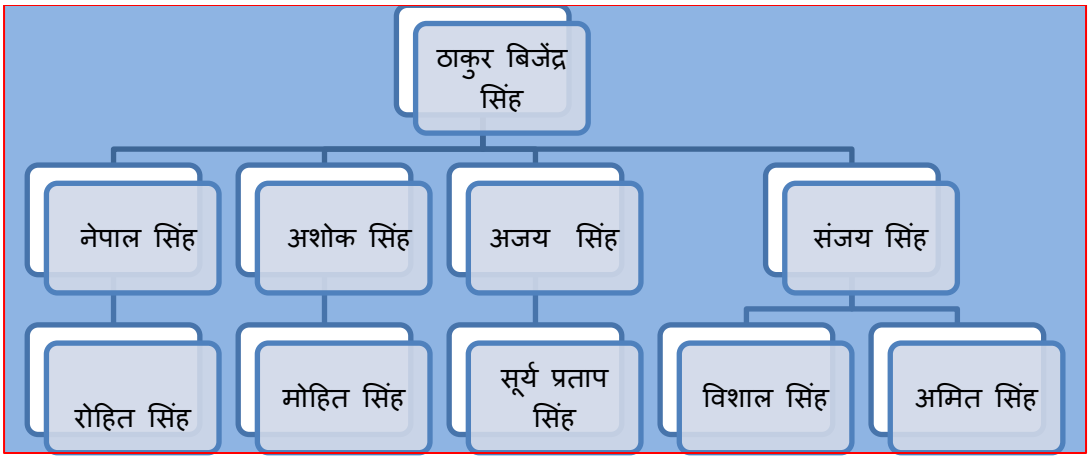
ठाकुर बिजेंद्र सिंह
नेपाल सिंह
अशोक सिंह
अजय सिंह
संजय सिंह
रोहित सिंह
मोहित सिंह
सूर्य प्रताप सिंह
विशाल सिंह
अमित सिंह

ठाकुर राजेंद्र सिंह

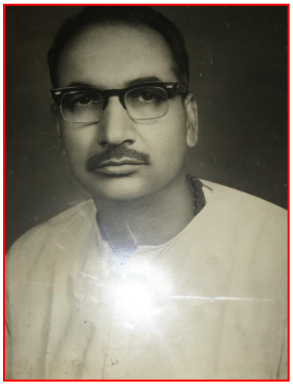

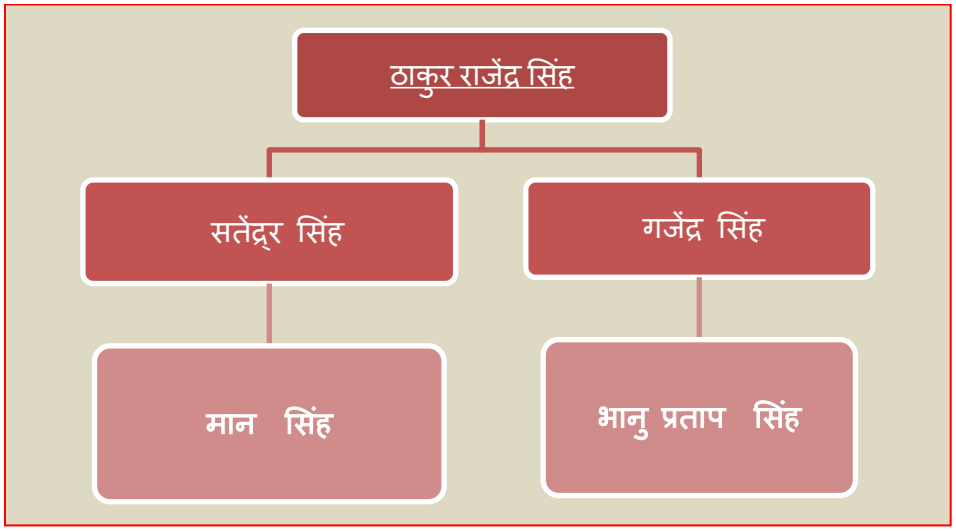
ठाकुर राजेंद्र सिंह
सतेंद्र सिंह
गजेंद्र सिंह
मान सिंह
भानु प्रताप सिंह

ठाकुर नरेंद्र सिंह

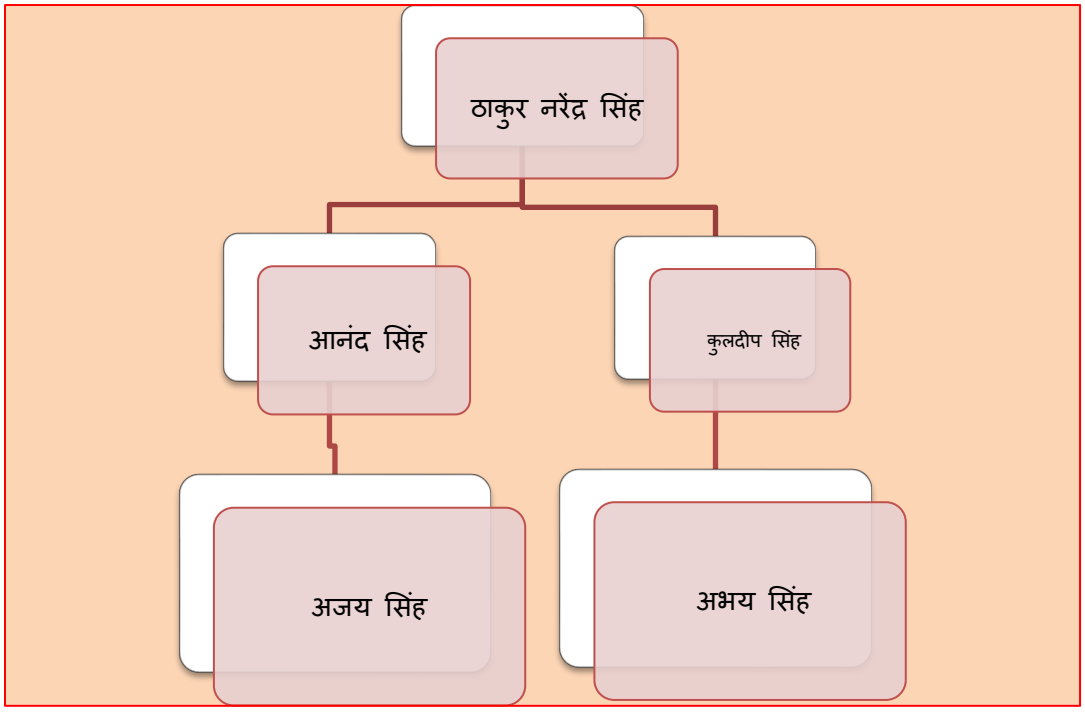

ठाकुर रवींद्र सिंह

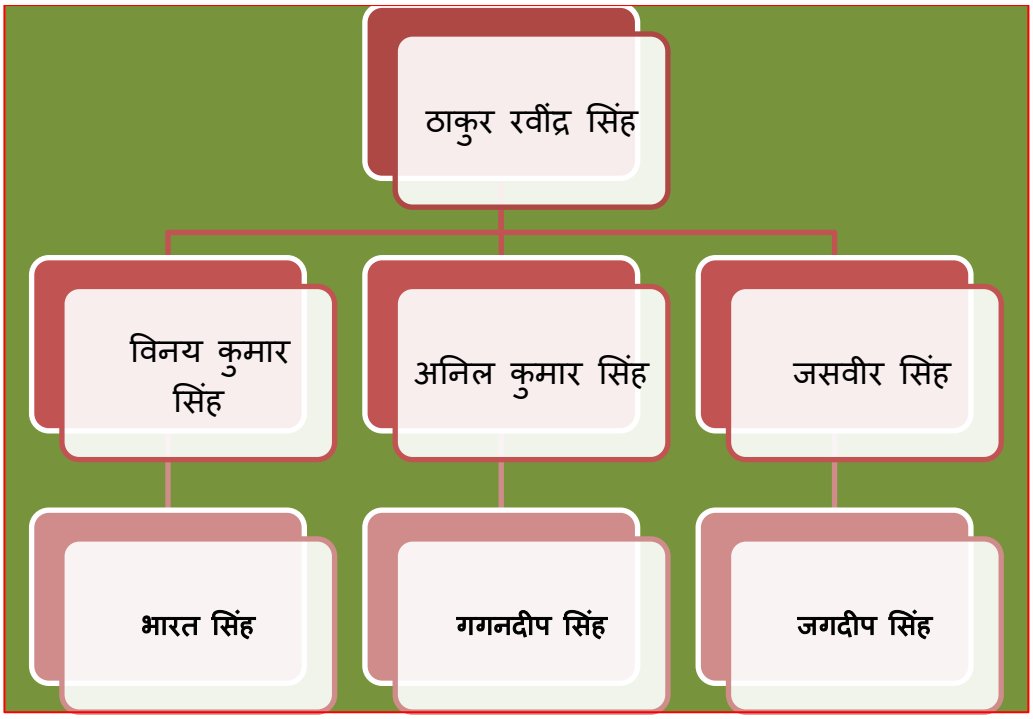

ठाकुर राज सिंह

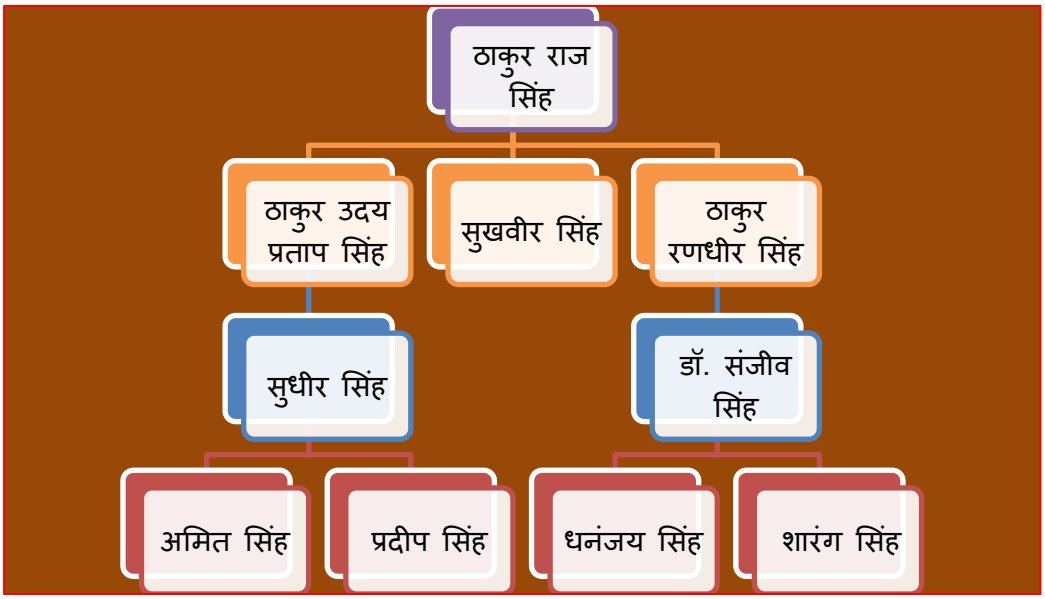

ठाकुर उदय प्रताप सिंह

सुधीर सिंह

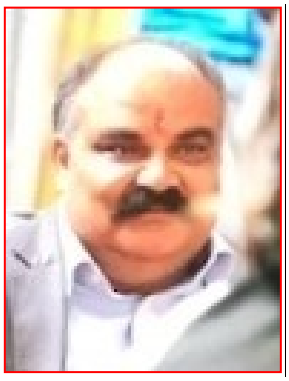

अमित सिंह

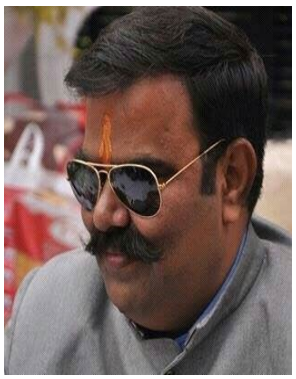

प्रदीप सिंह

ठाकुर रायदल सिंह

ठाकुर रायदल सिंह का विस्तृत विवरण रावल फैमिली के बहुमूल्य रत्नो के अंतर्गत है

ठाकुर रघुराज सिंह OBE

ठाकुर रघुराज सिंह OBE का विस्तृत विवरण रावल फैमिली के बहुमूल्य रत्नो के अंतर्गत है

भाग तीन

ठाकुर ठाकुर मुखराम सिंह

ठाकुर मोहर सिंह

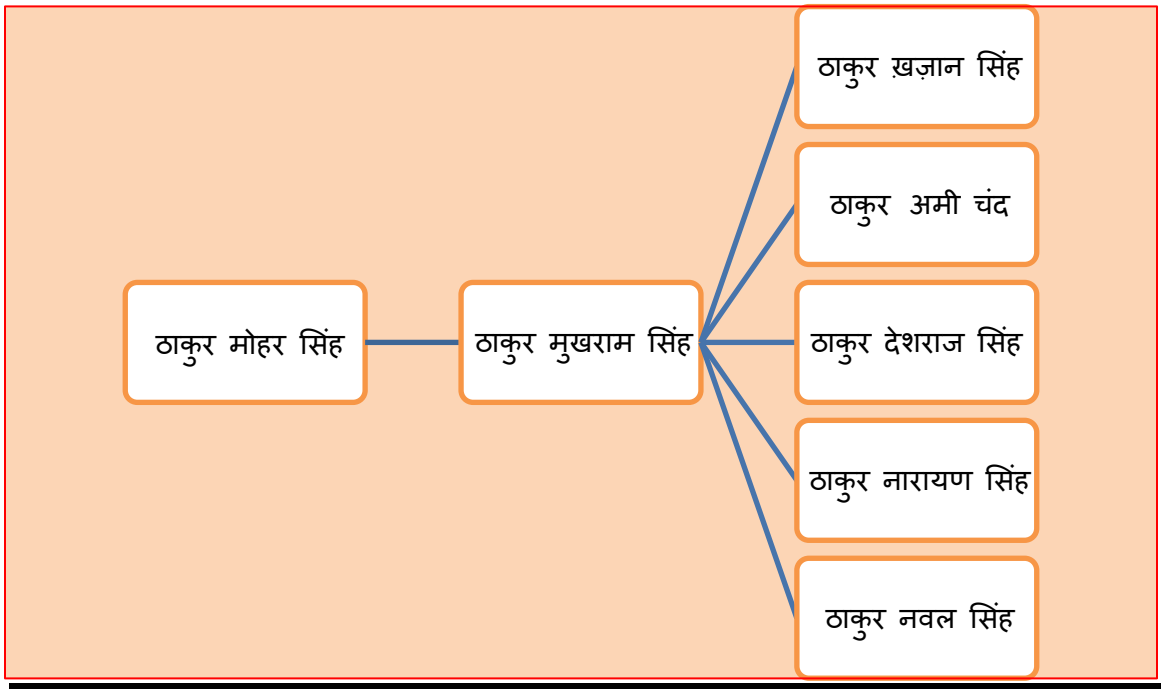

ठाकुर मुखराम सिंह

ठाकुर मुखराम सिंह

ठाकुर मुखराम सिंह ठाकुर मोहर सिंह के सबसे छोटे पुत्र थे। तीन भाइयों में से ठाकुर रामजस सिंह, ठाकुर मोती राम सिंह और ठाकुर मुख राम सिंह में से केवल ठाकुर मुख राम सिंह का ही वास्तविक चित्र उपलब्ध है। यह फोटो 1917 में सौ साल भी ज़्यादा पहले एक विवाह के अवसर पर खींचा गया था । उनके पांच बेटे थे। जिनके नाम ठाकुर खज़ान सिंह, ठाकुर अमी चंद सिंह, ठाकुर देशराज सिंह, ठाकुर नारायण सिंह और ठाकुर नवल सिंह हैं। ठाकुर खजान सिंह और ठाकुर अमी चंद सिंह का कोई पुत्र नहीं था इसलिए हम केवल ठाकुर देस राज सिंह, ठाकुर नारायण सिंह और ठाकुर नवल सिंह के परिवार जनो की ही चर्चा करेंगे .

ठाकुर देशराज सिंह

ठाकुर देशराज **सिंह**

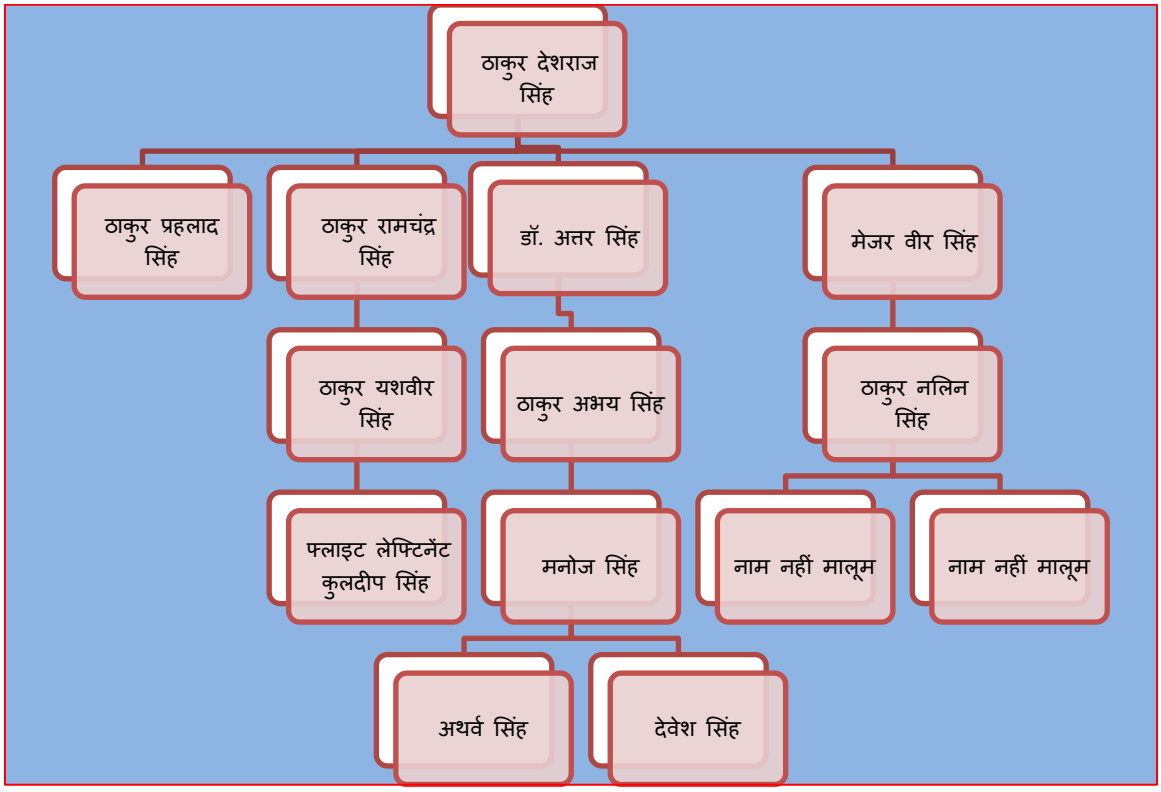

ठाकुर प्रहलाद सिंह

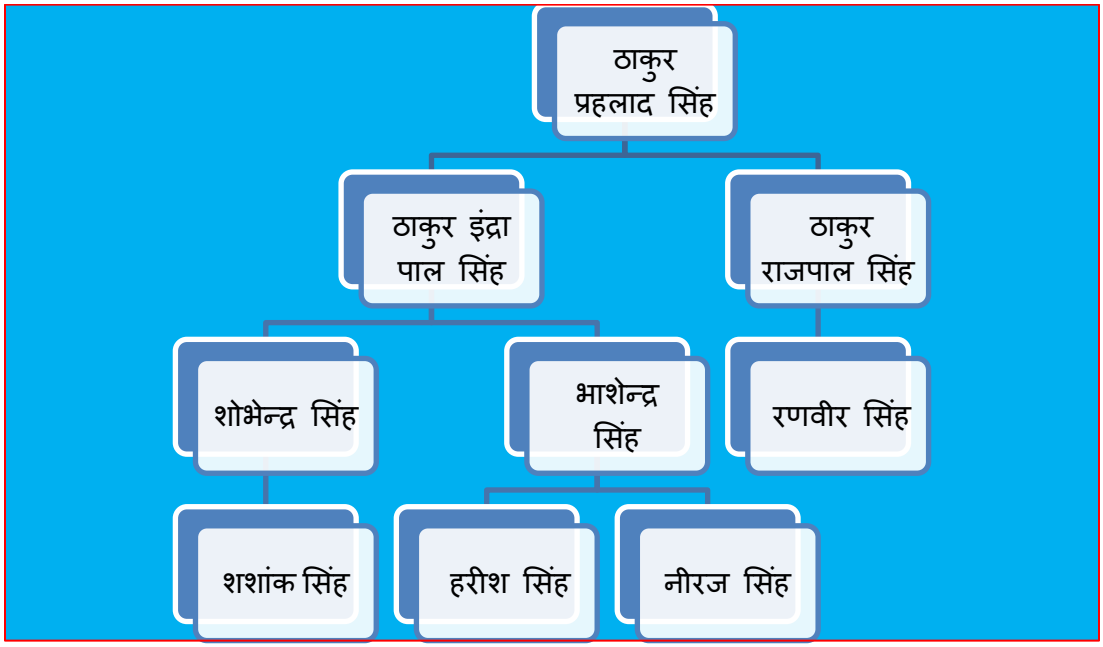

ठाकुर रामचंद्र सिंह

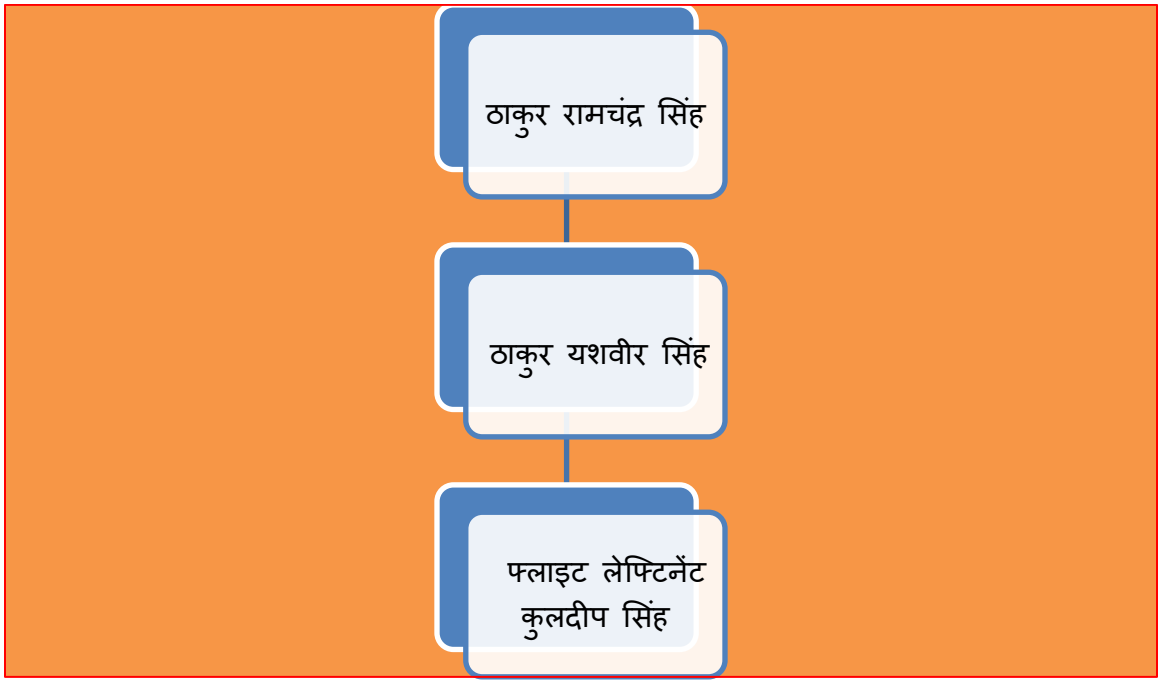

ठाकुर यशवीर सिंह

ठाकुर यशवीर सिंह

ठाकुर यशवीर सिंह ठाकुर रामचंद्र सिंह के इकलौते पुत्र थे। उनका जन्म 2 जनवरी 1928 को हुआ था। उन्होंने यूनाइटेड प्रांत के हाई स्कूल और इंटरमीडिएट एजुकेशन बोर्ड से हाई स्कूल 1943 में पास किया। इसके बाद उन्होंने 1947 में यूपी से अंग्रेजी साहित्य, भूगोल, अर्थशास्त्र और कला विषयों के साथ अपनी इंटरमीडिएट परीक्षा उत्तीर्ण की। ठाकुर यशवीर सिंह ने कई पाठ्येतर गतिविधियों में भाग लिया। 10 वीं कक्षा में पढ़ते समय उन्होंने स्काउट ट्रूप लीडरशिप, स्ट्रिक्ट ओबेडिएंस, हेल्थ एंड सोशल सर्विस में भाग लेने के लिए जूनियर रेड क्रॉस सोसाइटी के वर्ग एक का प्रमाण पत्र प्राप्त किया। उन्हें 1942 में सेंट जॉन एम्बुलेंस एसोसिएशन की भारतीय शाखा द्वारा प्राथमिक चिकित्सा, स्वच्छता और स्वच्छता प्रमाणपत्र में मैकेंजी स्कूल कोर्स ऑफ इंस्ट्रक्शन और 1940 में मैकेन्ज़ी स्कूल फ़र्स्ट एड, स्वच्छता और स्वच्छता का प्रमाणपत्र भी प्राप्त किया गया था। इसके अलावा, उन्होंने 1944 में तत्कालीन बंबई सरकार द्वारा संचालित इंटरमीडिएट ग्रेड ड्राइंग परीक्षा उत्तीर्ण की।

ठाकुर यशवीर सिंह ने 1952 में कोसी मथुरा (यूपी) में म्युनिसिपल हायर सेकेंडरी स्कूल में आर्ट मास्टर के रूप में अपने करियर की शुरुआत की। इसके बाद उन्होंने जुलाई 1954 में एसोसिएटेड सीमेंट कंपनी के तत्वावधान में ग्वालियर सीमेंट वर्क्स में शिक्षक के रूप में नौकरी की।

उनका विवाह श्रीमती पुष्पा लता से हुआ था और उनके एक पुत्र कुलदीप सिंह और एक पुत्री ज्योति चौहान है , जिनका विवाह श्री ललित कुमार सिंह चौहान से हुआ । ठाकुर यशवीर सिंह का जून 1960 में 32 वर्ष की अल्प आयु में असामयिक निधन हो गया। पुष्प लता का 24 नवंबर 2018 को निधन हो गया।

फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह

फ्लाइट लेफ्टिनेंट कुलदीप सिंह रावल का विस्तृत विवरण फैमिली के बहुमूल्य रत्नो वाले सेक्शन में दिया गया हैं

डॉ अतर सिंह ठाकुर

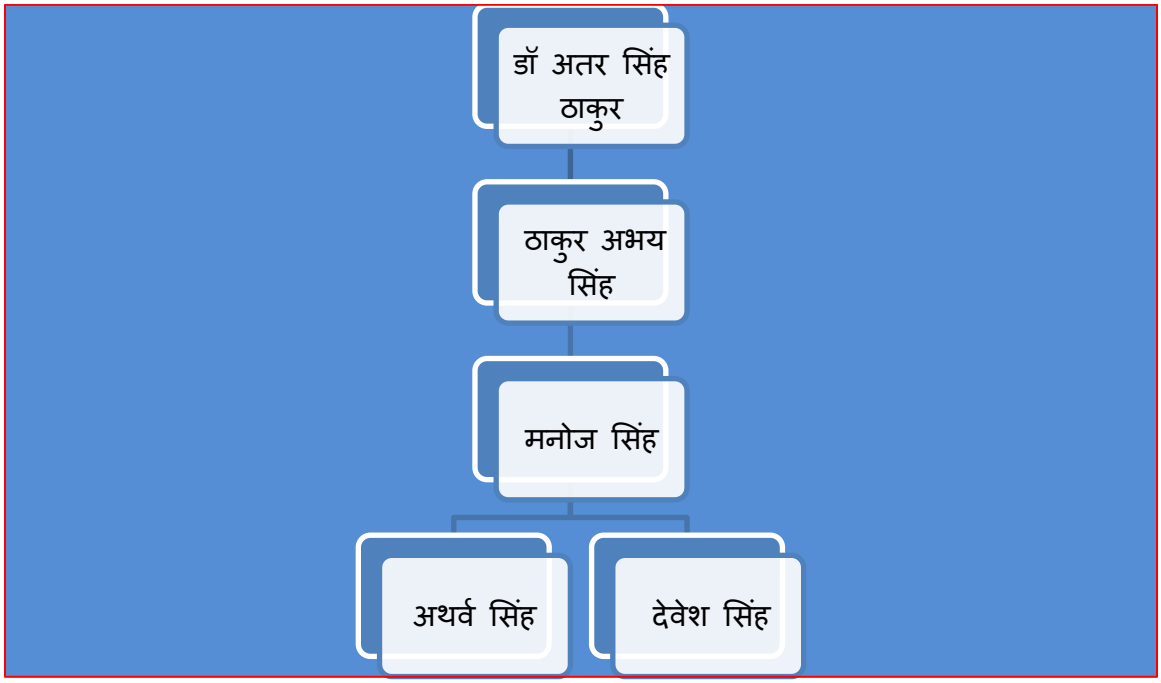

मेजर वीर सिंह

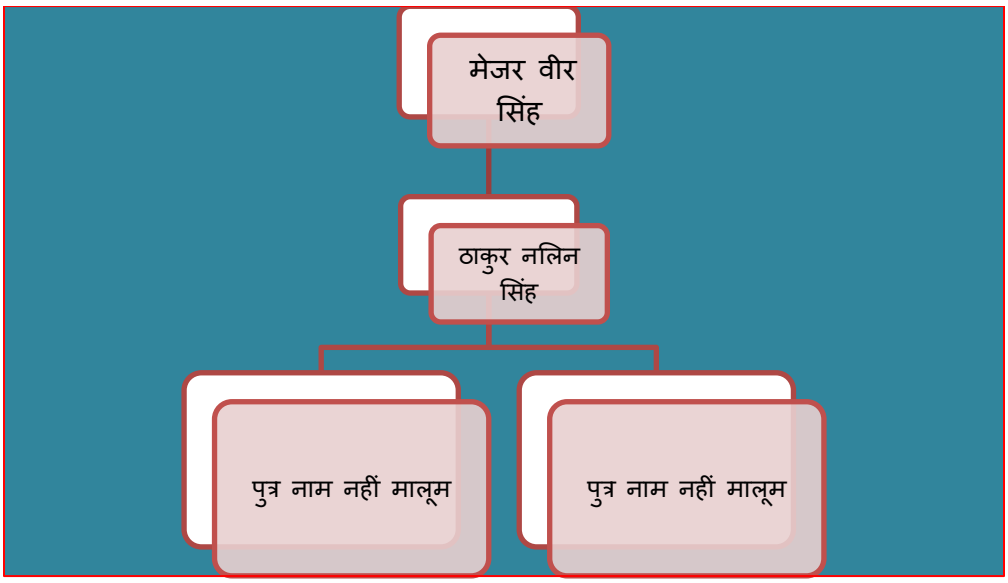

ठाकुर नारायण सिंह

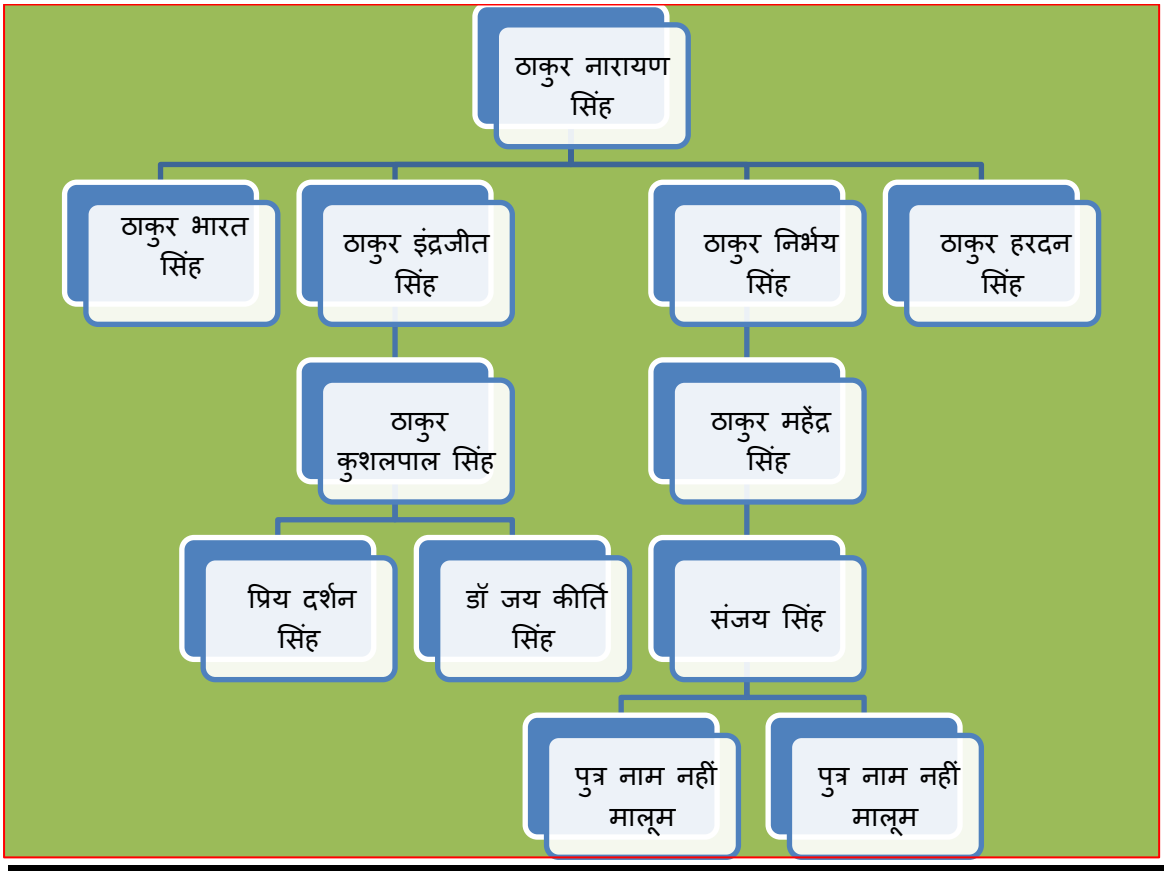
ठाकुर नारायण सिंह
ठाकुर भारत सिंह
ठाकुर इंद्रजीत सिंह
ठाकुर निर्भय सिंह
ठाकुर हरदन सिंह
ठाकुर कुशलपाल सिंह
ठाकुर महेंद्र सिंह
प्रिय दर्शन सिंह
डॉ जय कीर्ति सिंह
संजय सिंह
पुत्र नाम नहीं मालूम
पुत्र नाम नहीं मालूम

ठाकुर नवल सिंह

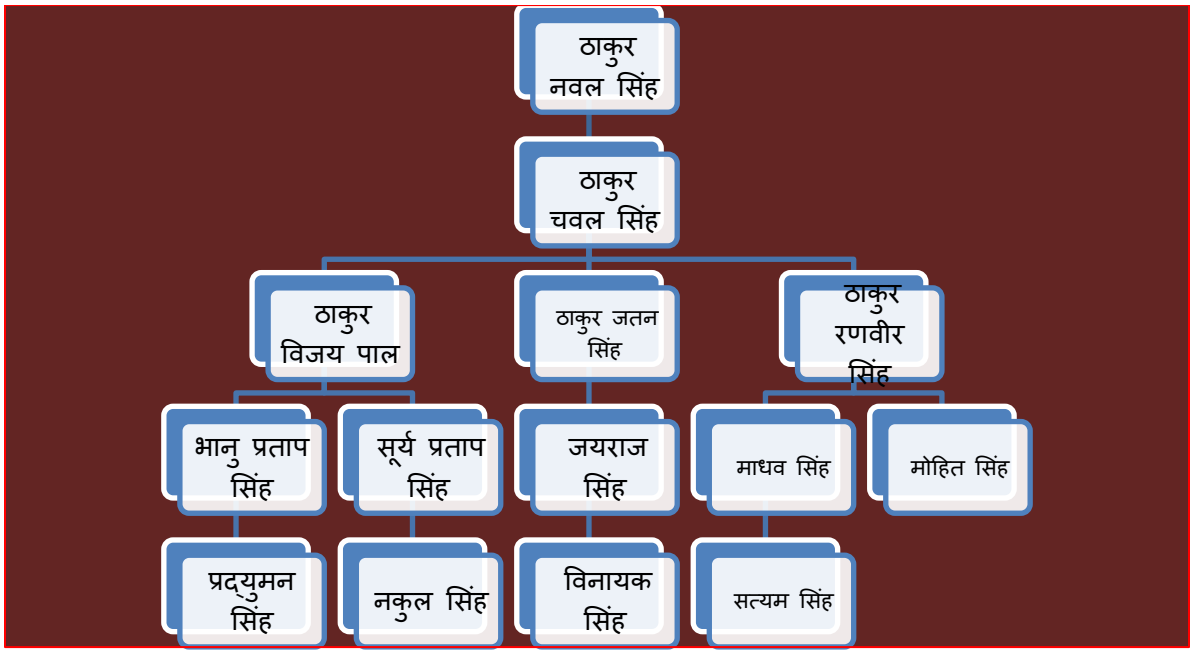

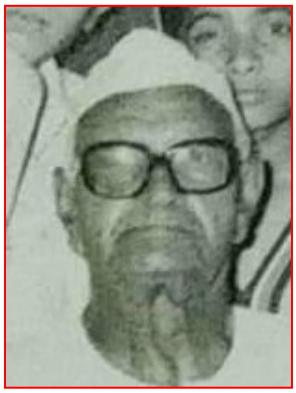

ठाकुर चवल सिंह

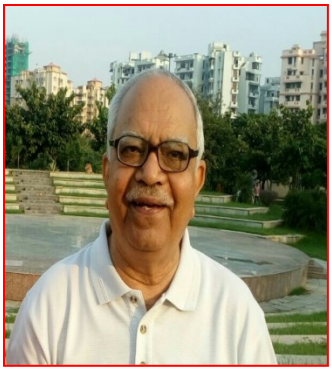

श्री महेंद्र सिंह का जन्म 14 अगस्त 1940 को गाँव आमका में हुआ था जो अब उत्तर प्रदेश के गौतम बुद्ध नगर में है। उनकी प्रारंभिक शिक्षा दिल्ली में हुई थी। दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद उन्होंने दिल्ली विश्वविद्यालय के फैकल्टी ऑफ़ मैनेजमेंट स्टडीज से कार्मिक प्रबंधन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा किया। उन्होंने कोआपरेटिव कॉलेज, लवबोरो, इंग्लैंड से कृषि सहकारी समितियों के प्रबंधन का कोर्स भी पूरा किया। श्री महेंद्र सिंह भारतीय राष्ट्रीय कृषि सहकारी विपणन संघ (NAFED) के प्रबंध निदेशक के पद से सेवानिवृत्त हुए। उन्होंने NAFED से प्रतिनियुक्ति पर लगभग दो साल तक नेशनल कोऑपरेटिव कंज्यूमर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक के रूप में भी काम किया।

श्री महेंद्र सिंह ने कुछ राष्ट्रीय स्तर के शीर्ष संगठनों के कार्मिक नियमावली लिखी है। 2003 में इंटरनेशनल कोऑपरेटिव एलायंस के कंट्री कंसल्टेंट के रूप में भारत में कृषि सहकारी समितियों और अनौपचारिक सहकारी किसान आंदोलन का एक महत्वपूर्ण अध्ययन किया। उनका नाम INFA पब्लिकेशंस इंडिया के व्हूज़ इज़ हू बुक 1991-92 में भी दर्ज है।

श्री महेंद्र सिंह की यह पुस्तक आमका के रावल परिवार से सम्बंधित है । गांव आमका को उनके पूर्वज ठाकुर मोहर सिंह ने 1818 में बसाया था। गांव के दो सौ साल पूरे होने के अवसर पर और अपने माता-पिता, पूर्वजों और परिवार के अन्य सदस्यों को इस पुस्तक द्वारा श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है। इसका पहला संस्करण 2018 में लिखा गया था। पुस्तक का संशोधित दूसरा संस्करण जून 2020 में प्रकाशित हुआ था।

संशोधित तीसरा संस्करण अब आपके हाथ में है। इस पुस्तक को एक ही परिवार की सात पीढ़ियों की सबसे अधिक तस्वीरों को इकट्ठा करने के लिए इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स में शामिल किया गया है। यह आशा की जाती है कि पुस्तक आपको रोचक लगेगी और कई अन्य लोगों अपनी बहुमूल्य विरासत को खोजने के लिए प्रेरित करेगी।